

जाओ और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो

परमेश्वर के राज्य
का स्वरूप

द्वारा
डोट

नियमावली 11
समूह के अगुवों के लिए

चौथा संशोधित संस्करण 2016

प्रस्तावना

राज्य का सुसमाचार क्या है ?

राज्य का सुसमाचार, परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी है। सामान्य तौर पर यदि देखें तो परमेश्वर के राज्य का अर्थ अनन्तता से अनन्तता तक हर एक सजीव और निर्जीव वस्तु पर परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (भजन 24:1; 145:13)। खास तौर पर कहें तो, परमेश्वर का राज्य, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (मत्ती 28:18)। यह राज्य मसीह के उद्धार के सम्पूर्ण कार्यों (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन में उन कार्यों के प्रयोग पर आधारित होता है (रोमियों 14:17)। इस राज्य को विश्वासियों द्वारा मन में स्वीकार किया जाता (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन में चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट हुआ है: प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विश्वासियों के सम्पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), एक कलीसिया के रूप में इस धरती पर पाये जाने वाले विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), विश्वासियों के भले कामों (प्रभाव) के द्वारा मानवीय समाज के हर क्षेत्रा में (मत्ती 25:34-40), और अन्त में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मुक्त जगत या नये स्वर्ग और नयी धरती पर (1 कुरिन्थियों 15:24-26)।

राज्य का सुसमाचार कब प्रचार किया गया ?

उसके प्रथम आगमन पर, यीशु मसीह ने राज्य का सुसमाचार प्रचार किया (मरकुस 1:14-15; मत्ती 4:23)। यीशु ने करीब पचास दृष्टान्त कहे और वे सभी प्रभु के राज्य से सम्बन्धित थे। इन दृष्टान्तों में, यीशु हमें उनकी विशेषताओं के बारे में बताते हैं और खास तौर पर यह कि परमेश्वर के राज्य की रीतियों के अनुसार हम कैसे उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और उसमें किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए। अन्त में, यीशु ने कहा, “राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा” (मत्ती 24:14)। इस तरह से, धरती पर मसीही कलीसिया की स्थापना करने के बाद, मसीही लोग राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23,31)। सारे मसीहियों का लक्ष्य यीशु मसीह की प्रभुता का प्रचार करना, प्रचार की हुई शिक्षाओं का अभ्यास करना (मत्ती 23:3) और उनके तौर तरीकों को परमेश्वर के राज्य के तौर तरीकों से बदल देना है।

तैयार अगुवों और मजदूरों को बढ़ाना

यीशु के अनुसार परमेश्वर के राज्य में “समय की मांग” तैयार अगुवे व मजदूरों की संख्या है। एक तरफ: “इसलिए खेत के स्वामी से *विनती करो* कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे” (मत्ती 9:38)। और दूसरी तरफ “ज्यादा से ज्यादा मसीहियों को *तैयार करो* ताकि वे मसीह की कलीसिया में सेवक बन सकें” (मत्ती 4:19; मत्ती 10:7; इपिफसियों 4:12)। उन्हें शिष्यता के समूह के अगुवे रूप में, घरेलू कलीसिया के अगुवे, कलीसिया के प्राचीन के रूप में, दूतों (नयी कलीसिया के रोपणकर्ता के रूप में) ठहरा दें।

डोय पाठ्यक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता है:

1. प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छः महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) माप्त किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठ्यक्रम को छः दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।
2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।
3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे “पढ़ें” “खोजें व चर्चा करें” समूह के अगुवों को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।
4. “नोट्स” प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का सारांश बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।
5. यह पाठ्यक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6. हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।
7. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्यार्थी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में तेजी से मण्डलियों की (घरेलू कलीसिया) संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं (प्रेरितों 6:7)। यीशु ने कहा, मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधेलोक के फाटक उसमें प्रबल नहीं होंगे! (मत्ती 16:18)! परमेश्वर को महिमा मिले! फक्क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहे: आमीन! (रोमियों 11:36)

डोय (इस नाम की उत्पत्ति 05-10-1993 में हुआ जब यह पाठ्यक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, “Discipleship training On The Air”, अर्थात चीन पर रेडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण) 1996 में (प्रथम संस्करण)। 2016 में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार

मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए निःशुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश

इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उद्देश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठ्यक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह ज्यादा से ज्यादा 8 लोगों तक का ही हो।

प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

- अध्याय 25** शान्त समय को साझा करना (भजन संहिता 84,90,91 और 92)
स्मरण करना (1. परमेश्वर अतुल्य हैं: यशायाह 40:25-26)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन: परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का आज्ञापालन करने के विषय में दृष्टांत)
अन्धे द्वारा अन्धे को रास्ता दिखाने का दृष्टांत (मत्ती 15:14) + बुद्धिमान और मूर्ख द्वारा घर का बनाया जाना (मत्ती 7:24-27)
- अध्याय 26** शान्त समय को साझा करना (भजन. 101,103,104 और 107)
स्मरण करना (2. परमेश्वर महिमामय हैं : 1इतिहास 29:11)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 7:1-13)
- अध्याय 27** शान्त समय को साझा करना (भजन. 115, 119:1-88, 119:89-176, 139)
स्मरण करना (3. परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं : इफिसियों 1:11-12)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन : परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में दृष्टांत)
दूल्हा, पैबन्द लगे वस्त्र और मशकें (मत्ती 9:14-17; मरकुस 2:18-22; लूका 5:33-39)
- अध्याय 28** शान्त समय को साझा करना (भजन. 141,143,145 और 146)
स्मरण करना (4. परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं : इब्रानियों 4:13)
बाइबल अध्ययन (रोमियों के पत्री। रोमियों 7:14-25)
- अध्याय 29** शान्त समय को साझा करना (नीतिवचन 1,3,4 और 5)
स्मरण करना (5. परमेश्वर सर्व-शक्तिमान हैं : यिर्मयाह 32:17)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन : परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करने के विषय में दृष्टांत)
मध्यस्थता करने वाला मित्र (लूका 11:5-10) + दृढ़ विधवा (लूका 18:1-8)
- अध्याय 30** शान्त समय को साझा करना (नीतिवचन 6,7,8 और 10)
स्मरण करना (श्रृंखला 'ज' "परमेश्वर की महानता" का पुनरावलोकन)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 8:1-17)

- अध्याय 31** शान्त समय को साझा करना (नीतिवचन 15,16,17 और 19)
स्मरण करना (11. रोमियों 8:1)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन: परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में दृष्टान्त) वैद्य और बीमार (मत्ती 9:9-13; मरकुस 2-17; लूका 5:27-32) + पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति (मत्ती 5:13-16)
- अध्याय 32** शान्त समय को साझा करना (नीतिवचन 27,28,29 और 31)
स्मरण करना (12. रोमियों 8:38-39)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री/ रोमियों 8:18-39)
- अध्याय 33** शान्त समय को साझा करना (यशायाह 1,2,3 और 4)
स्मरण करना (13. रोमियों 10:9-10)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन : परमेश्वर के राज्य में शिष्यता के बारे में दृष्टान्त)
उतावला निर्माणकर्ता (लूका 14:28-30) + लापरवाह राजा (लूका 14:30-31)
- अध्याय 34** शान्त समय को साझा करना (यशायाह 5,6,7 और 8)
स्मरण करना (14. रोमियों 10:12)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री/ रोमियों अध्याय 9)
- अध्याय 35** शान्त समय को साझा करना (यशायाह 9,10,11 और 40)
स्मरण करना (15. रोमियों 10:17)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन: परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में दृष्टान्त) मूर्ख धनवान का दृष्टान्त (मत्ती 12:13-21) + धनवान व्यक्ति और गरीब लाज़र (लूका 16:19-31)
- अध्याय 36** शान्त समय को साझा करना (यशायाह 41,42,45,46)
स्मरण करना (रोमियों के 5 प्रमुख पदों का पुनरावलोकन करें)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री/ रोमियों अध्याय 10)
- परिशिष्ट 9** परमेश्वर के राज्य में जीवन/ मांगने वाला पुत्र (मत्ती 7:7-11)
- परिशिष्ट 10** परमेश्वर के राज्य में जीवन/ गृहस्थ (मत्ती 13:51-52) + मजदूर और फसल (मत्ती 9:35-38)
- परिशिष्ट 11** परमेश्वर के राज्य में जीवन/ हल पर हाथ रखना (मत्ती 9:61-62)
- परिशिष्ट 12** व्यवस्था/ बाइबल में पाई जाने वाली व्यवस्था
- परिशिष्ट 13** व्यवस्था/ मसीह व्यवस्था का उद्देश्य और अंत

वचन याद करने का तरीका: समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9 के परिशिष्ट1 में देखिये। शान्त समय बिताने, बाइबल अध्ययन करने, मनन करने व वचनों को याद करने के लिए (नियमावली 1 परिशिष्टों में देखें)

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00-09.30	आराधना (बड़े समूह के साथ)
09.30-11.00	शिक्षा (बड़े समूह के साथ) अन्तराल
11.30-13.00	बाइबल अध्ययन(छोटे समूह के साथ) अन्तराल
16.00-17.00	शिक्षा या बाइबल अध्ययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए (बड़े समूह के साथ) अन्तराल
17.30-17:45	मनन(बड़े समूह के साथ) व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45-18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30-19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00-19:45	बांटना (बड़े समूह के साथ) और प्रार्थना करना (छोटे समूह के साथ)

दिन 1 (अध्याय 25+26) प्रार्थना शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन। परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का आज़ापालन करने के विषय में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 7:1-13) स्मरण करना (यशायाह 40:25-26 + 1इतिहास 29:11) बाइबल पठन (भजन. 84,90,91,92,101,103,104,107) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: भजन. 103) बांटना और प्रार्थना करना दिन 2 (अध्याय 27+28) प्रार्थना शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन। परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 7:14-25) स्मरण करना (इफिसियों 1:11-12 + इब्रानियों 4:13) बाइबल पठन (भजन. 115,119,139,141,143,145,146) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: भजन. 139) बांटना और प्रार्थना करना दिन 3 (अध्याय 29+30) प्रार्थना शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन। परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करने विषय में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 8:1-17) स्मरण करना (यिर्मयाह 32:17 + श्रृंखला 3 का पुनरावलोकन) बाइबल पठन (नीतिवचन 1,3,4,5,6,7,8,10) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: नीतिवचन 3:1-35) बांटना और प्रार्थना करना	दिन 4 (अध्याय 19+20) प्रार्थना शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन। परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 8:18-39) स्मरण करना (रोमियों 8:1 + रोमियों 8:38-39) बाइबल पठन (नीतिवचन 15,16,17,19,27,28,29,31) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: नीतिवचन 15:1-33) बांटना और प्रार्थना करना दिन 5 (अध्याय 33+34) प्रार्थना शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन। परमेश्वर के राज्य में शिष्यता के बारे में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों अध्याय 9) स्मरण करना (रोमियों 10:9-10 + रोमियों 10:12) बाइबल पठन (यशायाह 1,2,3,4,5,6,7,8) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: यशायाह 5:1-30) बांटना और प्रार्थना करना दिन 6 (अध्याय 35+36) प्रार्थना शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में जीवन। परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के विषय में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों अध्याय 10) स्मरण करना (रोमियों 10:17+ पुनरावलोकन) बाइबल पठन (यशायाह 9,10,11,40,41,42,45,46) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: यशायाह 40:1-31) बांटना और प्रार्थना करना
---	---

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 9	परमेश्वर के राज्य में जीवन। मांगने वाला पुत्र (मत्ती 7:7-11)
परिशिष्ट 10	परमेश्वर के राज्य में जीवन। गृहस्थ (मत्ती 13:51-52) + मजदूर और फसल (मत्ती 9:35-38)
परिशिष्ट 11	परमेश्वर के राज्य में जीवन। हल पर हाथ रखना (मत्ती 9:61-62)
परिशिष्ट 12	व्यवस्था। बाइबल में पाई जाने वाली व्यवस्था
परिशिष्ट 13	व्यवस्था। मसीह व्यवस्था का उद्देश्य और अंत

1	प्रार्थना करें
---	----------------

समूह का अग्रवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके द्वारा मार्ग दर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य को उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपें।

2	साझा करें (20 मिनट) (शांत समय) भजन संहिता 84,90,91 और 92
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 84,90,91 और 92) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) (परमेश्वर की महानता) (1) यशायाह 40:25-26
---	---

स्मरण वचन की ग्यारवी श्रृंखला (अ) “परमेश्वर की भलाई” से सम्बन्धित है। पांच स्मरण पदों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:

- (1) परमेश्वर अतुल्य हैं। यशायाह 40:25-26।
- (2) परमेश्वर महिमामय हैं। 1 इतिहास 29:11।
- (3) परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं। इफिसियों 1:11-12
- (4) परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं। इब्रानियों 4:13
- (5) परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं। यिर्मयाह 32:17।

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(1) **परमेश्वर अतुल्य है। यशायाह 40:25-26।** इसलिये तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उस के तुल्य ठहरूँ? उस पवित्र का यही वचन है। अपनी आँखें उठाकर देखो, किस ने इन को सिरजा? वह इन गणों को गिन-गिनकर निकालता, उन सबको नाम ले लेकर बुलाता है? वह समार्थी और अत्यन्त बलवन्त है कि उसमें से कोई बिना आए नहीं रहता।

4	शिक्षा देना (85 मिनट) (यीशु के दृष्टान्त) अन्धे द्वारा अन्धे का रास्ता दिखाया जाना और बुद्धिमान और मूर्ख द्वारा घर का बनाया जाना
---	---

मत्ती 15:14 में “अन्धे द्वारा अन्धे को रास्ता दिखाने का दृष्टान्त”
और मत्ती 7:24-27 में बुद्धिमान और मूर्ख द्वारा घर का बनाया जाना
परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का आज्ञापालन करना

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य जीवन की कहानी या चित्रण है जो आत्मिक सत्य को सिखाती है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीनीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए आम जगह और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम दृष्टान्तों का अध्ययन करने के लिए छह दिशा-निर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टान्त का अध्ययन करेंगे (नियमावली 9 में परिशिष्ट 1 देखें)

क. “अन्धे द्वारा अन्धे को रास्ता दिखाने का दृष्टान्त”

पढ़ें मत्ती 15:1-20 और लूका 6:39-42।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतीकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

एक मार्गदर्शक यह देखने में सक्षम होना चाहिए कि वह स्वयं कहां जा रहा है और वह दूसरे को कहां ले जा रहा है। अन्यथा उसे एक मार्गदर्शन कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। “एक अंधा मार्गदर्शक” एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो मार्गदर्शक होने का दावा तो करता है लेकिन सारे लोगों को नाश के गडहे की ओर ले जाता है।

2. सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी के” संदर्भ में दृष्टान्त की “परिस्थिति” और “व्याख्या या अनुप्रयोग” हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के माहौल या उपलब्ध के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के पहले पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के बाद में पाया जाता है।

स्रोतों व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) यह दृष्टान्त हमें मत्ती 15:1-12 में मिलता है।

लेकिन यह गद्यांश मानवीय परम्पराओं और परमेश्वर के वचन के साथ उनके रिश्ते को लेकर अति महत्वपूर्ण है। हम “प्राचीनों की परम्परा” के विकास, प्राचीनों के विकास पर यीशु के विचारों और उन लोगों के बारे में यीशु के विचारों पर चर्चा करेंगे जिन्होंने प्राचीनों की परम्परा को बढ़ावा दिया।

प्राचीनों की परम्परा का विकास। “प्राचीनों की परम्पराओं” के अन्तर्गत पुराने नियम की व्यवस्थाओं के अभिप्राय और विशेष तौर पर विभिन्न परिस्थितियों में इन नियमों के पालन करने के क्षेत्र में मनुष्यों के विचार और उनके संकल्प आते हैं। प्राचीन काल में इन विचारों और रीतियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया गया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यहूदियों ने इन नियमों और परम्पराओं को परमेश्वर की व्यवस्था के तुल्य माना, क्योंकि व्यवस्था के शिक्षक होने के नाते ये परम्पराएं दिखाती थीं कि परमेश्वर की व्यवस्था का अर्थ क्या था और उनका दैनिक जीवन में किस तरह से पालन होना चाहिए।

बहुत से मामलों में, ये विचार और निर्णय परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को भी पीछे छोड़ गये। उदाहरण के तौर पर मत्ती 12:1-8 के अनुसार परम्परा यह सिखाती है कि सबत के दिन कोई भी जन अनाज नहीं बीन सकता (क्योंकि ऐसा करना “सबत के दिन काम करना गिना जाएगा”)। और अन्य कई मामलों में परम्पराएं परमेश्वर की व्यवस्था की मांग के साथ न्याय करने में पूरी तरह से असफल हो गयीं। उदाहरण के लिए, मत्ती 5:20-48 के अनुसार, परम्परा सिखाती है कि बाहरी तौर पर दस आज्ञाओं को मानना ही पर्याप्त होगा। मत्ती 15:1-2 में शुद्धता की रीति के अभ्यास करने की मांग एक ऐसा मामला है जिसमें पुरनियों की रीति व्यवस्था में लिखी बातों से भी अधिक मांग कर रही थी। परमेश्वर की व्यवस्था “पवित्रता” की मांग कर रही थी (लैव्यव्यवस्था 19:2) और ऐसी पवित्रता के लिए आन्तरिक पवित्रता की आवश्यकता होती है जो हम नैतिक आचरण और रीति रिवाजों में बाहरी तौर पर प्रगट होती है।

उदाहरण के लिए: परमेश्वर के सिनै पर्वत पर उतरने से पहले लोगों को अपने कपड़े धोने थे (निर्गमन 19:10-11)। विभिन्न प्रकार की पवित्र रीतियों को निभाने से पहले याजकों के लिए स्नान करना अनिवार्य था (लैव्यव्यवस्था 15:1-33; 16:26,28; 17:15-16)। तम्बू में अपनी जिम्मेदारियों को निभाने से पहले हारून और उसके पुत्रों को अपने हाथों को धोना अनिवार्य था (निर्गमन 30:17-21)। कुछ विशेष परिस्थितियों में परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार आम लोगों को भी अपने हाथों को धोना अनिवार्य था। (लैव्यव्यवस्था 15:11; व्यवस्थाविवरण 21:6) लेकिन परमेश्वर की व्यवस्था में ऐसा कहीं पर भी नहीं लिखा गया है कि हर एक जन के हर बार भोजन करते समय अपने हाथों को धोना अनिवार्य है! यह नियम पुरनियों का अपना बनाया नियम था, लेकिन परमेश्वर के वचन में ऐसा करने का कोई आदेश नहीं दिया गया था। लेकिन, फरीसियों ने हर बार भोजन करने से पहले अपने हाथों को धोने पर बल दिया (मरकुस 7:3-4)। ऐसी बातें, जिनके बारे में परमेश्वर की व्यवस्था अर्थात बाइबल में कहीं पर बल नहीं दिया गया उन्हीं बातों पर इन लोगों के द्वारा इस हद तक बल दिया गया कि व्यवस्था का अभिप्राय पूरी तरह से समाप्त हो गया।

प्राचीनों की इन रीतियों को उदय इस्राएल के इतिहास में किस प्रकार हुआ? ई.पू 586 में यरूशलेम और मन्दिर के विनाश और बेबिलोन की बन्धुवाई ने यहूदियों को बुरी तरह से हिला कर रख दिया। बेबीलोन में बन्धुवाई की गणना निम्नलिखित तरीके से की जाती है:

- 605 ई.पू में नबूकदनेस्सर द्वारा पहली बार चढ़ाई करके निर्वासन में निर्वासित किये जाने से लेकर 537 ई.पू में पहली बार लोगों के वापस आने तक।
- या 586 ई.पू में मन्दिर के नष्ट किये जाने से लेकर 516 ई.पू में मन्दिर के पुनः निर्माण तक।

परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों ने इस बात को समझ लिया था कि गुलामी में जाना परमेश्वर की ओर से दण्ड था, क्योंकि इस्राएल के लोगों ने अपने परमेश्वर को त्याग दिया था। उन्हें पता चल गया था कि उनके पुनः मेल व बहाली की आशा केवल अपने पूरे मन से परमेश्वर के पास लौटने पर ही टिकी हुई है (यिर्मयाह 29:13-14)। उन्होंने यह विश्वास और आशा की कि यदि वे परमेश्वर द्वारा बाइबल की पहली पांच पुस्तकों में प्रगट की गयी परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करेंगे, तो उन पर एक बार फिर से परमेश्वर का अनुग्रह हो जाएगा।

- बन्धुवाई के समय में, यहजेकेल और दानिय्येल भविष्यद्वक्ता ने लोगों की अगुवाई की।
- बन्धुवाई के बाद में, शास्त्री एज़ा और भविष्यद्वक्ता हागै, जर्कयाह और मलाकी ने अगुवाई की।

नयी परिस्थितियों में परमेश्वर की व्यवस्था के पालन के नये तरीकों की जरूरत पड़ी।

कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक ठाक चला। लेकिन, जल्द ही उनके बीच में एक “फरीसी” (अर्थात “जिन्होंने अपने को अलग कर लिया हो”) नामक समूह उठ खड़ा हुआ। उन्होंने खुद को विशेष ठहराते हुए परमेश्वर

के वचनों पर आधारित तथाकथित नियमों का प्रचार और प्रसार किया। वे नये नये नियमों के बारे में विचार करने में इतने मगन हो गये कि केवल हुकुमत करने के लिए नये नये नियमों को बनाने लगे। उन लोगों के बीच में सबसे प्रसिद्ध रब्बी या गुरु को सर्वश्रेष्ठ सम्मान दिया जाने लगा। जो कुछ इन रब्बियों ने कहा था उसे ही पीढ़ियों से पीढ़ियों तक आगे बढ़ा दिया गया। आराधनालयों से जुड़े हुए इन व्यवस्थापकों ने बच्चों को पढ़ना सिखाया और सिखाया था कि बीते समय के रब्बियों ने व्यवस्था का क्या अर्थ बताया था। मत्ती 5:21 में इन्हें “पूर्वकाल के लोग कहकर” सम्बोधित किया गया है, उनके सिखाने का तरीका यह था कि विद्यार्थियों को रब्बियों को बातों को याद करके सम्पूर्ण जीवनकाल तक उसे ही दोहराते रहना होता था। विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों के पीछे पीछे दोहराना होता था। याद करने वाली सामग्री में प्रतिवर्ष बढ़ती होती ही चली गयी, यह बोझ इतना भारी हो गया कि 200 ई.प. रब्बी जेहूदा ने “प्राचीनों की परम्पराओं” को एक लिखित रूप प्रदान किया जिसे “मिश्ना” (इस शब्द का अर्थ “दोहराव करना”) के नाम से जाना जाता है। उसके बाद में मिशना को समझाया जाना और आगे बढ़ाना भी जरूरी था। मिशना पर लिखी गयी टिका को “गेमारा” (इस शब्द का अर्थ: “पूरा करना”) के नाम से जाना जाता था। मिशना और गेमारा को साथ में मिलाकर “ताल्मुद” (जिस शब्द सीखना था) का उदय हुआ। यरुशलेम में रब्बियों द्वारा संचालित पाठशालाओं ने “यरुशलेम ताल्मुद” का उत्पादन किया और बेबीलोन में रब्बियों द्वारा संचालित पाठशालाओं ने “बेबीलोनियन ताल्मुद” का उत्पादन किया। ये दोनों बहुत प्रचलित पुस्तकें हैं। बेबीलोनियन ताल्मुद में यरुशलेम ताल्मुद से ज़्यादा सामग्री पायी जाती है और उस ज़्यादा आधिकारिक माना जाता है।

यीशु प्राचीनों की रीतियों के बारे में क्या कहते हैं। फरीसियों ने निरन्तर पुरनियों अर्थात् प्राचीनों की परम्परा को प्रोत्साहित किया। मत्ती 15 अध्याय में, यरुशलेम में कुछ फरीसियों और कुछ व्यवस्थापकों को उनके सहकर्मियों के द्वारा यीशु की सेवकाई को रोकने के ठहराया गया था। उन्होंने इस बात को देख लिया कि यीशु के चेले प्राचीनों की रीतियों पर नहीं चलते थे, क्योंकि वे उस तरीके से अपने हाथ नहीं धोया करते थे जिस तरीके से फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक धोया करते थे।

प्राचीनों की रीतियों में केवल *बाहरी कार्यकलापों* पर ही ध्यान दिया जाता था। उसका सरोकार आधुनिक साफ सफाई से नहीं था, लेकिन उनका मतलब केवल रीतियों की शुद्धता से था। उनकी मांग थी कि भोजन करने से पहले लोगों को, परम्परागत तरीके से अपने हाथों को साफ कर लेना चाहिए। हो सकता है कि बाज़ार में उनका सम्पर्क अन्यजातियों के लोगों से हुआ होगा, जिन्हें वे अशुद्ध (तुलना करें प्रेरितों. 10:28 से) लोग मानते हैं। रीति के हिसाब से हाथ धोने का तरीका निम्नलिखित था: वे अपने एक हाथ में पानी लेकर उसे ऊंचाई से दूसरे हाथ पर उण्डेला करते थे। या फिर कोई और व्यक्ति दूसरे जन के हाथों पर पानी को उण्डेला करता था (2राजोओं 3:11) जबकि वह अपनी मुट्ठी को दूसरे हाथ में रखकर घुमा(मरकुस 7:3) (ग्रीक:पुगमनीपोन्टई)। अतः फरीसियों, व्यवस्थापकों और उनके अनुयायियों ने प्राचीनों की सच्ची भक्ति और प्राचीनों के रीति रिवाजों को हृदय के भीतरी स्वभाव को अनुयायियों के लिए विकल्प बना दिया था।

यीशु ने कहा कि फरीसियों की नज़रों में उसके चेलों ने प्राचीनों की परम्पराओं का उल्लंघन किया था, लेकिन फरीसियों ने तो परमेश्वर के वचनों को उल्लंघन किया था। उसने धार्मिक अगुवों पर यह कहते हुए दोष लगाया कि तुम ने मनुष्यों की रीतियों को परमेश्वर का वचन करके सिखाया है! उन्होंने मनुष्यों की बनायी गयी रीति को परमेश्वर के वचनों से ज़्यादा महत्व दिया है।

एक उदारहरण के तौर पर, यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि वे किस प्रकार अपने माता पिता का समर्थन न करके उनका अनादर करते हैं। यदि बच्चे अपने माता पिता की जरूरतों की चीज़ों को उन्हें नहीं देना चाहते हैं तो वे कहते हैं: “मेरी कमाई परमेश्वर के लिए भेंट या दान है”। फरीसियों के अनुसार, उनका यह कहना ही उन्हें अपने माता पिता का ख्याल रखने की ज़िम्मेदारी से बचा लेता है। इस तरीके से अपने सारे पैसों

को अपने पास संभाल कर रख लेते हैं। प्राचीनों की रीतियों परमेश्वर के द्वारा दी गयी आज्ञाओं के बिल्कुल विपरीत हैं: “अपने माता पिता का आदर करें” (निर्गमन 20:12)। इसीलिए यीशु ने कहा, “तुम ने अपनी रीतियों के कारण परमेश्वर के वचनों को व्यर्थ और अप्रभावशाली बना दिया है। जब यशायाह ने तुम्हारे बारे में भविष्यवाणी की तो ठीक ही की: “ले लोग अपने होठों से तो मेरा आदर करते हैं लेकिन इनके हृदय मुझसे बहुत दूर हैं। वे व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं; उनके वचन केवल मनुष्यों द्वारा सिखाए गये नियम हैं (निर्गमन 15:6-9)। यीशु ने उनकी परम्पराओं को परमेश्वर के नहीं वरन मनुष्यों के विचार और शिक्षाएं हैं! मनुष्यों का हर एक विचार, शिक्षा और अनुप्रयोग परमेश्वर के वचनों के द्वारा परखे जाने चाहिए और उन्हें परमेश्वर के वचनों के अधीन होना चाहिए।

जो लोग प्राचीनों की परम्पराओं को बढ़ावा देते हैं यीशु उनके बारे में क्या कहते हैं। यीशु फरीसियों को “कपटियों” कहते हुए सम्बोधित करते हैं। वे अपने आप को धर्मपरायण और भक्त दिखाने का प्रयास करते हैं, लेकिन वास्तव में वे कपटी हैं। परमेश्वर का आदर करना उनके लिए केवल एक दिखावा है (मत्ती 6:5; लूका 18:11)। लेकिन भीतर से वे भ्रष्ट थे और उनके हृदय जीवित परमेश्वर से बहुत दूर थे। यीशु कहते हैं कि ऐसे लोगों द्वारा धार्मिक नियमों (व्यवस्थाओं) द्वारा की जाने वाली परमेश्वर की आराधना पूरी तरह से व्यर्थ होती है।

फिर, यीशु उन फरीसियों और व्यवस्थाओं से दूर हुए और उन्होंने लोगों को अपने पास बुलाया। उसने उनसे कहा “जो चीजें मनुष्य के मुंह से उसके भीतर जाती हैं वह उसे अशुद्ध नहीं करती वरन वे बातें जो उसके मुंह से निकली हैं वही उसे अशुद्ध करती हैं। उसके बाद उसने अपने चेलों को बताया कि जो बातें मुंह से निकलती हैं, वे उसके मन ही से निकलती हैं और उसे अशुद्ध बनाती हैं। मनुष्य के साथ समस्या उसका बाहरी प्रदूषण नहीं, वरन उसका आन्तरिक प्रदूषण था। और उनके मन में भरी गन्दगी ही उन में से होकर बाहर निकलती हैं। जो कुछ मनुष्य के मन में बसा होता है वह ही उसके मुंह से बाहर आता है और सब प्रकार के पाप को जन्म देता है। मनुष्य के मन से बुरे विचार और दुष्ट युक्तियां उत्पन्न होती हैं और ये दुष्ट युक्तियां उनके अपशब्दों और कामों में प्रगट होते हैं।

इस तरह से यीशु मसीह ने फरीसियों को “कपटियों” और “वचन का उल्लंघन करने वाले” कहा। ये धार्मिक अगुवे “परमेश्वर की व्यवस्था के शिक्षक” होने का दावा किया करते थे लेकिन वे वास्तव में “मानवीय परम्पराओं व रीतियों को बढ़ावा देने वाले थे”! क्योंकि यीशु ने परमेश्वर के वचन को धार्मिक अगुवों और शिक्षकों की रीतियों से ज्यादा मान दिया, इसलिए उनका प्रभाव लोगों पर से खत्म हो गया। यह भी एक कारण था कि उन्होंने यीशु की हत्या करने का षड़यन्त्र किया।

परमेश्वर के लागों को निम्न रूपकों के रूप में माना जाता है:

- “लदा हुआ पेड़” (भजन. 1:3; 92:12)
- “परमेश्वर की दाख की बारी” (यशायाह 5:7)
- “सींचा हुआ बगीचा”
- “परमेश्वर का खेत” (1 कुरिन्थियों 3:9)

इस प्रकार के पौधे केवल तभी बढ़ और फल सकते हैं जब उनका बोने वाला स्वयं परमेश्वर हो (यूहन्ना 3:3-8; 6:44)!

इसके अलावा, बहुत से ऐसे पौधे हैं जिन्हें परमेश्वर ने नहीं बोया है, उदारहरण के लिए, “अनाज के बीच में जंगली पौधे” (मत्ती 13:25-39)। यीशु ने फरीसियों को नया जन्म पाये हुए लोगों के रूप में ग्रहण नहीं किया। उसने कहा, “हर वह पौधा जिसे मेरे पिता ने नहीं बोया है वह जड़ से उखाड़ा जाएगा।” (मत्ती 15:13)

हर एक पेड़ जिसे बाइबल के परमेश्वर ने नहीं बोया है, उसे उखाड़कर नरक की आग में डाल दिया जाएगा (मत्ती 3:10-12; 13:42; यूहन्ना 15:5-6; यहूदा 12)। यह कार्य अन्तिम न्याय के समय में जरूर होगा। इस बीच में, लोग पेड़ को उसके फलों से जान लेंगे (मत्ती 7:15-20) या दाखलता को उसके फलों से पहिचान लेंगे (यूहन्ना 15:4-6)। यीशु ने यहूदी अगुवों को “अन्धे मार्गदर्शक कहा”। इस मौके पर यीशु मसीह ने “अन्धे के द्वारा अन्धे की अगुवाई के दृष्टान्त” के बारे में बताया।

(2) यह दृष्टान्त (मत्ती 15:14) में पाया जाता है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या (मत्ती 13:15-20) में पायी जाती है।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और वर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक है ?

ध्यान दें। यीशु ने “कपटियों” की तुलना फरीसियों से और व्यवस्थापकों की तुलना “अन्धे मार्गदर्शकों” के साथ की। यह उल्लेख निश्चय तौर पर आवश्यक और प्रासंगिक है।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है ?

ध्यान दें।

मत्ती 15:14 में अन्धे द्वारा अन्धे को मार्ग दिखाये जाने का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का पालन करने” के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्न है: परमेश्वर के वचन की बजाय किसी अन्धे अगुवे का अनुसरण करना जो मानवीय रीतियों पर निर्भर होता है (अर्थात् बाइबल या व्यवस्था की बातों के परम्परागत अर्थ, विश्वास के परम्परागत अंगीकार, कलीसिया के क्रम व नियमों पर) वह विनाश की ओर अगुवाई करेगा।

परमेश्वर के वचनों को जानना, समझना, और आज्ञापालन करना परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषताएं हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों की आखों पवित्र आत्मा के द्वारा आत्मिक शिक्षाओं को देखने के लिए खुली होती हैं (यूहन्ना 2:26-27)। लेकिन जितने लोगों को बाइबल के परमेश्वर ने नहीं लगाया है, (अर्थात्, जिन लोगों ने नया जन्म नहीं पाया होता है) वे आत्मिक अंधे बने रहते हैं।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल के इन अनुच्छेदों द्वारा जो शिक्षा मिलती है उसकी तुलना इस दृष्टान्त से किस प्रकार की जा सकती है ?

(1) फरीसियों का अन्धापन।

पढ़ें यूहन्ना 9:35-41; रोमियों 2:17-24। यीशु ने जन्म के अन्धे की आंखों की रौशनी वापस करने के बाद उसकी आत्मिक आंखें भी खोल दीं। वह व्यक्ति केवल शारीरिक वास्तविकता को ही नहीं बरन आत्मिक वास्तविकता को भी देख सका! उसने यीशु का मसीह और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। और उसने यीशु मसीह पर विश्वास किया और उसकी आराधना की।

फरीसी लोग, भले ही आत्मिक सत्यों को समझने का दावा किया करते थे, लेकिन वास्तव में वे आत्मिक तौर पर अन्धे थे। उन्होंने यीशु को मसीह और जगत के उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया। और इसी के परिणाम स्वरूप उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करने की बजाय उसका विरोध किया। इसलिए यीशु ने कहा, “मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं। (यूहन्ना 9:39)। फरीसियों को अन्धापन आत्मिक था।

फरीसियों के समान कपटियों का अन्धापन खुद को दिये जाने वाले दण्ड के समान है, क्योंकि वे लगातार खुद अपने मन को परमेश्वर के वचन के प्रति अर्थात् बाइबल के प्रति कठोर कर लेते हैं। यदि कोई जन अपने आप को बाइबल के परमेश्वर और बाइबल के प्रति कठोर कर लेता है, तो उसके लिए ऐसा दिन आएगा जब उसका हृदय पूरी तरह से कठोर हो जाएगा, जिससे वह कभी न तो परमेश्वर के वचनों को समझ पाएगा और न ही पश्चाताप करके उद्धार पा सकेगा (मत्ती 13:11-15; यूहन्ना 3:19-20)!

कपटियों का अन्धापन फरीसियों के समान अपने आप को धोखा देना है। अपने अन्धेपन में वे अपने आप को लोगों के अगुवे मानते और सोचते हैं कि केवल वे ही आत्मिक वास्तविकता को देख सकते हैं (यूहन्ना 7:47-49; रोमियों 2:17-24)!

(2) आंख में लट्ठा।

पढ़ें लूका 6:39-42। यीशु ने कहा, “क्या अन्धा, अन्धे को मार्ग बता सकता है? क्या दोनों गड़हे में नहीं गिरेंगे?... पहले, अपनी आंख का लट्ठा निकाल ले तब तू ठीक ठीक अपने भाई के तिनके को निकाल सकेगा।” यदि कोई जन दूसरों के लिए आत्मिक अगुवा बनना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह पहले आत्मा में जन्मे और बदल जाए। उसे सबसे पहले परमेश्वर को उसके जीवन के कपट, वचन के प्रति आज्ञा उल्लंघन और व्यक्तिगत पापों से व्यवहार करने के लिए अनुमति प्रदान करनी चाहिए। केवल आत्मिक सत्यों को देखने के लिए परमेश्वर द्वारा उसकी आंखों को खोलने के और परमेश्वर को उसके आन्तरिक जीवन को परिवर्तित करने के बाद ही वह किसी दूसरे जन की मदद करने के योग्य हो पाएगा।

ख. घर बनाने वाले बुद्धिमान और मूर्ख का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 7:15-27 और लूका 6:43-49।

1. दृष्टान्त की कहानी को समझें।

वर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं ?

ध्यान दें।

इस कहानी में तीन भाग शामिल हैं:

जिस तरीके से इन दो निर्माताओं ने अपने अपने घरों को बनाया। दो लोगों ने अपने अपने घरों को बनाया। दो लोगों ने अपना घर बनाया। जिस तरह के घरों में यीशु ने उल्लेख किया था वह उनका निर्माण आज के निर्माण के मानकों के अनुसार मजबूत नहीं हुआ है। चोर दीवार के माध्यम से खुदाई करने में सक्षम थे (मत्ती 6:19)! घर की छत लकड़ी के खम्बों से बनायीं जाती थी जिसमें मिट्टी और घाँस भरते थे और ये आसानी से तोड़े जा सकते थे (मरकुस 2:4; भजन. 129:6)। इसलिए सब कुछ घर की नींव पर निर्भर करता था।

इन दोनों निर्माणकर्ताओं ने एक घाटी में अपने घर बनाया जिसके तल पर जलकुंड था। शुष्क मौसम के दौरान यह नदी सूख जाती है या लगभग सूख जाती है, जिसके परिणामस्वरूप यह इन घरों को नुकसान नहीं पहुंचा सकती है। पहला निर्माणकर्ता बुद्धिमान, समझदार है, और *भविष्य के बारे में सोचता है*। वह इस तथ्य से सहमत है कि शुष्क मौसम के बाद, गीला मौसम आ जाएगा। इसलिए वह साल के हर मौसम में खड़े रहने के लिए अपना घर बनाता है। वह रेत या ढीली बजरी को हटा देता है और चट्टान के तल तक जाता है (लूका 6:48)। तब वह इस चट्टान के तल पर अपने घर की नींव खोदता है। दूसरा निर्माणकर्ता मूर्ख है, *क्योंकि वह यह नहीं सोचता है कि भविष्य में क्या होगा*। वह रेत या ढीली बजरी की परत पर अपने घर का निर्माण करता है, जो तली की चट्टान पर विभिन्न मोटाई में स्थित है।

उनके घरों का परीक्षण किया जाता है। बारिश के मौसम के दौरान, पश्चिम में भूमध्य सागर से आंधी चलने पर तेज हवा चलती है। तेज हवाओं के साथ, बादल छाए हुए हैं और घाटी में नदी के जल स्तर में तेजी से वृद्धि होती है। दीवारों के खिलाफ तेज हवाएं चलती हैं और पानी नींव से दूर रेत और बजरी को बहा देता है।

परीक्षण का परिणाम और इस परिणाम का कारण। पानी पहले घर की नींव को खोखला नहीं कर सकता, क्योंकि इसकी नींव चट्टान पर बनी है। लेकिन यह दूसरे घर की नींव के नीचे रेत और बजरी को तेजी से साफ कर देता है। हालांकि तेज हवाएं चट्टान पर बने घर की दीवारों को घेर लेती हैं, लेकिन यह इसे गिरा नहीं सकती, क्योंकि मजबूत नींव इसे बनाए रखती है। लेकिन दूसरे घर की दीवारें तुरंत पानी की धार में गिर जाती हैं और पूरा घर पूरी तरह से बह जाता है!

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

स्रोतों व वर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है ?

ध्यान दें।

(1) यह दृष्टान्त मत्ती अध्याय 5 और 7 में पाया जाता है, पर्वत पर उपदेश। इसके चार भाग हैं। व्यापक और संकरे तरीके के बीच अंतर। मत्ती 5:1-16 में यीशु परमेश्वर के राज्य की धार्मिकता का वर्णन करते हैं। परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के अनुसार जीना लोगों को परमेश्वर की दृष्टि में धन्य बनाता है। परमेश्वर के राज्य के नागरिक पृथ्वी के नमक हैं जो क्षय को दूर रखते हैं, घावों को ठीक करते हैं और हर चीज को स्वाद देते हैं। वे इस दुनिया के अंधेरे में रोशनी के रूप में हैं। यीशु समझाते हैं कि दस आज्ञाएँ कानूनों के लिए केवल बाहरी आज्ञाकारिता से अधिक हैं (दंड कानून के साथ प्रतिरूपण)। यीशु अपने प्रायश्चित के बलिदान के माध्यम से धार्मिकता प्रदान करते हैं और धार्मिकता की माँग करता है कि कैसे परमेश्वर के

राज्य के नागरिकों को जीना चाहिए।

अंत में वह लोगों को संकरे द्वार के माध्यम से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करता है (मत्ती 7:13-14)! वह भविष्यद्वक्ताओं और धर्मों के खिलाफ चेतावनी देता है जो केवल बाहरी धार्मिकता सिखाते हैं (मत्ती 7: 15 - 20) या जिनके पास यीशु मसीह के बिना एक धर्म है (मत्ती 7: 21 - 27)!

झूठे नबियों और सच्चे नबियों के बीच अंतर। मत्ती 7:15-20 में यीशु सिखाते हैं कि झूठे भविष्यद्वक्ता क्या करते हैं। बाइबिल के परमेश्वर द्वारा एक झूठा नबी नहीं भेजा जाता है। वह अपना संदेश लाता है और लोगों को बताता है कि वे क्या सुनना पसंद करते हैं? (यशायाह 30:10; यिर्मयाह 23:9-32; 2तीमुथियुस 4:3-4)! वह ऐसा दिखता है कि यह परमेश्वर द्वारा भेजा गया है और दावा करता है कि वह सच बोलता है।

लोग उस नबी को उसके झूठे फलो से पहचानने में सक्षम होंगे (मत्ती 7:15-20), वो कैसे रहता है रु विशेष रूप से वह कैसे लोगों को मारता है (क्रोध में) (मत्ती 5:21-26), वह महिलाओं को कैसे देखता है (मत्ती 5:27-30), वह तलाक को कैसे देखता है (मत्ती 5:31-32), वह कैसे झूट बोलता है और अपना संदेश बदलता रहता है (मत्ती 5:33-37), वह कैसे बदला लेता है (तथाकथित पवित्र युद्धों के माध्यम से) (मत्ती 5:38-42) और कैसे वह अपने दुश्मनों से नफरत करता है (मत्ती 5:43-48)!

सच्चे भविष्यद्वक्ताओं की धार्मिकता फारसी के रूप में धार्मिक पाखंडियों की तुलना में अधिक है (मत्ती 5:20, 47)!

बात करने वालों और कर्ता के बीच का अंतर। मत्ती 7:21-23 में यीशु दुनिया के धर्मों में ढोंगियों के खिलाफ परमेश्वर के राज्य के नागरिकों को चेतावनी देता है। एक बात करने वाला ऐसा बोलता है जैसे कि वह परमेश्वर को जानता है, लेकिन वह बाइबल के परमेश्वर की इच्छा को नहीं करता है। वह नाममात्र का मसीही है और फिर से जन्मा हुआ मसीही नहीं है (यहुन्ना 3:7)! यीशु इस बात से इनकार नहीं करता कि गैर-मसीही परमेश्वर के अनुज्ञा के कारण कुछ चमत्कार कर सकते हैं। (उदाहरण के लिए मत्ती 10:1 में; यहूदा इस्करियोती) या शैतान की शक्ति के द्वारा (2थिस्सलुकिनियों 2:9-10) या चालबाजी और भ्रम के माध्यम से जो लोग धोखा देने के लिए बनाते हैं। इन लोगों की निंदा करने का कारण यह है कि ऐसा नहीं है कि उनका उपदेश गलत था या उनके चमत्कार सहज थे, लेकिन क्योंकि उन्होंने उसका अभ्यास नहीं किया था जो उन्होंने प्रचार किया था (मत्ती 23:3)! कर्ता एक व्यक्ति है जो कहता है और वह करता है जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है। वह सत्य का उपदेश करता है और जिस सत्य का उपदेश करता है, उसका अभ्यास करता है। एक सच्चे कर्ता को उसके जीवन से जाना जाता है!

कर्ता और श्रोताओं के बीच अंतर। 7:24-27 में यीशु मूर्ख लोगों के खिलाफ परमेश्वर के राज्य के नागरिकों को चेतावनी देते हैं। एक मूर्ख व्यक्ति सुनता है कि यीशु क्या सिखाता है, लेकिन इसे व्यवहार में नहीं लाता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा यीशु की शिक्षाओं को व्यवहार में लाता है।

(2) इस दृष्टान्त की कहानी मत्ती 14:13-14 में उपदेश के रूप में समाहित है।

(3) इस दृष्टान्त का स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग वास्तव में इस उपदेश में निहित है।

यीशु मसीह ने चट्टान पर निर्माण करने को यीशु के शब्दों को व्यवहार में लाने के लिए व्याख्या की। ये शब्द पर्वत पर उपदेश में (मत्ती 5:5-7) और बाइबल के बाकी हिस्सों में दर्ज हैं (तुलना करें मत्ती 28:19-20 से)!

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन-सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। कलीसिया के पिता में से एक, जिसे क्रिसस्टोम (347-407 A.D) ने कहा, जो लोग मसीह की शिक्षाओं का पालन करते हैं, उन्हें न केवल भविष्य में, बल्कि यहाँ और अब आशीष प्राप्त होगी। धर्मी का आशीर्वाद है कि उसके पास ताकत है, जिसे वर्तमान विरोधी नष्ट नहीं कर सकते हैं। वास्तव में अद्भुत बात यह है कि न सिर्फ अच्छे मौसम में, बल्कि विशेष रूप से हिंसक तूफानों (महान उथल-पुथल और नित्य प्रलोभनों) में धर्मी व्यक्ति को थोड़ा सा भी हिलाया नहीं जा सकता है।” क्राइसोस्टम ने कहा कि “बारिश और बाढ़” हमारे जीवन की सभी बीमारियों के लिए रूपक अभिव्यक्ति हैं जिनका कोई भी उल्लेख कर सकता है। मसीह की शिक्षाओं की दृढ़ता “चट्टान” है, जो मानव मामलों की सभी लेहरो से ऊपर है।

चट्टान और रेत। यीशु ने इस दृष्टान्त में इन विवरणों की व्याख्या नहीं की है। इसलिए हमें इन विवरणों के अर्थ के बारे में अनुमान नहीं लगाना चाहिए। फिर भी, यीशु मसीह खुद को और अपनी इच्छा का खुलासा करा है कि वह क्या कहते हैं और क्या आज्ञा देते हैं। इसलिए, यह कहना निश्चित रूप से सही है कि, जहां तक बुद्धिमान और मूर्ख निर्माणकर्ताओं के दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ है, “चट्टान” स्वयं यीशु मसीह (और उनके शिक्षण शब्द) और “रेत” मानव अंतर्दृष्टि और विचार का प्रतिनिधित्व करता है।

चट्टान या रेत पर निर्माण। यीशु इन विवरणों की व्याख्या करते हैं और इसलिए वे अतिआवश्यक विवरण हैं। “चट्टान पर निर्माण” मसीह के शब्दों को व्यवहार में लाने का प्रतिनिधित्व करता है। हर कोई जो यीशु मसीह के शब्दों के अनुसार रहता है, यीशु मसीह पर अपने जीवन का निर्माण करता है! “रेत पर निर्माण” अपने आप में विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है, भविष्य के बारे में नहीं सोचता है और विशेष रूप से मसीह के शब्दों को व्यवहार में नहीं लाता है।

बारिश, लहरें और हवा। यीशु इन विवरणों की व्याख्या नहीं करते हैं। हालांकि, संदर्भ से यह स्पष्ट है कि वे “परीक्षा” का प्रतिनिधित्व करते हैं। परीक्षा झूठे नबियों के रूप में आ सकती है (मत्ती 7:15-20) या विभिन्न परीक्षा (उत्पत्ति 22, अब्राहम; अय्यूब 1-2), या प्रलोभन (उत्पत्ति 39, यूसूफ) या शोक (उत्पत्ति 42:36; अय्यूब 1:18-22), या मृत्यु (प्रेरितों 7:59-60; 9:36-37) लेकिन यह विशेष रूप से अंतिम निर्णय में आएगा (मत्ती 24:42-44; 25:6, 31-33, 1थिस्सलुनीकियों 5:2)।

घर नहीं गिरा। यीशु इस बारे में विस्तार से नहीं बताते हैं। बाइबिल में यह आज्ञाकारी मसीही की जीत से जुड़ा है। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति जो अपने कर्मों से दिखाता है कि उसने यीशु के वचनों को अपने हृदय में धारण कर लिया है उसके जीवन को कभी भी शर्मसार नहीं करा जाएगा (1पतरस 2: 6)! यहां तक कि अंतिम निर्णय का दिन उसके लिए भयानक नहीं होगा, लेकिन इसके बजाय, वह विजय का दिन होगा (1थिस्सलुनीकियों 2:19-20; 3:13; 4:16-17; 2थिस्सलुनीकियों 1:7,10; 2तीमुथियुस 4:8; तीतुस 2:13-14)।

घर एक बड़ी टक्कर के साथ गिर गया। यीशु भी इस बारे में विस्तार से नहीं बताते हैं। बाइबिल में यह अवज्ञाकारी लोगों की पूरी हार से जुड़ा है। प्रत्येक मूर्ख व्यक्ति, जो यीशु मसीह के वचनों को अस्वीकार करके अपनी मूर्खता दिखाता है, उसको न्याय के दिन अस्वीकार कर दिया जाएगा।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 15:14 में अन्ये द्वारा अन्ये को मार्ग दिखाये जाने का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचनों का पालन करने” के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्न है: परमेश्वर के वचन की बजाय किसी अन्ये अगुवे का अनुसरण करना जो मानवीय रीतियों पर निर्भर होता है (अर्थात् बाइबल या व्यवस्था की बातों के परम्परागत अर्थ, विश्वास के परम्परागत अंगीकार, कलीसिया के क्रम व नियमों पर) वह विनाश की ओर अगुवाई करेगा।

जिस व्यक्ति ने रेत पर अपना घर बनाया था, उसने मसीह का वचन सुना, लेकिन फिर भी अपनी राय (अंतर्दृष्टि) और परंपराओं पर निर्भर था। वह व्यक्ति, जिसने चट्टान पर अपना घर बनाया था, मसीह की शिक्षाओं का पालन करके मसीह पर निर्भर था। प्रत्येक महत्वाकांक्षा, जो एक व्यक्ति सम्भाल के रखता है, हर योजना जो वह बनाता है, हर विचार वह जो सोचता है, हर शब्द जो वह बोलता है और हर काम जो वह करता है, जैसे कि यह उसके घर के निर्माण खंड थे। अच्छे निर्माण के खंडों को नीव अर्थात् यीशु मसीह पर रखना चाहिए (1 कुरिन्थियों 3:9-15), विशेषकर यीशु मसीह के शब्दों पालन करके (करने)।

मसीह और परमेश्वर के वचन का पालन परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपनी क्षमताओं या लोगों की राय और परंपराओं पर भरोसा नहीं करते हैं। उन्होंने अपना सारा विश्वास यीशु मसीह (परमेश्वर) में डाल दिया। वे न केवल परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, बल्कि उसे प्रचलन में भी रखते हैं!

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

खोजें और वर्णन करें। कैसे इन वाक्यांशों में से प्रत्येक कैसे सिखाता है उसकी तुलना में यह दृष्टान्त क्या सिखाता है ?

(1) परमेश्वर के शब्द की अस्वीकृति।

पढ़ें। भजन.118:22; नीतिवचन 1:20-33; यशायाह 5:24; 30:1-2; होशे 4:6; लूका 7:30)।

होशे 4:6, क्योंकि तुमने ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है, इसलिए मैं तुमको अपने पुरोहित के रूप में भी अस्वीकार करता हूँ; क्योंकि तुमने अपने परमेश्वर के व्यवस्था को अनदेखा किया है, इसलिए मैं तुम्हारे बच्चों को अनदेखा करूँगा।”

नीतिवचन 1:24-28 में परमेश्वर के वचन का ज्ञान कहता है, “जब से तुमने मुझे अस्वीकार कर दिया जब मैंने तुम्हें बुलाया था और जब मैंने हाथ फैलाये तो तुमने ध्यान नहीं दिया, जबसे तुमने मेरी सलाह को अनसुना किया और मेरी फटकार को स्वीकार नहीं किया, उसके बदले में मैं जब तुमपर आपदा आएगी, मैं हसूँगा; जब तुम पर आपदा हावी हो जायगी तब मैं तुम्हारा उपहास करूँगा तब टीम मुझे पुकारोगे लेकिन मैं जवाब नहीं दूँगा।” ये वाक्यांश चेतावनी देते हैं की कोई भी परमेश्वर के वचन को दूरगामी परिणाम के बिना अस्वीकार नहीं कर सकता है।

यशायाह 30:1-2 उन लोगों को चेतावनी देता है जो उन योजनाओं को अंजाम देते हैं जो परमेश्वर की योजनाएं नहीं हैं, जो परमेश्वर की आत्मा के बिना संबंध बनाते हैं और जो परमेश्वर की सलाह के बिना जीवन में एक दिशा का चुनते हैं।

(2) परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना।

पढ़ें मत्ती 4:4; लूका 8:15; 11:28; यूहन्ना 14:21,23। लूका 8:15 में अच्छी मिट्टी उन मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो एक महान और अच्छे दिल में परमेश्वर के वचन को बनाए रखते हैं और जो दृढ़ता से एक फसल का उत्पादन करते हैं। परमेश्वर के वचन का उद्देश्य मसीहियों के जीवन में फल देना है।

(3) चट्टान के रूप में मसीह।

पढ़ें यशायाह 28:16; रोमियों 9:33; 1कुरिन्थियों 3:11; 10:4; 1पतरस 2:6। 1पतरस 2:6 का कहना है कि यीशु मसीह एक चुना हुआ और कीमती आधारशिला है और जो उस पर भरोसा करता है, वह कभी शर्मसार नहीं होगा। और 1कुरिन्थियों 3:11 का कहना है कि यीशु मसीह ही मसीहियों के लिए एक और एकमात्र आधार है। ये दोनों मार्ग सिखाते हैं कि यीशु मसीह वह चट्टान है जिस पर मसीहियों को अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

ग. परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन के पालन के बारे में इन दृष्टान्तों के मुख्य शिक्षण या पाठ का सारांश

वर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के वचन के पालन के बारे में इन दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *करना* या *करना* सिखाया? **ध्यान दें।**

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर या यीशु मसीह किसकी तरह है।

यीशु मसीह वह चट्टान है जिस पर लोगों को अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए। जो कोई भी यीशु मसीह पर अपना जीवन का निर्माण करता है, वह कभी भी हिल नहीं पाएगा! यीशु मसीह अपनी शिक्षाओं के माध्यम से खुद को और अपनी इच्छा को प्रकट करता है। और यीशु मसीह की शिक्षाएँ बाइबल में दर्ज हैं। जो कोई भी मसीह की शिक्षाओं को व्यवहार में लाता है, वह यीशु मसीह पर अपने जीवन और अनन्त भाग्य का निर्माण कर रहा है। जो कोई भी अपने या किसी और पर अपने जीवन और अनन्त भाग्य का निर्माण करता है, वह निश्चित रूप से विफल हो जाएगा, क्योंकि प्रेरितों 4:12 का कहना है कि उद्धार यीशु के अलावा किसी अन्य व्यक्ति में नहीं है।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसकी तरह होना चाहिए।

मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वे यीशु मसीह, चट्टान पर अपने जीवन का निर्माण करें। जब वे अपने उपदेशों को व्यवहार में लाते हैं, तो मसीही यीशु मसीह, चट्टान पर अपने जीवन का निर्माण करते हैं। मसीह की शिक्षाओं को व्यवहार में लाना इतना आकर्षक क्यों है? यूहन्ना 14:21,23 में यीशु ने कहा, “जिस के पास मेरी आज्ञा है और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है उस से मेरा पिता प्रेम रखे, और मैं उस से प्रेम रखूँ और अपने आप को उस प्रगट करूँ। यदि कोई मुझसे प्रेम रखे तो मेरे वचन को माने, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास और उसके साथ वास करेंगे।” मसीह की शिक्षाओं का पालन करने से, एक व्यक्ति को निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि परमेश्वर उससे प्यार करता है और उसे अनुभव होगा कि परमेश्वर उससे प्यार करता है! मसीह की शिक्षाओं का पालन करने से, वह यीशु मसीह के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों में बढ़ेगा। मसीह खुद को अधिक से अधिक उसके सामने प्रकट करेगा और अपनी दिव्य उपस्थिति को महसूस कराएगा। यह आज्ञा मानने के लिए इतना अधिक नहीं है, लेकिन यह व्यक्तिगत रूप से मसीह को जानने और अपने प्रेम और एक दैनिक जीवन में उसकी उपस्थिति का अनुभव करने का ये महान आशीर्ष है जो वास्तव में एक मसीही को मसीह की शिक्षाओं को मानने के लिए प्रेरित करता है!

5	प्रार्थना (8 मिनट) (प्रतिक्रियाएँ) परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	---

जो आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए** समूह में **बारियाँ लें।**

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी (2 मिनट) (सौंपा गया कार्य) अगले अध्याय के लिए
---	---

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।)

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “बोनेवाले के दृष्टांत” का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **भजन संहिता 101, 103, 104 व 107** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (2) परमेश्वर महिमामय है: 1 इतिहास 29:11.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 7:1-13।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी **नोटबुक का अद्यपन करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शान्त समय) भजन संहिता 101,103,104 और 107
---	--

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 101,103,104 और 107) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (परमेश्वर की महानता) (2) 1इतिहास 29:11
---	---

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(2) परमेश्वर महिमामय हैं। 1इतिहास 29:11. हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान् ठहरा है।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) (रोमियों के नाम पत्री) रोमियों 7:1-13
---	---

परिचय। रोमियों 7:1-13 एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

धार्मिकता (औचित्य) और पवित्रता के लिए व्यवस्था के बंधन से मुक्ति आवश्यक है।

रोमियों के अध्यायों 3 और 4 में पौलुस दिखाता है कि हमें परमेश्वर के सामने धर्मी घोषित किए जाने के लिए व्यवस्था के बंधन से मुक्त होने की आवश्यकता है।

रोमियों के अध्याय 6 और रोमियों 7: 1-6 में पौलुस दिखाता है कि हमें परमेश्वर के सामने पवित्र जीवन जीने के लिए व्यवस्था के बंधन से मुक्त होने की आवश्यकता है।

रोमियों 7 : 7 - 25 में ,पौलुस हमें व्यवस्था के लाभ और प्रभाव को दर्शाता है।

बंधन को व्यवस्था से मुक्त करना आवश्यक है, इसलिए नहीं कि व्यवस्था में कुछ गलत है, बल्कि इसलिए कि लोगों ने व्यवस्था को परमेश्वर के सामने औचित्य और पवित्रता करने के मायने (साधन) में बदल दिया है। व्यवस्था से रिहाई आवश्यक है, क्योंकि व्यवस्था किसी व्यक्ति को धार्मिक या पवित्र नहीं बना सकता है! व्यवस्था

केवल लोगों को उनके उदासीन पापी स्वभाव का अनुभव करवा सकता है और उन्हें पाप का ज्ञान और उनकी पापबुद्धि का गहरा अहसास दिला सकता है।

पाप, व्यवस्था और अनुग्रह के संबंध में एक मसीही की स्थिति,

रोमियों के अध्याय 6 में पौलुस ने पाप के संबंध में मसीही की स्थिति का वर्णन किया है। वह कहता है कि मसीही *पाप की शक्ति के बंधन* से मुक्त है। उनका कहना है कि विश्वासी के विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के अनुग्रह से परमेश्वर के न्यायसंगतता का सत्य विश्वास करने वाले को पाप करने या पाप करते रहने का अधिकार नहीं देता है! विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा न्यायसंगतता की स्थिति पवित्रता की स्थिति में ले जाहि है और इसके परिणामस्वरूप पवित्र जीवन जीने की प्रक्रिया (पवित्रता) होती है!

रोमियों के अध्याय 7 में पौलुस ने *व्यवस्था के संबंध में मसीही की स्थिति* का वर्णन किया है। उनका कहना है कि मसीही *व्यवस्था के बंधन* (न्यायसंगतता के साधन के रूप में और पवित्रीकरण के साधन के रूप में) से मुक्त है। वह इस सच्चाई को दर्शाता है और पुष्टि करता है कि मसीही अब “व्यवस्था के तहत” नहीं है, लेकिन “अनुग्रह के तहत” (रोमियों 6:14) वह इस परिवर्तन के परिणामों को व्यवस्था से मसीह के संबंध के रूप में बताता है। इससे पहले, व्यवस्था के तहत व्यक्ति मौत के लिए फल बो रहा था। वर्तमान में, अनुग्रह के तहत मसीही परमेश्वर को फल देता है।

रोमियों को भेजे गए पत्र में व्यवस्था।

रोमियों को लिखे पत्र में, “व्यवस्था” शब्द पूर्ण अर्थों में परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक आवश्यकता को दर्शाता है जिसे सभी लोगों को बचाने के लिए उनको 100% धर्मी और पवित्र होना चाहिए और लोगों के सभी पापों को 100% सजा दी जानी चाहिए। व्यवस्था परमेश्वर का संपूर्ण नियम है और मोक्ष के लिए परमेश्वर की पूर्ण शर्त (तुलना करें रोमियों 10:5 से)।

और सामान्य अर्थों में यह परमेश्वर की पूर्ण धार्मिक और पवित्र मांगों या आवश्यकताओं को संदर्भित करता है जो नैतिक व्यवस्थाओं, औपचारिक (अनुष्ठान) व्यवस्थाओं और इजरायल के नागरिक व्यवस्थाओं में व्यक्त किए जाते हैं, लेकिन विशेष रूप से वे यहूदी शिक्षक (रब्बी का) के सामान्य रूप से विस्तारित परंपराओं द्वारा समझाए जाते हैं (613 मानव निर्मित व्यवस्था)।

- *नैतिक व्यवस्थाएं* (दस आज्ञाओं) ने पुराने नियम की अवधि के दौरान लोगों को सिखाया कि कैसे परमेश्वर ने मांग की कि उन्हें परमेश्वर और उनके पड़ोसियों के प्रति परमेश्वर के लोगों के रूप में धार्मिक और पवित्र जीवन जीना चाहिए।
- *औपचारिक नियम* (पवित्र स्थानों, पवित्र कार्यालयों, पवित्र समय और पवित्र कार्यों के संबंध में) ने पुराने नियम की अवधि के दौरान लोगों को सिखाया कि वे कैसे परमेश्वर के पास पहुंच सकते हैं, आराधना कर सकते हैं और सेवा कर सकते हैं।
- *नागरिक व्यवस्थाएं* (राजा और न्यायाधीशों, दंड और क्षतिपूर्ति व्यवस्थाओं के संबंध में) ने पुराने नियम की अवधि के दौरान लोगों को सिखाया कि उन्हें अन्यजातियों के देशों के बीच परमेश्वर के लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में कैसे कार्य करना चाहिए।

रोम में यहूदी अभी भी व्यवस्थायी रूप से “व्यवस्था के अधीन” रह रहे थे। और वहां यहूदी पृष्ठभूमि (और कुछ पेशेवरों) से धर्मान्तरित मसीही अल्पसंख्यक थे जो अभी भी *भावनात्मक रूप से “व्यवस्था के अधीन”* रह रहे थे। वे मूसा के व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और नागरिक व्यवस्थाओं) के साथ बड़े हुए थे।

इस स्थिति के कारण यहूदी पृष्ठभूमि के मसीहियों जो व्यवस्था के साथ बड़े हुए थे और अन्यजातियों की पृष्ठभूमि के मसीही जो बिना व्यवस्था के बड़े हो गए थे, के बीच तनाव पैदा हो गया। मसीही यहूदियों में भी

तनाव था, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि कोशिश करने के बावजूद भी वे व्यवस्था का पालन नहीं कर सकते थे, (तुलना करें रोमियों 8:7-8 से)! क्योंकि वे धार्मिक और भावनात्मक रूप से “व्यवस्था के अधीन” रहते थे, वे वैसे ही बने रहे जैसे “मूसा के व्यवस्था के तहत युद्ध के दास या कैदी” थे, भले ही वे मसीही बन गए थे।

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 7:1-13 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है ?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

7:1-6

खोज 1. पौलुस न्यायसंगतता और पवित्रता के लिए व्यवस्था की अपर्याप्तता को दर्शाता है।

पौलुस व्यवस्था के संबंध में मसीही की स्थिति सिखाता है। यह खंड रोमियों 6: 14, में ग्रहण की गई स्थिति का एक चित्रण और पुष्टि है, “हम व्यवस्था के तहत नहीं हैं, लेकिन अनुग्रह के अधीन हैं”। पौलुस परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में परिवर्तन के परिणामों को दिखाता है जब हम अभी भी “व्यवस्था के अधीन” और “अब हम अनुग्रह के अधीन हैं”।

(1) रोमियों 7:1 में पौलुस का तर्क है

व्यवस्था के पास केवल तब तक अधिकार है जब तक एक व्यक्ति वहां रहता है।

यहूदी, यहूदी मसीही और रोम में मुकदमा चलाने वाले जो व्यवस्था के तहत जीना चाहते थे और वास्तव में अभी भी व्यवस्था के अधीन रहते थे, और 100% व्यवस्था का पालन करने के लिए पूरी तरह से बाध्य थे! (गलतियों 3:10; याकूब 2:10)। जब तक वे “व्यवस्था के अधीन” रहते थे, व्यवस्था ने उन पर बिना किसी समझौते के शासन किया। हालांकि, व्यवस्था का अधिकार और प्रभुत्व अस्थायी होता था, जब तक वह “व्यवस्था के अधीन” रहते थे (तुलना करें 3:23-4:7 से)।

(2) रोमियों 7:2-4 में, पौलुस दलील देता है

जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो व्यवस्था के पास अधिकार नहीं रह जाता है।

व्यवस्था से व्यक्ति का रिश्ता विवाह के रिश्ते की तरह होता है। जब तक दोनों शादी के साथी रहते हैं, वे विवाह के व्यवस्था से बंधे रहते हैं। लेकिन जब एक साथी की मृत्यु हो जाती है, तो दूसरा विवाह के व्यवस्था से मुक्त हो जाता है और फिर से शादी कर सकता है।

इसी तरह, जब कोई व्यक्ति व्यवस्था के साथ संबंध समाप्त करता है, तो वह यीशु मसीह के साथ एक नया संबंध शुरू करने के लिए स्वतंत्र है। यहूदियों के सम्मान के लिए, पौलुस यह नहीं कहता है कि “व्यवस्था की मृत्यु हो गई”, लेकिन यह कि “व्यक्ति व्यवस्था के अधिकार और प्रभुत्व के लिए मर गया है।” पौलुस इस सच्चाई को मसीहियों के व्यवस्था से सम्बन्ध पर लागू करता है।

यीशु मसीह की *शाब्दिक मृत्यु* और यीशु मसीह के साथ मसीहियों की *आत्मिक मृत्यु* के माध्यम से (रोमियों 6:3-4), मसीही “पाप के लिए मरें” (रोमियों 6:2) है। यही है, उन्हें “अपराध, दंड और पाप की शक्ति” से मुक्त किया गया है। उन्होंने अपने पापों के प्रति अपनी निष्ठा को त्याग दिया है और पापी दुनिया के आकर्षण और प्रलोभन को “नहीं” कहा है। (तुलना करें कुलुस्सियों 3:3)।

यीशु मसीह की *शाब्दिक मृत्यु* और यीशु मसीह के साथ मसीहियों की *आत्मिक मृत्यु* के माध्यम से, मसीही भी “व्यवस्था के लिए मर गए” (रोमियों 7:4अ) है। अर्थात्, वे “व्यवस्था के अधिकार और प्रभुत्व से मुक्त कर दिए गए हैं।” परमेश्वर की आवश्यकता और व्यवस्था के रूप में मूसा के व्यवस्था में व्यक्त ापलम गए है “व्यवस्था द्वारा और अधिक समय तक या व्यवस्था द्वारा शासित होने के लिए नहीं, बल्कि यीशु मसीह से संबंधित होने और यीशु मसीह द्वारा शासित होने के लिए है। उन्होंने (नैतिक, औपचारिक और नागरिक) व्यवस्था को बनाए रखने के अपने प्रयासों को उचित ठहराया है, क्योंकि यीशु मसीह को उनके सभी पापों के लिए दंडित किया गया था और यीशु मसीह ने *उनके स्थान पर* व्यवस्था को पूरा किया।

जब मसीही यीशु मसीह के साथ एक नया रिश्ता शुरू करते हैं, तो वे अपने पापी स्वभाव के पूर्व संबंध को, परमेश्वर के व्यवस्था (उनकी धार्मिक आवश्यकता) और मूसा के व्यवस्था (न्यायसंगत होने के साधन के रूप में) के लिए समाप्त कर देते हैं।

(3) रोमियों 7:4ब-5 में, पौलुस सिखाता है

व्यवस्था के अधीन लोग मौत के लिए फल का उत्पादन करते हैं,

लेकिन यह कि अनुग्रह के अधीन लोग (मसीही) परमेश्वर के लिए फल लेते हैं।

जो लोग पाप के स्वभाव से नियंत्रित होते हैं और उनमें निहित व्यवस्था के द्वारा पैदा किए गए पाप के जुनून मौत के फल को लाते हैं। लेकिन वे लोग जो व्यवस्था (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता) के लिए मर चुके हैं और मसीह के साथ रखे गए हैं, परमेश्वर को फल देते हैं (तुलना करें गलतियों 5:22-23)।

मसीह अपना नया (पुनर्जीवित) जीवन मसीहियों में जीता है (गलतियों 2; 20)। पहले कि लोग “व्यवस्था” के तहत जीवन नहीं जी सकते वे *अब मसीह के साथ और मसीह के लिए नया (पुनर्जीवित) जीवन जीना चाहते हैं* (कुलुस्सियों 3:3; 1:16)। मसीही अब व्यवस्था के संरक्षकता (अधिकार और नियम) के अधीन नहीं हैं (मूसा के व्यवस्था में व्यक्त की गई परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता), लेकिन अब यीशु मसीह के हैं और यीशु मसीह के अधिकार और आधिपत्य के अधीन हैं (गलतियों 3:23-4:7)।

(4) रोमियों 7:6 में, पौलुस सिखाता है

कि मसीही आत्मा के नए तरीके से सेवा करते हैं

न कि लिखित नियमों के पुराने तरीके से।

जब तक लोग (विशेष रूप से यहूदी) “शरीर” में रहते हैं, अर्थात्, उनके उत्थान से पहले, वे व्यवस्था (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता के अनुसार मूसा के व्यवस्था में व्यक्त) और “व्यवस्था के तहत” जीवित रहते हैं। फिर वे “पत्र के पुराने तरीके (लिखित नियम)” की सेवा करते हैं और व्यवस्था (मूसा के) को बनाए रखते हुए उचित और पवित्र होने का प्रयास करते हैं।

लेकिन वे लोग जो व्यवस्था से मुक्त होते हैं (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता के रूप में) “आत्मा के नए तरीके से सेवा करते हैं”। वे “अनुग्रह के अधीन हैं” (तुलना करें रोमियों 6:14 से)। वे यीशु मसीह में अपने विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से “धार्मिकता और पवित्रता की स्थिति” के अधिकारी हैं। उनके पास अब लिखित व्यवस्था “अभिभावक” के रूप में नहीं है, लेकिन उनमें आत्मा है (मसीह की आत्मा जो उन पर

7:7-13

खोज 2. पौलुस अपने स्वयं के अनुभव से दिखाता है कि व्यवस्था क्या कर सकता है।
नैतिक व्यवस्था अनुभव, ज्ञान और पाप की पुष्टि करता है।

नैतिक व्यवस्था (उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ) पाप के स्वभाव में केवल बुरी इच्छाओं को उत्तेजित कर सकते हैं (पाप की भावनाओं को जगा सकते हैं), (रोमियों 7:5) और इस प्रकार एक व्यक्ति को यह पता चलता है कि वास्तव में उसके पापी स्वभाव को कैसे चित्रित किया गया है। नैतिक व्यवस्था उसे परमेश्वर के सामने सही नहीं ठहरा सकता है और उसे परमेश्वर के सामने पवित्र रहने का कारण भी बना सकता है। इसके बजाय, व्यवस्था उसे केवल उसके पाप का ज्ञान, अनुभव और दृढ़ विश्वास दे सकता है (अर्थात्, उसकी धार्मिकता की कमी और पवित्रता की कमी)!

याद रखें कि शब्द “पाप” का अर्थ है:

- “अपने जीवन में परमेश्वर के लक्ष्य को *याद न रखना*” (तुलना करें नीतिवचन 19:2 से)
- “जीवन के लिए परमेश्वर (यीशु मसीह की धार्मिकता) के आदर्श मानक को *कम करने के लिए*” (रोमियों 3:23)
- “परमेश्वर की धार्मिक माँगों को पूरा करने के लिए (100% धर्म और 100% पवित्र होने के लिए)” (रोमियों 4:15)!
- “परमेश्वर और उनके जीवन के तरीके के खिलाफ *विद्रोह करने के लिए*” (यशायाह 1: 2)
- “परमेश्वर की सच्चाई और शब्द को *मोड़ने के लिए*” (2कुरिन्थियों 2: 17; 4:2)
- और अंत में “यीशु मसीह में *विश्वास नहीं करने के लिए* (जो केवल एक ही है जो हमारी धार्मिकता, पवित्रता और मोक्ष हो सकता है)” (यूहन्ना 16:9; तुलना करें इब्रानियों 4:2 से)

(1) रोमियों 7:7-8 में पौलुस का तर्क है

यह व्यवस्था पाप का ज्ञान पैदा करता है।

लोगों को व्यवस्था के आधार पर धर्म या पवित्रता के लिए उद्धार करने की आवश्यकता है, क्योंकि व्यवस्था धार्मिकता या पवित्रता को पैदा नहीं कर सकता है! केवल व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करने से यह एहसास होता है कि आप पाप करते हैं और व्यवस्था को बनाए नहीं रख सकते। इस प्रकार यह व्यवस्था केवल ज्ञान का उत्पादन कर सकता है कि पाप क्या है और पापी होने का गहरा विश्वास देता है।

नैतिक व्यवस्था पाप नहीं है – यह परमेश्वर के उद्देश्य या इरादे को छोड़ता नहीं है! नैतिक व्यवस्था का निश्चित रूप से एक उद्देश्य और लाभ है – यह लोगों को “पाप” (परमेश्वर की दृष्टि में) के बारे में सिखाता है। “पाप” वह सब कुछ है जो परमेश्वर के लक्ष्य (इरादे) को छोड़ देता है, वह सब कुछ जो परमेश्वर की सीमाओं (नैतिक व्यवस्थाओं) को स्थानांतरित करता है और वह सब कुछ जो परमेश्वर की सच्चाई (शब्द) को मोड़ देता है। पाप बाइबल के परमेश्वर से स्वतंत्र आत्मनिर्भर जीवन जीने के लिए है! यीशु मसीह पर विश्वास ना करना पाप है।

पौलुस ने कभी भी दसवीं आज्ञा के अलावा पाप के रूप में अनुभव (माना) नहीं किया होगा, “तुम लोभ ना करना (बुरी इच्छाओं को मिटाना)” (रोमियों 7:7)। नैतिक नियम के अलावा (दस आज्ञाएँ) पाप “मृत” रहता है, मनुष्य के पापी स्वभाव में पाप निष्क्रिय रहता है। नैतिक व्यवस्था का ज्ञान मनुष्य में जीवन के लिए पापी प्रकृति को उत्तेजित करता है और उसके अंदर हर प्रकार के पापी जुनून (इच्छा) को जगाता है (रोमियों 7:8)।

(1) रोमियों 7:9-11 में, पौलुस का तर्क है

कि व्यवस्था पैदा करता है।

व्यवस्था के बिना मनुष्य सोचता है कि वह जीवित रहता है।

जब तक लोग परमेश्वर के नियम (बाइबल में लिखी या उनके दिल में लिखी) का थोड़ा सा भी हिसाब नहीं लेते, तब तक उन्हें एहसास नहीं होता कि परमेश्वर की नजर में “पाप” क्या है।

- वे सोचते हैं कि वे “जीवित” हैं और वे *शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक और सामाजिक रूप से* जीते हैं, लेकिन आत्मिक रूप से नहीं।
- लेकिन निर्माता (बाइबल के परमेश्वर) से एक व्यक्तिगत संबंध के अलावा वे *केवल बनाए गए संसार के संबंध में* जीवित रहते हैं,
- वे *केवल उसी चीज के अनुसार* जीते हैं जो लोग सोचते हैं, लेकिन उस चीज के अनुसार नहीं जो परमेश्वर ने प्रकट की है।
- वे वैसे ही जीते हैं *जैसा वे खुद तय करते हैं*, न कि परमेश्वर के रूप में।
- वे भ्रम में रहते हैं कि वे काफी “अच्छे, आत्म-धर्मी और आत्मनिर्भर” हैं।
- वे बाइबल के परमेश्वर से *अलग* रहते हैं और सोचते हैं कि उन्हें किसी की जरूरत नहीं है।
- वे इस बात से *अनजान* रहते हैं कि उनके पास एक दुष्ट प्रकृति है।
- वे पाप के लिए परमेश्वर की सजा से *बेखबर* रहते हैं (तुलना करें रोमियों 3: 19- 20 से)!
- वे *नहीं जानते* कि परमेश्वर कैसे चाहते हैं कि उनको कैसे रहना चाहिए आवश्यक रूप से रहना चाहिए (तुलना करें रोमियों 13:8-10 से)
- वे *नहीं जानते* कि पृथ्वी पर अपने सभी दुष्ट रूपों में पाप पर अंकुश कैसे लगाया जाता है (तुलना करें 1तीमुथियुस 1:9-10से) (रोमियों 7:9)

व्यवस्था के साथ आदमी मर जाता है।

हालाँकि, परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में नैतिक व्यवस्था का खुलासा होने के बाद और उसे परमेश्वर की वाचा में जोड़ा गया, (गलतियों 3:17,19) और लोगों ने परमेश्वर के व्यवस्था का गंभीरता से हिसाब लेना शुरू कर दिया, उनके अंदर पाप का स्वभाव उनके शरीर में एक भयावह तानाशाह बन गया और उनके विवेक में भयावह वास्तविकता। जितना अधिक लोग व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करते हैं, उतना ही वे अपने कुल नैतिक और आत्मिक दुष्टता का अनुभव करते हैं (तुलना करें रोमियों 7:14-15 से)। जब लोग परमेश्वर के व्यवस्था का ध्यान रखना शुरू करते हैं, तो वे “मर” जाते हैं, अर्थात्, “अच्छाई, आत्म-धार्मिकता और आत्मनिर्भरता” की उनकी कष्टर स्थिति समाप्त हो जाती है! तब उनकी झूठी सुरक्षा मर जाती है और वे दुख की और अनन्त धिक्कार के डर की स्थिति में आ जाते हैं (रोमियों 7: 9)

पाप में गिरने से पहले का व्यवस्था।

पाप में गिरने से पहले परमेश्वर ने अपना व्यवस्था आदम को दिया (उत्पत्ति 2:15-17): आदमी को परमेश्वर की रचना का ख्याल रखना था और अपनी स्वतंत्र इच्छा से परमेश्वर के द्वारा दी गयी सीमाओं के भीतर रहना था। यदि आदम ने परमेश्वर का नियम (धर्मी और पवित्र आवश्यकता) रखा होता, तो वह धर्मी (परमेश्वर की दृष्टि में) बना रहता। लेकिन क्योंकि उसने परमेश्वर के नियम को नहीं रखा, इसलिए उसकी मृत्यु हो गई। दोनों लैव्यवस्था 18:5 और रोमियों 10:5 “जीवन” को “शाश्वत जीवन” बनाए रखने का उल्लेख करता है, तब तक कि मनुष्य परमेश्वर के नियम को बनाए रखता है, जब तक कि मनुष्य पूरी तरह से धर्मी और पवित्र है! आदम के लिए परमेश्वर के नियम का उद्देश्य था कि वह अपनी धार्मिकता और अनंत जीवन की स्थिति को बनाये रखेगा (और ढीला नहीं) ; (रोमियों 7:10)! लेकिन परमेश्वर का अनंत जीवन इतिहास में केवल एक

बार ही संभव था, मनुष्य के पाप में गिरने से पहले!

पाप में गिरने के बाद का व्यवस्था।

पाप में गिरने के बाद परमेश्वर का व्यवस्था अब (परमेश्वर की आंखों में) अनन्त जीवन और धार्मिकता को (संरक्षण, जारी रखने और निश्चित रूप से नहीं दे सकता है) बनाये नहीं रख सकता है, क्योंकि मनुष्य अधर्म और मृत्यु की स्थिति में आ गया है (आध्यात्मिक, भौतिक और शाश्वत मृत्यु)! गिरने के बाद परमेश्वर का नियम किसी एक व्यक्ति को धर्मी नहीं बना सकता या उसे अनन्त जीवन नहीं दे सकता।

पाप में गिरने के बाद परमेश्वर ने अनुग्रह के द्वारा अपने लोगों को गुलामी और दुख से बचाया और उसके बाद ही उन्हें अपने व्यवस्था (दस आज्ञाएँ) दिए ताकि वे अपने लोगों को यह सिखा सकें कि वे कैसे (चाहिए) उसके बचाये हुए लोगों के रूप में धरती पर रहें (तुलना करें निर्गमन 20:1-2 से)। पाप में गिरने के बाद परमेश्वर ने अपने (नैतिक) व्यवस्था को नियम को मानक के रूप में स्थापित किया कि परमेश्वर कैसे चाहते थे कि उनके लोग उनके जीवित लोगों के रूप में रहें।

फिर भी, हमेशा ऐसे लोग (फरीसियों की तरह) थे, जो मानते थे कि व्यवस्था को बनाए रखने के लिए (जितना संभव हो उतना अच्छा) उन्हें उचित और पवित्र ठहराया जाएगा। लोगों में पाप की प्रकृति लोगों को यह सोचने के लिए गुमराह करती है कि व्यवस्था अभी भी उन्हें सही और पवित्र कर सकता है।

परमेश्वर का व्यवस्था कैसे हर समय 100% आज्ञाकारिता की मांग करता है और जो किसी को भी सही ठहराता है जो पहले से ही एक बार परमेश्वर के नियम की अवज्ञा कर चुका है (याकूब 2:10; गलतियों 3:10)?

पाप में गिरने के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि न केवल व्यवस्था के कार्यों द्वारा न्यायसंगतता पूरी तरह से असंभव थी, बल्कि (नैतिक) व्यवस्था के अनुसार एक पवित्र (आज्ञाकारी) जीवन जीना पूरी तरह से असंभव था! इसके बजाय, परमेश्वर का व्यवस्था लोगों को “परमेश्वर की आंखों में पाप” के बारे में जानकारी देने के लिए परमेश्वर का उपकरण बन गया और उनके पापी स्वभाव और “आत्मिक रूप से मृत” होने की स्थिति की गंभीरता की गहराई का यकीन दिलाने के लिए बना। (रोमियों 7:10ब-11) व्यवस्था लोगों को यह दिखाने के लिए परमेश्वर का साधन बन गया कि वे आध्यात्मिक रूप से मर चुके हैं, कि वे शारीरिक रूप से मर जाएंगे और वे अनन्त मृत्यु (नरक) के लिए बर्बाद हैं (यूहन्ना 3:18,36) – संक्षेप में: कि वे पूरी तरह से खो गए हैं और उन्हें खुद से बाहर उद्धारकर्ता की आवश्यकता है (और उनके सभी धार्मिक प्रयास)!

(1) रोमियों 7:12-13 में पौलुस का निष्कर्ष है कि व्यवस्था “अच्छा” है, लेकिन

ऐसा उपकरण नहीं जो “अच्छाई” पैदा करता हो।

यद्यपि व्यवस्था (परमेश्वर का नैतिक व्यवस्था) अपने आप में “पवित्र, धर्मी और अच्छा” है (रोमियों 7:12) यह लोगों में पवित्रता, धार्मिकता और अच्छाई पैदा नहीं कर सकता है (तुलना करें रोमियों 7:8 से)। इसके बजाये ऐसा उपकरण की जो जीवन का उत्पादन करता है, व्यवस्था एक ऐसा साधन है जो किसी व्यक्ति में पापी प्रकृति को मृत्यु का पैदा करने के लिए उत्तेजित करता है। ऐसा व्यवस्था जो लोगों को एहसास कराता है कि वे आध्यात्मिक और नैतिक रूप से “मृत” हैं। व्यवस्था उनकी अपनी धार्मिकता और “मृत्यु” से झूठी सुरक्षा का कारण बनता है (रोमियों 7:13)।

व्यवस्था “पाप के अत्यधिक पापी बनने का कारण बनता है” (रोमियों 7:13ब)। व्यवस्था लोगों को दर्दनाक रूप से जागरूक करने का कारण बनता है कि वे कितने महान पापी हैं और उनके मानव स्वभाव कितने गैर-आत्मिक और अनैतिक हैं। व्यवस्था “दर्पण” बन जाता है, जिसमें लोग अपने कुल नैतिक और आध्यात्मिक अवगुण के

बारे में देखते हैं और जागरूक हो जाते हैं (तुलना करें रोमियों 3:20 से)। नैतिक व्यवस्था उनके मानव स्वभाव को पूरी तरह से तीव्र ध्यान में लाता है। परमेश्वर की आज्ञाओं की नैतिक और आध्यात्मिक शुद्धता मनुष्य के पापी स्वभाव के नैतिक और आध्यात्मिक अवगुण को और अधिक स्पष्ट रूप से सामने लाती है। (तुलना करें रोमियों 5:20 से)! व्यवस्था के साथ परमेश्वर का उद्देश्य लोगों को यह दिखाना है कि वे कितने अधर्मी और कितने अपवित्र हैं! क्योंकि व्यवस्था केवल एक उपकरण है जो पाप को प्रकट करता है और पापी प्रकृति को गतिविधि के लिए उकसाता है, यह लोगों को न्यायोचित ठहराने के लिए कभी भी उपकरण (साधन) नहीं हो सकता है!

कदम 3. प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियों 1:1-17 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, हों दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

7:7

प्रश्न 1. लोभ का पाप क्या है (बुरी इच्छाओं को दूर करने)?

ध्यान दें।

“लालच” (ग्रीक: एपिथुमिया) का अर्थ हो सकता है “एक अच्छी इच्छा या एक अच्छे अर्थ में लालसा” (1थिस्सलुनीकियों 2:17) लेकिन इसका उपयोग गलत तरह से “निषिद्ध इच्छा” के रूप में किया जाता है। बाइबल में, निषिद्ध इच्छाएँ हैं:

- एक की शादी के बाहर लोगों के प्रति *यौन इच्छाएँ* (भावुक वासना) (1थिस्सलुनीकियों 4:5)
- *मूर्ख इच्छाएँ* (1तीमुथियुस 6:9)
- *भ्रामक इच्छाएँ* (इफिसियों 4:22)
- *सांसारिक इच्छाएँ* (तीतुस 2:12)
- दुराचार और अपराध करने वाले लोगों की *भ्रष्ट इच्छाएँ* (2पतरस 2:7-10)।

“पाप” और “लोभ” में कोई अंतर नहीं है। परमेश्वर का नियम मानव हृदय में ऐसी सभी बुरी इच्छाओं को उजागर करता है (तुलना करें मरकुस 7:20-23 से)। नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) के बिना, लोगों को पता नहीं होता कि ऐसी इच्छाएँ “बुराई” हैं और उनके मानव स्वभाव में पाप के छिपे हुए स्रोत के बारे में पता नहीं होता। जब लोग सचेत हो जाते हैं कि उनके दिल में ऐसी बुरी इच्छाएँ हैं, तो उन्हें पता चल जाता है कि मानव स्वभाव से वंचित है, अर्थात् वह मनुष्य प्रकृति से परमेश्वर के लक्ष्य से चूक जाते हैं और परमेश्वर की इच्छा का विरोध करते हैं। वे अधिक से अधिक आश्वस्त हो जाते हैं कि उनकी पूरी मानव प्रकृति को हटा दिया गया है।

लालच दसवीं आज्ञा के विरुद्ध एक पाप है, “तुम लालच न करना!” (निर्गमन 20:17)। बाइबल में लालच के कई उदाहरण हैं:

- हव्वा ने एक पेड़ के फल का लालच किया, जिसे परमेश्वर ने *मना किया था* (उत्पत्ति 3:6)।
- यूसुफ के भाइयों ने अपने परिवार में अपनी *स्थिति* का लालच किया (उत्पत्ति 37:4)।
- आकान ने यरीहो के *बिगाड़ या खजाने* का लालच किया (यहोशू 7:21)।
- अहाब ने नाबोत की दाख की बारी का लालच किया *जिस पर किसी और का कब्जा था* (1 राजाओं 21:1)।
- अम्नोन ने *एक महिला* का लालच किया जो उसकी अपनी नहीं थी (2 शमूएल 13:1)।
- अबशालोम ने दाऊद के *सिंहासन* का लालच किया (2 शमूएल 15:1)।
- हनन्याह और सफीरा कलीसिया में *प्रतिष्ठा* का लालच किया (प्रेरितों 5:1)।
- शमौन ने *अपनी आँखों में पवित्र आत्मा को चमकाने की जादुई शक्ति* का लालच किया (हाथों को बिछाकर) (प्रेरितों 8:18)।
- देमास ने *वर्तमान दुनिया* का लालच किया (2 तीमुथियुस 4:10)।
- बहुत से लोग दुकानों में या दूसरों के कब्जे में *चीजों* का लालच करते हैं (1 यूहन्ना 2:16)।
- दियुत्रिफेस ने कलीसिया में *पूर्व-प्रतिष्ठित (सर्वोच्च स्थान)* होने का लालच किया (3 यूहन्ना)

7:8

प्रश्न 2. कथनों में क्या अंतर है:

- “व्यवस्था के बिना, कोई पाप नहीं है” (रोमियों 4:15).
- “व्यवस्था के बिना, पाप को ध्यान में नहीं रखा जाता है” (रोमियों 5:13) और
- “व्यवस्था के बिना, पाप मर चुका है” (रोमियों 7:8)?

ध्यान दें। रोमवासियों को लिखे पत्र में, प्रेरित पौलुस “व्यवस्था” शब्द का कई अलग-अलग तरीकों से उपयोग करता है। “व्यवस्था” का मूल अर्थ यह है कि ‘व्यवस्था’ परमेश्वर की एकमात्र आवश्यकता है जो सभी लोगों को अपने जीवन के आरंभ से अंत तक पूर्ण और पूर्ण धर्मी और पवित्र जीवन जीना चाहिए और सभी लोगों के सभी पापों (अपराधों) को पूरी तरह से दंडित किया जाना चाहिए। यह उद्धार के लिए परमेश्वर का पूरा नियम और परमेश्वर की ओर से दशा है, फिर चाहे वह लोगों के दिलों पर लिखे गए व्यवस्था या बाइबल में लिखे व्यवस्था के रूप में ही क्यों न हो। व्यवस्था परमेश्वर का आध्यात्मिक और नैतिक मानक है, जिसके अनुसार उसके सभी तर्कसंगत प्राणी अनुरूप होने के लिए बाध्य हैं। व्यवस्था दोनों ही न्यायसंगत (धर्मी बनने) और पवित्रीकरण (पवित्र बनने) के लिए परमेश्वर का पूर्ण मानक है।

व्यवस्था पूर्ण आज्ञाकारिता और पूरी तरह से पवित्र जीवन के अपने अनम्य मानक के अनुरूप सभी अभाव की निंदा करता है। गलतियों 3:10 कहता है, “वह शापित है जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी गई हर बात को करना जारी नहीं रखता है।” और, याकूब 2:10 का कहना है, “जो कोई भी पूरे व्यवस्था को मानता है और यदि सिर्फ एक बिंदु पर ठेकर खाता है, वह पूरे व्यवस्था को तोड़ने का दोषी है।”

तीनों कथनों में नकारात्मक बयान करके, पौलुस सकारात्मक पर जोर देता है। पौलुस इस बात पर जोर देता है कि व्यवस्था ने हमेशा लोगों को दिखाया कि उनके पास पाप है और परमेश्वर ने उनके पापों के लिए उनकी निंदा की। लेकिन क्योंकि ये तीनों कथन व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की बात करते हैं, इसलिए इनकी अलग से व्याख्या की जानी चाहिए।

(1) रोमियों 4:15। प्रत्येक व्यक्ति की निंदा के लिए व्यवस्था का संबंध।

- नकारात्मक: “जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है, वहाँ कोई अपराध (पाप) नहीं है”
- सकारात्मक: “जहाँ व्यवस्था है, वहाँ अपराध (पाप) भी है”

- “व्यवस्था” यहां परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता है: अर्थात्, सभी लोगों को पूरी तरह से धार्मिक और पवित्र होना चाहिए और सभी पापों को दंडित किया जाना चाहिए।

यहाँ कभी और कहीं भी ऐसा मामला नहीं हुआ कि जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है और वहाँ कोई अपराध नहीं हो !

इस प्रकार, हमेशा और हर जगह जहाँ व्यवस्था मौजूद है, अपराध मौजूद है।

पौलुस “व्यवस्था को परमेश्वर की न्यायसंगतता के रूप में पूर्ण आवश्यकता” के बारे में बोलता है। व्यवस्था हर इंसान के दिल पर लिखा है (रोमियों 2:15) और बाइबल में सफेद पर काला लिखा है (रोमियों 2:17-24)। क्योंकि मानवता के इतिहास में कोई भी इंसान व्यवस्था के बिना नहीं है, और प्रत्येक मनुष्य के अपराध (पाप) का ध्यान (रोमियों 2:6) पर लिया जाएगा और प्रत्येक मनुष्य को उस व्यवस्था के अनुसार आंका जाएगा, जो उसके पास है (रोमियों 2:12)। जहाँ भी व्यवस्था मौजूद है वहाँ व्यवस्था परमेश्वर के क्रोध के बारे में बताता है (रोमियों 4:15)। व्यवस्था पूर्ण आज्ञाकारिता की मांग करता है। क्योंकि कोई भी इंसान (यीशु मसीह को छोड़कर) व्यवस्था का पूरी तरह से पालन नहीं करता है या कर सकता है, हर इंसान की पापी के रूप में निंदा (बर्बाद) होती है। अगर कोई इंसान होता जो पूरी तरह से व्यवस्था का पालन कर सकता, तो वह परमेश्वर के द्वारा न्यायसंगत होगा और अनन्त जीवन प्राप्त करेगा। लेकिन यह केवल मनुष्य के पाप में गिरने से पहले संभव था (उत्पत्ति 2:15-17; तुलना करें लैव्यव्यवस्था 18:5 से; रोमियों 10:5)।

लेकिन क्योंकि सभी लोगों के पास व्यवस्था है और किसी भी व्यक्ति ने व्यवस्था (पूरी तरह से) का पालन नहीं करा है, “हर मुंह को खामोश कर दिया जाता है और पूरी दुनिया को परमेश्वर के प्रति जवाबदेह ठहराया जाता है” (रोमियों 3:19)। परमेश्वर की न्यायसंगतता की पूर्ण आवश्यकता और उसकी निंदा के लिए मानक के रूप में व्यवस्था केवल लोगों के खिलाफ परमेश्वर का क्रोध लाता है!

रोमियों 4:15 में व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया गया है।

(2) रोमियों 5:13। पूरी मानव जाति की निंदा के लिए व्यवस्था से संबंध।

- नकारात्मक: “जब कोई व्यवस्था नहीं है, तो पाप को ध्यान में नहीं रखा जाता है”।
- सकारात्मक: “जब व्यवस्था है, तो पाप को ध्यान में रखा जाता है।”
- “व्यवस्था” यहाँ मूसा (नैतिक व्यवस्था, औपचारिक व्यवस्था और नागरिक व्यवस्था) का लिखित व्यवस्था है जो केवल आदम और मूसा के बीच की अवधि में है।

मूसा के समय से पहले रहने वाले सभी लोगों के पास मूसा का लिखित व्यवस्था नहीं था। नतीजतन, उनकी मूसा के किसी भी लिखित व्यवस्था को स्थानांतरित करने के लिए निंदा नहीं की गई थी।

फिर भी, आदम और मूसा के बीच के ये सभी लोग मर गए। क्योंकि मृत्यु पाप की मजदूरी है (रोमियों 6:23), यह साबित करता है कि आदम और मूसा के बीच सभी लोग किसी न किसी तरह के पाप को साझा किया था। क्योंकि वे मूसा के व्यवस्था के अधिकारी नहीं थे, इसलिए वे मूसा के व्यवस्था के अपने अपराधों के लिए नहीं मरे।

फिर वे किसके व्यवस्था के अपराधों के लिए दोषी और दंडित (मौत के साथ) किये गए थे? एकमात्र संभव निष्कर्ष यह है कि उन्हें उस एकमात्र व्यवस्था के अपराध के लिए दोषी और दंडित किया गया (मृत्यु के साथ) जो कि परमेश्वर ने आदम को पाप के पतन से पहले को दिया था (उत्पत्ति 2:15-17)! परमेश्वर आदम को पूरी मानव जाति का प्रतिनिधि और प्रमुख मानते हैं। जब आदम ने पाप किया और उसे मौत की सजा दी गई, तो पूरी मानव जाति को उनके प्रतिनिधि (आदम) के साथ एकजुटता में दोषी (बर्बाद) किया गया और सजा

दी गयी (मौत के साथ) (रोमियों 5:12, 17अ:18अ, 19अ; 1कुरिन्थियों 15:22)

हालाँकि आदम और मूसा के बीच सभी लोगों ने निश्चित रूप से व्यक्तिगत पाप किए थे, लेकिन उन्हें मूसा के लिखित व्यवस्था के खिलाफ अपने व्यक्तिगत पापों के लिए दंडित नहीं किया गया था, क्योंकि वे अभी तक मूसा के लिखित व्यवस्था के अधिकारी नहीं थे। इसलिए उन्हें दोषी ठहराया गया था और एक व्यवस्था के लिए दंडित किया गया था जो आदम ने उलंघन किया था (उत्पत्ति 2:15-17)।

रोमियों 5: 13 में आदम की प्रतिनिधि जिम्मेदारी पर जोर दिया गया है!

(3) रोमियों 7:8। पाप को सक्रिय करने और दुष्टता का अनुभव करने के लिए व्यवस्था का संबंध।

- नकारात्मक: “व्यवस्था के बिना पाप मर चुका है।”
- सकारात्मक: “व्यवस्था के साथ, पाप जीवन में बढ़ता है।”
- “व्यवस्था” यहाँ नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाएँ) है।

ये बात कहने का एक और तरीका है, “पाप की शक्ति व्यवस्था है” (1कुरिन्थियों 15:56)

पौलुस “व्यवस्था को परमेश्वर की न्यायसंगतता के लिए पूर्ण आवश्यकता” नहीं कहता है, लेकिन “व्यवस्था को पवित्रता (पवित्रीकरण) के लिए परमेश्वर की पूर्ण आवश्यकता के रूप में कहता है। वह परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) के बारे में बोलता है जो लोगों को बताती है कि परमेश्वर की नजर में क्या सही है और क्या गलत है और परमेश्वर के लोगों को दिखाता है कि उन्हें कैसे परमेश्वर के बचाए (न्यायोचित या धर्मी) लोगों के रूप में रहना चाहिए। पौलुस का कहना है कि नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) के बिना पाप में मनुष्य के पाप के स्वभाव में निष्क्रिय रहता है (अर्थात्, “मृत”)। जब तक कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था की अवहेलना करता है, तब तक मनुष्य के पापी स्वभाव में पाप निष्क्रिय है।

लेकिन जब कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था का ध्यान रखना शुरू करता है, तो वह पाप जो उसके पापी स्वभाव में निष्क्रिय होता है, सक्रिय हो जाता है (यह जीवन को बढ़ाता है)! कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था को जितना बनाए रखने की कोशिश करता है, वे और अधिक:

- व्यवस्था मौत के लिए फल लाने के लिए पापी प्रकृति पैदा करता है (रोमियों 7: 5)
- व्यवस्था शरीर में हर तरह के लोभ की इच्छा पैदा करता है (रोमियों 7:8)
- व्यक्ति को उसके शरीर में “पाप के व्यवस्था” का कैदी बनाता है (रोमियों 7:23)
- व्यक्ति को यह महसूस करने का कारण बनता है कि वास्तविकता में उसके मानव स्वभाव को कैसे दोषी किया गया है? (रोमियों 7:23-24)

पाप जीवन में बढ़ता है और वह “मर जाता है” (रोमियों 7:9), अर्थात्, एक अच्छा व्यक्ति, आत्म-धर्मी और अभिमानी होने की उसकी कल्पना की स्थिति समाप्त हो जाती है। तब उसकी सुरक्षा (बचाव) की झूठी भावनाएं मर जाती हैं और वह दुख की स्थिति में आ जाता है और उसे अनन्त शाप की धमकी दी जाती है।

“जीवन” को लाने वाले एक साधन के बजाये, नैतिक व्यवस्था एक ऐसा साधन बन गया है जो “मृत्यु” लाता है। नैतिक व्यवस्था सभी आत्म-धार्मिकता, झूठी सुरक्षा और मनुष्य की भलाई की कल्पना को मारता है। (रोमियों 7:9) नैतिक व्यवस्था लोगो को एहसास करता है की वह अपने पाप और अपराधों के कारन मर चुके हैं (इफिसियों 2:1)।

रोमियों 7:8 में मानव प्रकृति के पाप और अवक्षेपण के व्यक्तिगत अनुभव पर जोर दिया गया है।

प्रश्न 3. इस पद में पौलुस के व्यक्तिगत अनुभव को किस चरण को चित्रित किया गया है? क्या यह एक अपुनर्जीवित व्यक्ति या एक पुनर्जीवित व्यक्ति का अनुभव है?

ध्यान दें। यह सबसे अधिक संभावना है कि यह पद पौलुस के व्यक्तिगत अनुभव को उसके रूपांतरण के ठीक पहले, उसके दौरान और उसके कुछ समय बाद को बताता है।

जब पौलुस अभी भी एक अपुनर्जीवित फरीसी (प्रितों 26:5), था वह स्वयं आत्मनिर्भर था और खुद को किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में मानता था जो मूसा के लिखित व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए बहुत धार्मिक और “धर्मी” था। “व्यवस्थायी वैधता के लिए, दोषरहित” (फिलिपियों 3:6)। अपने जीवन में लंबे समय तक, उसने बाइबल में लिखे व्यवस्था के साथ खुद को बौद्धिक रूप से बाँध कर रखा और 613 रखने के लिए फरीसी के रूप में कोशिश की और मूसा के पारंपरिक व्यवस्थाओं को जोड़ा। लेकिन बस परमेश्वर के नैतिक नियम (दस आज्ञाएँ) जो 100% धार्मिकता और 100% पवित्रता की मांग करते हैं, उसके जीवन में कार्य नहीं किया। वह “नैतिक व्यवस्था से अलग रहता था” (रोमियों 7:9) धार्मिक आत्म-धार्मिकता और एक फरीसी के आत्मिक घमंड में।

पौलुस कहता है, “व्यवस्था के अलावा, पाप मृत है (निष्क्रिय)” पापी मानव स्वभाव में (रोमियों 7:8) पौलुस हमें यह नहीं बताता है कि उसने अपने जीवन में वह परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था को कब गंभीर रूप से लेना शुरू किया, जब उसने जीवन में महसूस करना शुरू कर दिया कि क्या “पाप और लोभ” वास्तव में क्या थे (रोमियों 7:7) और जब नैतिक व्यवस्था ने उसके मानव स्वभाव में हर तरह के लोभ की इच्छा पैदा करने के लिए उसके मानव स्वभाव में पाप को सक्रिय किया (रोमियों 7:8)। यह उसके रूपांतरण से पहले शुरू हुआ होगा उसके फिर से जन्म लेने से पहले।

“जीवन में पाप के बढ़ा और वह मर गया” (रोमियों 7:9) इस अनुभव को संभवतः दमिश्क की सड़क पर उसके नाटकीय रूपांतरण के साथ जोड़ा जाना चाहिए, या दमिश्क में अनन्या के साथ उसके संपर्क के साथ, या उसके तीनों के दौरान घटनाओं के साथ। अरब में उसके 3 वर्ष रहने के दौरान (प्रितों अध्याय 9,22,26; गलतियों 1:13-18)। तब यह था कि मसीही कलीसिया के इस पूर्व उत्पीड़क के पास अपने धर्मांतरण से पहले उस तरह के व्यक्ति को प्रतिबिंबित करने का समय था, जो सताए हुए मसीहियों की गवाहियों के बारे में सोचने के लिए जिसे उसने मरने में मदद करी थी और अपने प्रारंभिक मसीही जीवन में मसीहियों की शिक्षाओं को सुना था। यह तब था जब उनके पास दमिश्क के रास्ते पर यीशु के शब्दों पर स्वयं ध्यान करने का समय था: “मैं नासरत का यीशु हूँ, जिसे आप सता रहे हैं” (प्रितों 22:8) और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं में मार्ग पर ध्यान करने के लिए जो कि मोक्ष के रास्ते को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं (उत्पत्ति 15:6; भजन 32:1-11; यशायाह 52:13-53; 12; हबक्कूक 2:4)।

यह तब था कि पौलुस को अपनी आध्यात्मिक उदासीनता से जगाया गया था, वह इस बात से परिचित हो गया था कि वह वास्तव में कितना पापी था और उसके पापी अभिमान और आत्म-निर्भरता “मर गयी”, अर्थात् “अंत हो गयी (रोमियों 7:9)!” यह तब था जब उसने महसूस किया कि नैतिक आज्ञाएँ, जो परमेश्वर के बचाए हुए लोगों को “जीवित” करने के लिए मार्गदर्शन करने के लिए थीं, वास्तव में उसके जैसे धार्मिक लोगों के लिए “मौत” लाई जिन्हें व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए उसे उचित ठहराने की कोशिश करी थी। व्यवस्था का पालन करने की कोशिश करने से, उसे एहसास हुआ कि वह व्यवस्था का पालन नहीं कर सकता है और उसने व्यवस्था का पालन नहीं किया है, लेकिन यह कि उसका मानव स्वभाव (अब भी एक मसीही के रूप में) पूरी तरह से दोषी था और अपने रूपांतरण से पहले वह आत्मिक रूप से “मृत” हो चुका था। (तुलना करें रोमियों 3:10-20; इफिसियों 2:1-4)

यह वह नैतिक व्यवस्था नहीं था जिसने उसे धोखा दिया था, क्योंकि नैतिक व्यवस्था “पवित्र, धर्मी और अच्छा” है (रोमियों 7:12)।

यह उनका अपना अगाध पापी स्वभाव था, जिसने उन्हें विश्वास करने से रोका था कि उन्हें व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा न्यायसंगत ठहराया जा सकता है (अन्य फरीसियों के 613 पारंपरिक व्यवस्थाओं में व्याख्या की गई है)। उनके पापी स्वभाव ने परमेश्वर के नैतिक व्यवस्थाओं के ज्ञान का दुरुपयोग किया, जो वास्तव में सभी प्रकार की निषिद्ध चीजों को करवाता था। नैतिक व्यवस्था के ज्ञान के कारण उसे एहसास हुआ कि वह कितना निपुण था, उसने अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को कितना खो दिया और उसे एक उद्धारकर्ता की कितनी आवश्यकता थी! नैतिक व्यवस्था के ज्ञान ने उसकी आत्म-धार्मिकता, आत्म-संतुष्टि और कल्पना के आश्वासन को मार दिया कि वह “एक धर्मी फरीसी” था (रोमियों 7:10-11, 13)।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 7:1-13 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 7: 1 - 13 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 7:1-4. कोई भी एक ही समय में व्यवस्था और यीशु मसीह के लिए बाध्य नहीं हो सकता है! आप व्यवस्था के कामों से न्यायोचित होने की कोशिश उसी समय पर नहीं कर सकते हैं जब आप यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से न्यायोचित हो सकते हैं! मसीह के साथ “जीवित” रहने से पहले आपको पहले व्यवस्था के लिए “मरना” चाहिए। यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से आपके द्वारा उचित ठहराए जाने से पहले आपको व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करने से रोकने की कोशिश करनी चाहिए।
- 7:6. केवल जब आप व्यवस्था के लिए “मर जाते” हैं, तो आप पवित्र आत्मा के नए तरीके से सेवा करने के लिए और “जीवित” रहने के लिए स्वतंत्र हैं।
- 7:7. निर्गमन 20:1-17 व 5:21-48 में दस आज्ञाओं में से हर एक पर ध्यान दें और महसूस करना शुरू करें कि आपने व्यक्तिगत रूप से हर एक आज्ञा का एक या दूसरे तरीके से उलंघन किया है। परमेश्वर की नजर में पाप क्या है, इसे समझें।
- 7:8. महसूस करें कि आपका पापी स्वभाव बहुत शक्तिशाली अत्याचारी है। यह परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं के बारे में आपके ज्ञान का इस्तेमाल करेगा ताकि आपमें हर तरह की बुरी इच्छा पैदा हो सके।
- 7:9-11. परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं को किस तरह से तैयार करना आपकी पिछली धार्मिकता, आत्मनिर्भरता और झूठी प्रतिभूति को मौत देता है।
- 7:12. अपने दृढ़ विश्वास को स्पष्ट करें कि परमेश्वर का नैतिक नियम (दस आज्ञाएं) पवित्र, धार्मिक और अच्छी क्यों है।

2. रोमियों 7:1-13 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं अपने पापी स्वभाव के बारे में अधिक यथार्थवादी होना चाहता हूँ। मैं उतना अच्छा नहीं हूँ जितना मैं अक्सर सोचता हूँ कि मैं हूँ। मुझे एहसास है कि मुझमें निषिद्ध इच्छाएं हैं, जैसे निषिद्ध यौन इच्छाएं, मूर्ख इच्छाएं, भ्रामक इच्छाएं, सांसारिक इच्छाएं और नैतिक रूप से भ्रष्ट इच्छाएं। कभी-कभी, हव्वा की तरह, मैंने परमेश्वर द्वारा किसी निषिद्ध चीज का लालच किया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि निषिद्ध इच्छाएं मेरे पापी स्वभाव में पायी जाती हैं। मुझे महसूस होता है कि मैं अपने पापी स्वभाव में कितना दोषी हूँ, और मैं अपने पापी स्वभाव के प्रभुत्व से अधिक से अधिक मुक्त होने की इच्छा रखता हूँ।

मैं अपने उपदेश और शिक्षा में परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था का अधिक उपयोग करना चाहता हूँ। प्रत्येक आराधना सभा में मैं दस आज्ञाओं को पढ़ना चाहता हूँ और शीघ्र ही स्पष्ट रूप से दस आज्ञाओं में से एक का अर्थ सिखाना चाहता हूँ।

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 7:1-13 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5

प्रार्थना (8 मिनट)

(प्रतिक्रियाएँ)

दूसरों के लिए प्रार्थना

दो या तीन के समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6

तैयारी (2 मिनट)

(सौंपा गया कार्य)

अगले अध्याय के लिए

(समूह अगुवा) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।

1. समर्पण। चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 7:1-13 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन भजन संहिता 115, 119:1-88, 119:89-176 व 139 के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। (3) परमेश्वर संप्रभु है: इफिसियों 1:11-12। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 9:14-17 में निहित “दूल्हा, और पैबन्द लगा वस्त्र और मशकें” के दृष्टांत की तैयारी करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शान्त समय) भजन.115, 119:1-88, 119:89-176 और 139
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 115, 119:1-88; 119:89-176 और 139) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (परमेश्वर की महानता) (3) इफिसियों 1:11-12
---	--

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(3) परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं। इफिसियों 1:11-12। उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।

4	शिक्षा देना (85 मिनट) (यीशु के दृष्टान्त) दूल्हा, पैबन्द लगा वस्त्र और मशकें
---	---

मती 9:14-17 में लिखे “दूल्हे, पैबन्द लगे वस्त्र और मशकों के दृष्टान्त”

परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में बताता है।

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की जिन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मती 9:14-17, मरकुस 2:18-22 और लूका 5:33-39.

मती 9:15-17 में, यीशु ने मसीहियों को उपवास के विषय में शिक्षा देने के लिये तीन बहुत ही छोटे दृष्टान्तों का इस्तेमाल किया:

दूल्हे का दृष्टान्त : “क्या बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक कर सकते हैं ? पर वे दिन आएँगे जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे।”

पैबन्द लगाए हुए वस्त्र का दृष्टान्त : “नये कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता; क्योंकि वह पैबन्द वस्त्र से और कुछ खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है।”

मशकों का दृष्टान्त : “नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं। लूका अपनी पुस्तक के 5:39 में इस बात को भी इस दृष्टान्त में जोड़ा, “कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना ही अच्छा है।”

परमेश्वर के राज्य में उपवास के महत्व को बताने के लिए इस शिक्षा को तीन बार दोहराना बहुत ज़रूरी है!

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

वर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं ?

ध्यान दें।

एक दूल्हा और उसके बाराती। पहला दृष्टान्त (तुलना)। दूल्हा और बाराती, विवाह में जो आनन्द मनाते हैं वह संसार के प्रत्येक समाज में एक आम वास्तविकता है।

नये कपड़े का पैबन्द। दूसरा दृष्टान्त (तुलना)। कपड़े बनाने वाले सभी लोग जानते हैं कि जब एक पुराने और बुरी तरह से पहने हुए कपड़े के छेद पर नये कपड़े का पैबन्द लगाया जाता है तो वह कपड़े को सिकोड़ और फाड़ देता है।

मशकें। तीसरा दृष्टान्त (तुलना)। एक मशक आमतौर पर बकरी या भेड़ की खाल से बनी होती है। चमड़े को जानवर से अलग करने के बाद सुखाया जाता है। बालों को बहुत छोटा काटा जाता है और फिर चमड़े को बाहर से भीतर की ओर पलटा जाता है। फिर चारों पैर और पूँछ के छेदों को डोरियों से बन्द कर दिया जाता है और गर्दन का छेद पात्र का मुँह बनता है।

नया दाखरस। नए दाखरस में हमेशा खमीर पैदा होता है। इसलिए यदि नए दाखरस को पुरानी मशकों में भरा जाएगा तो खमीर के दबाव से मशक फट जाएगी और परिणामस्वरूप मशक और दाखरस दोनों का नुकसान होगा।

2. सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी के” संदर्भ में दृष्टान्त की “परिस्थिति” और “व्याख्या या अनुप्रयोग” हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या *उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व वर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है ?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 9:14-17 में पायी जाती है।

इन दृष्टान्तों को मत्ती, मरकुस और लूका तीनों सुसमाचारों में मत्ती (लेवी) की बुलाहट के तुरन्त बाद बताया गया है। यदि इन दोनों घटनाओं के बीच अस्थाई सम्बन्ध था, तो पुराने और नए के बीच तुलना नाटकीय रूप से बढ़ जाती है। जिस समय यीशु और उनके चेले मत्ती के घर में कई चुंगी लेनेवाले और पापियों के साथ भोजन कर रहे थे, उसी समय यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और फरीसियों के चेले उपवास कर रहे थे।

लेकिन भले ही इन दोनों घटनाओं के बीच कोई कालानुक्रमिक सम्बन्ध नहीं था, लेकिन निश्चित रूप से एक तार्किक सम्बन्ध है। तथ्य यह है कि यीशु और उनके शिष्यों की एक से अधिक अवसरों पर चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ संगति थी (मत्ती 11:19; लूका 7:34; 15:1; 19:1-10)। लेकिन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और फरीसियों के चेले इस तरह के जोशीले उत्सवों से दूर रहते और यहाँ तक कि कठोर नियमों का अभ्यास भी करते थे। यह तुलना पहले या बाद में उपवास के प्रश्न का नेतृत्व करने के लिए बाध्य हो गई।

(2) इन दृष्टान्तों की कहानियाँ मत्ती 9:15-17 में लिखी हुई है।

(3) इन दृष्टान्तों की व्याख्या और उनका अनुप्रयोग नहीं दिया गया है।

इनकी व्याख्या और अनुप्रयोग कहानियों और परिस्थितियों से निकाली जानी चाहिए।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं ?

ध्यान दें।

यीशु इन दृष्टान्तों में किसी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते। विवरण की प्रासंगिकता इन शब्दों का बाइबल के अन्य भागों में अर्थ और संदर्भ के अनुसार है।

दूल्हा। बाइबल अक्सर परमेश्वर और उनके लोगों या मसीह और कलीसिया के बीच सम्बन्ध की तुलना दूल्हा और दुल्हन के प्रेम सम्बन्ध से करती है (यशायाह 54:1,5; 62:5; यिर्मयाह 31:32; मत्ती 25:1 ff; यूहन्ना 3:29; 2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 5:32; प्रकाशितवाक्य 19:7; 21:9)। 2 कुरिन्थियों 11:2 और इफिसियों 5:32 के अनुसार, “दूल्हा” यीशु मसीही को दर्शाता है और “दुल्हन” मसीही कलीसिया को दर्शाती है। यीशु ने स्वयं की उपस्थिति की तुलना पृथ्वी पर विवाह के भोज से की। यह प्रश्न “क्या बाराती तब तक शोक मना सकते हैं जब तक दूल्हा उन के साथ है?” इतना स्पष्ट है कि इसका उत्तर होना चाहिए “नहीं, वे तब तक शोक नहीं मना सकते जब तक कि दूल्हा उन के साथ है!” यह प्रासंगिक विवरण है।

बाराती। शाब्दिक रूप से “विवाह के भवन में बाराती” दूल्हे के मेहमानों को दर्शाते हैं जो दूल्हे के पास खड़े होते हैं और विवाह में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। वे विवाह के उत्सव को सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। वे मसीहियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह प्रासंगिक विवरण है।

पुराना वस्त्र। यीशु इस विवरण को कोई विशिष्ट अर्थ नहीं देते हैं। लेकिन संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि पुराना वस्त्र पुराने नियम का प्रतिनिधित्व करता है जैसा कि फरीसियों द्वारा पारित किया गया था; चीजों का

पुराना क्रम जो कि धार्मिक अगुवों के द्वारा लागू किया गया था, उदाहरण के लिए उपवास की पुरानी प्रणाली के साथ-साथ अन्य व्यवहारिक अनुप्रयोग जो कि फरीसियों के द्वारा पुराने नियम की अनुष्ठानिक व्यवस्था से लिए गए थे।

नये वस्त्र का पैबन्द। यीशु द्वारा इस विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया गया। लेकिन संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि “नये वस्त्र का पैबन्द” यीशु और प्रेरितों द्वारा प्रगट किए गए नये नियम का प्रतिनिधित्व करता है; चीजों का नया क्रम जो कि परमेश्वर के द्वारा स्थापित किया गया, विशेषरूप से मसीह में परमेश्वर का उद्धार। संदेश यह है कि जिस प्रकार नये वस्त्र का पैबन्द पुराने वस्त्र पर नहीं लगाया जा सकता, उसी प्रकार चीजों का नया क्रम पुराने क्रम के साथ तालमेल नहीं खाता! यह प्रासंगिक है क्योंकि यह दृष्टान्त का मुख्य संदेश है।

पुराना दाखरस और पुरानी मशकें। यीशु इन विवरणों की कोई व्याख्या नहीं करते हैं। लेकिन संदर्भ से यह पता चलता है कि “पुराना दाखरस” यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और फरीसियों के चेलों के नियम कानून और आनन्दहीनता और उपवास का प्रतिनिधित्व करता है। “पुरानी मशकें” यहूदियों की पुरानी अनुष्ठानिक व्यवस्था के तौर तरीकों को प्रगट करने, जैसे उपवास के दिनों और उपवास का अभ्यास करने का प्रतिनिधित्व करती हैं।

विस्तार से, “पुराना दाखरस” यहूदी धर्म की विषय वस्तु का भी प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें यहूदी गुरुओं द्वारा व्याख्या किए गए सैकड़ों नियम कानून थे जिन्हें “पुरानियों की परंपरा” कहा गया। “पुरानी मशकें” यहूदियों की मानव द्वारा नियोजित प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्हें धर्म प्रणाली में अटल परम्पराओं के रूप में नियोजित किया गया था। यहूदी धर्म प्रणाली में सत्त के दिन, उपवास के दिन, विशेष धार्मिक पर्व, और यरुशलेम की तीर्थ यात्रा, बलिदान, सब चीजों का दसमांश देना, खतना, धोने और खाने के नियम शामिल थे।

नया दाखरस और नई मशकें। यीशु इन विवरणों की व्याख्या नहीं करते हैं। लेकिन संदर्भ से यह स्पष्ट है कि “नया दाखरस” मसीह में उद्धार और आशीषों का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए है जो उन्हें स्वीकार करने के लिए इच्छुक हैं। और “नई मशकें” उद्धार और मसीह में नए जीवन को व्यक्त करने के नए तरीकों का प्रतिनिधित्व करती हैं अर्थात् आनन्द और धन्यवाद के साथ।

वे उस नए तरीके का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसमें मसीही लोग परमेश्वर से सम्बन्ध रखते हैं और स्वतन्त्र और सहज रूप से परमेश्वर की सेवा और आराधना करते हैं। मसीही धर्म में उद्धार, छुटकारा, नवीनीकरण और पूर्ण परिवर्तन शामिल हैं। उनका धार्मिक रूप मसीहियों के एक ऐसे समाज को व्यक्त करता है जो धन्यवादी और आनन्दित हैं, जो परमेश्वर की आराधना और सेवा इच्छुक होकर और उत्सुकता से करें।

यह कहना सही नहीं है कि “पुराना दाखरस” व्यवस्था के कर्मों द्वारा उद्धार का प्रतीक है और “नया दाखरस” अनुग्रह के द्वारा उद्धार का प्रतिनिधित्व करता है। इसके विपरीत तुलना, चीजों के पुराने क्रम जो कि अक्सर स्पष्ट रूप से इस्त्राएल के धार्मिक अगुवों द्वारा निर्मित मानव संस्थित थे और चीजों के नए क्रम जिनमें यीशु मसीह की शिक्षाएँ शामिल हैं, के बीच है। तुलना स्पष्ट रूप से मनुष्यों द्वारा निर्मित परम्पराओं (मानव निर्मित कानून और नियम) और अलौकिक शिक्षाओं (बाइबल में) के बीच है!

तुलना पुराने नियम और नए नियम के बीच नहीं है, क्योंकि पुराने नियम की शिक्षाओं (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18) और नए नियम में यीशु मसीह की शिक्षाओं के बीच नियमितता थी (मरकुस 12:30-31)। हालाँकि, व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों और फरीसियों ने पुराने नियम की सच्ची शिक्षाओं को मानव निर्मित परम्पराओं (कानून और नियमों) के पहाड़ के नीचे दफ़ना दिया था। तुलना फरीसियों की कठोर परम्पराओं और बाइबल की सत्य शिक्षाओं के बीच है। उपवास और शोक के पुराने तरीके ने आनन्द को पूर्ण रूप से बाहर कर

दिया, लेकिन परमेश्वर से सम्बन्ध और परमेश्वर की सेवा का नया तरीका उद्धार का आनन्द है!

कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि “पुराना ही अच्छा है” (लूका 5:39)। वास्तव में यीशु मसीह ने जो नया तरीका प्रस्तुत किया वह “पुराने” (मूल) शब्द का सर्वोत्तम अर्थ प्रदान करता है, क्योंकि यह पुराने नियम की आवश्यक शिक्षा को पुनःस्थापित करता है। भजन 23:5-6 “तू मेरे शत्रुओं के सामने मेरे लिए मेज लगाता है” और यशायाह 61:7, “तुम्हारी नामधराई के बदले दूना भाग मिलेगा, अनादर के बदले तुम अपने भाग के कारण जयजयकार करोगे; तुम अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होगे; और सदा आनन्दित बने रहोगे” की तुलना करें! तूने मेरे सिर पर तेल मला है; मेरा कटोरा उमड़ रहा है। निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ-साथ बनी रहेगी और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूँगा!” वास्तविक आनन्द और सिद्ध महिमा पाने का एकमात्र तरीका केवल वह है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की और जो स्वयं परमेश्वर करता है न कि वह जो धार्मिक लोग अपने धार्मिक नियम कानूनों और धार्मिक अभ्यासों के द्वारा सिखाते हैं!

हालाँकि फरीसियों ने प्राचीनों की परम्परा का उल्लेख “पुराने दाखरस” शब्द के रूप में किया। यह शब्द फरीसियों और उनके अनुयायियों के अत्यंत रूढ़ीवाद और गहरे और अटल परम्परावाद पर एक टिप्पणी है। वे अपने स्वयं के निर्णयों और दृष्टिकोण पर अड़े रहे जबकि परमेश्वर के वचन को अस्वीकार करते रहे जो कि पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं और नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा सिखाया गया (मत्ती 15:6-9)। उन्होंने इस बात पर विश्वास नहीं किया कि यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन में व्यवस्था को हर प्रकार से पूरा किया (मत्ती 5:17; इफिसियों 2:15; कुलुस्सियों 2:14)। उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह से बढ़कर मानव निर्मित कानूनों का चुनाव किया। उन्होंने परमेश्वर के वचन से बढ़कर मानव निर्मित परम्पराओं को प्राथमिकता दी। उन्होंने परमेश्वर की ताज़ी हवा से बढ़कर मानव निर्मित घुटन को चाहा। उन्होंने आंतरिक परिवर्तन की कीमत पर बाहरी धर्म को अधिक पसन्द किया। यह स्पष्ट है कि उन्हें हृदय के कट्टर परिवर्तन की आवश्यकता थी। लेकिन सभी परिवर्तन दर्दनाक होते हैं क्योंकि इसके लिए स्वयं का इंकार करने की, “स्वयं” के लिए मरने की और किसी को अपने स्वयं के विचारों और धार्मिक परम्पराओं के लिए मरने की आवश्यकता होती है।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 9:14-17 में दूल्हे, कोरे कपड़े का पैबंद और मशकों के दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में उपवास” के विषय में हैं।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। चीजों का नया तरीका जिसका परिचय यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन में दिया, वह चीजों के पुराने तरीकों से मेल नहीं खाता जिनमें मानव निर्मित परंपराएँ और बोबीलोन से निकलने के बाद फरीसियों द्वारा सिखाए गए मानव निर्मित नियम शामिल थे। चीजों के पुराने तरीकों में प्राचीनों (रब्बियों) की परंपराओं को, शोक और उपवास जैसी मानव-संचालित धार्मिक प्रथाओं के रूप में व्यक्त किया गया है। चीजों के नए तरीके में उद्धार, चंगाई, पुर्नस्थापना, परिवर्तन और लोगों का नवीनिकरण शामिल है, जो यीशु मसीह के रूप में आयोजित किया गया जैस, उद्धार का आनंद।

चीजों का पुराना क्रम *प्राचीनों की परंपराओं* के द्वारा निर्धारित किया गया था (देखें नियमावली 11 अध्याय 25)। प्राचीनों की परंपराओं में उपवास बहुत शामिल था। उपवास किसी के पापों पर शोक व्यक्त करने की एक अभिव्यक्ति था, लेकिन वास्तव में यह परमेश्वर की भक्ति का द्रोह और दिखावा बन गया था (मत्ती 6:16)। यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले सप्ताह में दो बार उपवास किया करते थे (लूका 18:12)!

मत्ती 11:4-5 और लूका 4:18-19 में चीजों के नए क्रम को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है: चीजों के नए क्रम में, बीमारों की चंगाई, विकलांगों का पुनर्स्थापन, दुष्टात्मा ग्रस्तों का स्वतंत्र होना, मुर्दों का जी उठना, कंगालों को सुसमाचार सुनाना, परमेश्वर के पक्ष (अनुग्रह) की घोषणा करना जैसी चीजें शामिल हैं। उद्धार का आनंद अपने सभी रूपों में शोक और उपवास के सभी रूपों के साथ मेल नहीं खाता, जैसा कि यीशु के प्रथम आगमन को एक महान घटना के रूप में देखा जाना चाहिए जो कि लोगों के साथ घटी!

उद्धार का आनंद परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग यूहन्ना और फरीसियों के चेलों के समान उपवास और शोक नहीं करते, लेकिन वे अपने उद्धार की वास्तविकता के कारण यीशु मसीह की उपस्थिति में आनंदित होते हैं। जबकि उपवास के पुराने तरीके ने आनंद को पूर्ण रूप से दूर कर दिया था, उद्धार के आनंद ने परमेश्वर के साथ नए संबंध और परमेश्वर की सेवा के नए तरीके का परिचय दिया! मसीही विशेष रूप से गाने और संगीत के द्वारा आनंद व्यक्त करते हैं (भजन 33:1-4)!

बेशक इसका यह अर्थ नहीं है कि मसीहियों के लिए सांसर के सताव, अपनी समस्याओं में दुःखी होना या अपने स्वयं के पाप या किसी प्रिय जन की हानि पर शोक करने का कोई स्थान नहीं है। यीशु वास्तविक दुःख, शोक और उपवास के विरुद्ध नहीं बोल रहे, लेकिन इस्त्राएल के लोगों के उपवास और शोक के बाहरी धार्मिक ढोंग और दिखावे के बारे में बोल रहे हैं। तुलना पूर्ण रूप से मानवीय संस्थानों और अलौकिक शिक्षा के बीच है।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालांकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें और चर्चा करें। ये गद्यांश, दृष्टान्त में दिये गये सत्य का किस प्रकार समर्थन करते या शिक्षा देते हैं?

सिखाएं। उपवास (इब्रानी: टसोम, यूनानी: नेस्टुओ) *आत्मिक उद्देश्यों के लिए भोजन से स्वेच्छिक परहेज* है। उपवास भूख हड़ताल से अलग है, जिसका उद्देश्य किसी विशेष कारण की ओर ध्यान आकर्षित करना है, सामान्यतः एक राजनैतिक कारण। उपवास भूखे रहने से भी अलग है, जिसका उद्देश्य वजन कम करना या शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना होता है। साधारण उपवास में केवल भोजन से परहेज शामिल था पानी से परहेज शामिल नहीं था। साधारण उपवास के तरीके में केवल एक दिन उपवास करना शामिल था, लंबे समय तक उपवास करना शामिल नहीं था।

(1) **व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में उपवास के विषय में मूल शिक्षा (पुराना नियम)।**

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 16:29-34; 23:26-32 (1446 ई.पू.); गिनती 29:7 (1407 ई.पू.) और यशायाह 58:6-12 (740-680 ई.पू.)।

खोजें और चर्चा करें। उपवास का मूल अर्थ और उपवास की अवधि क्या थी।

दो इब्रानी शब्द हैं जिनकी पहचान करना महत्वपूर्ण है। इब्रानी शब्द “इन्ना नेपहिश” अर्थात् किसी की आत्मा को नम्र करना, किसी की आत्मा को दबाना, किसी का स्वयं का इंकार करना। और इब्रानी शब्द “टसोम” का अर्थ है उपवास या भोजन खाने से परहेज करना।

पुराने नियम की अवधि के दौरान (1446-1407 ई.पू.) व्यवस्था इस्त्राएल के लोगों से यह मांग करती थी के वे पूरे वर्ष में एक दिन अपनी आत्मा को नम्र करें! यह प्रयश्चित का दिन था (सातवें महीने का दसवां दिन)। इस दिन को सब्त का दिन, पूर्ण विश्राम का दिन माना जाता था, आर्थात्, सभी को ऐसे कार्यों को कारने से परहेज करना पड़ता था जिसकी व्याख्या सामान्य जीवन के कार्यों के रूप में की जा सकती थी। प्रयश्चित के दिन, इस्त्राएल के लोगों को यह आज्ञा दी गई थी कि वे अपने आप को नम्र करें ताकि वे इस बात के प्रति और अधिक जगरूक रहें कि वे परमेवर के मापदंड से बहुत दूर हो चुके हैं! प्रयश्चित का दिन स्वयं को जाँचने, स्वयं को नम्र करने, अपने पापों का अंगीकार करने और अपने पापों के लिए प्रयश्चित करने का दिन था। यह स्वयं का इंकार करने का दिन था। हालाँकि उस दिन किसी भी कार्य को करना वर्जित था लेकिन खाना खाने के लिए स्पष्ट रूप से कोई मनाही नहीं थी। भोजन से परहेज करना स्वयं का इंकार करने, स्वयं को नम्र करने का एक तरीका था, लेकिन यह निश्चित रूप से मुख्य तरीका नहीं था!

यशायाह भविष्यद्वक्ता (740-680 ई.पू.) (परमेश्वर के वचन) ने सिखाया कि दुष्टता और निर्दयता से परहेज करना स्वयं का इंकार करने, स्वयं को नम्र करने का तरीका था। जिस प्रकार के उपवास का चुनाव परमेश्वर करते हैं वह यह है कि एक मनुष्य स्वयं का इंकार करे और स्वयं को नम्र करे अन्याय से परहेज करने के द्वारा और इसके बजाय सताए हुआ को स्वतंत्र करे, दासत्वता के जूओं को तोड़े, अनार्यों और मारे मारे फिरने वालों को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना। वह अन्धेर करना, उँगली उठाना और दुष्ट बातें बोलना छोड़ दे, भूखों को भोजन दे और दीन दुखियों को संतुष्ट करे। (यशायाह 58:6-12)

(2) बाइबल की ऐतिहासिक किताबों में उपवास के आभ्यास के विकास का ऐतिहासिक वर्णन।

पढ़ें यशायाह 58:3,5 और भजन. 35:13 (1000-400 ई.पू.)।

खोजें और चर्चा करें। इस्त्राएल के इतिहास में उपवास का अर्थ और अवधि कैसे बदल गई, जब कि इसकी आवश्यकता भी नहीं थी?

उपवास का अर्थ धीरे धीरे बदल गया। धीरे-धीरे आत्मा की पीड़ा या आंतरिक नम्रता भोजन का परहेज (उपवास) बन गई। आत्मा को नम्र करना शारीरिक उपवास बन गया। भजन और यशायाह की पुस्तक में ये दो शब्द बारीकी के साथ जुड़े हुए हैं। लेकिन इससे बढ़कर “आत्मा को नम्र करना या पीड़ित करना” (इब्रानी: इन्ना नेपहिश) शब्द का मूल अर्थ “उपवास” (इब्रानी: टसोम) के लिए पर्याय बन गया।

अंत में राजाओं के बीच की अवधि (740-680 ई.पू.) में इन दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ के लिए किया जाने लगा। और भजन 35:13 में “उपवास” वह माध्यम था जिसके द्वारा आत्मा को पीड़ित किया गया। इस प्रकार मूल अर्थ “आत्मा को नम्र करना या पीड़ित करना” को एक विश्राम के दिन स्वयं को जाँचने, परमेश्वर के सामने स्वयं को नम्र करने, अपने पापों का अंगीकार करने और स्वयं के पापों के लिए पश्चयाताप करने के रूप में व्यक्त किया गया था, लेकिन अब यह एक ऐसे दिन के रूप में प्रगट कर दिया गया है जिसमें लोग बाहरी रूप से जीवन की सुख सुविधाओं और स्वयं का इंकार करते हैं अर्थात् एक उपवास के दिन में! बाहरी रूप से भोजन से परहेज का दिखावा और अधिक महत्वपूर्ण हो गया!

पूर्व के लोगों के लिए उपवास आपदाओं और मृत्यु से जुड़ा था। इसलिए, शोक के अवसर पर (1शमूएल 31:13; 2शमूएल 3:35) और राष्ट्र दिवस पर उपवास करना परंपरागत था (न्यायियों 20:26; 1शमूएल 7:6; एस्तेर 4:16)। स्वयं को जाँचने, स्वयं को नम्र करने, पापों का अंगीकार करने और पापों का पश्चयाताप करने

से बढ़कर, भोजन से परहेज करना आत्मा को पीड़ित करने का माध्यम बन गया।

उपवास का बढ़ना। समय के साथ इस्त्राएल में उपवास का प्रचलन बढ़ने लगा।

- राजाओं की अवधि की शुरुआत में (लगभग 931 ई.पू) उपवास केवल एक दिन के लिए सूर्योदय से सूर्यास्त तक (2शमूएल 1:12) और सात दिन के लिए (1शमूएल 31:11-13) हुआ करता था।
- राजाओं की अवधि के अंत में (586 ई.पू) 40 दिन के लिए अलौकिक और पूर्ण उपवास हुआ करता था (1राजाओं 19:8)।
- दानियेल के समय में 3 सप्ताह के लिए आंशिक उपवास हुआ करता था (दानियेल 10:3)।
- और निर्वासन के अंतिम समय में 520-518 ई.पू) पाँचवें और सातवें महीने के दौरान उपवास हुआ करता था (जकर्याह 7:3-5), और जल्द ही प्रत्येक वर्ष के पाँचवें, सातवें और दसवें महीने के दौरान उपवास होने लगे (जकर्याह 8:19)!
- अंत में यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर, हर सप्ताह में दो बार उपवास हुआ करता था, जिसका अभ्यास फरीसियों द्वारा किया गया (लूका 18:12)।

लैव्यव्यवस्था 16:29-34 में परमेश्वर द्वारा पुराने नियम के लोगों के लिए स्वयं की आत्मा को नम्र करने (जिसमें भोजन से परहेज करना शामिल हो सकता है) को छोड़ कर, बाकि के सारे उपवास पूर्णरूप से मानव निर्मित सांस्थान थे, परमेश्वर द्वारा नियोजित नहीं! ये सभी उपवास “प्राचीनों की परंपरा” का भाग थे (तुलना करें मरकुस 7:1-13 से)!

(3) बाइबल में उपवास का उद्देश्य।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के इतिहास में उपवास के क्या उद्देश्य थे?

जबकि बाइबल में “उपवास” भोजन से परहेज के अर्थ में *वर्णित* है, यह निश्चित रूप से परमेश्वर के लोगों के लिए *आवश्यकता के रूप में नहीं सिखाया गया*, संभावित रूप से पश्चयाताप के दिन को छोड़ कर। ये सभी “उपवास” पूर्ण रूप से मनुष्यों द्वारा संस्थापित थे परमेश्वर द्वारा नियोजित नहीं। समय के साथ यह इस्त्राएली संस्कृति का हिस्सा बन गए, जिसे परमेश्वर के राज्य की संस्कृति समझ कर भ्रमित नहीं होना चाहिए।

यीशु मसीह और कलीसिया के अगुवों के उपवास के उदाहरण का अनुसरण किया जा सकता है, लेकिन अन्य मसीहियों या संपूर्ण कलीसिया के लिये यह अनिवार्य नहीं है।

उपवास दीनता की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति थी। *पढ़ें* नहेम्याह 9:1-3 में (लगभग 400 ई.पू) ऐतिहासिक विवरण को। उपवास दीनता की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति थी जिसके दौरान एक व्यक्ति अपने पापों के लिए शोक और अपने पापों का अंगीकार किया करता था। यह अक्सर टाट पहनने या सिर पर राख या धूल डालने के साथ होता था। उपवास के दौरान इस्त्राएली अपने पापों का अंगीकार और अपने पूर्वजों की दुष्टता का अंगीकार किया करते थे।

उपवास विलाप करने की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति थी। *पढ़ें* 2शमूएल 1:11-12 और 2इतिहास 20:2-4 में ऐतिहासिक विवरण को। उपवास विलाप की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति था, जिसके दौरान लोग अपनी हानि और आने वाले खतरों के लिए विलाप किया करते थे। यह कभी-कभी रोने और अपने कपड़े फाड़ने के साथ होता था। राजा दाऊद और उसके जनों ने राजा शाऊल और इस्त्राएली सैनिकों की मृत्यु के लिए विलाप किया। राजा यहोशापात ने युद्ध के खतरे के कारण राष्ट्रीय उपवास की घोषणा की।

उपवास को एकाग्रता को बढ़ावा देने वाले के रूप में पाया गया। *पढ़ें* मत्ती 4:2, प्रेरितों 13:2-3 और प्रेरितों 14:23 में ऐतिहासिक विवरण को। उपवास को किसी महत्वपूर्ण धार्मिक कार्य या पवित्र आत्मा के प्रति

संवेदनशीलता को बढ़ावा देने वाले के रूप में पाया गया। यह हमेशा प्रार्थना और किसी विशेष उद्देश्य के लिए परमेश्वर से मिलने के साथ संबंधित रहा है। तुलना करें निर्गमन 34:2,28 में मूसा के उपवास और व्यवस्थाविवरण 9:9,18 और 1राजाओं 19:8 में एलिय्याह के उपवास की।

लूका 4:2 दर्शाता है कि मसीह का उपवास आंशिक नहीं था लेकिन पूर्ण था। यीशु मसीह के उपवास का उद्देश्य उस कार्य की तैयारी के लिए ध्यान केंद्रित करना था जो पिता परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए दिया था। उनके उपवास का दूसरा उद्देश्य अपने कठिन लेकिन उत्कृष्ट कार्य को पूरा करने से पहले शिक्षता के रूप में प्रलोभन द्वारा परिक्षण था।

मड़ली के अगुवों (प्राचीनों) ने सेवकों को भेजने के संबंध में (प्रेरितों 13:2) और मड़ली में प्राचीनों को नियुक्त करने के संबंध में (प्रेरितों 14:23) उपवास किया। यह इस बात की ओर संकेत कर सकता है कि मसीही विश्वासी उपवास के दौरान पवित्र आत्मा के संचार के प्रति विशेषरूप से संवेदनशील थे।

लेकिन ध्यान दें की यह सभी उदाहरण ऐतिहासिक विवरण है कि मसीहियों ने इतिहास में क्या किया। उन्हें उपवास करने की आज्ञा नहीं मिली थी न ही सिखाया गया था! मत्ती 6:16-18 कहता है, “जब तू उपवास करे, न की, “तुझे उपवास करना ही है”! इसलिए मसीही लोग स्वेच्छा से उपवास कर सकते हैं, यदि उन्हें लगता है कि इससे प्रार्थना में परमेश्वर के मिलने, परमेश्वर की सलाह और परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्य को पूरा करने के लिए स्वयं को तैयार करने में उन्हें सहायता मिलेगी। लेकिन मसीहियों को यह नहीं सिखाना चाहिए कि उपवास मसीहियों के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है!

बाइबल गलत उद्देश्य से उपवास करने के अभ्यास को भी दर्ज करती है। पढ़ें 1राजा 21:9, जकर्याह 7:3-5 और यशायाह 58:1-12 में दिए गए ऐतिहासिक विवरण को। बाइबल गलत उद्देश्य से उपवास के अभ्यास को भी दर्ज करती है, चाहे वह किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या करना हो या फिर परमेश्वर के सामने दीनता का दिखावा करना हो। जकर्याह ने इस्त्राएल के लोगों को परमेश्वर के बजाय स्वयं के लिए उपवास करने पर डाँटा। यद्यपि परमेश्वर को उपवास की आवश्यकता नहीं थी फिर भी लोगों ने उपवास किया लेकिन परमेश्वर के लिए नहीं। यशायाह में सही प्रकार का उपवास भोजन से परहेज नहीं, बल्कि अन्याय, सताव और दुष्टता की बातें कहने से परहेज करना है!

(4) सच्चा बाइबल आधारित उपवास भोजन से नहीं परन्तु बुराई से परहेज करना है।

पढ़ें यशायाह 58:3-13; जकर्याह 7:4-10।

खोजें और चर्चा करें। लोगों का भोजन से परहेज के रूप में उपवास पर जोर देने के बाद, परमेश्वर ने इस्त्राएलियों से बुराई से परहेज करने की मांग की!

ध्यान दें। यशायाह 58:3-12 में परमेश्वर ने लोगों को सिखाया की सही प्रकार का उपवास क्या है जिससे वह प्रसन्न होता है।

जिस प्रकार का उपवास परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता (यशायाह 58:3-5)। इस्त्राएल के लोगों ने पूछा, “क्या कारण है कि हम ने तो उपवास (इब्रानी क्रिया: टसोम) रखा, और तू ने इसकी सुधि नहीं ली? हमने दुःख (इब्रानी: इन्ना नेपहिश) उठाया परन्तु तू ने कुछ ध्यान नहीं दिया?” तब परमेश्वर ने उत्तर दिया, “उपवास के दिन (इब्रानी संज्ञा: टसोम) तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवकों से कठिन कामों को कराते हो। तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते और झगड़ते और दुष्टता से घूँसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आज कल रखते हो उससे तुम्हारी प्रार्थना ऊपर सुनाई नहीं देगी। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ अर्थात् जिस से मनुष्य अपने आप को दीन करे (इब्रानी: इन्ना नेपहिश), क्या तुम इस प्रकार करते हो? क्या सिर को झाऊ के समान झुकाना, अपने नीचे टाट बिछाना और राख फैलाने ही को तुम उपवास (इब्रानी: टसोम) और यहोवा को प्रसन्न करने का दिन कहते हो?” परमेश्वर ने कहा की वह अपने इस्त्राएल के लोगों

के पारंपरिक उपवास के अभ्यास से प्रसन्न नहीं है!

जिस प्रकार का उपवास परमेश्वर को प्रसन्न करता है (यशायाह 58:6-12)। परमेश्वर ने कहा, “जिस प्रकार के उपवास (इब्रानी: टसोम) से मैं प्रसन्न होता हूँ वह क्या यह नहीं: अन्याय से बनाए हुए दासों और अन्धेर सहने वालों का जूआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, और सब जूओं को टुकड़े-टुकड़े कर देना? क्या वह यह नहीं कि अपनी रोटी भूखों को बाँट देना, अनाथ और मारे-मारे फिरते हुआ को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहनाना और अपने जातिभाइयों से अपने को ना छिपाना?” इस प्रकार, परमेश्वर सिखाते हैं कि सच्चा बाइबल आधारित उपवास एक तरफ तो बुराई (अन्याय) से स्पष्ट रूप से दूर रहना है और दूसरी तरफ संसार में जरूरतमंदों के साथ अपना भोजन और वस्त्र बाँटना है!

परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि जब उनके लोग इस प्रकार उपावस (इब्रानी: टसोम) करते हैं, यह स्वयं का इंकार करने के अर्थ में है, बुराई से दूर रहने और अपना भोजन और वस्त्र बाँटने के संबंध में, ना कि भोजन से परहेज करने के अर्थ में, तब वह उनकी प्रार्थना का उत्तर देंगे और उनके जीवन पर आशीष देंगे। वह कहते हैं, “तब तेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे-आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा; तू दोहाई देगा और यहोवा कहेगा मैं यहाँ हूँ।”

परमेश्वर फिर से सच्चे बाइबल आधारित उपवास को दोहराते हैं: भोजन से परहेज नहीं, बल्कि पाप करने से परहेज करना और जरूरतमंदों और सताए हुआ को सहायता करने के लिए अपनी संपत्ति और प्रयासों को देना। वह कहते हैं, “यदि तू अंधेर करना और उँगली उठाना और दुष्ट बातें कहना छोड़ दे, और उदारता से भूखों की सहायता करे और दीन दुःखियों को संतुष्ट करे, तब अंधियारे में तेरा प्रकाश चमकेगा, और तेरा घोर अंधकार दोपहर का सा उजियाला हो जाएगा।”

सच्चे बाइबल उपवास के संबंध में परमेश्वर की आशीषें एक व्यक्ति द्वारा लाए गए बलिदानों की तुलना में कहीं अधिक है। परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं, “यहोवा तुझे लिए चलेगा, और आकाल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता। तेरे वंश के लोग बहुत काल के उजड़े हुए स्थानों को फिर बसाएंगे; तू पीढ़ी-पीढ़ी की पड़ी हुई नींव पर घर उठाएगा; तेरा नाम दूटे हुए बाड़े का सुधारक और पथों का ठीक करनेवाला पड़ेगा।”

निष्कर्ष। सच्चा बाइबल आधारित उपवास भोजन से परहेज पर जोर नहीं देता, बल्कि पाप और अन्याय से दूर रहने और इस संसार में जरूरतमंदों के साथ अपनी संपत्ति और स्वयं को बाँटने पर जोर देता है। यशायाह 58 और जकर्याह 7 के अनुसार परमेश्वर शाब्दिक उपवास की नहीं परन्तु परमेश्वर तथा अपने पड़ोसी से प्रेम करने की मांग करते है!

(5) स्वैच्छिक उपवास अविशिष्ट रूप से किया जाना चाहिए।

पढ़ें मत्ती 6:16-18।

खोजें और चर्चा करें। मसीहियों को किस प्रकार उपवास करना चाहिए, जब वे उपवास करते हैं?

ध्यान दें। नये नियम में, मत्ती 6:16-18 में यीशु मसीह सिखाते हैं “जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू उपवास करें तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो, ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जानें। इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे प्रतिफल देगा। यीशु उपवास को दीनता की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने फरीसियों के कार्य की निंदा की, जब वे अपने चेहरे को राख से ढक लेते जिससे लोग उनकी ईश्वरभक्ति को

देखें। यीशु ने अपने चेलों को उपवास की आज्ञा नहीं दी; न ही उन्होंने अपने चलों को उपवास करने से मना किया। यदि वे उपवास करना चाहते तो कर सकते थे, लेकिन उन्हें इसे जितना हो सके अविशिष्टरूप से करना चाहिए।

(6) उद्धार का आनंद शोक और उपवास के साथ नहीं चलता।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल “दूल्हे”, यीशु मसीह की उपस्थिति और अनुपस्थिति के बारे में क्या सिखाती है? यह उपवास के प्रश्न से कैसे संबंधित है?

ध्यान दें। यीशु कहते हैं, “दूल्हे के मेहमान कैसे उपवास कर सकते हैं जब तक वह उनके साथ है? लेकिन वह समय आयेगा जब दूल्हा उन से अलग कर दिया जाएगा; तब वे उपवास करेंगे।”

यीशु किस समय का जिक्र कर रहे थे? कुछ लोगों को मानना है कि वे आपने स्वर्गारोहण से लेकर दूसरे आगमन के बीच की अवधि (इस प्रकार सम्पूर्ण नए नियम की अवधि) के बारे में कह रहे थे, जबकि अन्य लोगों का मानना है कि वे अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के पश्चात् पवित्र आत्मा के उड़ने जाने में उनके पास आने के बीच की अवधि के बारे में कह रहे थे। दूसरी व्याख्या सही है!

यीशु मसीह हर समय उपस्थित है। **पढ़ें** मत्ती 18:20; 25:1; 28:20; प्रकाशितवाक्य 19:7; 21:9; इफिसियों 1:22-23; इफिसियों 3:16-17।

कुछ लोग मत्ती 25:1 और प्रकाशितवाक्य 19:7 और 21:9 के आधार पर यह सिखाते हैं कि अपने दूसरे आगमन तक दूल्हा, यीशु मसीह, अनुपस्थित है! इसलिए, वह सिखाते हैं कि यीशु मसीह *चाहते हैं* कि मसीही लोग नए नियम की अवधि से लेकर यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक उपवास करें।

यह सही नहीं है। सबसे पहले तो यीशु मसीह यह आज्ञा नहीं देते, न ही सिखाते हैं और न ही उन्हें इसकी आवश्यकता है कि मसीही लोग उपवास करें, लेकिन वह ऐसा कहते हैं कि वे *उपवास करेंगे*। दूसरा, यीशु मसीह नए नियम की अवधि के दौरान कलीसिया से अनुपस्थित नहीं हैं क्योंकि कलीसिया उनकी देह है। और न ही वह नए नियम की अवधि के दौरान प्रत्येक विश्वासी के जीवन से अनुपस्थित हैं क्योंकि उन्होंने वादा किया था कि वे अपने पवित्र आत्मा के द्वारा इस दौरान उनके साथ रहेंगे (मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:17-18; रोमियों 8:9-10, 35, 38-39; 2कुरिन्थियों 3:16-17; गलातियों 2:20; इब्रानियों 13:5-6)!

यीशु मसीह कुछ समय के लिए अनुपस्थित थे। दानियेल के समय में तीन सप्ताह का आंशिक उपवास हुआ करता था। (दानियेल 10:3)। **पढ़ें** यशायाह 53:7-9; यूहन्ना 16:16-22; प्रकाशितवाक्य 21:9-10; इब्रानियों 12:22-23।

कब यीशु मसीह अपने अनुयायियों से अनुपस्थित थे? यशायाह 53:8 में यह शब्द “वह ले लिया गया” क्रूस पर यीशु की हिंसक मृत्यु की भविष्यवाणी करता है। “उस पर अत्याचार किया गया और वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया।”

“वह समय आता है जब दूल्हा उन से दूर कर दिया जाएगा” इन शब्दों के साथ यीशु ने क्रूस पर अपनी हिंसक मृत्यु के बारे में प्रारंभिक भविष्यवाणी की। वह विशेष समय उनके चेलों के लिए शोक का समय रहा होगा। उस समय पर उपवास उनके दुःख के लिए एक उपयुक्त अभिव्यक्ति रहा होगा।

लेकिन यह दुःख लंबे समय के लिए नहीं रहा होगा। यूहन्ना 16:16-22 में यीशु ने स्वयं कहा, “थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे (गुरुवार शाम और शुक्रवार सुबह) और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे (शुक्रवार सुबह से रविवार सुबह)।” तब वह उन्हें समझाते हैं कि उनके कहने का क्या अर्थ है। तुम रोओगे और विलाप करोगे;

परन्तु संसार आनंद करेगा। तुम शोक करोगे परन्तु तुम्हारा शोक आनंद में बदल जाएगा। तुम्हें अभी तो शोक है परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन आनंद से भर जाएंगे और कोई तुम्हारा आनंद तुम से छीन न लेगा।”

क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले, यीशु मसीह ने स्वयं अपने चेलों को समझाया कि दुष्ट यहूदियों के द्वारा उनका अस्वीकार किया जाना और अन्यजातियों के अधिकारी और उनके समर्थक एक साथ मिले हुए थे। उन्होंने कहा कि उन्हें मृत्यु दंड के लिए दोषी ठहराया जाएगा और मार डाले जाने के लिए उन से अलग कर दिया जाएगा। यूहन्ना 16:20 के अनुसार इस समय के दौरान उनके चले रोये होंगे और विलाप किया होगा और मत्ती 9:15 के अनुसार इस समय के दौरान उन्होंने उपवास किया होगा। इस प्रकार यीशु मसीह ने सिखाया कि मसीही लोग थोड़े समय के लिए (तीन दिन के भाग में) शोक और उपवास करेंगे जब यीशु मसीह कब्र में होंगे!

उनके मुर्दों में से जी उठने के बाद उनके चेलों ने *आनंद* किया (लूका 24:41) और उनके स्वर्ग में प्रवेश और सिंहासन पर बैठने के बाद उन्होंने *बड़ा आनंद* किया (लूका 24:52)। और पवित्र आत्मा के उड़ले जाने के बाद (जो की यीशु का आत्मा है) (रोमियों 8:9-10) यीशु मसीह वास्तव में अपने अनुयायियों के मध्य पृथ्वी पर हर जगह उपस्थित है! इस तथ्य ने उनके शोक को आनंद में बदल दिया (यूहन्ना 16:20) और कोई भी उनके इस आनंद को छीन नहीं सकता न ही छीन पाएगा (यूहन्ना 16:22)! आत्मा फल *आनंद* है (गलातियों 5:22)।

यह यूहन्ना 14:16-19 में उनके वचन का पूरा होना है, “मैं पिता से विनती करूंगा और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे, अर्थात् सत्य का आत्म जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा। मैं (यीशु) तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ। और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे।”

पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और पवित्र आत्मा के उड़ले जाने के साथ नए नियम की कलीसिया अस्तित्व में आयी। कलीसिया यीशु मसीह की “दुल्हन” है (प्रकाशितवाक्य 21:9-10; इब्रानियों 12:22-23)। और मत्ती 28:20 में यीशु वादा करते हैं और प्रकाशितवाक्य 1:12-18 इसका प्रतीक है कि जगत के अंत तक यीशु मसीह अपनी दुल्हन के साथ हर दिन है!

(7) पुराने नियम की उपवास की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया है।

पढ़ें कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:15; इब्रानियों 7:12।

सिखाएँ। अनुष्ठाणिक व्यवस्था में खतना, बलिदान, दसवांश, नहाना-धोना और *उपवास तथा खाने पीने* के नियम शामिल थे।

क्रूस पर अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा (30 ईस्वी) यीशु मसीह ने

- व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17)
- व्यवस्था को बदल दिया (इब्रानियों 7:12)
- अनुष्ठाणिक व्यवस्था के नियमों को समाप्त कर (रद्द, हटा) दिया (कुलुस्सियों 2:14)
- शत्रुता की विभाजनकारी दीवार को नष्ट कर दिया जिसमें अनुष्ठाणिक व्यवस्था के नियम कानून शामिल थे और मसीही कलीसिया से इसे हमेशा के लिए समाप्त कर दिया (इफिसियों 2:15)!

जिस प्रकार मंदिर में जानवरों का बलिदान और दसवांश लाना, लड़कों का खतना करना, नहाना-धोना और शुद्ध

भोजन खाने की मांग अब मसीहियों से नहीं की जाती, उसी प्रकार प्रायश्चित के बड़े दिन पर मसीहियों के लिए उपवास और आत्मा को नम्र करने की आवश्यकता अब नहीं रही! खतना और बलिदान की तरह, उपवास को एक धार्मिक दायित्व के रूप में समीची कलीसिया में फिर से पेश नहीं किया जा सकता!

(8) निष्कर्ष। उपवास के विषय में निर्णायक बाइबल निम्न हैं:

यशायाह 58:6-12 इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर किस प्रकार के उपवास की मांग करते हैं। उपवास भोजन से परहेज करना नहीं, बल्कि अन्याय, सताव और दुष्टता की बातें कहने से परहेज करना है!

जर्कयाह 8:19 भविष्यद्वाणी करता है कि पुराने नियम के उपवास और शोक की अवधि को नए नियम अवधि के आनंद से बदल दिया जाएगा।

मत्ती 9:10-17 इस बात पर जोर देता है कि वास्तविक उद्धार का आनंद और यीशु मसीह की लगातार वास्तविक उपस्थिति उपवास के शोक के साथ नहीं चलती!

मत्ती 17:21 (“लेकिन यह जाति प्रार्थना और उपवास के बिना नहीं निकलती”), **मत्ती 6:13** (“क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा युगानयुग तेरी ही है”) और **मरकुस 16:8-20** के समान प्राचीन हस्तलेखों में काफी बाद में जोड़े गए और वास्तविक सुसमाचार का हिस्सा नहीं हैं।

मत्ती 5:17; कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:15 और इब्रानियों 7:12 बहुत स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि अनुष्ठानिक व्यवस्था को जिसमें उपवास भी शामिल है, पूरा कर दिया गया है इसलिए उसे रद्द और समाप्त कर दिया गया है।

मत्ती 6:16-18 सिखाता है कि यदि मसीही चाहें तो उपवास (भोजन से परहेज) कर सकते हैं, लेकिन उन्हें उपवास को अन्य मसीहियों के लिए धार्मिक दायित्व नहीं बनाना चाहिए।

6. परमेश्वर के राज्य में उपवास के विषय में दृष्टांत के मुख्य उपदेशों या पाठों का सारांश।

वर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में उपवास के बारे में दृष्टांत के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *विश्वास करना* और क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। चीजों का नया क्रम जिसका परिचय यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन पर दिया, चीजों के उन पुराने क्रम के साथ मेल नहीं खाता जिनमें मानव निर्मित परंपराएं और वे नियम शामिल हैं जो फरीसियों ने बेबीलोन से निर्वासन के बाद पेश किए। चीजों के पुराने क्रम में प्राचीन लोगों (रब्बियों) की परम्पराएं शामिल थी, जिन्हें शोक और उपवास जैसे धार्मिक क्रियाकलापों के रूप में प्रगट किया गया था। नए क्रम ने पुराने क्रम का स्थान ले लिया जिसमें उद्धार, चंगाई, छुटकारा पुनर्स्थापन, परिवर्तन, और लोगों का नवीनीकरण शामिल है जिसे उद्धार के आनंद के रूप में प्रगट किया गया।

परमेश्वर शोक और उपवास की मानव-निर्मित परम्परा से प्रसन्न नहीं है। नए क्रम की शुरुआत यीशु के प्रथम आगमन से शुरू होती है: फिर निम्नलिखित बातें वास्तविकताएँ बनती हैं: “परमेश्वर हमारे साथ” (इम्मानुएल, **मत्ती 1:23**), “मसीह तुम में” (गलातियों 2:20; **कुलुस्सियों 1:27**) और “पवित्र आत्मा तुम में रहता है और हमेशा के लिए तुम्हारे साथ है” (यूहन्ना 7:38-39; 14:16-17; **इफिसियों 2:22**)। यीशु मसीह सदैव उपस्थित है! “निश्चय ही मैं (मसीह) जगत के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ” (**मत्ती 28:20**)! पिन्तेकुस्त के बाद यह नई वास्तविकता प्रत्येक मसीही के अन्दर वास्तविक आनंद को जगृत करती है। परमेश्वर मसीहियों के उद्धार के आनंद और उनके लोगों द्वारा उनकी आराधना और सेवा के नए तरीके से प्रसन्न होते हैं, अर्थात, जब वे अपना जीवन और सम्पत्ति जरूरतमंदों के साथ बाँटते हैं।

फरीसियों के सभी व्यवस्थावाद और आनंदहीन उपवास और साथ ही साथ अटल परम्परावाद को यीशु मसीह द्वारा शुरू किए गए उद्धार को स्थान प्रदान करना चाहिए। मसीही व्यक्तिगत रूप से अच्छे कारणों के साथ उपवास कर सकते हैं, लेकिन उपवास को फिर से एक आवश्यकता (या प्राचीनों की अटल परम्परा) के रूप में मसीही कलीसिया पर लागू नहीं करना चाहिए। परमेश्वर के राज्य की विशेषता शोक या उपवास नहीं है, बल्कि धार्मिकता, शान्ति और पवित्र आत्मा में आनंद है (रोमियों 14:17-18)।

उद्धार के नए दाखरस (सामग्री) को उद्धार की सभी आशीषों के साथ, धन्यवाद, स्वतंत्रता और परमेश्वर की महिमा के लिए सहज सेवा की नई मशकों (रूपों) में डाला जाना चाहिए।

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>(प्रतिक्रियाएँ)</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	--

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए** समूह में **बारियाँ लें।**

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी (2 मिनट) <i>(सौंपा गया कार्य)</i> अगले अगले अध्याय के लिए
---	---

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “दूल्हे”, “पैबन्द लगे हुए वस्त्र” और “मशकों” का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **भजन संहिता 141, 143, 145 व 146** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (4) परमेश्वर सर्वज्ञानी है: इब्रानियों 4:13।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 7:14-25।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी **नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए **प्रार्थना करें।**

अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शान्त समय) भजन संहिता 141,143,145 और 146
---	--

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 141,143,145 और 146) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (परमेश्वर की महानता) (4) इब्रानियों 4:13
---	---

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(4) परमेश्वर सर्वज्ञानी है। इब्रानियों 4:13 - सृष्टि की कोई वस्तु परमेश्वर से छिपी नहीं है वरन् जिससे हमें लेखा देना है, उसकी आँखों के सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रगट हैं।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) (रोमियों की पत्री) रोमियों 7:14-25
---	--

परिचय। रोमियों 7:14-25 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 7:14-25 में, पौलुस यह सिखाता है कि एक मसीही के भीतर आत्मिक और नैतिक युद्ध चलता रहता है। एक मसीही के दो स्वभाव होते हैं : पाप का स्वभाव और नये मनुष्यत्व का स्वभाव। पाप का स्वभाव उसका वास्तविक स्वभाव नहीं है, लेकिन फिर भी यह एक ऐसी शक्ति है जो अक्सर उसे अपना बन्दी या कैदी बनाती है। एक विश्वासी बार-बार पाप करता रहता है, लेकिन वह इन पापों से स्वतन्त्र होने की इच्छा भी रखता है।

नैतिक व्यवस्था पाप की शक्ति और दुष्टता से स्वतन्त्र नहीं कर सकती! पौलुस अपने स्वयं के अनुभव से, पवित्रता (शुद्धिकरण) के लिए व्यवस्था की अपर्याप्तता को दर्शाता है! पाप और पवित्रता के बीच आपसी युद्ध में, कोई भी व्यवस्था एक मसीही की सहायता नहीं कर सकती। अपने पाप के स्वभाव और अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच संघर्ष में जीत की एकमात्र आशा प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह में है।

कदम 1. पढ़ें।**परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 7:14-25 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।**अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है ?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएँ कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

7:14-20

खोज 1. व्यवस्था क्या नहीं कर सकती।

हालाँकि व्यवस्था पवित्र, धर्मी और अच्छी है, लेकिन यह मसीहियों को पवित्र, धर्मी या अच्छा नहीं बना सकती।

(1) एक मसीही के मानव स्वभाव में दो वास्तविकताएँ होती हैं।

पहले पहलू को “शरीर” (पाप की व्यवस्था जो उसके शरीर के अंगों में संचालित होती है) कहा जाता है (रोमियों 7:18), अर्थात्, उसका पाप का स्वभाव, जो अधूरा, निर्बल और अस्थायी (क्षणभंगुर) है। दूसरे पहलू को “बुद्धि” (बुद्धि की व्यवस्था, भीतरी मनुष्यत्व) (रोमियों 7:22,25), कहा जाता है, जो कि उसका नये मनुष्यत्व का स्वभाव है, जिसे परमेश्वर के आत्मा (पवित्र आत्मा) द्वारा नियन्त्रित किया जाता है और वो भी उसकी नैतिक व्यवस्था के बिना।

रोमियों 7:14-25 एक मसीही के पाप के स्वभाव के बीच युद्ध (संघर्ष या लड़ाई), जो उसे आदम से प्राप्त हुआ था, और उसका नये मनुष्यत्व का स्वभाव, जिसे वह मसीह द्वारा प्राप्त करता है (तुलना करें रोमियों 5:17-19), के विषय में बताता है,। पाप का स्वभाव और नये मनुष्यत्व का स्वभाव आत्मा (हृदय) के साथ-साथ मसीही के शरीर में वास करता है।

(2) एक मसीही जिस अच्छे काम की इच्छा करता है, वह तो नहीं करता,

परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता है।

रोमियों 7:14-15 में, पौलुस यह तर्क देता है कि नैतिक व्यवस्था मसीहियों को पवित्र करने में असमर्थ है। यह नैतिक व्यवस्था के स्वभाव के कारण नहीं, बल्कि पाप के स्वभाव के कारण है, जो अभी भी मसीहियों में वास करता है। इसलिए व्यवस्था का स्वभाव आत्मिक है, क्योंकि यह परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा को प्रगट करता है, जो कि पवित्र, धर्मी और अच्छी है (7:12)। परन्तु मसीहियों का पाप का स्वभाव आत्मिक नहीं है, अर्थात् यह परमेश्वर और उसकी पवित्र, धर्मी और भली इच्छा के अधीन नहीं है और न ही हो सकती है।

गैर-मसीही स्वेच्छा और सदैव अपने पाप के स्वभाव (present tense, active) (6:16) के दास होने की इच्छा रखते हैं, जबकि एक मसीही ने अनजाने में (उदाहरण के तौर पर : आदम के पाप में गिरने के द्वारा) स्वयं को पाप के स्वभाव (perfect tense, passive) को बेच दिया है (रोमियों 7:14)। मसीही स्वयं को स्वेच्छा से पाप की सेवा के लिए नहीं देते, परन्तु उनके पाप के स्वभाव के कारण वे किसी बिके हुए व्यक्ति की अवस्था या स्थिति में

होते हैं, जिनके किये गए कामों में उनके भीतरी इच्छा का झुकाव का प्रमाण नहीं होता है (रोमियों 7:14; तुलना करें “अपने पापी स्वभाव के कैदी” रोमियों 7:23)। मसीही अच्छे काम करना चाहते हैं, लेकिन उनका पापी स्वभाव उनके भीतर इतनी सामर्थ्य से काम करता है कि वे अक्सर बुराई ही किया करते हैं (रोमियों 7:15)।

पौलुस का आत्मिक और नैतिक लक्ष्य सिद्धता से कम नहीं है (तुलना करें फिलिप्पियों 3:12-14 और मत्ती 5:48 से; इब्रानियों 12:14)। लेकिन प्रत्येक दिन के अन्त में जब पौलुस अपने जीवन का मूल्यांकन करता है, तो वह स्वयं को परमेश्वर की सिद्धता के मानक से बहुत कम पाता है और अपने द्वारा किए गए बुरे कामों से घृणा करता है। उसे यह एहसास होता है कि उसका लक्ष्य वास्तव में प्राप्त करने की तुलना में बहुत अधिक है।

(3) केवल नैतिक व्यवस्था एक मसीही को पवित्र, धर्मी या अच्छा नहीं बना सकती!

रोमियों 7:16-20, पौलुस कई महत्वपूर्ण बातों का निष्कर्ष निकालता है। वह यह निष्कर्ष निकालता है कि यद्यपि मसीही अपने अपराधों के कारण परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था से घृणा तो करते हैं, लेकिन फिर भी वे यह स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था अच्छी है (रोमियों 7:16)। वह यह निष्कर्ष निकालता है कि पाप के काम, जो मसीही करते हैं, अब मसीहियों के वास्तविक चरित्र की कसौटी नहीं है (रोमियों 7:17)। उनके पापी कार्य वास्तव में उनके स्वयं के कार्य हैं। लेकिन जब इन पाप के कार्यों को मसीहियों के नये मनुष्यत्व के स्वभाव के अनुसार नहीं किया जाता, तब वे उनके सम्पूर्ण मानव स्वभाव या वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाते। वह यह निष्कर्ष निकालता है कि पाप के कार्य, जो मसीही अक्सर करते हैं, केवल इस बात की पुष्टि करते हैं कि आत्मिक या नैतिक रूप से कुछ भी अच्छा या लाभकारी जीवन उनके पाप के स्वभाव में नहीं है (रोमियों 7:18-20)।

यद्यपि नैतिक व्यवस्था यह आज्ञा देती है कि एक मसीही को क्या करना चाहिए और मसीहियों का नया मनुष्यत्व कैसी नैतिक व्यवस्था की इच्छा रखता है, नैतिक व्यवस्था मसीहियों के पाप के स्वभाव का नाश नहीं कर सकती! जब भी परमेश्वर किसी विशेष बुरे काम को न करने की आज्ञा देते हैं, तो परमेश्वर की नैतिक आज्ञा इस बुराई को करने के लिए मसीहियों में इसके झुकाव को अपने आप से नाश नहीं करती।

निष्कर्ष। नैतिक व्यवस्था मसीहियों को उनके पापी स्वभाव और उनके नये मनुष्यत्व के बीच संघर्ष में मदद नहीं कर सकती। केवल नैतिक व्यवस्था एक मसीही को पवित्र, धर्मी या अच्छा नहीं बना सकती।

7:21-25

खोज 2. व्यवस्था क्या नहीं कर सकती। यद्यपि एक मसीही परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था से प्रसन्न रहता है, केवल परमेश्वर का अनुग्रह उसे उसके पाप के स्वभाव के पूर्ण प्रभुत्व से बचा सकती है।

(1) मसीहियों में पवित्र आत्मा का नियंत्रण कभी भी पूर्ण या सिद्ध नहीं होता है।

रोमियों 7:21-25 में, पौलुस अपना अन्तिम निष्कर्ष बताता है। मसीहियों का जीवनभर का संघर्ष उनके पाप के स्वभाव, जो उन्हें आदम से प्राप्त हुआ था, और उनके नये मनुष्यत्व का स्वभाव, जो उन्हें मसीह से प्राप्त हुआ है, के बीच है। अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव (भीतरी मनुष्यत्व, बुद्धि, बुद्धि की व्यवस्था) में, मसीही सदैव परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था से प्रसन्न (Present tense) रहते हैं (रोमियों 7:22)।

परन्तु एक मसीही को जल्द ही बड़े कष्ट के साथ इस बात का एहसास होता है कि उसका पाप का स्वभाव या दुष्ट स्वभाव सदैव (Present tense) उसके नये मनुष्यत्व के स्वभाव के विरुद्ध युद्ध करता रहता है और उसे इस बात का एहसास कराता रहता है कि वह अपने पाप के स्वभाव का दास है। पाप का स्वभाव न केवल

मसीही जन के विरुद्ध युद्ध करता है, बल्कि अक्सर उस पर विजय भी प्राप्त कर लेता है (रोमियों 7:23:)! यह पाप का स्वभाव मसीहियों की आत्मा (हृदय) और शरीर को दास बना लेता है और उन्हें अपने शक्तिशाली भ्रष्ट प्रभाव के अधीन कर देता है। पाप के स्वभाव की शक्ति अभी भी इतनी प्रभावी है, कि मसीही जन अपनी इच्छा शक्ति या प्रयास से इसका विरोध नहीं कर सकते हैं, (तुलना करें रोमियों 15,23 से)। मसीही अपने पाप के स्वभाव के इच्छुक सेवक नहीं बनते हैं, बल्कि इसके अभागे शिकार होते हैं। जब तक एक मसीही अपनी वर्तमान शारीरिक देह में रहता है, वह अपने पाप के स्वभाव का अनिच्छुक और असन्तुष्ट सेवक बना रहता है। जब तक मसीही इस पृथ्वी पर रहता है, तब तक उसका पाप का स्वभाव उसमें बना रहेगा तथा पवित्र आत्मा का नियंत्रण कभी भी उसमें पूर्ण या सिद्ध नहीं होगा।

मसीहियों की वर्तमान शारीरिक देह को “मृत्यु की देह” कहा जाता है (रोमियों 7:24), क्योंकि उनकी शारीरिक देह अभी भी उस स्थिति में है जहाँ उनका पाप का स्वभाव बहुत ही विशेष रूप से संचालित होता है, जिससे आत्मिक मृत्यु और अन्त में शारीरिक मृत्यु होती है।

(2) मसीह एक मसीही को उसके पाप के स्वभाव के प्रभावी संचालन से बार-बार छुड़ाएगा।

नैतिक व्यवस्था स्वयं मसीही को उसकी असहाय और अभावग्रस्त स्थिति के बारे में अधिक जागरूक बनाती है। यह व्यवस्था उसे अपने पाप के स्वभाव के विरुद्ध इस संघर्ष में जीत हासिल करने के लिए प्रेरित करती है जहाँ इस जीत को केवल उसी से प्राप्त किया जा सकता है, अर्थात्, मसीह के द्वारा (रोमियों 7:25)। केवल यीशु मसीह निश्चित रूप से एक मसीही को उसकी “मृत्यु की देह” से बचा (future tense, expresses certainty) सकता है और बचाएगा भी (रोमियों 7:24)।

हमेशा के लिए मसीही जन के पुराने मनुष्यत्व के स्वभाव (पुरानी देह) को मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा दिया गया है (रोमियों 6:6)। हमेशा के लिए मसीही जन पाप की दासता से स्वतन्त्र (aorist tense) हो गया है और अब वह धार्मिकता का दास (रोमियों 6:18) और परमेश्वर का दास बन गया है (रोमियों 6:22)। लेकिन बार-बार, मसीह मसीही को उसके पापी स्वभाव से जो सशक्त रूप से उसमें संचालित होता है, बचाएगा (1 कुरिन्थियों 10:13; 1 यूहन्ना 1:9)। और अपने दूसरे आगमन पर, मसीह निश्चित रूप से, पूरी तरह से और हमेशा के लिए मसीही को उसके पाप के स्वभाव से बचाएगा (रोमियों 7:24)।

(3) मसीही को उसके पाप के स्वभाव के विरुद्ध युद्ध करना चाहिए

और अपने पाप के स्वभाव के कुकर्मा के अन्त करना चाहिए।

निष्कर्ष। एक मसीही का आत्मिक संघर्ष उसके पाप के स्वभाव, जो उसे आदम से प्राप्त हुआ था, और उसके नये मनुष्यत्व के स्वभाव, जो उसे मसीह से प्राप्त हुआ है, के बीच है। एक मसीही का पाप का स्वभाव एक ऐसी शक्ति है जिससे वह स्वयं को स्वतन्त्र नहीं कर सकता। समय के साथ-साथ वह एक दास के रूप में अपने पाप के स्वभाव की दासता में रहता है। हालाँकि, मसीही का नये मनुष्यत्व का स्वभाव भी एक शक्ति है, क्योंकि पवित्र आत्मा उसमें वास करता है! इसलिए, बार-बार, वह एक दास के रूप में परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था की भी सेवा करता है।

पौलुस इस वर्तमान परिस्थिति को स्वीकार नहीं करता। वह इस बात की गहराई से आश्वस्त है कि यीशु मसीह उसे इस परिस्थिति से बचायेगा। इसलिए, उसके पास अपने पाप के स्वभाव के विरुद्ध युद्ध करने और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा अपने दुष्कर्मा को मारने का उत्तरदायित्व है (तुलना करें रोमियों 8:13 से; गलातियों 5:16-26)।

कदम 3. प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं ?

आईये रोमियो 7:14-25 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में

प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात् अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

7:14-26

प्रश्न 1. इस गद्यांश में पौलुस के व्यक्तिगत अनुभव के किस चरण को चित्रित किया गया है? क्या यह अनुभव एक पुराने मनुष्यत्व के स्वभाव का है या नये मनुष्यत्व के स्वभाव का?

ध्यान दें। ऐसे लोग हैं जो तर्क देते हैं कि रोमियों 7:14-26 एक नये जन्मे विश्वासी का अनुभव नहीं हो सकता। वे इस कथन पर, “मैं शारीरिक हूँ” (रोमियों 7:14) और एक ओर रोमियों के अध्याय 7 और दूसरी ओर रोमियों के अध्याय 6 और 8 के बीच अपना तर्क देते हैं।

फिर भी, रोमियों 7:14-26 में पौलुस अपने अनुभव को नये जन्मे विश्वासी के अनुभव के रूप में वर्णित करता है।

(1) **पौलुस स्वयं के विषय में नम्र और यथार्थवादी है।**

एक नये जन्मे विश्वासी के रूप में पौलुस स्वयं के विषय में कहता है : “प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ” (1 कुरिन्थियों 15:9), “सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूँ” (इफिसियों 3:8), और “पापियों में सबसे बड़ा हूँ” (1तीमुथियुस 1:15)। इसी प्रकार, वह स्वयं को “अभागे मनुष्य” के रूप में वर्णित करता है (रोमियों 7:24), जबकि वह अभी तक पूरी तरह से अपने पाप के (अपवित्र) स्वभाव से बचाया (छुड़ाया) नहीं गया है। यह केवल दूसरे आगमन पर होगा जब वह यीशु मसीह को आमने-सामने देखेगा (तुलना करें 1यूहन्ना 3:1-3 से; फिलिप्पियों 3:8-14)!

(2) **रोमियों 7:14-26 में एक अविश्वासी की तुलना में विश्वासी के वर्णन की अधिक संभावना मिलती है।**

रोमियों 7:14-25 में पौलुस का कथन एक अधर्मी मनुष्य की तुलना में एक नये जन्मे मनुष्य के कथन की अधिक संभावना को बताता है। इसकी संभावना नहीं है कि एक अधर्मी व्यक्ति यह कहेगा, “मैं मान लेता हूँ कि व्यवस्था भली है” (रोमियों 7:16,22), “जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे घृणा आती है, वही किया करता हूँ” (रोमियों 7:15,19,24) और “भलाई करने की इच्छा करता हूँ” (रोमियों 7:18,19,21)। इस बात की संभावना नहीं है कि एक अधर्मी व्यक्ति यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद देगा, जैसे पौलुस दे रहा है (रोमियों 7:25; तुलना करें 1 कुरिन्थियों 12:3 से)।

यह स्पष्ट है कि रोमियों 7:14-25 में, पौलुस बताता है कि मसीहियों की निर्बलता कितनी बड़ी है। पवित्र होने के लिए, मसीहियों को अपने भीतर के पाप के स्वभाव की तुलना में बहुत अधिक बाहरी सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। उन्हें यीशु मसीह और उसके पवित्र आत्मा को छोड़ किसी और की आवश्यकता नहीं है! पृथ्वी पर अपने पहले आगमन के समय, यीशु मसीह ने सभी विश्वासियों के लिए आवश्यक धार्मिकता और पवित्रता को अर्जित किया। उद्धार के सम्पूर्ण इतिहास में, पवित्र आत्मा मसीहियों के व्यक्तिगत जीवन में इस धार्मिकता और पवित्रता को लागू करता है। केवल दूसरे आगमन पर सभी मसीही पूरी तरह से मसीह के समान होंगे (1 यूहन्ना 3:1-3; फिलिप्पियों 3:20)।

(3) रोमियों 7:14-26 और रोमियों 7:5,9अ के बीच में बड़ा अन्तर है।

रोमियों 7:5,9अ एक अधर्मी व्यक्ति का वर्णन करता है। जब पौलुस का मनुष्यत्व नया नहीं था, तब वह शारीरिक (पाप के स्वभाव में) था तथा *मृत्यु का फल उत्पन्न करता था* (रोमियों 7:5; तुलना करें गलातियों 5:19-21 से)। जब तक वह नैतिक व्यवस्था से अलग रहा, तब तक उसने परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था पर कोई गंभीर ध्यान नहीं दिया। नैतिक व्यवस्था से उसके पाप के स्वभाव में पापपूर्ण इच्छाओं का उदय नहीं हुआ और वह पापों के लिए परमेश्वर के दण्ड से बेखबर, *आत्मनिर्भर और स्वधर्मी जीवन जीता रहा* (रोमियों 7:9अ)!

रोमियों 7:7-13 एक नये जन्मे मनुष्य का वर्णन करता है। यह गद्यांश पौलुस के *मन फिराने से ठीक पहले के समय*, और शीघ्र ही बाद के समय के अनुभव का वर्णन करता है। रोमियों 7:8-13 में *भूतकाल* से रोमियों 7:14-25 में *वर्तमान काल* का परिवर्तन एक अधर्मी मनुष्य से एक नये जन्मे मनुष्य के मूल परिवर्तन का उल्लेख करता है! रोमियों 7:14-26 में पौलुस, जब तक वह इस धरती पर अपने वर्तमान नाशवान शरीर में रहता है, तब तक वह एक मसीही की निर्बलता और उसके संघर्ष का वर्णन करता रहता है!

(4) रोमियों 7:14-26 और रोमियों 6:18,22 में मतभेद नहीं है। एक नया जन्म पाने वाला विश्वासी एक ही समय में पापी और पवित्र भी है : एक विश्वासी जो अक्सर परमेश्वर के लक्ष्य को पाने में असफल रहता है, लेकिन फिर भी वह परमेश्वर की दृष्टि में एक पवित्र जन है।

एक ओर, विश्वासी अभी भी प्रायः “पाप के हाथ बिका हुआ” है (present tense) (रोमियों 7:14)। उसके पाप के स्वभाव का अभी भी उसके जीवन में ऐसा प्रभाव है कि वो अभी तक पूरी तरह से पाप रहित जीवन नहीं जी सकता (तुलना करें मत्ती 6:12 से; 1 यूहन्ना 1:8-10; 2:1-2)। पाप का (अपवित्र) स्वभाव अभी भी एक शक्ति है जो मसीही को विवश और नियन्त्रित करता है (रोमियों 7:21,23,25)। पाप का स्वभाव *समय के साथ-साथ निरन्तर* (present continuous tense) पवित्र आत्मा के विरुद्ध युद्ध (Greek: antistrateuomai) करता रहता है या मसीही में रहने वाले पवित्र आत्मा का विरोध करता है तथा मसीही को अपनी पुरानी जीवन-शैली में वापस खींचने की कोशिश करता है (रोमियों 7:23अ; तुलना करें गलातियों 5:17 से)। *अक्सर (निरन्तर)* (present continuous tense) पाप का स्वभाव (पाप की व्यवस्था) मसीही को पाप की व्यवस्था के युद्ध का कैदी या बन्दी (Greek: aichmalótizó) बनाता है (रोमियों 7:23ब)।

पाप का स्वभाव (पाप की व्यवस्था) इतना शक्तिशाली है कि मसीही अपनी इच्छा शक्ति या प्रयास से इसका विरोध नहीं कर सकता। पौलुस यह नहीं कहता कि पाप का स्वभाव हमेशा विजयी होता है या कोई मसीही केवल पराजित जीवन ही जी सकता है। उसका कहना है कि एक मसीही के पाप या दुष्टता का स्वभाव एक ऐसी शक्ति है जिससे वह स्वयं को स्वतंत्र नहीं कर सकता और जो *कभी-कभी या प्रायः (और इस प्रकार हमेशा के लिए नहीं)* इस तथ्य के बावजूद कि मसीही जन ऐसा नहीं चाहता, पाप का यह स्वभाव उस पर विजयी होता रहता है।

दूसरी ओर, मसीही जन *“हमेशा के लिए पाप के लिए मर गया”* (aorist tense) (रोमियों 6:2)। मसीही जन हमेशा (aorist time) के लिए पाप के लिए मर गया (Greek: apothnέskó)। वह हमेशा (perfect tense) के लिए व्यवस्था के अनुसार पाप से मुक्त (न्यायी) (Greek: dikaiomai) हो गया (रोमियों 6:7)। वह हमेशा (aorist time) के लिए पापों से छुड़ाए (Greek: eleutheroó) जाकर, परमेश्वर और उसकी धार्मिकता का दास (Greek: douloó) हो गया (रोमियों 6:18,22)।

वह स्वयं (Greek: logizomai) को *निरन्तर* (present tense) यह आज्ञा देता रहता है कि वह पाप के लिए मर गया है, लेकिन अब जो वह जीवित है तो परमेश्वर (मसीह यीशु) में जीवित है (रोमियों 6:11)। अब वह पाप को उसके नाशमान शरीर में राजा (Greek: basileuó) के समान राज्य करने की अनुमति नहीं दे सकता, कि उसकी बुरी लालसाओं के अधीन रहे (रोमियों 6:12)। वह यह आज्ञा देता है कि *कभी भी* अपने अंगों को

अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को *न* सौंपें (Greek: parhistémi/parhistanó) (imperative mood, present continuous tense), बल्कि अपने आपको मरे हुआ में से जी उठा जानकर, और अपने अंगों (उदाहरण के लिए, अपने कान और आँखें, हाथ और पैर, मन और हृदय) को धार्मिकता के हथियार (यंत्र) होने के लिए परमेश्वर को सौंपें (रोमियों 6:13)। जैसे उसने *हमेशा (पहले)* के लिए यह आज्ञा दी, कि जैसे अपने सभी अंगों को अशुद्धता और निरंतर बढ़ती हुई दुष्टता के दास (शाब्दिक अर्थ में : एक दास के रूप में) (Greek: parhistémi/parhistanó) (imperative mood, aorist tense) होने के लिए सौंपा था, इसलिए वैसे ही *अब हमेशा* के लिए अपने सभी अंगों को पवित्रता के लिए धार्मिकता की अगुवाई पाने के लिए *सौंप* (imperative mood, aorist tense) (शाब्दिक अर्थ में : एक दास के रूप में) देना चाहिए (रोमियों 6:19)।

उसके पाप के स्वभाव के वर्चस्व की स्थिति और शक्ति हमेशा के लिए टूट गई! यद्यपि वह समय के साथ बार-बार पाप करता है (रोमियों 7:14-26) परन्तु वह न तो पाप करना चाहता है, न ही पाप में रहना चाहता और न ही वह पाप में बना रहेगा (पाप में कायम नहीं रहेगा) (रोमियों अध्याय 6)! शैतान, अधर्मी और दुष्ट संसार के पाप का स्वभाव एक मसीही को धर्म के काम करने और पवित्रता में बढ़ने से नहीं रोक सकता (रोमियों 6:13, 17, 19)! पाप में निरंतर जीवन जीने का अर्थ है कि मनुष्य अभी भी “आत्मिक रूप से मरा हुआ है”, “अभी उसका नया जन्म नहीं हुआ है” (तुलना करें 1 यूहन्ना 3:6-9 से)। परन्तु हमेशा के लिए धार्मिकता के द्वारा निरन्तर पवित्रता (पवित्र जीवन) में बने रहने का परिणाम (शाब्दिक) अन्त में अनन्त जीवन है (रोमियों 6:23)!

मसीह में अपनी स्थिति या परिस्थिति के संदर्भ में, एक मसीही पहले ही एक पवित्र जन है। मसीह की 100% सिद्ध धार्मिकता और पवित्रता (जो मसीह ने मसीहियों के लिए अर्जित या प्राप्त की है) को पहले ही उसे (NIV: उसके लेखे में जोड़ा गया) दे (मसीह के कारण) दिया गया है (1 कुरिन्थियों 1:30)। वह अधर्मी और दुष्ट संसार से पहले से ही *अलग* हो चुका है और अब केवल परमेश्वर को समर्पित है।

यीशु मसीह में अपनी वृद्धि की प्रक्रिया के संदर्भ में, एक मसीही अभी तक अपने विचारों, उद्देश्यों, दृष्टिकोण, शब्दों और कर्मों में (अपनी मसीही चाल, विकास या जीवनशैली में) सिद्ध या पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र नहीं है (तुलना करें 1 पतरस 1:15-16)।

(5) रोमियों 7:14-26 और रोमियों 8:7-8 एक दूसरे के विपरीत हैं।

शारीरिक व्यक्ति। रोमियों 8:7-8 पदों का शाब्दिक अर्थ है, “क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि *न* तो परमेश्वर की व्यवस्था (present continuous tense) के अधीन है, और *न* हो सकता है। और जो शारीरिक दशा में है (present continuous tense), वे परमेश्वर को प्रसन्न *नहीं* कर सकते” (present continuous tense)।

शारीरिक मनुष्य “शरीर में” रहता है, अर्थात्, उसका दुष्ट स्वभाव उस पर प्रभुता करता है। परिणामस्वरूप, वह परमेश्वर से बैर रखता है और वह कभी भी परमेश्वर की व्यवस्था (present continuous tense) के अधीन *नहीं* होता है और *न* ही हो सकता है (present continuous tense) (रोमियों 8:7)।

नये मनुष्यत्व का व्यक्ति। रोमियों 8:5-6 का शाब्दिक अर्थ है, “जो व्यक्ति *निरंतर* आत्मा के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करते हैं (present continuous tense), वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं (present continuous tense), अर्थात् जीवन और शान्ति”। शारीरिक व्यक्ति के विपरीत, नये मनुष्यत्व का मसीही *निरन्तर* परमेश्वर की व्यवस्था (परमेश्वर की इच्छा) से प्रसन्न रहता है (present continuous tense) (रोमियों 7:22) और पूर्ण मन (अर्थात्, उसका नये मनुष्यत्व का स्वभाव) से उसकी सेवा (शाब्दिक अर्थ : दास के रूप में) करता रहता है (present continuous tense), हालाँकि, समय के साथ वह उसके विपरीत करता है (present continuous

tense), अर्थात् अपनी नाशवान देह के साथ पाप की व्यवस्था (अर्थात्, उसका पाप का स्वभाव) की सेवा करता है (रोमियों 7:6)।

जबकि शारीरिक व्यक्ति परमेश्वर से घृणा करता है (रोमियों 8:7), लेकिन नये मनुष्यत्व का मसीही निरन्तर उस बुराई से घृणा करता है (present continuous tense) जो वह अक्सर करता है (रोमियों 7:15)!

7:14

प्रश्न 2. “शारीरिक” और “पाप के स्वभाव” में होने में क्या अन्तर है?

ध्यान दें।

(1) सभी गैर-मसीही “शारीरिक” होते हैं।

गैर-मसीही का केवल एक स्वभाव होता है : पाप या दुष्टता का स्वभाव (Greek: sarx), जो उस पर हावी और उसे नियन्त्रित करता है। उसके पास उसके भीतर रहने वाला पवित्र आत्मा नहीं है (रोमियों 8:7-10)। हालाँकि वह स्वेच्छा से अपने पाप के स्वभाव का दास बना रहना चाहता है (रोमियों 6:16), लेकिन वह स्वेच्छा से अपने पाप के स्वभाव से स्वतन्त्र नहीं हो सकता। वह अपने शरीर के अंगों को अधर्म और अपवित्रता की सेवा करने के लिए दे देता है। वह स्वयं को बाइबल¹ के परमेश्वर, जिसने स्वयं को यीशु मसीह में प्रगट किया है और उसकी इच्छा के (जैसा कि बाइबल में बताया गया है) अधीन नहीं करता है। यहाँ तक कि वह स्वयं को बाइबल के परमेश्वर के सम्मुख समर्पित नहीं करता। वह कभी भी बाइबल के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता। इस प्रकार, केवल “शारीरिक” होना “पाप के स्वभाव” में होना है!

(2) सभी मसीही अपने मानव स्वभाव के केवल एक पहलू के रूप में “शारीरिक” हैं।

जैसा कि एक मसीही के पास, दो स्वभाव होते हैं : उसके पाप का स्वभाव और नये मनुष्यत्व का स्वभाव। परमेश्वर की व्यवस्था आत्मिक है (Greek: pneumatikos) (रोमियों 7:14)। अर्थात्, यह परमेश्वर की इच्छा और स्वभाव को प्रगट करती है, जो कि पवित्र, धर्मी और भली है।

एक मसीही के पाप के स्वभाव को “शारीरिक, सांसारिक” (Greek: sarkinos) कहा जाता है (रोमियों 7:14)। इस प्रकार, मसीही का पाप का स्वभाव परमेश्वर की व्यवस्था के विपरीत है। परमेश्वर की व्यवस्था “आत्मिक” है, लेकिन एक मसीही का पाप का स्वभाव “शारीरिक” है, अर्थात् यह अपवित्र, अधर्मी और दुष्ट है। एक मसीही का पाप का स्वभाव अक्सर उससे उन कार्यों को करवाने का कारण बनता है, जिनसे वो घृणा करता है, और उन कार्यों को करने से रोकता है, जिनसे वह प्रेम करता है। एक मसीही जानता है कि उसके पाप के स्वभाव में कुछ भी अच्छा या लाभकारी नहीं है (रोमियों 7:18)। इस प्रकार, “शारीरिक, सांसारिक” होने का अर्थ “पुराने स्वभाव का होना” नहीं है। मसीहियों का शारीरिक स्वभाव एक मसीही में सबसे अधिक इस बात को स्पष्टता से दर्शाता है कि (अभी तक) उसकी आत्मिक उन्नति नहीं हुई है (1 कुरिन्थियों 3:1,3) या वह पवित्र आत्मा से भरा हुआ नहीं है (इफिसियों 5:18)।

एक मसीही का नये मनुष्यत्व के स्वभाव को उसकी “बुद्धि” (Greek: nous) भी कहा जाता है (रोमियों 7:23)। यह उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में संदर्भित करता है, जिसके पास यीशु मसीह जैसा मन या सोचने का तरीका हो (1 कुरिन्थियों 2:16)। पवित्र आत्मा उसके अन्दर रहता है और उसके पाप के स्वभाव के विरोध में रहता है (गलातियों 5:17)। मसीही का नये मनुष्यत्व का स्वभाव यीशु मसीह में उसकी धार्मिक और पवित्र स्थिति को दर्शाता है (तुलना करें रोमियों 5:18 से; रोमियों 6:4-8; 1 कुरिन्थियों 1:30)। यह उसके अन्दर रहने वाले पवित्र आत्मा की वास्तविकता है (भजन. 51:10-11; यूहन्ना 14:16-18)।

¹ हो सकता है कि वह स्वयं को अन्य “देवताओं” (बुरी शक्ति) के अधीन रखता हो, लेकिन निश्चित रूप से बाइबल के परमेश्वर के अधीन नहीं, क्योंकि बाइबल का परमेश्वर सभी लोगों से नये मनुष्यत्व (यूहन्ना 3:3-8) और मन फिरोव की अपेक्षा करता है (मरकुस 1:15)!

(3) सभी मसीही “आत्मिक” बन सकते हैं

और अन्त में पूरी तरह से महिमामय पवित्र जन बन जाएंगे।

आत्मिक व्यक्ति। “आत्मिक व्यक्ति” अपना जीवन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करता है और भली और बुरी बातों के बीच अन्तर करने और जाँचने में सक्षम है (1 कुरिन्थियों 2:15)। मसीहियों का आत्मिक स्वभाव इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उनकी आत्मिक रूप से उन्नति हो चुकी है (इब्रानियों 5:14) और वे आत्मा से भरे जा चुके हैं (इफिसियों 5:19-21)।

पापी और महिमामय पवित्र व्यक्ति। नये मनुष्यत्व और अनन्त महिमामय समय के बीच, प्रत्येक मसीही अपने पाप के स्वभाव और अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच निरन्तर एक युद्ध का अनुभव करता है। इस जीवन में, एक मसीही एक चलने वाला युद्ध है (तुलना करें गलातियों 5:16-18 से)! यह तथ्य कि एक मसीही अपने पाप और नये मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच इस विरोध का अनुभव करता है, इस बात को दर्शाता है कि उसका “नया जन्म” हुआ है। शारीरिक मनुष्य इस विरोध का अनुभव नहीं करते।

- नये मनुष्यत्व से पहले एक मनुष्य केवल “पापी” होता है (रोमियों 5:8)।
- नये जन्म के बाद एक मसीही “एक पापी और एक पवित्र जन” दोनों है (रोमियों अध्याय 7)।
- परन्तु भविष्य में, मसीह के दूसरे आगमन के समय एक मसीही “महिमामय पवित्र जन” बन जाएगा (रोमियों 8:30; 1 यूहन्ना 3:1-3)!

7:14

प्रश्न 3. “पाप के दास होने” और “पाप को बेचे जाने” में क्या अन्तर है ?

ध्यान दें।

(1) एक गैर-मसीही पुराने मनुष्यत्व की दशा में

“पाप का दास” है (रोमियों 6:6, 16-17, 19)।

रोमियों 6:6, 16, 17 और 19 पद बताते हैं कि अपने नये मनुष्यत्व से पहले, सभी लोग पाप के दास थे। उन्होंने स्वयं को अनाज्ञाकारिता (past tense) का दास होने के लिए दे दिया। वे ऐसे लोगों के समान व्यवहार करते हैं, जिन्होंने स्वेच्छा से स्वयं को पाप के हाथों बेच दिया, जो उनके पाप के स्वभाव में वास करता है (तुलना करें 1 राजाओं 21:20 से; 2 राजाओं 17:17)। यह इस तथ्य से सिद्ध होता है कि अपने पुराने मनुष्यत्व की अवस्था में वे अपने पाप के स्वभाव की इच्छाओं को पूरा करते हैं और अपने शरीर के अंगों को अशुद्धता और बढ़ती दुष्टता (अधर्म) की सेवा करने के लिए दे देते हैं। क्योंकि वे अपने पुराने मनुष्यत्व के स्वभाव के हैं, वे स्वतन्त्र नहीं हैं और न ही वे स्वयं को अपने पाप के स्वभाव की प्रबल शक्ति से स्वतन्त्र कर सकते हैं। वे स्वयं को बाइबल और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अधीन नहीं करते। वे बाइबल के परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:7-8)। इस प्रकार, “पाप का दास होने” का अर्थ है “अभी भी पुराने मनुष्यत्व” को धारण किए रहना!

(2) एक मसीही नया जन्म पाते हुए भी

“पाप के हाथों बिका हुआ है” (रोमियों 7:14)।

“पाप का दास होने” की दशा वापस कभी नहीं लौटती। जब कोई व्यक्ति नये मनुष्यत्व का मसीही बन जाता है, तो वह हमेशा के लिए “पाप के स्वभाव का दास” होने की दशा से स्वतन्त्र हो जाता है और हमेशा के लिए परमेश्वर का दास बन जाता है (aorist tense, रोमियों 6:18, 22)। “पाप का दास होने” (रोमियों 6:6, 16, 17, 19) की दशा वापस कभी नहीं लौटती!

“पाप के हाथों बेचे जाने” की दशा पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान एक मसीही का अनुभव बनी रहती है। रोमियों 7:14 में पाया जाने वाला इब्रानी भाषा का यह भाग “पाप के हाथ बेचा जाना” (Greek: pepramenos upo tén hamartian) (perfect passive of pipraskó) और “पाप का दास नहीं होना (अनाज्ञाकारिता, अशुद्धता, दुष्टता) (Greek: doulos té hamartia/ eis hupakoé/ té akatharsia/ té anomia) (रोमियों 6:6,16,17,19), इस प्रकार की स्थिति को नये मनुष्यत्व के मसीहियों की दशा कैसे कहा जा सकता है? रोमियों 7:14-26 की व्याख्या इसके समानांतर गद्यांश रोमियों 5:15-26 में बेहतर तरीके से की गई है।

गलातियों 5:16-17 पद (मसीहियों से) कहता है, “आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा (Greek: epithumia sarx) किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।”

मसीही अभी भी “अपने पाप के स्वभाव की लालसाओं” (शारीरिक) का अनुभव करते हैं, लेकिन अब वे इन लालसाओं के अधीन नहीं हैं और उन्हें इन लालसाओं में लिप्त नहीं होना चाहिए। हालाँकि, जब वे पवित्र आत्मा के अधीन अपने जीवन को व्यतीत नहीं करते, तब वे इन पाप की लालसाओं में लिप्त हो जाते हैं। फिर वे ऐसे कार्य करेंगे जो उन्हें एक मसीही होने के नाते नहीं करने चाहिए।

बाइबल सिखाती है कि नया जन्म लेने वाला विश्वासी अभी तक सिद्ध नहीं है। समय के साथ विश्वासी में विरोध उत्पन्न होता है। वह अभी भी अपने वर्तमान निर्बल शरीर में रहता है, जो पाप के स्वभाव के अधीन है। और यह पाप का स्वभाव उस पर लगातार और इतनी गंभीरता से प्रहार करता है कि मसीही हमेशा वह कार्य नहीं कर पाता जो वह वास्तव में वह करना चाहता है।

फिर भी, एक मसीही के पास ऐसा कुछ है, जो गैर-मसीही के पास नहीं होता, अर्थात्, पवित्र आत्मा मसीही में वास करता है! मसीही को उसके “पाप के स्वभाव के हाथों बेच दिया गया है” और कभी-कभी वह मृत्यु का फल उत्पन्न करता है (तुलना करें गलातियों 5:19-21 से; रोमियों 7:5), लेकिन वह “अब अपने पाप के स्वभाव का दास नहीं है”। अपने पाप के स्वभाव का दास केवल अपने पाप के स्वभाव को “हाँ” कह सकता है और केवल पाप ही कर सकता है, लेकिन एक मसीही पाप को “न” कह सकता है! एक मसीही जन पवित्र आत्मा का दास बन गया है और आमतौर पर परमेश्वर के लिए फल (आत्मा का फल) उत्पन्न करता है (गलातियों 5:22-25; रोमियों 7:4)।

यद्यपि उसका पाप का स्वभाव अभी भी एक शक्तिशाली वास्तविकता है (रोमियों 7:14-26), फिर भी एक मसीही ने अपने पाप के (शारीरिक) स्वभाव को उसके फल (पाप की लालसाओं और अभिलाषाओं) समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है (गलातियों 5:24)। एक मसीही ने अपने पाप के स्वभाव में जीवन व्यतीत करना छोड़ दिया है। वह अपने नये मनुष्यत्व के स्वभाव के साथ अपने जीवन को व्यतीत करने की इच्छा रखता है, वह ऐसा कर भी सकता है और करेगा भी। या इसे दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए, तो वह स्वयं को पवित्र आत्मा और मसीह के अधीन स्वेच्छ से सौंप देता है जो उसके नये जीवन के भीतर वास करता है। एक मसीही पृथ्वी पर पहले से ही उस सिद्धान्त की प्रक्रिया में है जिसमें उसे होना चाहिए : अर्थात् एक पवित्र जन। या इसे दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए, तो पवित्र आत्मा निरन्तर एक मसीही के जीवन में यीशु मसीह की धार्मिकता और पवित्रता को भरता रहता है (जिसे यीशु मसीह ने उसके लिए अर्जित किया था) (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 1:30)।

एक मसीही “पाप के हाथों बिका (Greek: pipraskó) (perfect tense, passive) हुआ” (रोमियों 7:14) या “पाप के स्वभाव के युद्ध का एक कैदी है” (Greek: aichmalótizó) (present continuous tense) (पाप की व्यवस्था जो उसके शरीर के अंगों के भीतर काम करती है) (रोमियों 7:23)। इस प्रकार एक मसीही न चाहते हुए भी युद्ध

का एक कैदी या एक शक्ति का बन्धक है जो अपनी इच्छा के लिए पराया मनुष्य है और जिससे वह स्वयं को स्वतन्त्र नहीं कर सकता है। वह इस बात को स्वीकार करता है कि उसका पाप का स्वभाव अभी भी एक वास्तविकता है जो उस पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालता है। वह अनजाने में अपने पाप के स्वभाव के प्रभावशाली संचालन के अधीन है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि वह बार-बार उन कार्यों को करता है, जो वह नहीं करना चाहता (रोमियों 7:15) और सभी भले कार्यों को नहीं कर पाता (रोमियों 7:18)। जैसा कि गलातियों 5:17 में पाया जाता है, वह एक सामर्थी आत्मिक और शारीरिक विरोध (युद्ध, लड़ाई) का अनुभव करता है जो उसके वर्तमान शरीर के अंगों में व्याप्त है, जिसमें पाप का स्वभाव पवित्र आत्मा, जो उसमें वास करता है, के विरोध में लालसा करता है (रोमियों 7:23)।

हालाँकि, गलातियों 5:22-25 के समान रोमियों 8:12-14 में सिखाया गया है कि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो एक मसीही में वास करता है, उसे अपने पाप के स्वभाव के अनुसार अपने जीवन को व्यतीत करने की आवश्यकता नहीं है और वह पवित्र आत्मा के द्वारा अपने पाप के स्वभाव के कार्यों को क्रूस पर चढ़ा सकता है। अपने भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा, एक मसीही बार-बार अपने पाप के स्वभाव का विरोध कर सकता है और वह कार्य कर सकता है जो वह वास्तव में करना चाहता है, अर्थात् परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना।

लेकिन क्योंकि मसीही में भी पाप का स्वभाव होता है और वह हमेशा पवित्र आत्मा पर निर्भर नहीं रह सकता, इसीलिए वह अक्सर अपने पाप के स्वभाव के बुरे प्रभाव का विरोध नहीं कर पाता और जो वह करना चाहता है वह नहीं करता या नहीं कर सकता। हालाँकि, मसीही जन आत्मिक और नैतिक रूप से नया जन्म लेता है और पवित्र आत्मा के अधीन रहता है, लेकिन फिर भी वह अपने पाप के स्वभाव से बहुत प्रभावित होता है और पवित्र आत्मा की आज्ञाओं का पालन नहीं करता। जब तक मसीही अपने पाप के स्वभाव के साथ अपनी वर्तमान शारीरिक देह में रहता है, तब तक उसका पाप का स्वभाव उस पर प्रहार करता रहेगा और उसमें पवित्र आत्मा का शासन पूर्ण या सिद्ध नहीं होगा। यह केवल मसीह के दूसरे आगमन पर ही होगा (1 यूहन्ना 3:1-3)।

7:24

प्रश्न 4. “पाप की देह” और “मृत्यु की देह” में क्या अन्तर है ?

ध्यान दें।

प्रेरित पौलुस शरीर से जुड़े चार शब्दों का उपयोग करता है : हालाँकि इन चार शब्दों के बीच एक सम्बन्ध और मतभेद दोनों हैं।

(1) रोमियों 6:6 में पाप की देह।

“पाप की देह” (Greek: to sóma tés hamartias) पुराने मनुष्यत्व की शारीरिक देह है। यह गैर-मसीही की शारीरिक देह है, जिसमें उसका पाप या दुष्टता का स्वभाव वास करता, उसकी दशा को परिवर्तित और नियन्त्रित करता, और उस पर प्रभुता करता है, और स्वेच्छा से, अशुद्धता और निरंतर बढ़ती दुष्टता के दास के रूप में उस पर प्रबलता से कार्य करती है। जब कोई व्यक्ति मसीही बन जाता है, तो वह इस “पाप की देह” से स्वतन्त्र हो जाता है (रोमियों 6:6,18,22)। फिर भी, उसकी शारीरिक देह “मृत्यु की देह” और “दीन-हीन देह” बनी रहती है।

(2) रोमियों 7:24 में मृत्यु की देह।

“मृत्यु की देह” (Greek: to sóma tou thanatou) नये मनुष्यत्व के मसीही की शारीरिक देह है। यह मसीही की शारीरिक देह है, जो अभी भी पाप के स्वभाव से भरी हुई है, लेकिन अब पवित्र आत्मा के द्वारा नये मनुष्यत्व

के स्वभाव से भी भरी हुई है। यह मसीही की शारीरिक देह है, जिसके द्वारा वह बार-बार पाप करता रहता है, क्योंकि मसीही उस समय पवित्र आत्मा पर पूर्ण निर्भर नहीं रहता है। इसके परिणामस्वरूप, पाप या दुष्टता का स्वभाव (पाप की व्यवस्था) (रोमियों 7:21,23), जो मसीही में वास करता है, आत्मिक और विशेष रूप से शारीरिक मृत्यु का फल उत्पन्न करता है। इसीलिए एक मसीही की देह को “मृत्यु की देह” कहा जाता है।

(3) फिलिपियों 3:21 में दीन-हीन देह।

“दीन-हीन देह” (Greek: to sóma té s tapeinóseós) एक मसीही की मरे हुए लोगों में से पुनरुत्थान के पहले की शारीरिक देह है। यह मसीही की शारीरिक देह है, जो अभी भी शारीरिक मृत्यु के अधीन है। यह “मृत्यु की देह” के समान है जो अन्ततः मर जाती है। अन्तिम बैरी जिसे मसीह नाश करेगा वह शारीरिक मृत्यु है (1 कुरिन्थियों 15:26)।

(4) फिलिपियों 3:21 में महिमा की देह ।

“महिमा की देह” (Greek: to sóma té s doxés) एक मसीही की मरे हुए लोगों में से पुनरुत्थान के बाद की शारीरिक देह है। केवल अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह “दीन-हीन देह” को “महिमा की देह” में बदलने के लिए अपनी सारी सामर्थ्य का उपयोग करेगा, जो यीशु मसीह की महिमामय पुनर्जीवित शारीरिक देह के समान होगी! महिमा की देह अविनाशी, महिमामय, सामर्थी और आत्मिक होगी (1 कुरिन्थियों 15:42-44,54)।

कदम 4. प्रयोग करें।

अनुप्रयोग

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवतः अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं ?

साझा करें व लिखें। आइये हम आपस में सोच-विचार करके रोमियों 7:14-25 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें ?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें। (याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थापित करेंगे या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगे। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. रोमियों 7:14-25 में लिखे हुए संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 7:14. परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं सहित) का अध्ययन करें, क्योंकि यह आज्ञाओं के रूप में परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाती है। यह आत्मिक है, अर्थात् यह पवित्र, धर्मी और भली है।
- 7:15,23. जब आप अपने पाप के स्वभाव और अपने नए मनुष्यत्व के स्वभाव के बीच निरन्तर आत्मिक और शारीरिक युद्ध का अनुभव करते हैं तो निराश न हों। यह एक प्रमाण है कि आपका नया जन्म हुआ है।
- 7:18. महसूस करें कि आपके पाप के स्वभाव में एक भी अच्छी बात नहीं है। इसलिए कभी भी अपने पाप के स्वभाव के साथ प्रयोग न करें।
- 7:24. पूरी तरह से आश्वस्त रहें कि आपके शरीर में वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा केवल यीशु मसीह ही आपके पाप के स्वभाव की प्रभुता से आपको बार-बार बचा सकते हैं।

2. रोमियों 7:14-25 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं मानता हूँ कि मेरे पाप के स्वभाव का प्रभावशाली संचालन मुझे वह करने के लिए विवश करता है जो मैं नहीं करना चाहता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मैं अभी भी अपरिपक्व, निर्बल या शारीरिक हूँ। फिर भी, मैं अपने द्वारा किए गए पाप की पूर्ण जिम्मेदारी लेता हूँ (तुलना करें 1 यूहन्ना 1:8,10)। मुझे इस बात का एहसास है कि मेरे पाप का स्वभाव मेरी अपनी सामर्थ्य और परमेश्वर की व्यवस्था की सामर्थ्य से परे है जो मुझे पाप करने से स्वतन्त्र नहीं कर सकता। इस प्रकार, मैं मानता हूँ कि मेरे पाप का स्वभाव पूरी तरह से दुष्टता से भरा हुआ है और मैं अपने पापों का अंगीकार (1 यूहन्ना 1:9) और पश्चाताप करना जारी रखूँगा।

मैं मानता हूँ कि अपने आप में, मैं अक्सर अपने पाप के स्वभाव का विरोध या पूर्ण रूप से उसका नाश करने में असहाय महसूस करता हूँ। इसलिए, पौलुस के समान, मैं अपने पाप के स्वभाव की प्रभावशाली शक्ति के प्रभाव से छुटकारा पाने के लिए स्वयं के बाहर उद्धारकर्ता की तलाश में हूँ! मेरा न्याय करने और पापों से स्वतन्त्र करने के लिए मुझे यीशु मसीह द्वारा अर्जित की गई धार्मिकता की आवश्यकता है। पवित्र होने के लिए भी मुझे यीशु मसीह की आवश्यकता है! केवल यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह ही निश्चित रूप से मुझे वर्तमान समय में मेरे पाप के स्वभाव के पूर्ण प्रभाव की सामर्थ्य से स्वतन्त्र करेगा।

कदम 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइये रोमियों 7:14-25 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।

(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पंक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	प्रार्थना (8 मिनट) (मध्यस्थता) दूसरों के लिए प्रार्थना करें
---	---

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	तैयारी (2 मिनट) (निर्धारित कार्य) अगले अध्याय के लिए
---	--

(समूह के अगुवे) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण। चले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों और राज्य का प्रचार करें।
2. रोमियों 7:14-25 पर एक दूसरे के साथ मिलकर या लोगों के समूह में प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। भजन नीतिवचन 1,3,4 और 5 में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें।
पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करें। (5) परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है : इफिसियों 1:11-12। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. **बाइबल अध्ययन**। लूका अध्याय 11:5-13 में लिखे हुए “मध्यता करने वाले मित्र” और लूका 18:1-8 में “निरन्तर आग्रह करने वाली विधवा” के दृष्टान्तों की तैयारी करें।
दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिए छः कदमों का पालन करें
6. **प्रार्थना**। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यतनीकरण करें**। अपने नोट्स में शान्त समय, याद करने वाले, बाइबल अध्ययन और इस तैयारी की सामग्री के नोट्स को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शांत समय) नीतिवचन 1,3,4 और 5
---	--

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 1,3,4 और 5) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (परमेश्वर की महानता) (5) यिर्मयाह 32:17
---	--

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(5) परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है। यिर्मयाह 32:17। हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़ी सामर्थ्य और चढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

4	शिक्षा देना (85 मिनट) (यीशु के दृष्टांत) मध्यस्थता करने वाला मित्र और दृढ़ विधवा
---	---

लूका 11:5-10 में “मध्यस्थता करने वाला मित्र” और लूका 18:1-8 में “दृढ़ विधवा” का दृष्टांत **परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करने** के विषय में दृष्टांत हैं।

“एक दृष्टांत” स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह सच्ची जीवन कहानी या चित्रण होता है जिसे आत्मिक सत्य सिखाने के लिए बनाया जाता है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों का समाना उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की आवश्यकता से कराने के लिए सामान्य और रोरमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इन दृष्टांतों का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे (दिखें नियमावली 9, परिशिष्ट 1)।

क. मध्यस्था करने वाले मित्र का दृष्टांत

पढ़ें लूका 11:1-10।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत की कहानी अंलकारिक भाषा में बातई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

वर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं ?

ध्यान दें। यीशु ने कहानी को एक प्रश्न के रूप में बताया। यीशु ने जो प्रश्न पूछा और जिन परिस्थितियों का चित्रण किया वह 7 वें वचन पर जोर देने के साथ, वचन 5 से 7 में पायी जाती है। यीशु इस प्रश्न का उत्तर वचन 8 में देते हैं।

यह कहानी तीन मित्रों के बारे में है। उनके बीच अंतर करने के लिए हम उन्हें “जरुरतमंद मित्र”, “मध्यस्थता करने वाला मित्र” जो कि मेजबान है, और “बहुत सक्षम मित्र” कहेंगे।

मेजबान या मध्यस्थता करने वाले मित्र का अनुरोध। देर शाम हो जाती है। अचानक, एक जरुरत मंद मित्र उसके दरवाजे पर दिखाई देता है। यह जरुरतमंद व्यक्ति अपनी यात्रा से थका हुआ और भूखा है। वह मेहमान नवाजी, भोजन और सोने के लिए स्थान की अपेक्षा करता है। लेकिन मेजबान मेहमानों की बिल्कुल भी अपेक्षा नहीं कर रहा था; वह पूर्णरूप से तैयार नहीं था और उसके घर में भोजन नहीं था। अपने बड़े अनुमान से वह अपने बहुत ही सक्षम मित्र के घर जाता है। यहाँ मेजबान मध्यस्थता करने वाला मित्र बन जाता है। मध्यस्थता करने वाला मित्र अपने अति सक्षम मित्र से तीन रोटियाँ मांगता है। वह अगले दिन तीन रोटियों को लौटाने का वादा करता है। इस बिंदु पर मेजबान मित्र एक मध्यस्थता करने वाला मित्र बन जाता है।

उसके बहुत ही सक्षम मित्र का संभावित उत्तर। क्या मेजबान का अति सक्षम मित्र उसे नकारात्मक उत्तर देगा ? उसका अति सक्षम मित्र पहले ही अपने एक कमरे के घर का दरवाजा बंद कर अपने परिवार के साथ सोने के लिए बिस्तर पर लेट गया था। यदि अति सक्षम मित्र उठ कर फर्श से होता हुआ दरवाजे तक जाकर दरवाजे के कड़ी को खोलेगा, तो हो सकता है कि दरवाजे के शोर से उसका परिवार नींद से जाग जाए। क्या उसका अति सक्षम मित्र यह कहेगा कि, ‘मुझे क्षमा कर, लेकिन मैं नहीं उठ सकता और तुझे कुछ नहीं दे सकता’ ? पृथ्वी पर सामान्य जीवन में, मेजबान के अति सक्षम मित्र के संबंध में यह सम्भव है कि वह उसे वह देने के लिए जिसकी उसे आवश्यकता है अनिच्छुक या असम्मत हो।

तीन रोटियाँ। ये रोटियाँ गोल और सपाट होती थी, और एक बार के भोजन के लिए एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त थी।

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की “कहानी” के संदर्भ में दृष्टांत का “समायोजन” और “स्पष्टीकरण या लागूकरण” शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवरस या दृष्टांत के बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। *समायोजन* आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के *बाद* पाया जाता है।

खोजें और वर्चा करें। इस दृष्टांत का *समायोजन*, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है ?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 11:1-4 में पाया जाता है।

यीशु के एक चेले ने यीशु से कहा की हमें प्रार्थना करना सिखा। तब यीशु ने उन्हें “प्रभु की प्रार्थना” सिखाई। मत्ती 6:9-13 में प्रभु की प्रार्थना की तुलना में लूका 11:2-4 में प्रभु की प्रार्थना छोटी है। मत्ती रचित सुसमाचर का तीसरा और छठवा निवेदन लूका रचित सुसमाचर के दूसरे और पांचवे निवेदन में शामिल है। यीशु ने संभावित रूप से कई बार लोगों को प्रभु की प्रार्थना सिखायी। उनकी मंशा या मांग यही नहीं थी कि मसीही लोग जब भी प्रार्थना करें तो इन्ही शब्दों का प्रयोग करें। प्रभु की प्रार्थना मसीहियों के लिए प्रार्थना करने का एक नमूना या तरीका है।

इस बिंदू पर यीशु ने मध्यस्थता करने वाले मित्र का दृष्टांत बताया।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 11:5-7 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण लूका 11:8-13 में निहित है।

वचन 7 में यीशु का अंतर्निहित उत्तर है, “तुम में से कोई भी अपने उस अति सक्षम मित्र से ऐसा इंकार नहीं पाएगा जिसके पास तुम सहायता के लिए जाओ।” और वचन 8 में यीशु का वास्तविक उत्तर और भी बेहतर है। अति सक्षम मित्र निश्चित रूप से जितनी उसकी आवश्यकता है उठ कर उसे देगा! हो सकता है कि वह एक सच्चा और सहानुभूतिपूर्ण मित्र हो, लेकिन यदि नहीं, तो भी, वह उठकर मध्यस्थता करने वाले मित्र को जो कुछ भी उसे चाहिए देगा, क्योंकि मध्यस्थता करने वाले मित्र ने मांगना बंद नहीं किया!

लूका 11:9-13 के स्पष्टीकरण के लिए, देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 9। “मांगने वाले पुत्र का दृष्टांत।” यीशु कहते हैं “मांगते रहो!” “दुंदूते रहो!” “खटखटाते रहो!” यह तीनों क्रियाएँ अनिवार्य और वर्तमान काल में हैं। इसलिए यह दृढ़ता या नियमितता को व्यक्त करते हैं! इस प्रकार यीशु प्रार्थना की प्रभावशीलता पर जोर देना जारी रखते हैं। मांगने वाले मित्र के दृष्टांत का मुख्य संदेश यह है कि परमेश्वर पिता अपने बच्चों को कभी निराश नहीं करेंगे, जब वे प्रार्थना करते हैं! वे इस प्रकार की प्रार्थना का उत्तर देंगे जिसमें दुंदूत और खटखटाना शामिल हैं, अर्थात्, विश्वास के साथ काम और नियमितता!

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। दृष्टांत रूपक कथा नहीं है! प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक महत्व नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें। यीशु केवल एक ही विवरण बताते हैं और वह है व्यक्ति की दृढ़ता।

तीनों मित्र प्रासंगिक विवरण हैं। वे जरूरतमंद मित्र, मेजबान या मध्यस्थता करने वाला मित्र और अति सक्षम मित्र हैं। ये तीनों मित्र प्रार्थना की स्थिति का वर्णन करते हैं। “जरूरतमंद मित्र” एक मसीही की वास्तविक जरूरत का प्रतिनिधित्व करता है, विशेषरूप से ऐसी जरूरत जिसकी अपेक्षा न की गई हो, जिसमें ऐसे जरूरतमंद लोग शामिल हो सकते हैं जिन्हें परमेश्वर उनके मार्ग में रखते हैं! “मध्यस्थता करने वाला मित्र” ऐसे मसीही का प्रतिनिधित्व करता है जो कि आप और मैं हैं। यह वह व्यक्ति है जो मध्य रात्री में भी अपने जरूरतमंद मित्र का मित्र होने के लिए इच्छुक है। यह वह जन है जो उस समय भी दूसरों की परवाह करता है जब बाकि सब सो रहे हों। और “अति सक्षम मित्र” परमेश्वर पिता का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन इस अंतर के साथ कि दृष्टांत की कहानी में अति सक्षम मित्र का उद्देश्य इस पृथ्वी के सामान्य और अनिच्छुक व्यक्ति के समान था, जबकि परमेश्वर के उद्देश्य पर कभी प्रश्न नहीं उठाया जा सकता!

मध्यस्थता करने वाले मित्र की दृढ़ता प्रासंगिक विवरण है। यह एकमात्र विवरण है जो यीशु ने समझाया है। यह केवल कहानी का एक भाग ही नहीं है, लेकिन विशेषरूप से यीशु के दृष्टांत के लागूकरण का एक हिस्सा है। “दृढ़ता” अर्थात् निडर स्पष्टवादिता, आश्वस्त आग्रह या लज्जाहीन अवस्थिति। एक बार फिर यह स्पष्ट है कि इस दृष्टांत में एक स्पष्ट बिंदू, एक मुख्य संदेश है। मुख्य संदेश यह है कि परमेश्वर पिता एक मसीही की दृढ़ और नियमित प्रार्थना (मध्यस्थता) का उत्तर देंगे! कहानी के सभी विवरण इस मुख्य संदेश की पुष्टि करते हैं।

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांत को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांत की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

वर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है ?

ध्यान दें।

लूका 11:5-13 में मध्यस्थता करने वाले मित्र का दृष्टांत “परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित प्रार्थना” के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है: जबकि पृथ्वी पर एक मित्र, चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी क्यों न हो, निश्चितरूप से आपकी सहायता करता है, जब आप उससे सहायता मांगते हैं, लेकिन आपका मित्र जो स्वर्ग में है उसके उद्देश्य पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता, वह हमेशा दृढ़ और नियमित प्रार्थना का उत्तर देगा।” पद 8 कहाता है, “उसकी दृढ़ता के कारण वह उसे उतना देगा जितनी उसे जरूरत है।” दृढ़ता शब्द को सर्वश्रेष्ठ रूप से निडर स्पष्टवादिता, आश्वस्त आग्रह या लज्जाहीन अवस्थिति के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। इसका अर्थ है किसी विशेष चीज को दृढ़ता से मांगना और बिना डरे और लज्जित महसूस किए मांगते रहना।”

दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग निडर स्पष्टवादिता, आश्वस्त आग्रह और लज्जाहीन अवस्थिति के साथ मध्यस्थता या प्रार्थना करते हैं (इब्रानियों 4:16)।

हालाँकि, जब हम मध्यस्थता करते हैं तो हो सकता है कि हम पाएं कि उत्तर मिलने में कठिनाई या देर हो रही है। यह ऐसा हो सकता है कि जैसे परमेश्वर यह कहा रहे हों कि, “मैं तुम्हें कुछ नहीं दूंगा”, या फिर “मैं इस क्षण तुम्हें कुछ नहीं दे सकता!” जब ऐसा होता है तो उस समय अपने इस विश्वास को पकड़े रहना कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनते हैं, मुश्किल होता है। तब हमारा विश्वास परखा जाता है और हमें दृढ़ता सीखनी पड़ती है।

रोमियों 4:20-21 में अब्राहम के समान हमें अविश्वास के कारण परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में डगमगाना नहीं चाहिए। इस दृढ़ता के साथ कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरा करने के योग्य है, हमें लगातार मांगते और मांगते और मांगते रहना चाहिए। परमेश्वर हम से यही चाहते हैं। परमेश्वर उन पर हमारे विश्वास को पुरस्कृति करते हैं, परमेश्वर हमें तैयार करने के लिए कुछ भी करेंगे कि हम उन पर अपने इस विश्वास का अभ्यास करें। धन्य है वह मसीही जो उस समय हार न मानें जब प्रार्थना का उत्तर मिलने में देरी होती है या जब परमेश्वर शांत होते हैं या परमेश्वर ऊपरी तौर पर देने से मना करते हैं!

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशों के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और वर्चा करें। बाइबल के ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है ?

(1) स्वतंत्रता और दृढ़ता के साथ प्रार्थना करें।

पढ़ें। इब्रानियों 4:16, “इसलिए आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांध कर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।” सभी मसीहियों को विश्वास और स्वतंत्रता के साथ परमेश्वर के पास आना चाहिए। उनसे परमेश्वर के सिंहासन के निकट हियाव बांध कर आने का आवाहन किया गया है। वहाँ वे अपनी समस्या के लिए दया और अपने पापों के लिए अनुग्रह पाएंगे। वहाँ वे आवश्यकता के समय सहायता के लिए अनुग्रह पाएंगे! (तुलना करें इब्रानियों 11:6 से)

(2) कई अनावश्यक शब्दों के साथ प्रार्थना न करें।

पढ़ें। मत्ती 6:7। यीशु ने चेतावनी दी कि “प्रार्थना करते समय अन्यजातियों के समान बक-बक न करो” यह दृढ़ प्रार्थना करने के समान नहीं है। यह बहुत से शब्द और हमारा वह बल नहीं है जिसे हम प्रार्थना करने के लिए लगाते हैं, जो प्रभाव डालता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जो थोड़े शब्द हम विश्वास के साथ बोलते हैं परमेश्वर उन्हें सुनते हैं और प्रार्थना का उत्तर अपने समय पर और अपने तरीके से देंगे।

6. दृष्टांत के मुख्य उपदेशों का संक्षेप में वर्णन करें।

वर्चा करें। मध्यस्थता करने वाले मित्र के इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है ? यीशु ने हमें क्या जानना या विश्वास करना और क्या होना या करना सिखाया ?

ध्यान दें। मध्यस्थता करने वाले मित्र का दृष्टांत प्रार्थन करना या मध्यस्थता करने के बारे में मसीहियों को बहुत महत्वपूर्ण सत्य सिखाता है।

(1) मध्यस्थता करने वाले मित्र को तत्काल आवश्यकता को देखना चाहिए।

मध्यस्थता की शुरुआत लोगों की तत्कालिक आवश्यकता को देखते हुए हुई है। जरूरतमंद मित्र भूखा था और उसके पास खाने को कुछ नहीं था। साथ ही वह रात के समय रोटी भी नहीं खरीद सकता था। यदि हम यह सिखने के लिए जाएं की दूसरों के लिए किसी प्रकार प्रार्थन करनी है तो हमें अपने चारों ओर मैजूद जरूरतों के लिए अपनी आंखें और हृदयों को खोलना होगा।

मसीहियों को यह जानना चाहिए कि ऐसे हजारों-लाखों गैर-मसीही लोग हैं जो पाप, आज्ञानता और पहचान के मध्यरात्री अधंकार में हैं। वे यीशु मसीह के उद्धार के ज्ञान की कमी के कारण नाश हो रहे हैं। उनमें से बहुत से समाजिक रूप से पिछड़े हुए, आर्थिक रूप से गरीब, भावनात्मक रूप से टूटे हुए और शारीरिक रूप से बीमार हैं। वे अधमरा, उपेक्षित, सताया हुआ, आत्मिक रूप से बीमार या फलहीन जीवन जीते हैं, जैसे बिना चरवाहे के भेड़। बहुत से हमारे शहर, गाँव और पड़ोस में रहते हैं। कुछ नहीं, कुछ भी नहीं केवल परमेश्वर से प्रार्थना करना ही लाभ पहुँचा सकता है!

(2) मध्यस्थता करने वाले मित्र को जरूरतमंद मित्र से निस्वार्थ प्रेम करना चाहिए।

मेजबान या मध्यस्थता करने वाला मित्र मध्यरात्री में वास्तविक मित्र था। वह अपने थके हुए और भूखे मित्र को केवल अपने घर में ही नहीं लाया परन्तु अपने हृदय में भी उसे जगह दी। उससे यह कह कर बहाना नहीं बनाया, “मेरे पास तुझे देने के लिए कुछ नहीं है।” नहीं, बल्कि मध्यरात्री में जब सभी दुकानें बंद हो चुकी थी और सब लोग सो रहे थे, तब वह अपने जरूरतमंद मित्र की सहायता करने के लिए उठ कर मार्ग ढूँढ़ने गया। उसने अपनी नींद और अपने गरम घर के आराम को त्याग दिया। उसने अपने आप का इंकार

किया (लूका 9:23)। उसका प्रेम स्वार्थी नहीं बल्कि बलिदानपूर्ण था (1कुरिन्थियों 13:5)। मसीही प्रेम दूसरों की खातिर स्वयं को भूल जाता है। प्रेम दूसरों लोगों की जरूरतों को लेकर उन्हें अपनी जरूरत बना लेता है। मसीही प्रेम अपना आनंद दूसरों के लिए जीने और दूसरों के लिए मरने में दृढ़ता है जैसा कि यीशु मसीह ने किया। कई बार मसीही प्रेम की कमी मसीहियों की प्रार्थनाओं में बहुत सी कमियों का कारण बनती है। सच्चे मसीही प्रार्थना करने को अधिक प्रिय जानते हैं और प्रार्थना करेंगे!

(3) मध्यस्थता करने वाले मित्र को सहायता करने में स्वयं की असमर्थता समझनी चाहिए।

मध्यस्थता करने वाला मित्र जरूरतमंद मित्र की सहायता करने के लिए इच्छुक था, लेकिन उसके पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं था! उसके पास न तो कोई माध्यम था न ही देने की सामर्थ्य थी। वह स्वयं गरीबी और लाचारी की स्थिति में आ चुका था! मदद करने में सक्षम न होने के कारण वह प्रार्थना करने और मांगने की दशा में था। उसने अपने अति सक्षम मित्र के सामने अपनी गरीबी और सामर्थ्यहीनता को मान लिया। उसने कहा, “मेरे पास एक भूखा मित्र आया है, लेकिन उसके सामने रखने के लिए मेरे पास कुछ नहीं”। यह बोध मध्यस्थता को और मजबूत बनाता है। केवल इस बात के प्रति कायलता ही कि, परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य ही लोगों को उनके पापों और परमेश्वर के न्याय से उद्धार दिला सकती है, मध्यस्थता को मजबूत करती है। यह अनुभूति की जो कुछ भी हम लोगों को उद्धार दिलाने के लिए स्वयं करते हैं वह अपर्याप्त है, हमें मध्यस्थता करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह समझ कि केवल परमेश्वर ही लोगों को जीवन और उन्नति दे सकते हैं, हमें मांगने पर विवश कर देगी। मध्यस्थता ही मेजबान मित्र के लिए अपने जरूरतमंद मित्र की सहायता करने और अपना प्रेम प्रगट करने का एक मात्र मार्ग जान पड़ता है। यह उन मसीहियों के लिए चेतावनी है जो यह समझते हैं कि हम स्वयं की सामर्थ्य और बुद्धि में काम कर सकते हैं। साथ ही यह उन मसीहियों के लिए प्रोत्साहन भी है जो कमजोर महसूस करते हैं। साधारण और कमजोर मसीही भी प्रार्थना कर सकता है और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से आशीर्ष प्राप्त कर सकता है।

(4) मध्यस्थता करने वाले मित्र को विश्वास होना चाहिए कि उसका अति सक्षम मित्र मदद करेगा।

जो मध्यस्थता करने वाले मित्र के पास नहीं है उसकी आपूर्ति दूसरा मित्र कर सकता है! मध्यस्थता करने वाले मित्र का एक और मित्र था जो पास ही रहता था, जिसे वह जनता था कि वह जो कुछ भी उसकी आवश्यकता है उसे पूरा करने में सक्षम और इच्छुक है। उसे निश्चय था कि यदि वह केवल मांगे तो उसे प्राप्त होगा। इसलिए वह मध्यरात्री में बाहर निकलकर अपने अति सक्षम मित्र के पास रोटियाँ माँगने गया जिसकी उसे आवश्यकता थी। हमारा सक्षम मित्र कोई और नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। वह प्रत्येक मसीही के बहुत निकट है और हर उस प्रार्थना को सुनता और उत्तर देता है जो उसकी इच्छा के अनुसार होती है। वह सहायता कर सकता है और सहायता करने के लिए इच्छुक भी है! बाइबल उन प्रतिज्ञाओं से भरी पड़ी है जो कहती है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है, और परमेश्वर हमें वह देने के योग्य और इच्छुक है जिसकी हमें आवश्यकता है। साथ ही बहुत से मसीहियों की गवाही हमसे यह आग्रह करती है कि जो कुछ हम जरूरतमंद लोगों के लिए संभावित रूप से अपनी स्वयं की समर्थ्य से नहीं कर सकते, परमेश्वर उसे कर सकते हैं और हमारी प्रार्थना (मध्यस्थता) के उत्तर के रूप में वह उसे करेंगे।

(5) मध्यस्थता करने वाले मित्र को दृढ़ता और हियाव के साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

मध्यस्थता करने वाले मित्र ने अपने अति सक्षम मित्र से कहा, “मित्र कृप्या मुझे तीन रोटियाँ उधार दे!” हालाँकि, मध्यस्थता करने वाले मित्र के विश्वास को अचानक और अप्रत्याशित जांच का सामना करना पड़ा: उसके अति सक्षम मित्र ने मदद करने से इंकार कर दिया! उसके अति सक्षम मित्र ने कहा, “मैं उठ कर तुझे कुछ नहीं दे सकता।” इस निराशा के बाद मध्यस्थता करने वाले मित्र का प्रेमी हृदय कितर छोटा हुआ होगा! लेकिन मध्यस्थता करने वाले मित्र ने इसके बाद भी हार नहीं मानी। वह अपने निवेदन को उसके सामने रखते हुए कहता है, “मेरे मित्र को आवश्यकता है। तेरे पास बहुतायत से है। मैं तेरा मित्र हूँ कृप्या मेरी सहायता

कर!” मध्यस्थता करने वाले मित्र ने अस्वीकृति को स्वीकार करने से इंकार किया। इसके बजाय उसे बड़ी दृढ़ता और हियावा के साथ मांगा (प्रार्थना की)। वह अपने अति सक्षम मित्र के द्वार को खटखटाता रहा और मदद मांगते रहने से इंकार न किया! अपने जरूरतमंद मित्र के लिए मध्यस्थता करने वाले मित्र का प्रेम जीतना ही चाहिए!

(6) मध्यस्थता करने वाला मित्र जानता है कि निराशा असम्भव है!

यीशु कहते हैं, “मैं तुम्हें बताता हूँ, उस व्यक्ति के लज्जा छोड़कर हियाव से मांगने के कारण वह उसे उतना देगा जितनी उसकी आवश्यकता है।” यदि हम केवल परमेश्वर की विश्वास योग्यता पर भरोसा करते हैं, तब मध्यस्थता ही वह सबसे पहला काम होगा जो हम लोगों की सहायता करने के लिए करेंगे! फिर मध्यस्थता वह अंतिम चीज होगी जिसके लिए हमें समय नहीं मिल सकता! मध्यस्थता कठिन कार्य होगा, लेकिन आनंद दायक और आशावादी कार्य भी होगा क्योंकि हम यह जानते हैं कि जब भी हम मध्यस्थता करते हैं, परमेश्वर अपने समय पर उत्तर देंगे। निराशा असम्भव है क्योंकि यीशु कहते हैं, “वह उसे उतना देगा जितनी उसे आवश्यकता है।” प्रार्थना में बिताया गया समय केवल काम करने में बिताए गए समय से अधिक लाभ देगा! प्रार्थना आपके कार्य को सार्थक करने के साथ-साथ फलदायी भी बनाती है! प्रार्थना परमेश्वर के लिए मार्ग खोलती है कि वह हमारे जीवन में कार्य करे साथ ही साथ हमारे द्वारा भी कार्य करे। प्रार्थना के द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ्य को अपने साथ चलने के लिए सुरक्षित करते हैं। फलवंत कार्य का रहस्य पहले परमेश्वर से प्राप्त करना फिर लोगों को देना है। हमारी सामर्थ्यहीनता और परमेश्वर की सर्वशक्तिमान सामर्थ्य के बीच मध्यस्थता एक धन्य कड़ी है।

निष्कर्ष निकालना। सच्चे मध्यस्त की विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- लोगों की जरूरतों का ज्ञान
- ऐसी जरूरतों को पूरा करने के लिए मसीह जैसा प्रेम
- उन आवश्यकताओं को पूरा करने में व्यक्तिगत अक्षमता की चेतना
- सर्वशक्तिमान परमेश्वर में विश्वास जो प्रार्थना का उत्तर देने में सक्षम और तैयार है
- कठिनाईयों के बावजूद दृढ़ता से मांगने का साहस
- और यह आश्चर्य की परमेश्वर अपने समय में उत्तर देंगे।

ब. दृढ़ विधवा का दृष्टांत

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

वर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

न्यायी। छोटे नगरों की तुलना में शहरों में न्यायी अधिक संख्या में होते हैं। यह विशेष न्यायी अधर्मी और मनुष्य विरोधी था: वह परमेश्वर से नहीं डरता था और लोगों की परवाह नहीं करता था। वह केवल स्वयं की परवाह करता था। उसने कभी अपने आप से यह प्रश्न नहीं पूछा कि, “परमेश्वर मुझ से क्या चाहते हैं कि मैं करूँ?” या “सामान्य लोग क्या स्वीकार और अस्वीकार करे हैं?” वह न्याय से प्रेम न रखने वाला न्यायी था और सताए हुआ और वंचितों पर भी दया नहीं करता था।

विधवा। “विधवा” एक असहाय और सताए हुए व्यक्ति की तस्वीर है। बाइबल में विधवाओं को अक्सर वंचित और दबे-कुचलों के संबंध में चित्रित किया गया है।

सामना। इस विधवा के साथ अन्याय हुआ था। हो सकता है किसी ने उसे उस थोड़े से भी वंचित कर दिया हो जो उसके पास रहा होगा या उसे वह प्राप्त करने से रोक दिया गया हो जिसे प्राप्त करने की वह हकदार थी। विधवा इस आशा से न्यायी के पास गई कि वह उसका न्याय चुकाएगा और जो कुछ उसका है वह उसे देगा। हालाँकि दुष्ट न्यायी ने उसका न्याय चुकाने से इंकार कर दिया। विधवा निराश होकर अपने घर चली गई क्योंकि वह जानती थी कि उसका मुकदमा बिल्कुल ठीक था।

विधवा की दृढ़ता। जाहिर है कि न्यायी जानता था कि विधवा का मामला ठीक है। लेकिन वह यह भी जानता था कि वह उसे धूस नहीं दे पाएगी और नगर में उसका कोई प्रभाव नहीं था। कुछ समय बाद विधवा ने फिर से कोशिश की – उसी परिणाम के साथ। लेकिन उसने हार मानने से इंकार कर दिया! वह बार-बार, बार-बार, बार-बार उस अधर्मी न्यायी के पास जाकर न्याय करने के लिए विनती करने लगी। अंत में वह न्यायी उस महिला से परेशान हो गया। उसने आपने आप से कहा, “मैं उसका न्याय चुकाऊँगा। ऐसा न हो कि बार-बार आकर मेरी नाक में दम कर दे।” अंत में जिस बात ने उस न्यायी पर जीत हासिल की वह उस विधवा की दृढ़ता थी!

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है ?

(1) दृष्टांत का समायोजन लूका 17:20-37 और लूका 18:1 में निहित है।

यीशु ने अपने चेलों को उनके दूसरे आगमन से पहले लम्बे और कठिन समय के बढ़ने के बारे में बताया। हियाव छोड़ने के बजाय मसीहियों को प्रार्थना में दृढ़ होना चाहिए। यीशु ने दृढ़ता से प्रार्थना करने के बारे में सिखाने के अधर्मी न्यायी की कहानी का प्रयोग किया।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 18:2-5 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 18:6-8 में निहित है।

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। दृष्टांत में कौन से विवरण प्रासंगिक या आवश्यक है।

ध्यान दें।

यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

अधर्मी न्यायी। दुष्ट न्यायी और परमेश्वर दोने एक दूसरे के परस्पर विरोधी हैं। अधर्मी न्यायी आपने आप को छोड़ कर किसी की भी परवाह नहीं करता, लेकिन परमेश्वर लोगों की परवाह करते हैं विशेषरूप से उन लोगों की जो उस पर विश्वास करते हैं! अधर्मी न्यायी ने देरी की और रुका रहा (धूस मिलने के इंतजार में), लेकिन परमेश्वर तुरन्त विश्वासियों को देखेंगे और न्याय करेंगे!

यीशु मसीह ने एक अधर्मी न्यायी के उदाहरण का प्रयोग धर्मी परमेश्वर के साथ उसकी तुलना को उजागर करने के लिए किया! उनका उद्देश्य इस निश्चितता पर जोर देना था कि परमेश्वर निश्चित रूप से प्रार्थना का उत्तर देते हैं! इस प्रकार वह हमें प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि हम इस प्रकार का विश्वास करें जो कि यह मानता हो कि परमेश्वर आपने समय पर हर एक प्रार्थना का उत्तर देंगे!

विधवा की दृढ़ता। यीशु ने कहा, “वह उस दुष्ट न्यायी के पास बार-बार अपने निवेदन को लेकर आति रही”। यही एक मात्र विवरण है जिसका विशेष महत्व है। पद 1 में वह कहते हैं यह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है “जो हमेशा प्रार्थना करते रहते हैं और हार नहीं मानते”। “विधवा” चुने हुए या मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती है” जो परमेश्वर से दिन रात प्रार्थना करते हैं (पद 7)।

“उसका लगातार दुष्ट न्यायी के पास जाना” दृढ़ और नियमित प्रार्थना का प्रतिनिधित्व करता है! यह प्रार्थना में दृढ़ता और नियमितता नहीं है जो और अधिक विश्वास की ओर बढ़ाती है, बल्कि ऐसे परमेश्वर पर विश्वास करना है जो अस्तित्व में है और सुनता और उत्तर देता है, यदि हमें दृढ़ता और नियमित प्रार्थना की ओर बढ़ाता है! इस दृष्टांत में यीशु मसीह स्वर्ग में प्रेमी, सर्वसमर्थी और धर्मी परमेश्वर के चरित्र की तुलना, पृथ्वी पर मैजूद स्वार्थी, दुष्ट और अनुपातिक रूप से शक्तिहीन न्यायी से करते हैं।

इसलिए यीशु ने पूछा कि क्या वह विश्वास पाएंगे, अर्थात्, ऐसा विश्वास जो यह मानता हो की स्वर्ग में परमेश्वर पृथ्वी पर के दृष्ट न्यायी से बिल्कुल अलग है! और ऐसा विश्वास कि परमेश्वर तुरन्त उस मसीही के साथ ठीक न्याय करेंगे जो कि दृढ़ता और नियमित रूप से उससे प्रार्थना करता है। इस प्रकार का विश्वास स्वयं को दृढ़ और नियमित प्रार्थना के द्वारा प्रगट करता है। यीशु प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा करते हैं कि वह अपने आप को जाँचे कि क्या उसके पास इस प्रकार का विश्वास है; क्या वह सच में यह विश्वास करता है कि परमेश्वर तुरन्त काम करेंगे जब वह दृढ़ता और हियाव से प्रार्थना करेगा।

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

वर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 18:1-8 में दृढ़ विधवा का दृष्टांत “परमेश्वर के राज्य में दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना” करने के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “यहाँ तक की पृथ्वी पर एक अधर्मी, स्वार्थी और अनुपातिक रूप से शक्तिहीन न्यायी अंत में एक तुच्छ प्रतिद्वंद्वी के प्रति न्याय करने के लिए विवश हो सकता है। स्वर्ग में सिद्ध रूप से धर्मी, प्रेमी और सर्वसामर्थी परमेश्वर एक मसीही के साथ जो दृढ़ता और नियमित रूप प्रार्थना करता है, अति शीघ्रता से न्याय करेंगे!

क्या सर्वशक्तिमान और प्रेमी परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों (मसीहियों) के साथ वैसे ही करेंगे जैसा की दुष्ट न्यायी ने किया? यीशु ने कहा, “नहीं”। परमेश्वर उसके बिल्कुल विपरीत है और वह तुरन्त कार्य करेंगे और इस बात का ध्यान रखेंगे के लोगों को न्याय मिले! इस तथ्य के द्वारा मसीहियों के विश्वास को प्रोत्साहन मिलना चाहिए! परमेश्वर निश्चित रूप से शीघ्रता के साथ उन मसीहियों की प्रार्थना का उत्तर देंगे जो उनसे दृढ़ता और हियाव के साथ प्रार्थना करते हैं। (तुलन करें इब्रानियों 11:6 से)!

यीशु इस दृष्टांत का अंत लागूकरण के एक प्रश्न के साथ करते हैं। यह प्रश्न अनुमान के उद्देश्य से नहीं, बल्कि स्वयं को जाँचने के उद्देश्य से पूछा गया है। “जब मनुष्य का पुत्र आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा? वह ऐसे विश्वास को संदर्भित कर रहे हैं जो दृढ़ता के साथ नियमित रूप से प्रार्थना करे, विधवा के विश्वास के समान?” यीशु चाहते हैं कि प्रत्येक मसीही अपने आप को जाँचे कि क्या वह सच में यह विश्वास करता है कि परमेश्वर तुरन्त दृढ़ और नियमित प्रार्थना का उत्तर देंगे।

दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग निडर निष्ठा, आत्मविश्वास या निर्लज्ज दृढ़ता के साथ प्रार्थना करते हैं।

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

(1) जो कुछ यह लेखांश सिखाते हैं उसकी तुलना उससे किस प्रकार की जा सकती है जो यह दृष्टांत सिखाता है।

पढ़ें निर्गमन 22:22-23; व्यवस्थाविवरण 10:17-18; भजन संहिता 68:5।

यदि संसार के लोग एक विधवा या अनाथ जैसे वंचित लोगों का फायदा उठाते हैं और ये लोग परमेश्वर को पुकरें तो निश्चय ही परमेश्वर उनकी सुनेंगे और काम करेंगे! परमेश्वर जो समर्थी और अद्भुत है, जो भेदभाव नहीं करता, और वह घूस नहीं लेता, वह अनाथों और विधवाओं की रक्षा करता है। परमेश्वर अनाथों का पिता और विधवाओं का सहारा है। इसी प्रकार परमेश्वर उन मसीहियों की भी परवाह करेंगे जो दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं!

(2) कौन परमेश्वर के चुने हुए या निर्वाचित किए हुए हैं?

पढ़ें यिर्मयाह 31:3; लूका 10:20; यूहन्ना 6:44,37; प्रेरितों. 13:48; रोमियों 8:28-30;9:6-21; 11:1-8; इफिसियों 1:4; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 1:9-10; 1पतरस 1:1-2; 2:4-10; प्रकाशितवाक्य 7:3;13:8।

“परमेश्वर द्वारा निर्वाचित या चुने हुए होना” यीशु मसीह में वास्तविक विश्वासियों के लिए एक शीर्षक है। परमेश्वर निश्चित रूप से अपने चुने हुएों को नीचे नहीं होने देंगे! परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से पहले ही उन्हें उद्धार के मार्ग और अपनी सेवा और महिमा के लिए चुन लिया (पूर्वनिर्धारित)। उस ने उन्हें अनंत प्रेम से प्रेम किया। इसलिए वह यह भी निश्चित करेंगे कि वे दोषमुक्त हों! वह उनकी दृढ़ और नियमित प्रार्थना का उत्तर देंगे और उनका न्याय चुकाएँगे।

(3) परमेश्वर अपने दूसरे आगमन से सदियों पहले किस प्रकार के वादों को पूरा करेंगे।

पढ़ें भजन. 34:18-19; यशायाह 43:2; रोमियों 8:28; 1कुरिन्थियों 10:13; 2कुरिन्थियों 4:17।

परमेश्वर हमें हमारी सब समस्याओं से छुटकारा देंगे और जब हम उन परेशानियों और सतावा से होकर गुजरेंगे जो कि अशांत नदियों और उग्र आग के समान हैं, तब परमेश्वर हमारे साथ होंगे। हमारी सभी परस्थितियों में वह हमारी भलाई के लिए काम करेंगे। वह हमें कभी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़ने देंगे जो हमारे सहने से बाहर हो साथ ही वह हमें परीक्षा से निकलने के लिए मार्ग भी प्रदान करेंगे। हमारे इस समय के संकट और क्लेश उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं है जो प्रगट होगी। इसलिए विश्वास के साथ प्रार्थन करें जो स्वयं को दृढ़ता और नियमितता के द्वारा व्यक्त करता है।

ग. परमेश्वर के राज्य में दृढ़ता और नियमित रूप से प्रार्थना करने के विषय में दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं और उपदेशों का सारांश

वर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में दृढ़ता और नियमित रूप से प्रार्थना करने के विषय में इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है? यीशु ने हमें क्या *जानना* या *विश्वास करना* और क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें। प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए दृढ़ और नियमित रूप से प्रार्थना करना सिखाने को इतना महत्वपूर्ण मानते हैं कि वह बाइबल में इसके विषय में तीन दृष्टांत बताते हैं:

- “माँगने वाले पुत्र का दृष्टांत” मत्ती 7:7-12 में
- “मध्यस्थता करने वाले मित्र का दृष्टांत” लूका 11:5-8 में

- “दृढ़ विधवा का दृष्टांत” लूका 18-1-8 में

इन दृष्टांतों में वह हमें सिखाते हैं कि प्रार्थना असान नहीं होगी और हमें कठिनाईयों की अपेक्षा करनी होगी, जिन पर केवल दृढ़ हियाव या दृढ़ सकल्पी नियमितता के द्वारा ही विजय पायी जा सकती है। मसीहियों को प्रार्थना करते हुए कठिनाईयों की अपेक्षा करनी चाहिए।

(1) प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई हमारी ओर से है।

प्रार्थना के संबंध में हमारी कठिनाई का वर्णन यशायाह 59:1-2 में किया गया है जहाँ वह यह कहता है, “तुम्हारे पापों कारण उसका मुँह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता।” क्योंकि कुछ विशेष पाप हमारे और परमेश्वर के बीच में खड़े हैं इसलिए कुछ प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दिया जाता। इसलिए प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की ओर से है!

प्रार्थना के संबंध में एक और कठिनाई माँगने वाले पुत्र के दृष्टांत में पायी जाती है (मत्ती 7:7-2, देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 1)। यद्यपि जो कुछ हमारी आवश्यकता है और हम परमेश्वर से प्रार्थना में माँगते हैं परमेश्वर उसे पूरा करने के लिए इच्छुक और सक्षम है, लेकिन हमारी प्रार्थना करने (माँगने), काम करने (खोजने) और नियमितता (खटखटाने) की अनिच्छा हमारे और परमेश्वर के बीच खड़ी हो जाती है। इसलिए प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की ओर से है!

(2) संसार की ओर से प्रार्थना करने के संबंध में कठिनाई।

इफिसियों 6:12 में लिखा है, “हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस ने नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।” इसलिए प्रार्थना के संबंध में कठिनाई संसार में दुष्टता की ओर से है। आकाशीय स्थानों (यूनानी: इपुरानिऑस) पर विजय पाने में भी कठिनाईयाँ हैं, क्योंकि यहाँ दुष्टात्माओं के रहने का स्थान है। उन पर भी जय पानी होगी (तुलना करें दानियेल 10:12-13 से; मरकुस 9:25-29)।

(3) परमेश्वर की ओर से प्रार्थना के संबंध में कठिनाई।

मध्यस्थता करने वाले मित्र और दृढ़ विधवा के दृष्टांत में, यीशु मसीह प्रार्थना का उत्तर मिलने के संबंध में कठिनाई को “अनिच्छुक मित्र” और “अधर्मी न्यायी” की ओर से व्यक्त करते हैं! इसलिए प्रार्थना के संबंध में कठिनाई परमेश्वर की ओर से है। यीशु पृथ्वी पर के इन दो असिद्ध उदाहरणों की तुलना (धनि मित्र और अधर्मी न्यायी), सिद्ध परमेश्वर से करते हैं ताकि मसीहियों को यह विश्वास करने के लिए प्रेरित कर सकें की दृढ़ और नियमित प्रार्थना किसी भी बाधा को पार कर सकती है।

लेकिन उसी समय प्रार्थना के संबंध में हमारी कठिनाई, प्रार्थना का उत्तर देने में परमेश्वर की कठिनाई बन जाती है। उसकी बुद्धि, उसकी धार्मिकता और उसका प्रेम हमें कभी वह देने की हिम्मत नहीं करता जिसके शीघ्र और आसानी के प्राप्त होने पर हमारी हानि होती है। पाप और उसके परिणाम अक्सर परमेश्वर के लिए इसे एक बार में देना असम्भव बना देते हैं (भजन 66:18; याकूब 4:2-3)। स्वयं के जीवन से पाप की सामर्थ्य को तोड़ना (भजन 32:1-5), या उन लोगों के जीवन से जिनके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं (दानियेल 9:1-23), वह कारण है जिससे द्वारा प्रार्थना के संबंध में कठिनाई एक वास्तविकता (कुलुस्सियों 4:12-13)। जब हम परमेश्वर से उन जानी और अनजानी बाधाओं को हटाने के लिए विनती करते हैं, हमारी दृढ़ प्रार्थना हमें परमेश्वर के सामने एक दूटने की ओर असहाय स्थिति में ले आती है (भजन 51:1-17)। हमारा पापों से दूर होना, परमेश्वर के सामने सर्म्पण, परमेश्वर की इच्छा के प्रति हमारा पूरे हृदय से सहमत होना और साथ ही साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञा को थामे रखने के लिए हमारा बढ़ता हुआ विश्वास, हमारी ओर की बाधाओं को,

साथ ही साथ परमेश्वर की ओर की बाधाओं को भी दूर करेगा। जैसे परमेश्वर हमें विजय बनाते हैं, हम अपनी प्रार्थनाओं में विजयी होते हैं। जैसे परमेश्वर हम पर जीत प्राप्त करते हैं, हम प्रार्थना में जीत प्राप्त करते हैं।

(4) दृढ़ और नियमित प्रार्थना के लाभ बड़े हैं।

हो सकता है कि हमें ऐसा महसूस हो की परमेश्वर की मांग कि हमें दृढ़ता और नियमित रूप से प्रार्थना करनी चाहिए, अनुचित या अकारण हो। लेकिन शरीरिक जीवन में नियमित व्यायाम मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, कड़ी मेहनत से धीरज और कठिनाईयों से चरित्र का विकास होता है। शिक्षा में प्रतिदिन नई बैद्धिक समस्याओं जीत प्राप्त करने से अंतर्दृष्टि और बुद्धिमत्ता विकसित होती है। कठिनाईयों पर महारत प्राप्त करने में ही हमारी सर्वोच्च उपलब्धि पाई जाती है।

आत्मिक जीवन में भी ठीक यही सिद्धांत है। यदि हम केवल माँगे (प्रार्थना में), तुरंत प्राप्त करें और चले जाएँ तो हमें हानि उठानी पड़ेगी। हमारे स्वयं के जीवन में कठिनाइयाँ, जिनके लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं उनके जीवन में कठिनाइयाँ और स्वर्गीय स्थानों में कठिनाइयाँ हमें दृढ़ और नियमित प्रार्थना करने के लिए बुलाती हैं। यह प्रार्थना में निरंतर संघर्ष है जिसमें स्वर्गीय आशीर्ष पाई जाती है।

प्रार्थना में हमारे संघर्ष से पता चलता है कि हम परमेश्वर के साथ संगति में कितने कम खुश हैं, हमारा विश्वास कितना कम है और हम परमेश्वर के पवित्र आत्मा को कितनी कम अनुमति देते हैं कि वह हमारे जीवन को नियंत्रित करे। नियमित प्रार्थना के द्वारा हमें हमारी कमजोरियों, कमियों और अयोग्यता का पता चलता है। नियमित प्रार्थना में हमारी स्वयं की शक्ति, और भलाई क्रूस पर चढ़ाई जाती है। लेकिन नियमित प्रार्थना में ही हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर के अनुग्रह, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास और परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भरता को जान पाते हैं। इस प्रकार नियमित प्रार्थना में हमारी कठिनाइयाँ हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य बन जाती है क्योंकि वे कठिनाइयाँ जिन पर जय पायी जानी चाहिए हमारी सबसे बड़ी आशीर्षों को लाती हैं!

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>(प्रतिक्रियाएँ)</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	--

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए** समूह में **बारियाँ लें।**

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी (2 मिनट) <i>(सौंपा गया कार्य)</i> अगले अगले अध्याय के लिए
---	---

(समूह अगुवा।) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “बोने वाले के दृष्टांत” का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **नीतिवचन 6,7,8 और 10** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. स्मरण करना। (4) श्रृंखला 'ज' का पुनरावलोकन करें (1) परमेश्वर अतुलनीय हैं। यशायाह 40:25-26 (2) परमेश्वर सर्व-महिमावान हैं। 1 इतिहास 29:11 (3) परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ हैं। इफिसियों 1:11-12 (4) परमेश्वर सर्वज्ञानी हैं। इब्रानियों 4:13 (5) परमेश्वर सर्व-शक्तिमान हैं। यिर्मयाह 3:17।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 8:1-17**।
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शांत समय) नीतिवचन 6,7,8 और 10
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 6,7,8 और 10) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (परमेश्वर की महानता) श्रृंखला 'ज' का पुनरावलोकन करें
---	---

“परमेश्वर की महानता”। दो-दो करके श्रृंखला ज का **पुनरावलोकन करें।**

(1) **परमेश्वर अतुल्य है। यशायाह 40:25-26.** इसलिये तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूं? उस पवित्र का यही वचन है। अपनी आँखें उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन-गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह समार्थी और अत्यन्त बलवन्त है कि उसमें से कोई बिना आए नहीं रहता।

(2) **परमेश्वर महिमामय है। 1इतिहास 29:11.** हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान् ठहरा है।

(3) **परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है। इफिसियों 1:11-12.** उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।

(4) **परमेश्वर सर्वज्ञानी है। इब्रानियों 4:13.** सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन् जिस से हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और प्रगट हैं।

(5) **परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है। यिर्मयाह 32:17.** हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़ी सामर्थ्य और चढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) (रोमियों की पत्री) रोमियों 8:1-17
---	---

⁵ **परिचय।** रोमियों 8:1-17 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों अध्याय 1-5 में पौलुस धर्मी ठहरने की स्थिति को वर्णित करता है और इसे स्पष्ट करता है कि व्यवस्था धर्मी ठहरने को सुनिश्चित नहीं कर सकती। रोमियों अध्याय 6-7 में वह पवित्रता की स्थिति का और शुद्धिकरण की प्रक्रिया का वर्णन करता है और इस बात को स्पष्ट करता है कि व्यवस्था शुद्धिकरण को भी उत्पन्न नहीं कर सकती। अध्याय 8 में पौलुस मसीहियों के उद्धार की निश्चिता और अश्वासन की व्याख्या करता है।

मसीहियों का उद्धार, जो पिता परमेश्वर द्वारा प्रसतावित किया गया, पुत्र मसीह द्वारा प्राप्त किया गया, पवित्र आत्मा द्वारा लागू किया गया और सुसमाचार में घोषित किया गया (रोमियों 1:16), बिल्कुल निश्चित है (प्रत्याभूत है)!

मसीहियों का उद्धार सुनिश्चित है, क्योंकि:

- उन्हें पाप के प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली पापमय स्वभाव की सामर्थ्य से छुड़ाया गया है (रोमियों 8:1-4)।
- वास्तव में उनका उद्धार उनके नए जीवन और पवित्र आत्मा द्वारा उनके हृदय और जीवन के शुद्धिकरण में शुरू हुआ (रोमियों 8:5-13)।
- वे परमेश्वर की संतान और भविष्य की महिमा के वारिस हैं (रोमियों 8:14-17)।

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 8:1-17 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आप के लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आप के मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हम ने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

8:1-4

खोज 1. मसीही सुरक्षित हैं क्योंकि उन्हें पाप के प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली पापमय स्वभाव की सामर्थ्य से छुड़ाया गया है।

जबकि यूहन्ना 5:24 वादा करता है कि अंतिम न्याय के दिन मसीहियों को दोषी नहीं ठहराया जाएगा, रोमियों 8:1 वादा करता है कि मसीही नाश नहीं होंगे (अनंत विनाश का दण्ड) (तुलना करें मत्ती 25:46 से)! ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही मसीह में असीमित दोष और विश्वासियों पर प्रभुत्व करने वाली पापमय सामर्थ्य को कमजोर मानवीय स्वभाव में दर्जित किया (रोमियों 8:3)। पवित्र आत्मा ने मसीहियों को पाप के प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली पापमय स्वभाव की सामर्थ्य से छुड़ा लिया है (रोमियों 8:2)।

व्यवस्था न्याय (उद्धार) के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है और परमेश्वर के जीवन को जीने के लिए नैतिक कर्तव्यों की सूची परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था (दस आज्ञाओं) में है। लेकिन मनुष्य को धर्मी ठहराना (उद्धार) व्यवस्था के लिए असंभव है क्योंकि मनुष्य के पापी स्वभाव के द्वारा व्यवस्था को शक्तिहीन बना दिया गया। मनुष्य के पापमय स्वभाव ने व्यवस्था का पालन करने को असंभव बना दिया।

जो व्यवस्था नहीं कर सकी, वह परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से किया! परमेश्वर ने यीशु मसीह को उसी कमजोर स्वभाव (पाप के बिना) में भेजा और यीशु मसीह के कमजोर मानव शरीर में पाप और उसकी समार्थ्य को क्रूस पर दंडित किया (1पतरस 2:24) (रोमियों 8:13)। परमेश्वर ने पाप का प्रायश्चित व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा नहीं किया, बल्कि हमारे स्थान पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा किया। इस प्रकार केवल धर्मी ठहरना ही नहीं बल्कि शुद्धिकरण भी संभव हो सका और यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए वास्तविकता बन गया।

धर्मी ठहरने और शुद्धिकरण के लिए व्यवस्था धार्मिक मांग परमेश्वर की आज्ञा और इच्छा के प्रति 100प्रतिशत आज्ञाकारी होने और लोग जिस प्रकार जीते हैं उसमें 100 प्रतिशत सिद्धता से कुछ कम नहीं। आदम का कोई भी वंशज कभी इस मांग को पूरा नहीं कर सका! लेकिन यीशु मसीह ने इस मांग को हर उस व्यक्ति के लिए पूरा किया है जो उस पर विश्वास करता है!

लोग पापमय स्वभाव की समानता में नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के अनुरूप जीवन जीने के द्वारा इस बात का प्रमाण देते हैं कि वे यीशु मसीह के वास्तविक विश्वासी हैं। जीवन की आत्मा एक मसीही के जीवन में नई सामर्थ्य के रूप में काम करती है। मसीह की आज्ञाकारिता और परिणामस्वरूप शुद्धिकरण नए जन्म पर शुरू होता है (प्रेरितों 5:32; 1पतरस 1:2) और केवल उस समय विश्वासी यीशु मसीह को आमने सामने देखते हैं (1यूहन्ना 3:1-3)। पवित्र आत्मा लगातार विश्वासियों को शुद्ध करता रहेगा जब तक कि वे अपने वर्तमान शरीर से आजाद नहीं हो जाते जिसमें पापी स्वभाव और मृत्यु विनाश का कारण बनती है (रोमियों 7:24-25; 1कुरिन्थियों 15:54-57) (रोमियों 8:4)।

8:5-13

खोज 2. मसीही सुरक्षित हैं, क्योंकि उनका उद्धार नए जन्म और उनके हृदय और जीवन के शुद्धिकरण में पवित्र आत्मा द्वारा वास्तव में शुरू हो गया है।

(1) मसीही पवित्र आत्मा के अनुरूप जीवन जीते हैं।

क्योंकि मसीहियों को उनके पापमय स्वभाव की नियंत्रित करने वाली और प्रभुत्व करने वाली सामर्थ्य से छुड़ाया गया है, वे अपने जीवन को पापमय स्वभाव के अनुरूप नहीं (जो अभी भी वर्तमान वास्तविकता है), बल्कि पवित्र आत्मा के अनुरूप जीते हैं (गलातियों 5:16-26)। मसीहियों के पास पवित्र आत्मा है, पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन जीने के परिणामस्वरूप पवित्र आत्मा का मन प्राप्त होता है। “आत्मा का मन” आत्मा की मनोवृत्ति द्वारा सोचने का तरीका है। इसका अर्थ है कि मसीहियों के पास आत्मा के विचार और मनोवृत्ति है; उनके पास चीजों को देखने का वही दृष्टिकोण है जो आत्मा का है; उनके पाप वही लक्ष्य, महत्वाकांक्षा और भूख है जो आत्मा के पास है! मसीही अपने मन को आत्मा की बातों पर लगाते हैं, अर्थात्, वे अपनी रुचियों और लक्ष्यों को बार-बार उन चीजों के प्रति निर्देशित करते हैं जो पवित्र आत्मा उन्हें प्रस्तावित करता और अनुमति देता है और जिससे द्वारा परमेश्वर की महिमा होती है।

आत्मा का मन ऐसे “जीवन” (अनंत जीवन) के रूप में व्यक्त होता है, जो परमेश्वर को जानता और परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति रखता है (यूहन्ना 17:3)। साथ ही इसका परिणाम “शान्ति” होता है जो इन बातों का आंतरिक आश्वासन है:

- भूतकाल के पापों को क्षमा कर दिया गया (रोमियों 5:1)
- वर्तमान बुराई को भलाई के लिए खारिज कर दिया गया (रोमियों 8:28)
- भविष्य में होने वाली घटनाएँ मसीहियों को परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:31-39)!

(2) गैर-मसीही अपने पुराने स्वभाव के अनुरूप जीवन जीते हैं।

गैर-मसीहियों के पास आत्मा नहीं है, वे लगातार अपने पापमय और भ्रष्ट स्वभाव की अधीनता में जीते हैं और अपनी रुचियों और लक्ष्यों को भ्रष्ट और सांसारिक चीजों की ओर निर्देशित करते हैं। गैर-मसीहियों के लिए स्वयं को आत्मिक, नैतिक और शारीरिक रूप से परमेश्वर के अधीन करना असंभव है, क्योंकि उनका सोचने का तरीका, सांसारिक दृष्टिकोण और मनोवृत्ति पूर्ण रूप से परमेश्वर के विरुद्ध है। गैर-मसीही स्वयं को बाइबल के परमेश्वर के अधीन न करते हैं और न कर सकते हैं। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

इस स्थिति का परिणाम “मृत्यु” होता है, जिसका अर्थ है, परमेश्वर से अलगाव, यहाँ तक कि नियमित रूप से परमेश्वर का विरोधी होना, जीवन में अपवित्रता और अधार्मिकता के विरुद्ध सामर्थ्यहीनता और अंततः अनंत दुःख (रोमियों 8:5-8)। वे लोग जिनके पास पवित्र आत्मा नहीं होता वे अपने पापमय स्वभाव के द्वारा शासित और नियंत्रित होते हैं। ऐसे लोग मसीही नहीं हो सकते! हालाँकि जिन लोगों के पास पवित्र आत्मा होता है वे पवित्र आत्मा के द्वारा शासित और नियंत्रित होते हैं। ऐसे लोगों में जीवित परमेश्वर का आत्मा या मसीह का आत्मा उनके अंदर रहता है। या इसे दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसे लोगों के अंदर यीशु मसीह रहते हैं और वे लोग यीशु मसीह के ही होते हैं (रोमियों 8:9-10 अ)!

(3) मसीही उनमें रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा पहचाने जाते हैं।

उनके पापमय स्वभाव की विघटनकारी सामर्थ्य के बावजूद, जो अभी भी उन में काम करती है, मसीही उनमें रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा पहचाने जाते हैं। क्योंकि पापमय स्वभाव मसीहियों की देह में अभी भी कार्यरत है, मसीहियों की शारीरिक देह का मरने के लिए अभिशप्त है। लेकिन, क्योंकि मसीहियों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है, मसीहियों की मानव आत्मा में पहले ही अनंत जीवन है। पवित्र आत्मा ने मनुष्य की आत्मा को हमेशा के लिए जीवित कर दिया है और इस बात की खातरी देता है कि उनकी देह भी मुर्दों के पुनरुत्थान में जी उठेगी (तुलना करें फिलिप्पियों 3:21 से)। पवित्र आत्मा का अंदर रहना उसके उद्धार की शुरुआत की शर्त और अंत में मुर्दों में से जी उठने पर उद्धार के पूर्ण होने की जमानत है (रोमियों 8:10ब-11; इफिसियों 1:13-14)!

(4) मसीहियों का एक दायित्व है।

इसलिए मसीहियों का परमेश्वर के प्रति एक दायित्व है। वे अब अपने पापमय स्वभाव के अनुरूप जीवन जीने के लिए बाधित नहीं हैं। जो लोग स्वयं को मसीही समझते हैं, और पापमय स्वभाव के अनुरूप जीवन जीते हैं, वे परमेश्वर के अनंत जीवन के वारिस नहीं होंगे, बल्कि अंततः मृत्यु के भागी होंगे। वास्तविक मसीही पवित्र आत्मा के चलाए चलते हैं और वे अपने पापमय स्वभाव के बुरे कामों को, जो उनकी देह के अंगों में काम करता है, मार डालेंगे। वास्तविक मसीही अपनी पापमय अभिलाषाओं, उद्देश्यों, लक्ष्यों इच्छाओं इत्यादि को अपने अन्दर रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा बार-बार मार सकते हैं, और मारेंगे (रोमियों 8:12-13)।

8:13-17

खोज 3. मसीही सुरक्षित हैं क्योंकि वे परमेश्वर की संतान और भविष्य की महिमा के वारिस हैं।

वे मसीही जो सक्रिय रूप से अपने अनंद रहने वाले पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलते हैं वे “जीवित परमेश्वर की वास्तविक संतान (पुत्र और पुत्रियाँ) हैं”!

मसीही बनने से पहले उनके पास दासत्व की आत्मा थी जो उन्हें भयभीत करती थी स्वामियों, दण्ड और अस्वीकृति के द्वारा (गलातियों 3:23-4:7)। वे “अपरिपक्व बालकों के समान अभिभावकों और संरक्षकों के अधीन थे”, अर्थात् “व्यवस्था और मानव निर्मित नियमों के” (“संसार के मूल सिद्धांत”)।¹

¹संसार के मूल सिद्धांत (धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक आदि)। वे सिद्धांत हैं जिनका पालन गैर-मसीही करते हैं। यहूदी तोरह का, नाममात्र मसीही व्यवस्था का, मुस्लिम शरयत का, हिंदू पूजा का, और साम्यवादी अपने घोषणा पत्र का पालन करते हैं।

हालाँकि मसीही बनने के बाद, उनके पास “लेपालकपन की आत्मा है (पुत्रत्व)” (यूनानी: न्यूमा हुयोथिसिस) मिली है, अर्थात्, पवित्र आत्मा जिसने उन्हें परमेश्वर के घराने में दास से परिपक्व पुत्रों (और पुत्रियों) में बदल दिया! भय की जगह पवित्र आत्मा उनके हृदयों में बाइबल के परमेश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है और वह उनमें लगातार “परमेश्वर की संतान या परिपक्व पुत्रों” के चरित्रगुणों का निर्माण करता है। वे इस बात के प्रति आश्वस्त हैं कि परमेश्वर ने उन्हें पूर्णरूप से स्वीकार कर लिया है (तुलना करें इफिसियों 1:5 से) और उनका परमेश्वर के साथ “उनके स्वर्गीय पिता” के रूप में व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध है।

परमेश्वर के पित्रत्व का पृथ्वी के पित्रत्व से कोई संबंध नहीं, जहाँ पिता शरीरिक बच्चे पैदा करते हैं। परमेश्वर का पित्रत्व एक पूर्ण आत्मिक अवधारणा है। परमेश्वर लोगों को “आत्मिक रूप से नया जन्म” देते हैं और उनके साथ आत्मिक रीति से ही संबंध रखते हैं!

पवित्र आत्मा स्वयं ही मसीहियों की मानव आत्मा के साथ मिल कर यह गवाही देता है कि वे परमेश्वर की वास्तविक (आत्मिक) संतान हैं और वे भविष्य के सिद्ध संसार के “परमेश्वर के वारिस और मसीह के साथ संगी वारिस हैं”। पवित्र आत्मा मसीहियों को उद्धार का आत्मनिष्ठ आश्वासन प्रदान करता है (हृदय में) (रोमियों 8:16) जिस प्रकार बाइबल में परमेश्वर का प्रकाशन उद्धार का वस्तुनिष्ठ आश्वासन प्रदान करता है (तुलना करें रोमियों 16:25-26 से)। संसार में मसीहियों का वर्तमान सताव (उनका उत्पीड़न और दमन) भविष्य की महिमा के लिए अपरिहार्य मार्ग है (रोमियों 8:17)!

कदम 3.प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं ?

आईये रोमियों 8:1-17 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

8:1-4

प्रश्न 1. क्या “दोष लगाना” केवल पाप की दोष भावना को संदर्भित करता है, या फिर पाप से छुटकारे कि सामर्थ्य को भी ?

ध्यान दें।

(1) रोमियों 8:1-4 का अनुवाद।

पद 1. “इसलिए जो मसीह में है उन पर दण्ड (यूनानी: कटकरिमा) (दण्ड जिसमें शामिल है: दण्ड के योग्य ठहराना, न्याय की कार्यवाही करना, नाश होने के लिए भेजना) की आज्ञा नहीं। पद 2. क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में (“प्रभुत्व करने के सिद्धांत” के अर्थ में) तुम्हें (यूनानी: “मुझे” के स्थान पर “तुम्हें”) एक बार में हमेशा के लिए (अनिर्दिष्टकाल) पाप और मृत्यु (अर्थात् सामर्थ्य पापमय स्वभाव) की व्यवस्था (“प्रभुत्व करने के सिद्धांत” के अर्थ में) से स्वतंत्र कर दिया।

पद 3. क्योंकि जो काम व्यवस्था (उद्धार के लिए परमेश्वर की आवश्यकता और परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं के अनुसार जीने के अर्थ में) शरीर के कारण दुर्बल (अर्थात् पापमय स्वभाव जैसा पापियों में होता है) होकर न कर

सकी, उसको परमेश्वर ने किया अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में (यूनानी: इन होम्योमॉटी सरकोस हमारटिऑस) (एक मनुष्य की समानता में एक कमजोर स्वभाव के साथ) (तुलना करें फिलिप्पियों 2:7 से) और पापबलि (यूनानी: पेरी हमारटिऑस) (अर्थात्, पाप को दूर करने के उद्देश्य से या पाप के प्रायश्चित के लिए) होने के लिए (अनिर्दिष्टकाल) भेज कर शरीर में (अर्थात्, यीशु मसीह की मानवीय शरीर जो कि लोगों के शरीर के समान ही था, केवल पाप को छोड़ कर) (इब्रानियों 4:15) पाप (उसकी दोष भावना, दण्ड और सामर्थ्य) पर दण्ड (क्रूस पर नाश करने के लिए) (1 पतरस 2:24: तुलना करें फिलिप्पियों 2:8 से) की आज्ञा दी।

पद 4. इसलिए कि व्यवस्था की विधि (परमेश्वर की धार्मिक और पवित्र आवश्यकता के अर्थ में) हम में जो शरीर (पापमय स्वभाव) के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं (जीते) (नियमित वर्तमानकाल), पूरी की जाए।”

पहला शब्द “इसलिए” पिछले संदर्भ की ओर संकेत करता है। लेकिन कौन सा संदर्भ? सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि यह तत्काल संदर्भ की ओर संकेत करता है रोमियों 6:1-7:25 और विशेषरूप से रोमियों 7:14-25 की ओर। पौलुस पाप की भावना और पाप की सामर्थ्य दोनों से छुटकारे के विषय में सोच रहा है और विनाश या दण्ड से, जो दोनों लाते हैं। पौलुस यह निष्कर्ष निकालता है कि बिना धर्मी ठहरे शुद्धिकरण नहीं हो सकता। एक सच्चा मसीही नियमित रूप से अपने शरीर के अनुसार नहीं चल सकता!

(2) नाश ऐसे दण्ड को संदर्भित करता है जिसका घोषणा कर दी गई हो।

इस संदर्भ में “नाश” शब्द का अर्थ केवल पाप के दोष के लिए सजा सुनाना ही नहीं है, बल्कि पाप के दोष और पाप की सामर्थ्य के विरुद्ध निर्णय देने के द्वारा पाप के दण्ड को लागू करना भी है! रोमियों 5:18, 1 कुरिन्थियों 11:32, 2 पतरस 2:6 में पापमय और अभक्तिपूर्ण संसार के लिए दण्ड का समान अर्थ है। दण्ड की घोषणा हो चुकी है और दण्ड लागू हो चुका है (परमेश्वर के वर्तमान न्याय में)! विनाश अंत में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पूर्ण किया जाएगा। यह पापमय संसार और अभक्तिपूर्ण लोगों पर मसीहियों की निश्चित विजय का प्रतिपादन करता है!

जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह नाश नहीं होगा! वह अनंत विनाश (नरक) के लिए नहीं भेजा जाएगा! यह मसीहियों की पापमय और भ्रष्ट स्वभाव की सामर्थ्य है जिसे एक बार में हमेशा के लिए नाश किया जाएगा। इसका विनाश शुरू हो गया है (नए जन्म, धर्मी ठहरने और शुद्धिकरण के साथ) और यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पूर्ण (महिमा के साथ) हो जाएगा! मुर्दों के पुनरुत्थान के समय मसीहियों की कमजोर (नाशवान, मिटने वाली) शारीरिक देह (“शरीर” यानि पापमय स्वभाव के साथ) एक महिमामय शारीरिक देह (महिमावान और निर्दोष आत्मा के साथ) में बदल जाएगी। यह मसीहियों की निश्चित वर्तमान “पवित्रता की स्थिति” (पवित्र जीवन के प्रति समर्पित और पवित्र जीवन जीने की योग्यता) का प्रतिपादन करता है!

(3) पापमय स्वभाव में पाप का नाश व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकता को पूर्ण करता है। (रोमियों 8:4)।

मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के काम के द्वारा, परमेश्वर ने मसीहियों के पाप और पापमय स्वभाव की समर्थ्य का नाश किया ताकि मसीहियों के जीवन में व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकता एक ही बार में हमेशा के लिए पूरी हो जाए। “व्यवस्था” है:

- उद्धार के लिए परमेश्वर की पूर्ण आवश्यकता (प्रायश्चित, मेलमिलाप और धर्मी ठहरना)
- आज्ञाकारिता के परमेश्वर के पूर्ण नियम कि मसीहियों के कैसे जीना चाहिए (शुद्धिकरण)
- न्याय और दण्डादेश का परमेश्वर का पूर्ण मानक
- जैसा कि परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं में व्यक्त किया गया है

इस प्रकार परमेश्वर की व्यवस्था धर्मी ठहरने (उद्धार) के लिए परमेश्वर की स्थिति और शुद्धिकरण के लिए परमेश्वर का लक्ष्य, दोनों को प्रकट करती है और यह 100 प्रतिशत सिद्धता से कुछ भी कम नहीं! यीशु मसीह ने हर उस व्यक्ति के लिए धर्मी ठहरने (उद्धार) की इस शर्त और शुद्धिकरण के इस लक्ष्य को (पाप से अलगवाव और पवित्र जीवन के लिए समर्पित) पूरा कर दिया है जो उस पर विश्वास करता है! जिस क्षण एक व्यक्ति यीशु मसीह में विश्वास करता है, परमेश्वर उसे पूर्णरूप से धर्मी और पूर्ण रूप से शुद्ध मानते हैं। “मसीह यीशु हमारे लिए परमेश्वर कि ओर से ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म और पवित्रता और छुटकारा” (1 कुरिन्थियों 1:30)! इसलिए एकमात्र घमंड जो मसीही कर सकते हैं, वह है मसीहियों के स्थान पर यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार और शुद्धिकरण के काम पर। “जो घमंड करे, वह प्रभु में घमंड करे” (1 कुरिन्थियों 1:31)!

क्योंकि यीशु मसीह पहले ही मसीहियों के शुद्धिकरण की सिद्ध स्थिति प्राप्त कर चुके हैं इसलिए मसीहियों के जीवन में शुद्धिकरण की प्रक्रिया संभव और निश्चित है! मसीहियों के शुद्धिकरण में परमेश्वर के नैतिक नियमों के अनुसार जीवन जीना शामिल है। पवित्र आत्मा के भीतर रहने और नियंत्रण के द्वारा, मसीहियों को परमेश्वर के नैतिक नियमों के अनुसार जीना चाहिए, वे जी सकते हैं और जीएंगे। मसीहियों का शुद्धिकरण अब सम्भव है, एक वर्तमान वास्तविकता और भविष्य में पूर्ण और सिद्ध वास्तविकता है! इस तरीके से, मसीहियों के जीवन में “परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकताएँ पूर्णरूप से पूरी की गई हैं”! इस सत्य को दूसरे तरीके से देखें: परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकताएँ यीशु मसीह के मारे जाने और पुनरुत्थान के द्वारा सिद्ध रूप से पूर्ण की गई है और अब यीशु मसीह की आत्मा के द्वारा लागू की गई है जो मसीहियों में और मसीहियों के द्वारा रहता है (तुलना करें गलातियों 2:20 से)!

8:1-4

प्रश्न 2. “आत्मा की व्यवस्था” और “पाप और मृत्यु की व्यवस्था” क्या संदर्भित करते हैं?
ध्यान दें।

(1) आत्मा की व्यवस्था पवित्र आत्मा को संदर्भित करती है

और पाप और मृत्यु की व्यवस्था पापमय स्वभाव को संदर्भित करती है।

रोमियों 7:21,23,25, के आधार पर “व्यवस्था” शब्द की सबसे अच्छी व्याख्या है, “प्रभुत्व करने वाली सामर्थ्य”, “पूर्ण शासन करने वाला सिद्धांत”। “पवित्र आत्मा” मसीहियों में व्यवस्था या पूर्ण प्रभुत्व करने वाला सिद्धांत है। इस प्रकार, “पापमय स्वभाव” गैर-मसीहियों में पूर्ण प्रभुत्व करने वाला सिद्धांत है और यह अभी भी मसीहियों के पुराने स्वभाव में एक शक्तिशाली सिद्धांत या बल है। पापमय स्वभाव को “पाप और मृत्यु की व्यवस्था कहा गया है”, क्योंकि यह लोगों में हर प्रकार के पाप के पीछे काम करने वाली सामर्थ्य और हर उस चीज का आधार है जो मृत्यु की ओर ले जाती है।

गैर-मसीहियों में केवल एक ही प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली सामर्थ्य है, अर्थात् उनका पापमय स्वभाव और यह हर प्राकर से मृत्यु के फल को उत्पन्न करता है (तुलना करें गलातियों 5:19-21)। और गैर-मसीही कुछ नहीं कर सकते, केवल पापमय स्वभाव की मांगों का पालन करने को छोड़ कर।

हालाँकि, मसीहियों में दो विपरीत बल हैं: पाप और मृत्यु की व्यवस्था (उनका पापमय स्वभाव) और आत्मा की व्यवस्था (पवित्र आत्मा)। उनका पापमय स्वभाव अभी भी एक उग्र शक्ति (रोमियों 7:14-25) और भयानक विरोधी है (गलातियों 5:17)। लेकिन सिद्धांत में उनका पापमय स्वभाव एक हारी हुई और अस्थायी सामर्थ्य है, जो केवल उन्हें उनकी शारीरिक मृत्यु तक ही संक्रमित कर सकती है (1 कुरिन्थियों 15:54-57)।

(2) मसीहियों को एक नया और शुद्ध जीवन जीना चाहिए और वे जी सकते हैं और जीएंगे।

जिस प्रकार रोमियों 6:7 धर्मी ठहरने के कानूनी आधार को संदर्भित करता है, रोमियों 8:3-4 शुद्धिकरण के कानूनी आधार को संदर्भित करता है। यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के काम द्वारा पापमय स्वभाव की दोष भावना का मूल्य एक बार में हमेशा के लिए चुका दिया गया (रोमियों 3:24-25; तुलना करें 1पतरस 1:18-19)। पापमय स्वभाव की सामर्थ्य यीशु मसीह के पूर्ण किए गए उद्धार के काम द्वारा नाश कर दी गई है (रोमियों 6:6-7)। इस विनाश की शुरुआत मसीहियों में रहने वाले पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा पहले ही हो चुकी है।

यदि नया जन्म पाए हुए मसीही पूर्ण रूप से पवित्र आत्मा का अनुसरण कर सकते हैं, तो वह पूर्ण रूप से पाप की सामर्थ्य और इसके प्रदूषण से स्वतंत्र हो सकते हैं! हालाँकि प्रत्येक मसीही में शरीरिक मृत्यु तक पापमय स्वभाव जारी रहता है, इसलिए इस पृथ्वी पर कोई भी मसीही पूर्ण और सिद्ध रूप से पाप की सामर्थ्य, पाप के प्रदूषण और पाप की उपस्थिति से स्वतंत्र नहीं है। केवल शारीरिक मृत्यु के बाद ही एक मसीही पूर्णरूप से पाप की सामर्थ्य, पाप के प्रदूषण और यहाँ तक कि पाप की उपस्थिति से स्वतंत्र होगा!

फिर भी, क्योंकि मसीह की मृत्यु ने एक बार में हमेशा के लिए मसीहियों को पाप की सामर्थ्य से छुड़ा लिया है (रोमियों 6:2,7) और क्योंकि पवित्र आत्मा इस वास्तविकता को उनके जीवन में लागू कर रहा है (रोमियों 8:2), इसलिए मसीहियों को चाहिए कि वे आत्मा का अनुसरण करें और पापमय स्वभाव (शरीर) का अनुसरण न करें (रोमियों 8:4)! हो सकता है कि एक मसीही हर समय पाप पर विजय न पाए, लेकिन वह निश्चित रूप से हर समय पाप से नहीं हारेगा। मसीहियों को बार-बार शरीर के बुरे कामों को मारना चाहिए वे ऐसा कर सकते हैं और करेंगे (रोमियों 8:13) और उन्हें बार-बार अपने मन को पवित्र आत्मा की इच्छा की ओर केंद्रित करना चाहिए और वे ऐसा कर सकते हैं और करेंगे (रोमियों 8:5)।

8:12-14

प्रश्न 3. क्या रोमियों 8:13अ एक चेतावनी है या एक प्रोत्साहन?

ध्यान दें। रोमियों 8:13 में, पौलुस कहता है, “यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे।” क्या यह एक चेतावनी है कि मसीही अपनी अनंत सुरक्षा को खो सकते हैं या फिर जिम्मेदारियों का अभ्यास करने का एक प्रोत्साहन?

यह एक प्रोत्साहन है कि मसीहियों को पापमय स्वभाव को नष्ट करना चाहिए। दायित्व के अधीन, मसीहियों की एक जिम्मेदारी है! उनकी जिम्मेदारी है कि वे पापमय स्वभाव के अनुसार नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा की अंदरूनी उपस्थिति के अनुसार चलें।

- मसीहियों को अपने पापमय स्वभाव को *बर्दाश्त* नहीं करना चाहिए!
- मसीहियों को अपने पापमय स्वभाव को *बदलने* की कोशिश नहीं करनी चाहिए!
- मसीहियों को अपने पापी स्वभाव के *कुकर्मों* को मारना चाहिए!

ये कुकर्म उनके भौतिक शरीर में व्यक्त किए गए हैं! उन्हें बार-बार हर प्रकार के उन बुरे कामों को उखाड़ फेंकना चाहिए, जो प्रकट होने के लिए शरीर का प्रयोग करते हैं (रोमियों 6:13,19)। मसीही ऐसा कर सकते हैं और ऐसा करेंगे जब वे पवित्र आत्मा के अनुसार जीएंगे। या इसे दूसरे शब्दों में कहें तो, जब वे मसीह को उसके आत्मा के द्वारा जो उन में रहता है, अनुमति देंगे तो, वह इन पापों को उनके जीवन से जड़ से उखाड़ फेंकेगा।

इन कथनों के द्वारा, पौलुस मसीहियों की सुरक्षा को खारिज नहीं करता। वह इस बात पर जोर देता है कि केवल एक तरीका है जिसके द्वारा मसीही अपने अनंत उद्धार के प्रति सुनिश्चित हो सकते हैं (अपने मन, विवेक और भावनाओं में), अर्थात् जब वे पवित्र आत्मा के अनुसार जीवन जीते हैं! एक-गैर मसीही और एक नाममात्र मसीही जो अपने पापमय स्वभाव के अनुसार जीता है, कभी भी अपने उद्धार के प्रति सुनिश्चित नहीं हो सकता!²

8:14-16

प्रश्न 4. मसीहियों को क्या विश्वास दिलाता है कि वे परमेश्वर की संतान हैं?

ध्यान दें। दो चीजें मसीहियों को यह विश्वास दिलाती हैं कि वे परमेश्वर की संतान हैं:

(1) परमेश्वर के प्रति प्रेम की भावनाएँ साबित करती हैं कि मसीही परमेश्वर की संतान हैं।

मसीही बनने से पहले लोगों के पास “बंधवाई या दासत्व” की आत्मा होती है। “दासत्व की आत्मा” वह आत्मा है जिसमें उन्हें: स्वामी का भय, समाज के द्वारा अस्वीकृति का भय और दण्ड का भय होता है।

लेकिन, जब लोग मसीही बनते हैं (नया जन्म प्राप्त करते हैं), वे पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं जिसे “लेपालकपन का आत्मा” कहते हैं। लेपालकपन का आत्मा वह आत्मा होता है जो घर के बालकों के पास होता है: परमेश्वर के प्रति प्रेम का आत्मा, एक पिता के रूप में परमेश्वर के साथ घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंध का आत्मा और गहन अनुभूति की परमेश्वर ने उन्हें अपनी स्वयं की संतान (पुत्र और पुत्रियों) के रूप में स्वीकार किया है! पवित्र आत्मा विश्वासियों में परमेश्वर के प्रति प्रेम की भावना, बालकों के समान आत्मविश्वास कि वे परमेश्वर के परिवार के हैं और परमेश्वर की संतानों के चरित्रगुण उत्पन्न करता है। (तुलना करें इफिसियों 1:5, 14 से)।

(2) मसीहियों के हृदयों में पवित्र आत्मा की गवाही इस बात को साबित करती है कि वे परमेश्वर की संतान हैं।

पवित्र आत्मा बार-बार मसीहियों की आत्मा के साथ यह गवाही देता है कि वे वास्तव में परमेश्वर की संतान हैं। वह वास्तव में मसीहियों के नवीनीकृत मन, विवेक और हृदयों में इस बात की पुष्टि करता और आश्वासन देता है कि वे परमेश्वर की संतान हैं। पवित्र आत्मा नियमित रूप से मसीहियों को बाइबल में परमेश्वर की प्रतिज्ञा स्मरण कराता है और वह उन्हें इस बात का गहन आश्वासन देता है कि परमेश्वर स्वयं उन्हें अपनी संतान के समान प्रेम करते हैं (तुलना करें रोमियों 8:39 से)।

8:17

प्रश्न 5. मसीही किस संमंध में मसीह के साथ “संगी वारिस” हैं?

ध्यान दें।

(1) मसीही लोग मसीह की महिमा को साझा करते हैं।

इस वर्तमान संसार में मसीही कोई स्थायी मिरास प्राप्त नहीं करते। लेकिन भविष्य में, वे मसीह की महिमामय मिरास को साझा करेंगे, जिसमें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से कुछ भी कम नहीं। मसीह देह (कलीसिया) का सिर होने के नाते और मसीही उसकी देह होने के नाते संगी वारिस हैं! मसीह ने इस मिरास को प्राप्त (अर्जित) किया है, लेकिन मसीही इस मिरास को उसके साथ साझा करते हैं।

² यही कारण है कि यहूदी, मुस्लिम, नाममात्र के मसीही और अन्य धर्मों के अनुयायियों को कभी भी यह अश्वासन नहीं होता कि उनका उद्धार होगा!

(2) मसीही यीशु मसीह की महिमा को साझा करने के लिए उसके दुःखों में सहभागी होते हैं।

मसीही और यीशु मसीह केवल भविष्य की महिमामय मिरास को ही साझा नहीं करते बल्कि वर्तमान दुःखों को भी साझा करते हैं। परमेश्वर की अनंत योजना में मसीही, उसकी महिमा को साझा करने से पहले मसीह के दुःखों को साझा करेंगे! मसीहियों के दुःख को “मसीह के क्लेश” कहा गया है (कुलुस्सियों 1:24), लेकिन क्रूस पर मसीह के पापों से छुटकारे के लिए उठाए दुःखों के अर्थ में नहीं।

मसीही सामान्य अर्थ में सताव, क्लेश और जीवन के दुःख साझा करते हैं जिन्हें यीशु ने “दुःखी पुरुष” के रूप में सहा जब वह इस पृथ्वी पर था। साथ ही मसीही इस संसार में सामान्य रूप से कमजोरी, बीमारी, अयोग्यता, आपदाओं, युद्धों, जुर्म के परिणामों और दूसरों के पापों, परिस्थितियों की कठिनाइयों, टूटे रिश्तों, निराशा, बेरोजगारी, गरीबी, हताशा आदि में को भी साझा करते हैं। संक्षेप में, मसीही इस पतित और गिरे हुए संसार के क्लेशों को साझा करते हैं, जिसमें मसीह ने जन्म लिया था।

लेकिन साथ ही मसीही, मसीही विश्वास और यीशु मसीह के विरुद्ध विशेष क्लेशों और सताव को भी साझा करते हैं। मसीही, यीशु मसीह और उसके नाम के कारण दुःख उठाते हैं (मरकुस 8:34-38)। मसीहियों को क्लेश और सताव के प्रति वैसे ही प्रत्युत्तर देना चाहिए जैसे यीशु ने दिया (1पतरस 2:18-23)। यह क्लेश कई प्रकार से वर्तमान युग में यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक जारी रहेंगे। मसीहियों के सताव में परमेश्वर का उद्देश्य अपने न्याय की मांग को संतुष्ट करना नहीं, बल्कि मसीहियों को भविष्य में अपनी महिमा को साझा करने के लिए तैयार करना है! वर्तमान दुःख परिष्कृत करने की वह प्रक्रिया है जिससे मसीहियों को होकर गुजना है (तुलना करें 1पतरस 1:6-7)। मसीह की महिमा को अंत में साझा करने के लिए दुःख उठाना आवश्यकत शर्त है।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं ?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 8:1-7 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें ?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।) (याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 8:1-17 से सम्भव अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 8:1 इस बात को समझें कि आप नाश, दंडित और अभिशप्त नहीं होंगे क्योंकि आप मसीह में हैं।
- 8:2-3 इसे स्वीकार करें कि पवित्र आत्मा अब आपके जीवन और मानव आत्मा में प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली सामर्थ्य है, क्योंकि मसीह ने पहले ही आपके पापमय (अपवित्र) स्वभाव को नाश होने के लिए अभिशप्त कर दिया है।
- 8:4 विश्वास करें कि यीशु मसीह ने पहले ही आपके स्थान पर परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकता को पूर्ण कर दिया है। मसीह में आपकी स्थिति (पदवी) पूर्णरूप से धार्मिकता और पवित्रता कि है (1कुरिन्थियों 1:30)। इसलिए आपको शुद्धिकरण की प्रक्रिया में बढ़ना चाहिए, आप बढ़ सकते हैं और बढ़ेंगे।

- 8:5 इस बात को समझें कि इस संसार में सोचने के दो ही तरीके हैं। गैर-मसीही लगातार इस बात को सोचते हैं कि आपने पापमय स्वभाव की भ्रष्ट इच्छाओं को किस प्रकार संतुष्ट करें। मसीही बार-बार अपने लक्ष्य को उन चीजों की ओर केंद्रित करते हैं, करना चाहिए और करेंगे, जो परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं।
- 8:7-8 इस बात को समझें की एक व्यक्ति बिना पवित्र आत्मा के अपने आप को स्वयं के प्रयासों से परमेश्वर और परमेश्वर की इच्छा के अधीन नहीं कर सकता। यहाँ तक कि वह अपनी स्वयं की इच्छा और प्रयासों से भी अपने आप को परमेश्वर और परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित नहीं कर सकता। जब तक वह पवित्र आत्मा से न जन्में वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता (यूहन्ना 3:3-8; 6:44)।
- 8:9 विश्वासी बिना पवित्र आत्मा के मसीही नहीं हैं।
- 8:9-10 इस बात को स्वीकार करें कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के आत्मा या मसीह के आत्मा से कुछ भी कम नहीं। परमेश्वर एक है। इस सत्य को यदि दूसरे शब्दों में कहें तो, इस बात को समझें कि यीशु मसीह आत्मा के द्वारा विश्वासी के हृदय में रहता है।
- 8:10-11 इस बात को समझें की यद्यपि आपकी शरीरिक देह को मरना है, पवित्र आत्मा जिसने आपकी मानव आत्मा को जिलाया है, वह आपकी शरीरिक देह को भी जीवित करेगा।
- 8:12-13 प्रत्येक मसीही का यह दायित्व है कि वह आपने पापमय स्वभाव के अनुसार न जीए, बल्कि शरीर के पापमय स्वभाव और मन के भ्रष्ट कामों को आत्मा के द्वारा मारे।
- 8:14-15 विश्वास करें कि अब आप पापमय स्वभाव के दास नहीं है, बल्कि अब आप परमेश्वरकी संतान हैं। विश्वास करें कि पवित्र आत्मा आपके हृदय (रोमियों 5:5) में परमेश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न करता है और स्वर्गी पिता के रूप में परमेश्वर के साथ आपको एक व्यक्तिगत और घनिष्ठ संबंध प्रदान करता है।
- 8:16 इस बात को समझें की पवित्र आत्मा लगातार आपकी मानव आत्मा के साथ मिलकर यह गवाही देता है कि आप निश्चित रूप से परमेश्वर की संतान हैं।
- 8:17 इस बात को स्वीकार करें की आप मसीह के साथ उसकी महिमा में संगी वारिस तभी हो सकते हैं जब आप उसके दुःखों में सहभागी होते हैं।

2. रोमियों 8:1-17 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

एक मसीही होने के नाते मैं अपनी जिम्मेदारी के दायित्व को बहुत गम्भीरता से लेना चाहता हूँ। इसलिए मैं हर दिन इस बात पर ध्यान देना चाहता हूँ कि मैं किस प्रकार अपने शरीर में मैजुद पापमय स्वभाव के भ्रष्ट कामों को मार सकता हूँ। पवित्र आत्मा की सहायता से मैं इन्हें मार सकता हूँ।

मैं यह याद रखना चाहता हूँ कि परमेश्वर ने योजना बनाई है कि मैं उसकी महिमा की मिरास प्राप्त करने से पहले वर्तमान संसार के क्लेशों से होकर चलूँ। सभी मनुष्यों के समान ही मुझे भी जीवन की सामान्य समस्याओं का सामना करना है। और एक मसीही होने के नाते मुझे उन दुःखों में भी सहभागी होना है जो सतावा के कारण होते हैं। लेकिन परमेश्वर ने दुःखों की योजना इसलिए बनाई है ताकि मैं भविष्य में उनकी महिमा को साझा करने के लिए तैयार हो सकूँ!

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 8:1-17 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	प्रार्थना (8 मिनट)	(प्रतिक्रियाएँ) दूसरों के लिए प्रार्थना
---	--------------------	--

दो या तीन के समूहों में **प्रार्थना करना जारी रखें**। एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	तैयारी (2 मिनट)	(सौंपा गया कार्य) अगले अध्याय के लिए
---	-----------------	---

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण**। चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 8:1-17 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें**।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय**। प्रतिदिन **नीतिवचन 15,16,17 और 19** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना**। (11) रोमियों 8:1। **परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है: इफिसियों 1:11-12**। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना**। मत्ती 9:9-13 में **“वैद्य व बीमार”** और मत्ती 5:13-16 में निहित **“पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति”** के दृष्टांत की तैयारी करें।
6. **प्रार्थना**। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें**। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शांत समय) नीतिवचन 15,16,17 और 19
---	--

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 15,16,17 और 19) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (रोमियों में प्रमुख पद) (11) रोमियों 8:1
---	---

दो-दो करके **पुनरोवलोकन करें।**

(11) रोमियों 8:1। इसलिये अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।

4	शिक्षा देना (85 मिनट) (यीशु के दृष्टांत) वैद्य व बीमार और पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति
---	---

मत्ती 9:9-13 में “वैद्य व बीमार” और मत्ती 5:13-16 में

“पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति” का दृष्टांत

परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में हैं।

“एक दृष्टांत” स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सच्ची जीवन कहानी या चित्रण है जिसे आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की आवश्यकता के साथ सामना कराने के लिए सामान्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे

क. वैद्य और बीमार का दृष्टांत

पढ़ें मत्ती 9:9-13, मरकुस 2:13-17 और लूका 5:27-32।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत की कहानी अंलकारिक भाषा में बातई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित

है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
वर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं ?
ध्यान दें।

यह दृष्टांत एक बयान के रूप में है। वैद्य ऐसे लोगों को चंगा करने के लिए उनसे मिलते हैं जो बीमार हों। स्वस्थ लोग आम तौर पर वैद्य के पास नहीं जाते।

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की “कहानी” के संदर्भ में दृष्टांत का “समायोजन” और “स्पष्टीकरण या लागूकरण” शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत के बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। *समायोजन* आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के *बाद* पाया जाता है।

खोजें और वर्चा करें। इस दृष्टांत का *समायोजन*, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है ?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का *समायोजन* मत्ती 9:9-11 में पाया जाता है।

मत्ती या लेवी नाम का एक महसूल लेने वाला, कफरनहूम में समुद्र के किनारे महसूल की चौकी पर बैठा करता था (मरकुस 2:13)। और उसका काम उन सभी चीजों पर कर लेना था जो उस अंतर्राष्ट्रीय मार्ग से ले जायी जाती थी, जो सीरिया और मिस्र के बीच था। वह कफरनहूम में रहता था, यह वही स्थान था जिसे यीशु ने अपना मुख्यालय चुना था (मत्ती 4:12-16)। इस वर्तमान घटना से पहले ही, वह नियमितरूप से यीशु के संपर्क में रहा होगा और उसने पहले ही यीशु को अपना हृदय समर्पित कर दिया था। जब यीशु ने उसे एक चेले के रूप में अपना अनुसरण करने के लिए बुलाया, वह अपने व्यवसायिक भूतकाल को स्पष्ट रूप से छोड़ कर यीशु के बारह प्रेरितों में से एक बन गया।

लूका इस बात को दर्ज करता है कि मत्ती ने अपने घर पर यीशु के लिए एक बड़ा भोज दिया। महसूल लेनवालों और पापियों की एक बड़ी भीड़ यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन करने के लिए आयी। महसूल लेने वालों ने उन नियम और कानूनों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जो फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने परमेश्वर की व्यवस्था में अध्यारोपित कर दिये थे। इसके अलावा महसूल लेने वालों और उनके मित्रों ने परमेश्वर की व्यवस्था की अवहेलना की यहाँ तक कि उसका घोर उल्लंघन किया। इसके अतिरिक्त वे बेईमान, लालची और इस्त्राएल के प्रति देशद्रोही के रूप में बदनाम थे। यहूदी उन्हें धोखेबाज और विशेषरूप से फरीसी उन्हें तुच्छ जानते थे।

फरीसियों ने यीशु और उनके चलों को इन महसूल लेने वालों और पापियों के साथ भोजन करते देखा। संभावित रूप से जब भोज समाप्त हुआ और सब लोग जा रहे थे, तब उन्होंने यीशु के चलों के सामने उनकी आलोचना की। उन्होंने चलों पर अपनी कड़वाहट को उगला जिन्होंने, ऐसे व्यक्ति को अपना शिक्षक होने के लिए चुना। यीशु ने फरीसियों द्वारा की गई आलोचना को सुना और इसके परिणामस्वरूप चलों की शर्मिंदगी को महसूस किया। इसलिए यीशु ने उन्हें वैद्य और बीमार का दृष्टांत बताया।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 9:12 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण लूका 9:13 में निहित है।

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए

नहीं किया था। दृष्टांत रूपक कथा नहीं है! प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक महत्व नहीं देना चाहिए।

सिखाएँ। यीशु किसी भी विवरण की व्याख्या नहीं करते। हालाँकि, कथन के रूप में इस दृष्टांत से यह स्पष्ट होता है कि *स्वस्थ*, *बीमार* और *वैद्य* प्रासंगिक विवरण है। आज तौर पर स्वस्थ नहीं परन्तु बीमार लोग वैद्य के पास चंगे होने की आशा से जाते हैं। “स्वस्थ लोग” फरीसियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, “बीमार लोग” महसूल लेने वाले और पापियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और “वैद्य” यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है।

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांत को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांत की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। *एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है।* इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

वर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है ?

ध्यान दें।

मत्ती 9:9-13 में बीमार और वैद्य का दृष्टांत “परमेश्वर के राज्य में गवाही” के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “ऐसे समय और अवसर होते हैं जब तुच्छ लोगों के साथ संगति करना पूर्ण रूप से न्यायसंगत और उचित होता है, विशेषरूप से जब उद्देश्य उनकी जरूरतों को पूरा करना हो।”

गवाही देना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग, लोगों तक चंगाई और उद्धार लाने के लिए, बाहर जाकर संसार में सभी प्रकार के लोगों-समूहों से मिलते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की उनकी समाजिक पृष्ठभूमि, समाजिक प्रतिष्ठा या विकास क्या है।

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशों के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और वर्चा करें। बाइबल के ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है ?

व्यवस्थाविवरण 10:17-18; मत्ती 5:6. यीशु सिखाते हैं कि मसीहियों को धर्मिकता के लिए भूखे और प्यासे होना चाहिए। अर्थात् उन्हें उन कमजोरों और ऐसे लोगों के लिए समाने आना चाहिए जिनकी समाझ में कोई आवाज नहीं: अनाथ, विधवाएँ, प्रवासी, जो आर्थिक प्रवासी हो सकते हैं, राजनीतिक शरणार्थी या धार्मिक शरणार्थी जो अक्सर अवैध प्रवासी होते हैं।

मत्ती 11:28-30. अपने आप को उन लोगों के लिए दें जो चिंताओं, बोझ, समस्याओं और डर से दबे हुए हैं। बहुत से लोगों को किसी ऐसे व्यक्ति का जरूरत है जो उनकी सुनने के लिए इच्छुक हो, उन्हें गम्भीरता से ले

और उन्हें स्वीकार करे। बहुत से लोग अकेले हैं और उन्हें जरूरत है कि कोई आए और उनसे मेल करे।

मत्ती 22:9-10. अपनी गली में रहने वाले और सड़क के किनारे घूमने वाले लोगों के पास जाएं। कई युवा लोग ऊब चुके हैं और उनके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है। जिन्हें आप दूढ़ सकते हैं उन सभी को यीशु मसीह और परमेश्वर के राज्य में आमंत्रित करें, चाहे वे दूसरे लोगों की दृष्टि में “अच्छे” हों या “बुरे” हों।

लूका 14:21-23. अपने नगर की सड़कों में जाओ और गरीबों, लंगड़ों और अपंगों को लाओ। अक्सर समाज के निचले या किनारे के लोग यीशु मसीह के निमंत्रण का जवाब देने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं।

लूका 15:4,8,24. खोई हुई भेड़ का पीछा करें जब तक आप उसे पा नहीं लेते। वे पूर्व विश्वासियों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जो भटक गए हैं। लोगों को उनके पापों और दुष्ट जीवन-शैली से पश्चयाताप करने और परमेश्वर और उनके लोगों की ओर मुड़ने के लिए ले आओ।

लूका 19:10. जाओ और उन लोगों को दूढ़ों और उद्धार कराओ जो वचन के हर अर्थ में खो गए हैं।

यूहन्ना 7:37-38. उन लोगों को आमंत्रित करें जो परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध के लिए प्यासे हैं, परमेश्वर की वास्तविकता के लिए कि परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा के द्वारा उन में रहता है और ऐसे व्यक्ति होने के नाते जिससे जीवन के जल की धाराएँ बहती हैं जो परिवर्तन को लाती हैं।

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों का संक्षेप में वर्णन करें।

वर्चा करें। मध्यस्थता करने वाले मित्र के इस दृष्टान्त का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है? यीशु ने हमें क्या जानना या विश्वास करना और क्या होना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) यीशु और उनके चेलों की संगति तुच्छ लोगों के साथ थी।

यीशु तुच्छ लोगों के साथ मिलते, संगति करते थे, एक पियक्कड़, पेद्रू और बुराई में साझेदार व्यक्ति के समान नहीं, बल्कि एक वैद्य के समान। किसी भी तरह अपने मरिजों के पापों (बीमारियों) से दूषित हुए बिना, उन्हें चंगा करने के लिए यीशु को उनके बहुत निकट जाना था! एक सच्चे वैद्य के समान यीशु ने अपने काम को किया।

(2) फरीसियों ने तुच्छ लोगों का नजरअनदाज किया।

वे स्वयं की कल्पना में परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी थे। वे स्वयं को “स्वस्थ” और “बीमारों” (अन्य सभी लोगों) को तुच्छ जानते थे (लूका 18:9; यूहन्ना 7:49)। क्योंकि वे महसूल लेने वालों और पापियों के संपर्क में आने को उनकी धार्मिक शुद्धता का “दूषित होना” मानते थे, इसलिए वे उनसे परहेज करते थे।

उनके स्वयं के तर्क के आधार पर यीशु ने फरीसियों की निंदा की और स्वयं के आचरण को सही ठहराया। यदि फरीसी महसूल लेने वालों और पापियों को “बीमार” मानते थे तो फिर उन्होंने उन्हें चंगा क्यों नहीं किया? यीशु ने फरीसियों द्वारा की गई आलोचना का उत्तर उनकी ओर इशारा करते हुए इस बात से दिया कि वे अपने कर्तव्य को अनदेखा कर रहे थे। वे इन तिरस्कृत लोगों की प्रति कोई सहायता और दया नहीं दिखा रहे थे।

(3) परमेश्वर तुच्छ लोगों प्रति दया की इच्छा रखते हैं।

यीशु ने फरीसियों को चुनौति दी कि वे जा कर परमेश्वर के वचन के अर्थ को सीखें, “मैं बलिदान नहीं, परन्तु दया चाहता हूँ।” यीशु ने होशे 6:6 पद को बोला। होशे के समय में इस्त्राएल (754-714 ई.पू) परमेश्वर के

प्रति विश्वासयोग्य नहीं था, परमेश्वर की वाचा को तोड़ा था, परमेश्वर की वाचा के विरुद्ध बलवा किया था, भलाई को त्याग दिया था, बिना परमेश्वर की अनुमति के कामों को किया और अपने स्वयं के विनाश के लिए मूर्तियाँ बनायी (होशे 8:1-4)। इस्त्राएल में लोगों ने लूटा और हत्या की, व्याभिचार किया और धोखा दिया (होशे 6:9-7:2)। इस तरह की दशा में लगातार बलिदानों को जारी रखना मृत कर्मकांडों के तहत था और परमेश्वर की दृष्टि में घृणास्पद था (होशे 8:13)। भविष्यद्वक्ता होशे ने कहा कि परमेश्वर दया चाहता है, अर्थात्, परमेश्वर की वाचा को थामे रखना और पड़ोसी के प्रति प्रेम रखना। यहाँ मत्ती 9:13 में, महसूल लेने वालों और पापियों के प्रति दया और कृपा पर जोर दिया गया है।

(4) यीशु धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को पश्चात्ताप करने के लिए बुलाने आये।

लूका 5:32 में *मन फिराने* के लिए *बुलाना* शब्द मत्ती और मरकुस में *बुलाने* शब्द में निहित हैं। पापियों को बुलाया (आमंत्रित किया) गया है कि वे यीशु को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करें। अब तक यह बुलाहट सुसमाचार प्रचार करने के लिए सामने रखी गयी है, जो हमेशा प्रभावशाली नहीं होती (मत्ती 22:14), लेकिन वास्तव में बुलाहट लोगों के हृदयों में पवित्र आत्मा का काम है, जो हमेशा प्रभावशाली होता है (रोमियों 8:30)!

यह लेखांश इसे स्पष्ट करता है कि उद्धार का निमंत्रण उन लोगों तक नहीं पहुँचाया गया है जो स्वयं को धर्म समझते थे, चाहे वे थे भी नहीं। उद्धार का निमंत्रण उन लोगों तक पहुँचाया गया है जो उद्धार की आवश्यकता के लिए व्याकुल थे! यीशु मसीह पापियों, भटके हुआ, भिखारियों, भोज से दबे हुआ और भूखे और प्यासों को ढूँढने और बचाने आए, संक्षेप में खोए हुआ को!

ख. पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति का दृष्टांत

पढ़ें मत्ती 5:13-16।

ये दो तुलनाएँ वास्तव में “रूपक” हैं। एक रूपक दो चीजों के बीच एक तुलना है जो सामान्यरूप से एक दूसरे से अलग होते हैं और अंतर गर्भित होता है। इसमें “जैस” और “समान” शब्द का प्रयोग नहीं किया और इसलिए किसी को तुलना का बिंदू सामग्री या संदर्भ से खोजना चाहिए। उदाहरण के लिए, बाइबल में निम्नलिखित उदाहरण दिए गए हैं: “यहोवा मेरा चरवाहा है” (भजन 23:1)। “सत्य का कमरबंद, ... धार्मिकता की झिलम, ... विश्वास की ढाल, ... आत्मा की तलवार, ...” (इफिसियों 6:10-17)। “कुत्तों से सवधान रहना” (फिलिप्पियों 3:2)।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

वर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

नमक। नमक की कई विशेषताएँ हैं: इसकी सफेदी, खारापन, स्वाद और संरक्षक शक्ति। इस कहानी चित्रण में सम्भावित रूप से जोर इसकी रोगाणु रोधक और संरक्षण शक्ति पर दिया गया है। नमक एक ऐसा पदार्थ है जो सड़ने से रोकता या बचता है। लेकिन स्वाद प्रदान करने का इसका काम बाहन नहीं निकाला जाना चाहिए (लैव्यवस्था 2:13; कुलुस्सियों 4:6)।

नमक जिसने अपना स्वाद खो दिया। नमक जो मृत सागर के आस-पास कि दलदल, समुद्रतल और चट्टानों से प्राप्त होता है, व वह आसानी से बासी या क्षारीय स्वाद ला सकता है, क्योंकि वह खरिया मिट्टी के साथ मिल जाता है (यहेजकेल 47:11)। ऐसा नमक जिसने अपना गुण खो दिया, शब्दिकरूप से किसी काम का नहीं।

लोग उसे बाहर फेंक देते हैं और वह पैरों के नीचे रौंदा जाता है।

ज्योति। ज्योति में भी कई विशेषताएँ पायी जाती हैं: इसकी चमक, दृश्यता, रंग और प्रकट शक्ति। इस कहानी चित्रण में इसकी दृश्यता पर जोर दिया गया है। ज्योति ऐसी चीज है जो अच्छी चीजों को प्रगट करती और अन्धेरे को दूर करती है।

पहाड़ पर बसे नगर की ज्योति। पहाड़ पर बसा हुआ नगर छिप नहीं सकता। वह सब को स्पष्ट दिखाई देता है।

दीवट पर दीपक की रौशनी। यीशु मसीह के समय में दीपक को टेरा कौटा के सपाट पात्र में रखा जाता था, जो नोक के आकार के होते थे और उनमें दीपक की बत्ती के लिए एक छेद होता था। इसके ऊपरी भाग में दो छेद होते थे, एक तेल डालने के लिए और दूसरा हवा (ऑक्सीजन) के लिए। दीपक को एक कमरे के घर के बीच में मौजूद खंभे पर बने दीवट पर रखा जाता था। यह खम्भा मुख्य आड़े शहतीर को थामे रखता था जिस पर छत टिकी रहती थी। या फिर दीपक को दीवर में बने छेद या किसी चीज पर रखा जाता था। मुद्दा यह है कि इसे ऐसी स्थिति में रखा जाता था जहाँ यह कमरे में सब को रौशनी दे सके।

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और वर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है ?
ध्यान दें।

(1) दृष्टांत का समायोजन मत्ती 5:11-12 में निहित है।

यीशु मसीह ने मसीहियों पर संसार के प्रभाव का वर्णन किया: इस संसार के बुरे लोग अक्सर मसीहियों को सताते और अपमानित करते हैं। अब पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति के दृष्टांत में, यीशु बिल्कुल इसके विपरीत वर्णन कर रहे हैं, अर्थात्, संसार पर मसीहियों का प्रभाव! इस संसार पर परमेश्वर के राज्य का प्रभाव नमक और ज्योति के प्रभाव के समान है।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 5:13-15 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण इसके उदाहरणों में ही मत्ती 5:16 में निहित है।

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

वर्चा करें। दृष्टांत में कौन से विवरण प्रासंगिक या आवश्यक है।
ध्यान दें।

नमक। यीशु ने स्वयं तुलना की कि परमेश्वर के राज्य के लोग नमक के समान हैं। नमक स्वाद देता है, लेकिन विशेषरूप से नमक सड़ने या खरब होने से बचाता है। इसलिए यह विवरण प्रासंगिक है।

ज्योति। यीशु ने यह तुलना भी की कि परमेश्वर के राज्य के लोग ज्योति के समान हैं। पहाड़ पर बसे हुए नगर की ज्योति और दीवट पर रखे दीपक की रौशनी किसी से छिप नहीं सकती। इसलिए यह विवरण भी महत्वपूर्ण है।

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

वर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है ?

ध्यान दें।

मत्ती 5:14-16 में पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति का दृष्टांत “परमेश्वर के राज्य में गवाही देने” के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “परमेश्वर के राज्य के लोगों का प्रभाव नैतिक और आत्मिक सड़न (नकारात्मकता) से लड़ना और उद्धार के संदेश (सकारात्मकता) को उसकी सभी आशीषों के साथ फैलाना है।”

गवाही देना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग एक ओर जहाँ सांसारिक-प्रवृत्ति या धर्मनिपेक्षीकरण को रोकते हैं वहीं दूसरी ओर वे संसार में उदासीनता या अलगाववाद से दूर रहते हैं। वे इस संसार के कई लोगों का सामना करते हैं जो परमेश्वर के अस्तित्व में होने पर विश्वास नहीं करते और जो इस संसार में केवल अपने मजे और भौतिकवाद में शामिल होते हैं (1कुरिन्थियों 15:32)। साथ ही उन्हें कई ऐसे लोगों का सामना करना पड़ता है जो सृष्टि के महत्व को नहीं समझते और जो केवल ऐसे धर्म में शामिल होते हैं जिसका इस संसार पर कोई प्रभाव नहीं।

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशों के साथ करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

इफिसियों 4:29; कुलुस्सियों 4:6; 1तीमुथियुस 4:12। नमक में संरक्षण शक्ति होती है और यह सड़ाहड को रोकता है। मसीहियों को अपने स्वभाव और भाषा में स्वादहीन नहीं होना चाहिए। नमक में खारापन और स्वाद भी होता है। मसीहियों के भाषण में अच्छी सामग्री होनी चाहिए और वह विचारों को प्रोत्साहित करने वाले होने चाहिए। इसे प्रतीरोध नहीं करना चाहिए, बल्कि आकर्षित करना चाहिए और आत्मिक आकर्षण होना चाहिए। इस प्रकार एक मसीही अपने भाषण और साथ ही साथ अपने आचरण से भी पहचाना जाना चाहिए।

भजन. 36:9; 119:105; मत्ती 6:22-23; 2कुरिन्थियों 4:6। ज्योति परमेश्वर के सच्चे ज्ञान को इंगित करती है। इसका स्त्रोत परमेश्वर में है, जो बाइबल और यीशु मसीह के माध्यम के प्रगट होता है। यह शारीरिक आँखों द्वारा आत्मा में प्राप्त किया जाता है। जिस पर हम अपनी आँखों को लगाते हैं वही निर्धारित करता है कि हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व कैसा होगा।

यूहन्ना 3:19-21; इफिसियों 5:8-14। ज्योति भलाई, धार्मिकता और सत्यता का प्रतीक है। यह हर उस चीज का प्रतीक है जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है। यह अंधकार के गुप्त और शर्मनाक कामों को उजागर करती है। मसीही लोग संसार के लोगों के सामने पारदर्शी जीवन जीते हैं।

यशायाह 9:1-7; यूहन्ना 1:4; 8:12। परमेश्वर के चरित्रगुणों को “जीवन” शब्द में संक्षेपित किया गया है और परमेश्वर के चरित्रगुणों के प्रकाशन को “ज्योति” शब्द में संक्षेपित किया गया है। यीशु मसीह जीवन और ज्योति है। वह परमेश्वर हैं और परमेश्वर के गुणों और परमेश्वर के धार्मिक राज्य को लोगों पर प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करते हैं। उनके राज्य का परिणाम आनंद और शांति होता है। जो कोई यीशु का अनुसरण करता है उस में जीवन की ज्योति होगी, अर्थात्, वह अनंत जीवन का अधिकारी होगा और परमेश्वर के गुणों का प्रत्यक्ष प्रकाशन होगा।

भजन 27:1; लूका 1:77-79। व्यापक रूप से “ज्योति” में उद्धार की सभी आशीषें शामिल हैं। संभावित रूप से यह मत्ती 5:14 का अर्थ है। मसीही उद्धार की आशीष को संसार के लोगों पर प्रगट करते हैं। वे इस तथ्य को बिखेरते हैं कि वे पूर्णरूप से क्षमा किए गए, परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए गए और परमेश्वर की दृष्टि

में अनमोल हैं। वे अपने उद्धार के प्रति निश्चित हैं और मसीह में अपनी अनंत स्थिति के बारे में और इस संसार में आपने कार्य (सेवकाई) के मूल्य के बारे में आश्वस्त हैं।

6. दृष्टांत के मुख्य उपदेशों का संक्षेप में वर्णन करें।

वर्चा करें। मध्यस्थता करने वाले मित्र के इस दृष्टांत का मुख्य उपदेश या पाठ क्या है? यीशु ने हमें क्या जानना या विश्वास करना और क्या बनना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर के राज्य में लोग नमक हैं।

परमेश्वर के राज्य के लोग, अर्थात्, वास्तविक मसीही, नैतिक और आत्मिक सड़न का मुकाबला करते हैं। नमक गुप्त रूप से कार्य करता है। हालाँकि हम जानते हैं कि यह सड़हट के साथ मुकाबला करता है, फिर भी हम इसे इसका कार्य करते हुए नहीं देख सकते। मसीहियों की, गैर-मसीहियों के बीच उपस्थिति अक्सर उन्हें व्यर्थ चुटकुले, अपवित्रता बोलने, दुष्ट योजनाएँ बनाने, घूस लेने, भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, अपराध, नशा और गालियाँ देना इत्यादि से रोकती है। संसार बुरा है, लेकिन केवल परमेश्वर ही जानते हैं कि बिना अवरोध के यह और कितना भ्रष्ट हो जाएगा, उदाहरण, मसीहियों की प्रार्थनाएँ और जीवन (उत्पत्ति 18:20-32)।

(2) राज्य में मसीहियों के उन वंशजों के साथ क्या होता है जो अपने खारेपन को खो देते हैं?

फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक पुराने नियम के भाविष्यद्वक्ताओं द्वारा घोषित किए गए सच्चे धर्म के स्थान पर एक औपचारिक व्यवस्थावादी धर्म की पैरवी कर रहे थे। जिसका परिणाम यह हुआ की इस्त्राएल के धार्मिक जीवन में नमक ने अपना स्वाद खो दिया और बहुत से “राज्य की संतानों” को, अर्थात्, पुराने नियम के विश्वासियों के अविश्वासी वंशजों को, परमेश्वर के राज्य से बाहर कर दिया गया (मत्ती 8:12)। उनका नया जन्म नहीं हुआ (यूहन्ना 3:3-8)।

इसी प्रकार, वे लोग जो सत्य की पहचान में तैयार किए गए थे (कलीसिया में, आध्यात्मिक विद्यालयों और बाइबल स्कूलों इत्यादि में)। बिना नया जन्म पाए, उन्होंने अपने आप को पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन के प्रति सख्त कर लिया और कठोर हो गए, उन्हें पश्चयाताप के लिए नवीनीकृत नहीं किया जा सकता (मत्ती 12:32; इब्रानियों 6:4-6)¹

(3) परमेश्वर के राज्य में लोग ज्योति और दीपक हैं।

परमेश्वर के राज्य के नागरिकों को न केवल ज्योति से सुज्जित किया गया है, अर्थात्, उद्धार की सभी आशीषों के साथ, बल्कि दीपक से भी, जो अपनी उद्धार की आशीषों को अपने चारों ओर मौजूद संसार के लोगों तक पहुँचाते हैं। एक घर के लिए जो कुछ एक दीपक होता है, वही सच्चे मसीही संसार के लिए हैं। वे मसीह के उद्धार और इसकी सभी आशीषों की रौशनी संसार में चमकाते हैं, ताकि सभी लोग इसे देख पाएँ और परमेश्वर की महिमा करना शुरू करें। मसीही, विश्वास के द्वारा अनुग्रह से प्राप्त किए गए अपने उद्धार के प्रति कृतज्ञता के कारण भले काम करते हैं।

¹ इब्रानियों 6:4-6। यूनानी: एडुनाटन पैरासेपोटस (अनिर्दिष्ट, सक्रिय, कृदन्त) पैलिन एनाकेनाइजिन ईस मेदानोअन (फिर से पश्चयाताप करने लिए पुनर्स्थापित करना असम्भव) उन्होंने पहले पश्चयाताप किया था क्योंकि वे “प्रबुद्ध” (बपतिस्मा पाए हुए) थे, उन्होंने “स्वर्गीय आशीष (प्रभु भोज) को चखा (होशहवास में आशीषों का आनंद लिया)”, “पवित्र आत्मा में सहभागी हुए” (निश्चित रूप से पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ जब प्रेरितों के हाथ उन पर रखे गए) (तुलना करें। शमौन से प्रेरितों के काम 8:18-21 में), परमेश्वर के वचन की भलाई को चखा (प्रचार और शिक्षा) और आने वाले युग की सामर्थ्य को देखा (प्रेरिताई के युग में सामर्थ्य के काम या चमत्कार)।

मसीहियों को ज्योति-देनेवाले और ज्योति का प्रसार करने वाले होना है (फिलिप्पियों 2:15)! हालाँकि मसीही कभी भी ज्योति में स्वयं से नहीं होते। मसीह जगत की वास्तविक ज्योति है (यूहन्ना 8:12) और मसीही जगत की ज्योति केवल तब होते हैं, जब वे मसीह में बने रहते हैं और मसीह की ज्योति को प्रतिबिंबित करते हैं। मसीह सूर्य के समान है और समीही चन्द्रमा को दर्शाते हैं जो सूर्य की रौशनी से चमक रहा है। समीह से अलग होकर मसीही चमक नहीं सकते (यूहन्ना 15:5)।

इसलिए यह कलीसिया का काम नहीं है कि आपनी स्वयं की रौशनी फैलाए, आर्थत संसार के हर एक मुद्दे की घोषणा करें। उसका कार्य यीशु मसीह की ज्योति को फैलाना (प्रतिबिंबित) है, अर्थात यीशु मसीह के राज्य (राजा) और उद्धार की घोषणा करना। याद रखें “यीशु की गवाही (यीशु और उनकी शिक्षाओं के विषय में यीशु द्वारा दी गई) भविष्यद्वाणी की आत्मा है” (प्रकाशितवाक्य 19:10)!

ग. परमेश्वर के राज्य में गवाही के विषय में दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाओं या पाठ का सारांश।

परमेश्वर के राज्य में गवाही के बारे में दृष्टान्त निम्नलिखित हैं।

- मत्ती 9:9-13 में “बीमार और वैद्य का दृष्टान्त”।
- मत्ती 5:13-16 में “पृथ्वी के नमक व जगत की ज्योति का दृष्टान्त”।
- मत्ती 13:51-52 में “गृहस्थ का दृष्टान्त” (देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 10)।
- मत्ती 9:35-38 में “कटाई व मजदूरों का दृष्टान्त” (देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 10)।

वर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में गवाही देने के विषय में इन दृष्टान्तों का मुख्य शिक्षाएँ या पाठ क्या है? यीशु ने हमें क्या जानना या विश्वास करना और क्या बनना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को, विशेष रूप से खोए हुए लोगों को, पता होना चाहिए कि परमेश्वर या मसीह कैसे हैं।

यीशु मसीह खोए हुआ को ढूँढ़ने और बचाने आए थे! अर्थात, बीमारों, पापियों, भिखारियों, बोझ से दबे हुआ, भूखों और प्यासों को। वे संसार के तिरस्कृत, वंचित और सताए हुए लोगों से मिलते थे उनकी चंगाई और विशेषरूप से उद्धार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए।

(2) मसीहियों को यह पता होना चाहिए कि उन्हें किससे समान होना चाहिए।

परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही गवाह बनें। ये दृष्टान्त सिखाते हैं कि हमें यीशु के समान होना चाहिए, संसार के तिरस्कृत, वंचित और सताए हुए लोगों की चंगाई और उद्धार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उनसे मिलने वाले। मसीहियों को समाज से नहीं हटना चाहिए, बल्कि अपने चारों ओर के लोगों को प्रभावित करना चाहिए, नैतिकता और आत्मिकता में सड़ाहट (भ्रष्टता) के प्रति नकारात्मक रूप से तथा अपने ज्ञान और सुसमाचार की आशीषों को बाँट कर सकारात्मक रूप से। मसीहियों की यह जिम्मेदारी है कि जो कुछ भी उन्होंने बाइबल और विशेषरूप से यीशु मसीह से सीखा है उसे दूसरे लोगों तक भी पहुँचाए। मसीहियों को प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर संसार में अपने खेतों को काटने के लिए अधिक और योग्य मजदूरों को भेजे। और अंत में मसीहियों को योग्य मजदूर बनने के लिए अन्य मसीहियों को प्रशिक्षित करना चाहिए।

5	प्रार्थना (8 मिनट) (प्रतिक्रियाएँ) परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	---

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए** समूह में **बारियाँ लें।**

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी (2 मिनट) (सौंपा गया कार्य) अगले अगले अध्याय के लिए
---	--

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।)

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “बीमार व वैद्य” और “पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति” के दृष्टांत का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **नीतिवचन 27,28,29 और 31** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना।** (12) **रोमियों 8:38-39** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 8:18-39।**
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी **नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शांत समय) नीतिवचन 27,28,29 और 31
---	--

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (नीतिवचन 27,28,29 और 31) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (रोमियों में प्रमुख पद) (12) रोमियों 8:38-39
---	---

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(12) रोमियों 8:38-39। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, जीवन, स्वर्गदूत, प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है, अलग कर सकेगी।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) (रोमियों की पत्री) रोमियों 8:18-39
---	--

परिचय। रोमियों 8:18-39 का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का उपयोग करें।

मसीहियों का उद्धार, जो पिता परमेश्वर द्वारा **प्रस्तावित** किया गया, पुत्र मसीह द्वारा **प्राप्त** किया गया, पवित्र आत्मा द्वारा **लागू** किया गया और सुसमाचार में घोषित किया गया (रोमियों 1:16), बिल्कुल निश्चित है!

मसीहियों का उद्धार परमेश्वर पिता द्वारा अनंतकाल में पारित किया गया। मसीहियों का उद्धार परमेश्वर के चुनाव के अनंत उद्देश्य में **आधारित** है, जो उन लोगों के लिए उसका अनर्जित और कभी न बदलने वाला प्रेम है जो यीशु मसीह में विश्वास से आते हैं। जब हम पापी ही थे, परमेश्वर के शत्रु और पूर्णरूप से खोए हुए थे (रोमियों 5:6,8,10), परमेश्वर ने पहले हम से प्रेम किया (1यूहन्ना 4:19)!

मसीहियों का उद्धार समय (उद्धार के इतिहास) में परमेश्वर के पुत्र द्वारा अर्जित (अधिग्रहित) किया गया। मसीहियों का उद्धार क्रूस पर यीशु के प्रायश्चित्त बलिदान द्वारा **कमाया** गया और और वर्तमान में यीशु मसीह के संप्रभु शासन और महायाजकीय कार्य के द्वारा **संपादित** किया गया (इब्रानियों 7:25)।

मसीहियों का उद्धार वर्तमान समय में परमेश्वर पवित्र आत्मा द्वारा लागू किया गया। मसीहियों का उद्धार व्यक्तिगत हृदयों और जीवनो पर लागू किया गया है, जहाँ इसे वास्तविकता बना दिया गया है। यह पवित्र आत्मा द्वारा किया गया है जो मसीहियों में वास करने के लिए आता है।

मसीहियों का उद्धार अब मसीहियों द्वारा घोषित किया गया है। मसीहियों का उद्धार सुसमाचार में पुराने नियम (रोमियों 3:25) और नए नियम (रोमियों 16:25-26) में प्रकट और घोषित किया है।

मसीहियों का उद्धार निश्चित है। रोमियों 8:18-39 में, पौलुस इस सुरक्षा और आश्वासन को मसीह में विश्वासियों को सिखाना जारी रखता है।

- मसीहियों का उद्धार इस आशा पर आधारित है कि अंत में सब कुछ नया किया जाएगा (रोमियों 8:18-28)!
- मसीहियों का उद्धार इस तथ्य पर आधारित है कि मसीही उद्धार की परमेश्वर की अनंत योजना के पात्र हैं (रोमियों 8:29-30)!
- मसीहियों का उद्धार निश्चित है क्योंकि परमेश्वर उनकी ओर है और उन्हें हर वो चीज दी है जिसकी आवश्यकता उन्हें इस अनंत योजना को पूरा करने के लिए है (रोमियों 8:31-34)।
- मसीहियों का उद्धार सुरक्षित है, क्योंकि उनके लिए परमेश्वर का प्रेम असीम और अपरिवर्तनीय है (रोमियों 8:35-39)!

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 8:18-39 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

8:18-28

खोज 1. मसीही सुरक्षित हैं (बचाए गए और आश्वस्त), क्योंकि प्रत्येक वर्तमान दुःख में, वे पवित्र आत्मा की सहायता से सभी चीजों के नवीनीकरण की आशा में बने रहते हैं और इस बात को समझते हैं कि प्रत्येक परिस्थिति पर परमेश्वर का संप्रभु नियंत्रण है।

तीन तथ्य मसीहियों को उनके वर्तमान कष्टों की बीच प्रोत्साहित करते हैं। भविष्य में चीजों का नवीनीकरण, वर्तमान में पवित्र आत्मा का अंतःकरण और जो कुछ भी होता है, उस पर परमेश्वर के शाश्वत प्रभुत्व का नियंत्रण। परमेश्वर मसीहियों के लिए उन में और उन पर कार्य कर रहा है!

- रोमियों 8:18-25 सिखाता है कि परमेश्वर मसीहियों के भविष्य के लिए कार्य कर रहा है। परमेश्वर के भाविष्य में सब चीजों के नवीनीकरण की आशा, जिसमें नाशवान शरीरों का पुनरुत्थान शामिल है, मसीहियों को उनके दुःखों में स्थिर करती है।

- रोमियों 8:26-27 सिखाता है कि परमेश्वर मसीहियों के वर्तमान में कार्य कर रहा है। पवित्र आत्मा नियमित रूप से उनकी कमजोरियों में उनकी सहायता करता है। वह उनके लिए मध्यस्थ करता है, परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रार्थना करता है, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।
- रोमियों 8:28 सिखाता है कि परमेश्वर मसीहियों की परिस्थितियों के ऊपर काम कर रहा है। संप्रभुता के साथ परमेश्वर हर उस चीज को नियंत्रित करता है जो उनके जीवन के दौरान होती है।

8:29-30

खोज 2. मसीही सुरक्षित हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के उद्धार की अनंत योजना के पात्र हैं।

मसीही अनंत जीवन की प्राप्ति के लिए पूर्वनिर्धारित हैं (तुलना करें 2थिस्सलुनीकियों 2:13-15; 2तीमुथियुस 1:9)। मसीहियों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य आदि से अंत तक उनका पूर्ण उद्धार है! परमेश्वर का चुना हुआ प्रेम उनके उद्धार की शुरुआत है और परमेश्वर की पूर्व-प्रधान महिमा उनके उद्धार का अंतिम लक्ष्य है। परमेश्वर के उद्धार की योजना के सभी भाग अविभाजित रूप से जुड़े हुए हैं। जिन लोगों को वह चुनता है (पूर्वाभाव और पूर्वनिर्धारित), वह उन्हें, धर्मी और महिमावान कहता है! उनका शुद्धिकरण जो उन्हें महिमामय होने की ओर ले जाता है वह परमेश्वर के उद्धार की अनंत योजना का परिणाम है। इसलिए मसीहियों का उनके जीवन में वास्तविक शुद्धिकरण उनके चुने हुए होने का प्रमाण है (इफिसियों 1:4-5)। इस प्रकार, परमेश्वर सब बातों में अपने अनंत उद्देश्य के अनुरूप काम करता है (इफिसियों 1:11; रोमियों 9:11; यशायाह 14:24,27)।

8:31-34

खोज 3. मसीही सुरक्षित हैं, क्योंकि परमेश्वर उनकी ओर है (उनके विरुद्ध नहीं) और उन्हें हर वो चीज दी है जिसकी आवश्यकता उन्हें उसके अनंत उद्देश्य को पूरा करने के लिए है।

यदि परमेश्वर मसीहियों की ओर है तो उनका विरोधी कौन हो सकता है? यदि परमेश्वर ने उन्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र किया है (पापमय स्वभाव की प्रभुत्व और नियंत्रित करने वाली सामर्थ्य), यदि परमेश्वर ने उनका नवीनीकरण उनमें बसने वाले अपने पवित्र आत्मा से किया है, यदि परमेश्वर उन्हें अपनी स्वयं की संतान और वारिस के रूप में पहचानता है, यदि परमेश्वर ने उन्हें धर्मी ठहरने, पवित्र होने और अन्तिम महिमा के लिए पूर्वनिर्धारित किया है, तो कौन है जो उनका विरोधी हो सकता है (रोमियों 8:31)?

यदि परमेश्वर ने बड़े काम किए हैं, तो क्या वह छोटे कामों को बिना किए छोड़ देगा? यदि परमेश्वर ने अपने उद्धार के कार्य को यीशु मसीह के द्वारा पूरा किया है, वह निश्चित रूप से उद्धार के अपने कार्य को मसीहियों (अपने चुने हुएों) में भी पूरा करेगा (रोमियों 8:33)! यदि परमेश्वर ने अपने अनंत उद्देश्य में मसीहियों के लिए अपने पुत्र, यीशु मसीह को दे दिया, वह निश्चित रूप से मसीहियों को आवश्यकता के समय वह सब कुछ देगा जिसकी जरूरत उन्हें अपने उद्धार के कार्य को पूरा करने के लिए है! मसीहियों के लिए परमेश्वर का अपरिवर्तनीय प्रेम मसीहियों को कभी असफल नहीं होने देगा (रोमियों 8:32)! यदि परमेश्वर अंतिम न्यायी है जो अपने चुने हुएों को धर्मी ठहराता है, फिर एक भी दोष मसीहियों के विरुद्ध खड़ा न रह सकेगा! चार कारण हैं जिनकी वजह से कोई भी अब मसीहियों को दोषि नहीं ठहरा सकता, मसीह की मृत्यु, पुरस्त्थान, सिंहासन पर विराजमान होना और नियमित रूप से मध्यस्थता करना (रोमियों 8:33-34)।

खोज 4. मसीही सुरक्षित है, क्योंकि उनके लिए परमेश्वर का प्रेम अनंत और अपरिवर्तनीय है।

मसीही, लोगों के ऊपर “जयवंत से बढ़ कर” हैं, क्योंकि कोई भी मनुष्य उन्हें, उनके लिए परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता। कोई भी व्यक्ति जिसका सामना मसीही इस संसार में करते हैं, परमेश्वर को उसके अनंत उद्देश्य को मसीहियों के जीवन में पूरा करने से नहीं रोक सकता! परमेश्वर केवल उन दुःखों को दूर ही नहीं करता जिन्हें लोग मसीहियों पर डालते हैं, उन्हें वास्तविक और स्थायी नुकसान पहुँचाने के द्वारा, बल्कि परमेश्वर इन सभी दुःखों का प्रयोग संप्रभु तरीके से मसीहियों के लिए भलाई उत्पन्न करने के लिए करते हैं! वे दुःख जिनका सामना मसीही करते हैं वह अंतिम विजय की महिमा को और बढ़ा देते हैं (रोमियों 8:35-37)।

मसीही, चीजों के ऊपर “जयवंत से बढ़ कर” हैं, क्योंकि सृष्टि में कुछ भी उन्हें, उनके प्रति परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता। कुछ भी जिसका सामना मसीही भौतिक संसार, आत्मिक संसार, वर्तमान और भविष्य के संसार में करते हैं उन्हें, उनके प्रति परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता! हर संभावित निराशा पर जय पाने के लिए पौलुस इस बात को जोड़ता है, “इस सृष्टि की कोई भी चीज” मसीहियों को उनके प्रति परमेश्वर के प्रेम से अलग करने में सक्षम नहीं होगी!

कदम 3. प्रश्न।**व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं ?

आईये रोमियों 8:18-39 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, हों दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

प्रश्न 1. आशा मसीहियों को उनके कष्टों के बीच किस प्रकार बनाए रखती है ?

ध्यान दें। रोमियों 8:18-25 मसीहियों के भविष्य के लिए परमेश्वर के काम का वर्णन करता है। मसीही अपने वर्तमान कष्टों में परमेश्वर द्वारा भाविष्य में सब कुछ नया करने की प्रतिज्ञा की आशा द्वारा बने रहते हैं, जिसमें उनके नाशवान शरीर का पुनरुत्थान भी शामिल है।

(1) वर्तमान सृष्टि की निराशा और सड़ाहट के प्रति अधिनता अस्थायी है।

परमेश्वर ने सम्पूर्ण भौतिक और विवेक हीन सृष्टि को “निराशा” (सूनापन, व्यर्थता, उद्देश्यहीनता, नश्वरता) (यूनानी: मेटाओट्स) (तुलना करें इफिसियों 4:17, खाली शब्द 2पतरस 2:18 से), के अधीन कर दिया, अर्थात्, पतित आदमी में श्राप में साझा करने के लिए। वर्तमान सृष्टि क्षणभंगुर है, सड़ाहट के अधीन है और इसीलिए उद्देश्यहीनता के तहत करहाती है। यह करहाती है, क्योंकि यह उस उद्देश्य को प्राप्त नहीं करती जो परमेश्वर ने इसके लिए किया था। सारी सृष्टि मिलकर करहाती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है (रोमियों 8:22)।

हालाँकि, इसका करहाना आशाहीन नहीं है, लेकिन यह एक गर्भवती माँ के समान करहाती है। यह जानती है कि इसकी प्रसव पीड़ा के बाद, महिमा निश्चित रूप से प्रगट होगी। साथ ही मसीही भी आंतरिक रूप से

करहाते हैं और उत्सुकता से भविष्य की महिमा के प्रकाशन (नई पृथ्वी) की बाट जोह रहे हैं! मसीहियों के पास पवित्र आत्मा “पहले फल” या “अग्रिम भुगतान” (जमा, गिरवी, बन्धक) के रूप में है, जो इस बात की खातरी देता है कि वे भविष्य की महिमामय मिरास के उत्तराधिकारी होंगे (रोमियों 8:23)।

(2) भविष्य में सभी चीजों का नवीनीकरण आशा का मुद्दा है, एक पूर्ण भविष्य की निश्चितता और भविष्य की वास्तविकता!

भविष्य में, सब चीजों के नवीनीकरण में (तुलना करें मत्ती 19:28 से; प्रेरितों. 3:21; यशायाह 65:17; 2पतरस 3:13), सम्पूर्ण सृष्टि सड़हट के बंधन से मुक्त की जाएगी और मसीहियों की भविष्य की महिमा में साझी होगी। इब्रानियों 12:26-29 सिखाता है कि मसीह के दूसरे आगमन पर सम्पूर्ण सृष्टि “हिलायी” (यूनानी: सिओ, हिलाना, थरथराना) जाएगी। “जो कुछ हिलाया जा सकता है वह हटा दिया जाएगा”। परमेश्वर अपनी पवित्रता और शुद्धता के श्वेत तेज से हर उस चीज को भस्म करेगा जो उसके योग्य नहीं (इब्रानियों 12:29)। मसीह के स्वर्गदूत उसके राज्य में से सब पाप के कारणों और बुराई करने वालों को (नाश करेंगे या) निकाल देंगे (मत्ती 13:41)।

हालाँकि, “जो कुछ हिलाया नहीं जाएगा, वह बना रहेगा”। परमेश्वर का राज्य जो मसीही, यीशु मसीह के साथ बाँटते हैं वह हिलाया नहीं जा सकता (इब्रानियों 12:28)। आकाश और पृथ्वी नष्ट कर दिए जाएंगे, आकाश आपनी सिद्ध दशा में पृथ्वी पर उतारा जाएगा और पृथ्वी मसीहियों का घर बनेगी (2पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:1-5)। संसार नई सुंदरता से ढक जाएगा। पहाड़ उपजाऊ भूमि में बदल जाएँगे (यशायाह 29:17) और रेगिस्तान आनंदित और प्रफुल्लित होंगे (यशायाह 35:1-2; यशायाह 32:15-16)। स्वर्ग का सामंजस्य नई पृथ्वी पर उतरेगा, और जो कुछ भी एक दूसरे के विरोध में काम करता है, एक दूसरे को मार डालता है, वह एक दूसरे साथ सामंजस्य में रहेगा। उदाहरण के लिए जंगली जनवर एक दूसरे के साथ शांति से रहेंगे (यशायाह 11:1-9)। मसीही अपने वास्तविक चरित्र में परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रकट होंगे (रोमियों 8:19)। लेपापलकपन के पुत्रों के रूप में उनकी महिमा पूर्ण रूप से प्रकट होगी, विशेषरूप से उनकी शरीरिक देह के पुनरुत्थान में (रोमियों 8:23)।

भविष्य में सभी चीजों के नवीनीकरण में आशा (अर्थात्, एक बहुत निश्चित अपेक्षा) रखना मसीहियों की विशेषता है! मसीहियों का उद्धार विश्वास से हुआ है और उनका उद्धार आशा के द्वारा स्थिर है, अर्थात्, उनका वर्तमान उद्धार आशा के द्वारा प्रतिधित/निर्धारित और आशा की ओर उन्मुख/निर्देशित है। मसीही जानते हैं कि उनका उद्धार जो इस समय उनके पास है वह अधूरा है और भविष्य का अंतिम और पूर्ण उद्धार आशा (अपेक्षा) और साथ ही साथ भविष्य की निश्चितता और वास्तविकता का मुद्दा है! जबकि मसीही अपनी आशा के पात्र को अपनी शरीरिक आँखों से नहीं देख सकते फिर भी भविष्य में चीजों का यह नवीनीकरण एक निश्चित वास्तविकता है! इसलिए मसीही धीरज से इस भविष्य की प्रतीक्षा करते हैं, अर्थात्, मसीही धीरज के साथ पृथ्वी पर मौजूद कष्टों को झेल सकते हैं (रोमियों 8:25)।

8:26-27

प्रश्न 2. पवित्र आत्मा किस प्रकार मसीहियों को उनके कष्टों के बीच स्थिर रखता है?

ध्यान दें। रोमियों 8:26-27 मसीहियों के बीच में परमेश्वर के काम का वर्णन करता है। मसीही पवित्र आत्मा की नियमित सहायता से अपने वर्तमान कष्टों में स्थिर रहते हैं। वे अपनी सभी कमजोरियों में स्थिर रहते हैं, विशेषरूप से उनके लिए उसके निवेदन (मध्यस्थता) के द्वारा। पवित्र आत्मा मसीहियों की जरूरतों के लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार प्रार्थना करता है जिसे वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते या यहाँ तक कि जब उन्हें यह एहसास भी नहीं होता कि उन्हें इस चीजों की जरूरत है।

(1) पवित्र आत्मा मसीहियों की उनकी सभी कमजोरियों में सहायता करता है।

“इसी प्रकार” (रोमियों 8:26) का अर्थ है, जिस प्रकार *वर्तमान कष्टों* में मसीही महिमामय आशा को बनाए रखते हैं, उसी प्रकार पवित्र आत्मा *वर्तमान कमजोरियों* में मसीहियों की सहायता करता है। आत्मा को नम्रता के साथ उन दुःखों के बोझ के एक हिस्से को अपने ऊपर उठाने वाले के रूप में, जिसे मसीही सहते हैं और नियमित रूप से मसीहियों की सहायता करने के लिए आने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। कमजोरियाँ किसी भी प्रकार की कमजोरियाँ हो सकती हैं (इब्रानियों 4:15; 2कुरिन्थियों 12:5) चाहे टूटे हुए संसार के सामान्य दुःख या फिर मसीह के लिए विशेष दुःख या सताव। प्रार्थना की बात में यह निश्चित रूप से उनकी कमजोरियों तक सीमित नहीं है!

(2) पवित्र आत्मा मसीहियों की विशेषरूप से उन आवश्यकताओं में सहायता करता है जिसे वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते या उन्हें यह महसूस ही नहीं होता कि उन्हें क्या आवश्यकता है।

मसीहियों की ओर सदैव नैतिक और आत्मिक विफलताएँ होती हैं इसलिए वे प्रार्थना या वह नहीं कर पाते जो उनका कर्तव्य है। मसीहियों को हमेशा यह नहीं पता होता कि उन्हें क्या प्रार्थना करना है, अर्थात्, किसी विशेष परिस्थिति में कौन सी प्रार्थना काम आएगी। जबकि वे जानते हैं कि *सामान्य रूप से* क्या प्रार्थना करें, वे अक्सर यह नहीं जान पाते कि *विशेष* आवश्यकता, कठिनाई और परिस्थिति में क्या प्रार्थना करें। वे इस बात के प्रति सुनिश्चित नहीं होते कि उनकी प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा के साथ समांजस्य में है या नहीं (तुलना करें यूहन्ना 5:14)। मसीही अक्सर अपने स्वयं के हृदय की गहन आवश्यकताओं को नहीं जान पाते। इसलिए वे स्वयं को अपनी प्रार्थनाओं में व्यक्त नहीं कर पाते।

लेकिन पवित्र आत्मा मसीहियों की वास्तविक आवश्यकताओं को जानता है, उन आवश्यकताओं को भी जिन्हें वे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते और साथ ही उन आवश्यकताओं को भी जिन्हें वे स्वयं नहीं जानते। एक सच्चे वकील (मसीह के प्रतिनिधि) के रूप में, पवित्र आत्मा स्वयं की पहचान मसीहियों की आवश्यकताओं से करवाता है और परमेश्वर पिता के साथ मध्यस्थति करता है ताकि ये आवश्यकताएँ पूरी की जाएँ! क्योंकि आत्मा के सोचने का तरीका, परमेश्वर के सोचने का तरीका है, आत्मा की मध्यस्थता *सिद्ध और सदैव प्रभावशाली* होती है! मसीहियों में आत्मा द्वारा परमेश्वर से विनती (मध्यस्थता) *कभी विफल नहीं हो सकती!*

- यही कारण है कि एक भी वास्तविक मसीही कभी नहीं खोया (रोमियों 8:29-30; यूहन्ना 18:9)।
- इसलिए एक मसीही के साथ कभी वह नहीं होता जिसकी अनुमति पहले परमेश्वर से न मिली हो (मत्ती 10:29)।
- इसलिए एक मसीही के साथ कभी ऐसा कुछ नहीं होता जो वास्तविक रूप से परमेश्वर की सिद्ध योजना को उसके जीवन में पूरा करने के लिए योगदान न करें (रोमियों 8:28)।
- इसलिए कभी भी कोई भी प्रलोभन (लालच) या परीक्षा बहुत बड़ी नहीं होती (1कुरिन्थियों 10:13)।

8:28-30

प्रश्न 3. परिस्थितियों के ऊपर परमेश्वर का संप्रभु नियंत्रण मसीहियों को उनके कष्टों के बीच किस प्रकार स्थिर रखता है?

ध्यान दें। रोमियों 8:28-30 मसीहियों के ऊपर परमेश्वर के कार्य का वर्णन करता है। मसीही अपने वर्तमान कष्टों के बीच, जो कुछ भी उनके साथ होता है उस पर परमेश्वर के संप्रभु नियंत्रण के द्वारा स्थिर रहते हैं।

(1) परमेश्वर का मसीहियों की विशेष परिस्थितियों पर संप्रभु नियंत्रण है।

मसीही कष्टों से मुक्त या आजाद नहीं हैं। फिर भी वे जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं” (रोमियों 8:28)। मसीहियों के लिए यह एक बड़ा आराम, प्रोत्साहन और आश्वासन है, उनके लिए जो बाइबल के परमेश्वर को नियमित रूप से प्रेम करते हैं।

मसीही इस आराम, प्रोत्साहन और आश्वासन को व्यक्तिगत अनुभव, अन्य मसीहियों के अनुभव और बाइबल की शिक्षाओं द्वारा जानते हैं। अच्छी और बुरी दोनों परिस्थितियाँ और घटनाएँ मिलकर परमेश्वर की सिद्ध योजना को प्राप्त करने के लिए सहयोग करती हैं। मसीहियों के जीवन में बहुत सी घटनाएँ अपने आप में बुरी होती हैं, लेकिन परमेश्वर के सिद्ध प्रेम, अनुग्रह और बुद्धि के कारण, परमेश्वर उन बुरी चीजों को भी व्यक्तिगत मसीही और परमेश्वर के राज्य और महिमा दोनों की भलाई के लिए काम में लाता है। अंततः ऐसा कुछ भी नहीं है जो मसीहियों की भलाई के लिए योगदान न दे।

“यहोवा ने सब वस्तुएं विशेष उद्देश्य के लिये बनाई हैं, वरन् दुष्ट को भी विपत्ति भोगने के लिये बनाया है।” (नीतिवचन 16:4) “मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार हूँ” (यशायाह 45:7)। “मैं ने तुझे इसी लिये खड़ा किया है कि तुझ में अपनी सामर्थ्य दिखाऊं, और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो” (रोमियों 9:17)।

(2) परमेश्वर का मसीहियों के उद्धार पर संप्रभु नियंत्रण है।

विश्वासियों का महिमा पाना। परमेश्वर की अपनी सृष्टि के लिए, इतिहास के लिए और प्रत्येक विश्वासी के लिए अनंत योजना है और कोई भी उस योजना को विफल नहीं कर सकता (तुलना करें यशायाह 14:24,27 से)! आदि से ही परमेश्वर ने मसीहियों को चुन लिया कि वे पवित्र आत्मा के शुद्धिकरण के काम द्वारा और सत्य में विश्वास के द्वारा उद्धार पाएँ। उसने उन्हें सुसमाचार के माध्यम से इसलिए बुलाया ताकि वे यीशु मसीह की महिमा में सहभागी हों (तुलना करें 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14 और रोमियों 8:29-30 से)। परमेश्वर के पास एक अनंत उद्देश्य है जिसमें उसने कुछ विशेष लोगों को उद्धार के लिए चुना है और जिसमें उसने उन्हें मसीह की समानता के अनुरूप होने लिए पूर्वनिर्धारित किया है (रोमियों 8:29; तुलना करें इफिसियों 1:4 से)।

परमेश्वर समय में अपनी योजना को पूरा करता है (तुलना करें इफिसियों 1:10 से)। जो कुछ परमेश्वर ने *अनंत काल* में उद्देश्य किया था वह उसे समय में पूरा करता है। परमेश्वर हमेशा प्रथम है, केवल अपने अनंत उद्देश्य में ही नहीं, बल्कि जो कुछ उसने समय में पूरा किया उस में भी। यीशु मसीह का प्रथम आगमन तब हुआ “जब समय पूरा हुआ” (गलातियों 4:4)। किसी समय पर परमेश्वर उन लोगों को बुलाता है जिन्हें उसने अनंत काल में चुना था (2तीमुथियुस 1:9-10)। वह उन्हें अन्य मसीहियों के माध्यम से बुलाता है जिन्हें उसने सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजा। वह उन्हें सुसमाचार की बाहरी बुलाहट के माध्यम से बुलाता है जो कि प्रचार किया गया और पवित्र आत्मा की अंदरुनि बुलाहट के माध्यम से जो उन्हें नया जन्म और यह विश्वास देता है (प्रेरितों 13:48; 16:14; 18:27; इफिसियों 2:8-9; फिलिप्पियों 1:29; इब्रानियों 12:2) कि वे यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें।

सुसमाचार के माध्यम से *बाहरी बुलाहट* हमेशा प्रभावशाली नहीं होती (तुलना करें मत्ती 10:14 से; मत्ती 22:14)। हमेशा ऐसे लोग होते हैं जो सुसमाचार सुनते हैं लेकिन उसका प्रतिउत्तर नहीं देते और यहाँ तक कि उसे अस्वीकार कर देते हैं। लेकिन *परमेश्वर की अंदरुनि बुलाहट हमेशा प्रभावशाली होती है* (तुलना करें रोमियों

1:7 से)! इसलिए यूहन्ना 6:44 और 37 सिखाता है कि, जब परमेश्वर लोगों को मसीह के पास अपने संप्रभु तरीके से लाता है, वे निश्चितरूप से मसीह के पास आएंगे और वे निश्चित रूप से उद्धार पाएंगे! और इसलिए रोमियों 8:29-30 सिखाता है कि, जिस व्यक्ति को परमेश्वर बुलाता है वह धर्मी ठहर चुका और जो धर्मी ठहर चुका वह महिमावान भी ठहरा। परमेश्वर अपनी संप्रभुता में मसीहियों के सम्पूर्ण उद्धार को आदि से अंत तक नियंत्रित करता है!

यीशु मसीह की पूर्व-प्रतिष्ठा। एक अंतिम छोर है जो विश्वासियों के महिमावान होने से अधिक श्रेष्ठ है जो कि यीशु मसीह की पूर्व-प्रतिष्ठा है (कुलुस्सियों 1:18)! मसीह हमेशा “बहुत से भाईयों के बीच पहिलौठा” रहेगा (रोमियों 8:29)। यीशु मसीह ने कभी स्वयं को उन लोगों से अलग नहीं समझा जिन्हें बचाने के लिए वह आया (इब्रानियों 2:11)। इसलिए मसीहियों को “उसके भाई” कहा गया है। लेकिन इन सभी भाईयों के बीच मसीह पूर्व-प्रतिष्ठित है! इसलिए यीशु मसीह को “पहिलौठा” कहा गया है।

“पहिलौठे” की अभिव्यक्ति यीशु के वर्णन के अनुकूल है जो परमेश्वर की ओर से संतो के एक नए समाज को, मसीहियों के भाईचारे, कलीसिया की खोज करने आया। यीशु मसीह इस नए समाज में प्रथम है! लोगों के उद्धार में परमेश्वर का उद्देश्य केवल इतना नहीं था कि लोग पवित्र और प्रसन्न हों, बल्कि उस पवित्रता और प्रसन्नता के द्वारा हर जगहा और सदा के लिए यीशु मसीह की महिमा प्रदर्शित हो। संसार में परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में चुने हुए मसीही नहीं बल्कि यीशु मसीह केंद्र बिन्दु है। “पवित्र आत्मा यीशु मसीह की महिमा करेगा” (यूहन्ना 16:14)! यीशु मसीह की महिमा परमेश्वर पिता की महिमा का सर्वोत्तम प्रगटिकरण है। सृष्टि और उद्धार दोनों का सर्वोच्च लक्ष्य परमेश्वर की महिमा है (रोमियों 11:33-36)! केवल परमेश्वर की महिमा!

8:31-34

प्रश्न 4. मसीहियों को परमेश्वर का समर्थन उन्हें किस प्रकार उनके कष्टों के बीच स्थिर रखता है?

ध्यान दें। रोमियों 8:31-34 मसीहियों के लिए परमेश्वर के काम का वर्णन करता है। मसीही अपने कष्टों के बीच में परमेश्वर के समर्थन द्वारा स्थिर रहते हैं (परमेश्वर दोष के विरुद्ध उनकी रक्षा करता है, उन्हें दोष मुक्त करता है और उन्हें सही घोषित करता है)।

(1) परमेश्वर मसीहियों की ओर है!

परमेश्वर ने यीशु मसीह को विश्वासियों को दिया! इसलिए परमेश्वर विश्वासियों को वह सब कुछ उदारता से देगा जिसकी आवश्यकता उन्हें अपने उद्धार के कार्य को पूरा करने के लिए है! परिणाम यह है कि मसीहियों को इस बात का आश्वासन है कि वे निश्चित रूप से धर्मत्याग और घातक पापों से बचे रहेंगे। उद्धार की एक प्रतिज्ञा जिसमें पवित्रता शामिल नहीं, उसमें कुछ भी शामिल नहीं! बाइबल में, उद्धार पाप के बिल्कुल विपरीत व किसी तरह उससे मेल खाने वाला नहीं होता है। उद्धार में पवित्रता निश्चित रूप में शामिल होती है। उद्धार के अन्त में पवित्रता प्राप्त होती है। इसलिए परमेश्वर के उद्धार (धर्मी ठहरने) के काम में, परमेश्वर की प्रतिज्ञा और पवित्रता का काम शामिल हैं। परमेश्वर द्वारा पापियों के शुद्धिकरण के बिना, परमेश्वर द्वारा पापियों का धर्मी ठहरना अकल्पनीय है! जब परमेश्वर ने मसीहियों को अपना सबसे बड़ा वरदान, यीशु मसीह दे दिया, तो वह निश्चित रूप से उन्हें हर वो वरदान देगा जिसकी आवश्यकता उन्हें अपने उद्धार के कार्य को पूरा करने के लिए है। मसीहियों के लिए परमेश्वर का असीम प्रेम न तो मसीहियों को विफल करता है, और न ही मसीहियों को विफल करेगा (रोमियों 8:31-32)!

(2) परमेश्वर मसीहियों को सही घोषित करता है।

परमेश्वर अंतिम न्यायी है जो अपने चुने हुएों को सही घोषित करता है (जब परमेश्वर उन्हें धर्मी ठहराता है), इसलिए कोई दोष मायने नहीं रखता!

ऐसा कुछ भी नहीं जो पाप से ज्यादा भयानक हो। लेकिन जब उद्धार में पाप को क्षमा कर हटा दिया है तो फिर डरने के लिए अब कुछ भी बाकि नहीं रहा! ऐसा कोई नहीं जो मसीहियों को न्याय के न्यायालय में बुला सके। हालाँकि मसीहियों का विवेक अब भी उनकी भर्त्सना करता है, लेकिन अब यह उन्हें भयभीत नहीं करता (1यूहन्ना 3:19-20)! हालाँकि मसीही परमेश्वर की संतान है जो अपने पापों के लिए दुःख व्यक्त करते हैं (2कुरिन्थियों 7:9-11), लेकिन वे खोए हुए लोगों के समान निराश नहीं होते (प्रकाशितवाक्य 6:15-17)। यद्यपि मसीही अभी भी विशेष पाप करते हैं (1यूहन्ना 1:8,10), वे अपने पापों को मान लेते हैं और पूर्णरूप से शुद्ध और क्षमा कर दिए जाते हैं (1यूहन्ना 1:9)।

ऐसे चार कारण हैं कि अब कोई भी मसीहियों को दोषि (अभिशाप्त) नहीं ठहरा सकता।

- यीशु मसीह की मृत्यु ने पापों के लिए प्रायश्चित्त बलिदान किया और दोष के आधार को दूर कर दिया।
- यीशु मसीह का पुनरुत्थान इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के प्रायश्चित्त बलिदान को स्वीकार किया और स्वयं के विषय में उसके सारे दावे मान्य हैं।
- यीशु मसीह का स्वर्गरोहण और सिंहासन पर विराजमान होना इस बात कि ओर संकेत करता है कि वह भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल की सभी घटनाओं और मसीहियों के व्यक्तिगत जीवन के सभी पहलुओं पर संप्रभु संस्थापक है।
- यीशु मसीह का स्थायी माहायाजकीय पद (इब्रानियों 7:24-25) और स्वर्ग में उसकी मसीहियों के वकील के रूप में परमेश्वर पिता से नियमित मध्यस्थता (1यून्ना 2:1-2; इब्रानियों 4:14-16) इस बात का प्रमाण है कि उसका उद्देश्य सभी मसीहियों को पूर्ण रूप से उद्धार करना है। मसीहियों के लिए अपनी मध्यस्थता में वह इस बात की खातरी देता है कि उसकी मृत्यु के लाभ मसीहियों के जीवन में लागू हों, उनके कारणों को परमेश्वर के सम्मुख रखता है और इस बात की देखरेख करता है कि परमेश्वर के अनंत अनुग्रह की आपूर्ति उनके जीवन में आती रहे (रोमियों 8:33-34; यूहन्ना 1:16)।

8:35-39

प्रश्न 5. परमेश्वर का प्रेम मसीहियों को उनके कष्टों में किस प्रकार स्थिर रखता है ?

ध्यान दें। रोमियों 8:35-39 मसीहियों के लिए परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करता है। मसीहियों के सभी कष्टों के बीच (वर्तमान सृष्टि और संसार के इतिहास में), परमेश्वर का प्रेम उन्हें स्थिर रखता है। इस जीवन या मृत्यु में कोई भी और कुछ भी एक मसीही को उसके प्रति परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता। मसीह ने संसार पर जय पायी है और जयवंत बना हुआ है (यूनानी: नेनिकेका) (पूर्ण काल) (यूहन्ना 16:33) और मसीही “जयवंत से बढ़कर हैं या “एक महिमामय विजय प्राप्त कर रहे हैं” (यूनानी: हुपेरनिकाओ) (वर्तमानकाल) (रोमियों 8:37) उसके द्वारा जिसने उनसे एक बार में हमेशा के लिए प्रेम किया (अनिर्दिष्ट काल)!

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं ?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 8:18-39 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें ?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 8:18-39 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 8:18. भविष्य की महिमा के प्रकाश में अपने वर्तमान कष्टों पर विचार करें।
- 8:20-21. हालाँकि वर्तमान सृष्टि निराशा और सड़हट के अधीन है, फिर भी मसीहियों को सांस्कृतिक रूप से उत्पत्ति 1:28 में परमेश्वर द्वारा सृजि गई सृष्टि की देखभाल और सुरक्षा की आज्ञा मिली है।
- 8:23-24. इस बात को समझें कि विश्वास के द्वारा आपका उद्धार हुआ है (पाप के दोष, सामर्थ्य और विनाश से) ताकि अंततः आपका पूर्ण उद्धार हो (शारीरिक मृत्यु से भी)।
- 8:26-27. आपके भीतर पवित्र आत्मा पृथ्वी पर से आपके लिए मध्यस्ती करता है, मसीह स्वर्ग में आपके लिए मध्यस्ती करता है। पवित्र आत्मा आपके अंदर से अनभिव्यक्त आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है। यीशु मसीह आपके जीवन में परमेश्वर की योजना और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रार्थना करता है और पृथ्वी पर आपकी सभी अपूर्ण प्रार्थनाओं को स्वर्ग में सिद्ध प्रार्थना में बदल देता है। (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 8:3-5 से)।
- 8:28. विश्वास करें की आपके साथ जो कुछ होता है उसमें परमेश्वर की अनुमति है और अंत में यह परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को आपके जीवन में पूरा करेगा। निश्चित रूप से आप इस पर तब ही विश्वास कर सकते हैं जब आप परमेश्वर द्वारा बुलाए गए हों और परमेश्वर से प्रेम करते हों।
- 8:29-30. कभी संदेह न करें कि परमेश्वर ने आपको बुलाया है, धर्मी ठहराया है और आपको पूर्णरूप से शुद्ध करेगा, अर्थात्, आपको महिमावान करेगा। वह उस भले काम को पूरा करेगा जिस उसने आप में शुरू किया है (फिलिप्पियों 1:6)।
- 8:31-32. विश्वास करें कि जब परमेश्वर ने आपको सर्वोत्तम वरदान दिया है (अपना पुत्र, यीशु मसीह), तो वह आपसे कोई भली वस्तु न रख छोड़ेगा!
- 8:33-34. विश्वास करें कि जब परमेश्वर ने आपको सही (धर्मी ठहराया है) घोषित किया है, कोई भी दोषारोपण (मनुष्य का या कोई आपके विरोध में खड़ा न रह सकेगा। (साथ ही अंतिम न्याय के दिन भी)(इब्रानियों 8:12)!
- 8:35-39. पूरी तरह से आश्वस्त हो जाएं कि इस सम्पूर्ण सृष्टि और संसार के इतिहास में ऐसा कोई भी और कुछ भी नहीं है जो आपको आपके प्रति परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सके!

2. रोमियों 8:18-39 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

जो आशा परमेश्वर ने मुझे रोमियों 8 अध्याय से दी है वह मुझे मेरी बीमारियों, कष्टों और सताव में स्थिर रखती है। ये सभी कष्ट अस्थायी हैं। जब परमेश्वर संसार का नवीनीकरण करेगा तब कोई बीमारी, कष्ट, सताव और मृत्यु न होगी। तब नया आकाश सिद्ध अवस्था में नई पृथ्वी पर उतरेगा और मसीही हमेशा के लिए यीशु मसीह की महिमा को साझा करेंगे!

मेरे प्रति परमेश्वर का प्रेम मुझे बीमारियों के कष्टों और सताव में स्थिर रखता है। इस संसार में कोई भी और कुछ भी मुझे मेरे प्रति परमेश्वर के असीम प्रेम से अलग नहीं कर सकता! इसलिए मैं लोगों के ऊपर, चीजों

और उन घटनाओं के ऊपर जयवंत से बढ़कर हूँ जो मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश करती हैं। मैं एक महिमामय विजय हासिल कर रहा हूँ। मेरे प्रति परमेश्वर का प्रेम मेरे जीवन की सभी असफलताओं और कठिनाइयों का प्रयोग मेरे जीवन में उसकी सिद्ध योजना को पूरा करने के लिए करता है।

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 8:18-39 में सिखाया है।

(इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>(प्रतिक्रियाएँ)</i> दूसरों के लिए प्रार्थना
---	--

दो या तीन के समूहों में **प्रार्थना करना जारी रखें**। एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	तैयारी (2 मिनट) <i>(सौंपा गया कार्य)</i> अगले अध्याय के लिए
---	--

(समूह अगुवा।) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 8:1-17 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन यशायाह 1,2,3 और 4 के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना।** (13) रोमियों 10:9-10 पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** लूका 14:28-33 में “उतावले निर्माणकर्ता” और “लापरवाह राजा” के दृष्टांत को तैयार करें।
दृष्टांत की व्याख्या करने के लिए छः दिशानिर्देशों का उपयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट)	(शांत समय) यशायाह 1-4
---	---------------------	--------------------------

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 1,2,3 और 4) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट)	(रोमियों में प्रमुख पद) (13) रोमियों 10:9-10
---	---------------------	---

दो-दो करके **पुनरोवलोकन करें।**

(13) रोमियों 8:9-10। कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, ओर अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुआ में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।

4	शिक्षा देना (85 मिनट)	(यीशु मसीह के दृष्टान्त) उतावला निर्माणकर्ता और लापरवाह राजा
---	-----------------------	---

लूका 14:28-30 में “उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टान्त” और

लूका 14:30-31 में “लापरवाह राजा का दृष्टान्त”

परमेश्वर के राज्य में शिष्यता के बारे में दृष्टान्त हैं।

“एक दृष्टान्त” दिव्य अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य-से-जीवन की कहानी या चित्रण है जो एक आध्यात्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए सामान्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम दृष्टान्तों के अध्ययन के लिए छह दिशानिर्देशों का उपयोग करके इन दृष्टान्तों का अध्ययन करेंगे (देखें नियमावली 9, परिशिष्ट 1)।

क. उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टान्त।

पढ़ें लूका 14:25-30।

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

वर्चा करें। कहानी के वास्तविक अंश क्या हैं?

ध्यान दें।

मीनार। एक मीनार एक संरचना हो सकती है जैसे कि पहेरे की मीनार और गोदाम के रूप में काम करने के लिए एक दाख की बारी में बनाया गया है या यह एक पूरे (यशायाह 5:2) फार्म की इमारत हो सकती है।

कीमत का अनुमान लगाना। हर अच्छा व्यवसायी किसी भी परियोजना की लागत का आंकलन करता है।

हर कोई जो देखता है। तमाशबीन हमेशा स्थितियों को मजाक में बदलने या किसी अन्य व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए तैयार होने के लिए बदनाम होते हैं, खासकर जब वह विफल हो जाता है।

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के अंशों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी” का संदर्भ “स्थान” और “दृष्टान्त की व्याख्या या प्रयोग” से मिलकर हो सकता है। दृष्टान्त का स्थान दृष्टान्त को बताने के *मौके* को बता सकता है, या दृष्टान्त को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकता है। स्थान आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से *पहले* पाया जाता है और स्पष्टीकरण या उपयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और वर्चा करें। इस दृष्टान्त का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या उपयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त का स्थान लूका 14 :25 -27 में निहित है

यीशु पेरिया के द्वारा से यरुशलम के रास्ते पर था। वह शिष्यत्व के बारे में एक बड़ी भीड़ को संबोधित कर रहे थे। यीशु *सिखाता* है कि जो कोई भी उसका शिष्य बनना चाहता है उसे समझना चाहिए कि शिष्यत्व से जुड़ने की एक कीमत है। यह यीशु नहीं था जिसने कार्य को पूरा करने की कीमत का अनुमान लगाया था, क्योंकि वह पहले से ही जानता था कि लोगों को बचाने के लिए उसे क्रूस पर मरना होगा। और वह यह भी जानता था कि परमेश्वर के राज्य के निर्माण का कार्य केवल सच्चे शिष्यों के साथ ही पूरा होगा, न कि ऊपरी अनुयायियों के साथ। यीशु को नहीं, बल्कि जो लोग शिष्य बनने की इच्छा रखते हैं, उन्हें शिष्यत्व की कीमत का अनुमान लगाना चाहिए। इस दृष्टान्त का संदर्भ उन लोगों के बारे में बोलता है जिन्हें एक शिष्य के रूप में यीशु मसीह के अनुसरण करने की कीमत पर विचार करना चाहिए।

शिष्यत्व के विषय में यीशु का उपदेश निम्नलिखित है:

सभी सच्चे मसीहियों को शिष्य बनना चाहिए। प्रेरितों 11: 26 बताता है कि शिष्यों को पहली बार एंटीओक (सीरिया) में मसीही कहा गया था। हमें सावधान रहना चाहिए कि एक मसीही और मसीह के शिष्य के बीच एक तीक्ष्ण अंतर न खींचे। यीशु मसीह ने मसीहियों के विभिन्न वर्गों का परिचय नहीं दिया, जैसे कि एक शिष्य एक सामान्य मसीही की तुलना में एक उच्च वर्ग है!

अक्सर भ्रम उत्पन्न होता है क्योंकि हर जगह कुछ लोग खुद को “मसीही” कहते हैं, जबकि उनके पास

मसीह के एक शिष्य की कोई विशेषता नहीं है। वे वास्तव में केवल नाम में “मसीही” हैं और व्यवहार में नहीं हैं और इसलिए वास्तविक मसीही नहीं हैं!

नए नियम की शुरुआत में, सभी लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास करते थे और उसके पीछे चलते थे “शिष्य” कहलाते थे। और फिर भी, मसीह उन लोगों के बीच प्रतिष्ठित था जो सच्चे शिष्य थे और जो सच्चे शिष्य नहीं थे (यूहन्ना 6:60-69)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, एक व्यक्ति “शिष्य” बन गया जब उसने यीशु मसीह में विश्वास किया (प्रेरितों 9:26; 13:48-52)। इनमें से कुछ शिष्य अभी भी बहुत अपरिपक्व थे और आपस में फूट उत्पन्न करते थे (प्रेरितों 6:1-2), जबकि अन्य शिष्य काफी परिपक्व थे, जैसे तीमुथियुस। (प्रेरितों. 16:1-2)।

एक शिष्य की विशिष्ट विशेषताओं को स्पष्ट रूप से यीशु मसीह द्वारा सुसमाचार (मत्ती 10:24-25; 13:52; 28:19-20; लूका 6:40; 14:26-27,33; यूहन्ना 8:31-32; 13:34-35; 15:5-8)। में पढ़ाया जाता है (मिट्टी) यह यीशु मसीह की मनसा है कि परमेश्वर की कृपा से जो भी उनको मानते हैं, उन्हें “एक शिष्य” या “परिपक्व मसीही” की इन विशेषताओं को विकसित करना चाहिए।

एक शिष्य यीशु मसीह का अनुयायी है। यीशु ने विभिन्न प्रकार के लोगों को अपने शिष्य बनने के लिए बुलाया। उसने उनसे कहा, “आओ और देखो” या “मेरे पीछे आओ”। शिष्यत्व के लिए यीशु के आह्वान का कोई सामाजिक अवरोध नहीं था। उनके शिष्यों में पतरस, याकूब और यूहन्ना जैसे पापी मछुआरे थे, एक राजनैतिक कट्टरपंथी था, जिसको शिमोन कहा जाता था और मत्ती नामक एक तिरस्कृत कर वसूलने वाला। शिष्यत्व का आह्वान “उसके साथ” होने का आह्वान था। यीशु के व्यक्ति की शक्तिशाली और प्रत्यक्ष छाप ने, उनके शक्तिशाली शिक्षण के साथ, उन्हें अपने शिष्य बनने के लिए प्रेरित किया (यूहन्ना 1:35-51; लूका 5:1-11; मरकुस 3:13-15)।

एक शिष्य यीशु मसीह से सीखने वाला एक शिक्षार्थी है। एक शिष्य देखने, सुनने और अनुकरण करने के द्वारा सीखता है। वह जैसे जैसे मसीह का अनुसरण करता है वह सीखता है। वह नजदीक से यीशु के जीवन और सेवकाई का अवलोकन करता है। वह यीशु मसीह और प्रेरितों के शिक्षण और उदाहरण दोनों से सीखता है। वह अनुभव और अभ्यास के माध्यम से भी सीखता है। (यूहन्ना 13:13-15; मत्ती 4:23; प्रेरितों. 4:13; फिलिप्पियों 4:9-12)।

यीशु मसीह के एक सच्चे शिष्य की पहली विशेषता “घृणा” करना है। इसका मतलब है कि एक सच्चा शिष्य यीशु मसीह के लिए पूरी तरह समर्पित है। पद 26 के अनुसार, एक शिष्य को यीशु मसीह का शिष्य बनने के लिए अपने परिवार और अपने जीवन से “घृणा” करनी चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि वह अपने माता-पिता और परिवार से नापसंद करने या उन्हें त्यागने या उन्हें भूल जाने के अर्थ में घृणा करे। बाइबल मसीहियों को अपने माता-पिता की देखभाल करने, अपनी पत्नियों से प्यार करने, अपने बच्चों को प्रभु की आज्ञा में पालने और अपने पड़ोसी से भी वैसा ही प्रेम करने की आज्ञा देती है जैसी वे स्वयं से प्यार करते हैं।

“घृणा” शब्द का अर्थ “कम प्राथमिकता देना” है जैसा कि दृष्टान्त मत्ती 10: 37 में दिखता है। “जो कोई अपने पिता या माता को मुझसे अधिक प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं है; जो कोई अपने पुत्र या पुत्री को मुझसे अधिक प्यार करता है, वह मेरे योग्य नहीं है।” यदि परिवार के सदस्य और मसीह के बीच टकराव होता है, और “एक परिवार के सदस्य की आज्ञा मानन” और “मसीह को मानने” के बीच में चुनाव करना हो, तो परिवार के सदस्य की इच्छा, चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो, अस्वीकार करी जानी चाहिए। शिष्य

की सर्वोच्च निष्ठा मसीह के प्रति है और कोई अन्य संबंध इसे बदल नहीं सकता है। वह मसीह को इस तरह बिना शर्त अपने परमेश्वर (राजा) और मार्गदर्शक के रूप में चुनता है कि वह अन्य सभी निष्ठाओं और संबंधों को अपनी निष्ठा और यीशु मसीह के प्रति समर्पण के अधीन करता है। यीशु मसीह को हमेशा सर्वश्रेष्ठ (कुलुस्सियों 1: 18) होना चाहिए! इस प्रकार, एक शिष्य किसी अन्य रिश्ते से अधिक यीशु मसीह से प्यार करता है। वह अपने माता-पिता, अपने परिवार और यहां तक कि खुद के ऊपर भी यीशु मसीह को प्राथमिकता देते हैं।

यीशु मसीह के एक सच्चे शिष्य की दूसरी विशेषता है उसका क्रूस उठाना।

इसका मतलब यह है कि एक सच्चा शिष्य अपनी महत्वाकांक्षाओं और सुरक्षा का त्याग करता है। वह दुःख के बलिदान को स्वीकार करता है जो कि एक प्रतिबद्ध मसीही को लाना चाहिए जब वह ठुकरा दिया जाता है, अस्वीकार किया जाता है, उपहास किया जाता है, अत्याचार किया जाता है और उसे सताया जाता है। यह “अपने स्वयं के क्रूस को ले जाने” का वास्तविक अर्थ है। (लूका 14:26-27)
इस बिंदु पर, यीशु ने “उतावले निर्माणकर्ता” के दृष्टांत को बताया।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 14 : 28 -30 में शामिल है

(3) दृष्टांत की व्याख्या या उपयोग नहीं दिया गया है।

इसे संदर्भ से काट दिया जाना चाहिए। एक मसीही को उसके कार्य करने से पहले शिष्यत्व की कीमत का पता लगाना चाहिए।

3. बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य वाक्यांशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण परस्पर - संदर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के ये प्रत्येक वाक्यांश क्या सिखाते हैं और कैसे सिखाते हैं, उसकी तुलना दृष्टान्त की शिक्षा से करें?

ध्यान दें। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। संदर्भ के संबंध में विवरण की व्याख्या की जानी चाहिए।

एक मीनार का निर्माण। यह एक प्रासंगिक विवरण है। मीनार का निर्माण एक बड़ी परियोजना है। इसमें बहुत सारा पैसा, बहुत सारी ऊर्जा और बहुत सारा समय खर्च होता है। संदर्भ में यह “यीशु मसीह का शिष्य बनने” को दर्शाता है। यीशु मसीह का शिष्य बनने का निर्णय एक महत्वपूर्ण निर्णय है। यह आपकी वित्तीय स्थिति को प्रभावित कर सकता है अपने माता-पिता, पत्नी और बच्चों, भाइयों और बहनों से आपका रिश्ता और यह आपके पूरे जीवन की दिशा बदल सकता है!

कीमत का अनुमान लगाकर पहले यह देखना कि वह कार्य पूरा कर सकता है या नहीं। यह एक आवश्यक विवरण है, क्योंकि यह दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है। प्रत्येक व्यक्ति पहले यीशु मसीह के शिष्य बनने की कीमत पर विचार करने के लिए जिम्मेदार है। उसे यह तय करना होगा कि वह यीशु मसीह को अपने जीवन में, अपने रिश्तों में, अपनी योजनाओं में और अपने निर्णयों आदि में पहला स्थान देने के लिए तैयार है या नहीं।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या उपयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्तों को समझाया या उपयोग किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टान्त में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 14:28-30 में उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व” के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “प्रत्येक व्यक्ति यीशु मसीह का अनुसरण करने से पहले शिष्यत्व की कीमत का पता लगाने के लिए जिम्मेदार है। छलांग लगाने से पहले उसे देखना होगा।”

शिष्यत्व परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के लोग अपने शेष जीवन के लिए यीशु मसीह के पालन की कीमत पर विचार करते हैं। संदर्भ में, किसी व्यक्ति को अपने माता-पिता, अपने परिवार (पत्नी और बच्चों, अपने भाइयों और बहनों) और अपने स्वयं के जीवन, महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं के संबंध में विशेष रूप से शिष्यत्व की कीमत पर विचार करना चाहिए। यह संभव है कि उसे अपने माता-पिता, परिवार और यहां तक कि अपनी महत्वाकांक्षाओं और सुरक्षा के खिलाफ चुनना पड़ सकता है।

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टान्त की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य वाक्यांशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण परस्पर -संदर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टान्त की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और वर्चा करें। बाइबल के ये प्रत्येक वाक्यांश क्या सिखाते हैं और कैसे सिखाते हैं, उसकी तुलना दृष्टान्त की शिक्षा से करें?

मत्ती 6:25-34। शिष्यत्व की कीमत सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करना है। यह भोजन, पेय और कपड़े जैसी भौतिक चीजों को खोजने से ऊपर की तलाश है।

मत्ती 10:37-39। शिष्यत्व की कीमत यीशु मसीह को प्यार करना है उससे अधिक जितना कोई अपने माता-पिता, पत्नी या बच्चों से प्यार करता है।

जब उसे ठुकरा दिया जाता है, जब उसे छोड़ दिया जाता है, उसे तिरस्कृत किया जाता है, उसका अपमान किया जाता है, उस पर दोष लगाया जाता है तब भी वह एक समर्पित मसीही की तरह त्याग करने के लिए तैयार रहता है। यह यीशु मसीह और परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए अपने जीवन को खोने के लिए चुनना है।

मत्ती 7:14; यूहन्ना 16:33; 2तीमुथियुस 3:12। प्रत्येक व्यक्ति को शिष्यत्व के लिए प्रतिबद्धता बनाने से

पहले शिष्यत्व की कीमत की गणना करनी चाहिए। उसे छलांग लगाने से पहले देखना होगा। मसीह का अनुसरण करना आसान नहीं है, क्योंकि यह ऐसा है जैसे एक संकीर्ण द्वार में प्रवेश करना और एक संकरे रास्ते पर चलना (चढ़ाई)। इसमें अक्सर एक या दूसरे प्रकार की परेशानी और उत्पीड़न शामिल होता है। कुछ लोग कुछ समय के लिए मसीह का अनुसरण करते दिखते हैं, लेकिन फिर (इब्रानियों 6:4-8; 1 यूहन्ना 2:19) छोड़ देते हैं जैसे यहूदा (यूहन्ना 6:70-71) और शायद दीमास (2तीमुथियुस 4:8,10; तुलना करें मत्ती 7:22-23 से; यूहन्ना 6:66)। लेकिन मसीह में वास्तविक विश्वासी (मत्ती 11:12) अंततः कभी नहीं छोड़ते हैं (यूहन्ना 10:27-28; फिलिप्पियों 1:6; 2तीमुथियुस 2:19) भले ही वे (नीतिवचन 24:16), कुछ अवधि के लिए ठोकर खाते हों जैसे पतरस (लूका 22:31-32; यूहन्ना 21:15-17)।

ख. लापरवाह राजा का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 14:31-33।

लूका 14:31-32 कहता है, “या कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, या नहीं? नहीं तो उसके दूरे रहते ही वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।”

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।

वर्चा करें। कहानी के वास्तविक अंश क्या हैं?

ध्यान दें।

युद्ध लड़ते हुए राजा। अन्य राजाओं के साथ युद्ध करने वाले राजाओं के वर्णन ने दुनिया के इतिहास की पुस्तकों को भर दिया है।

एक लड़ाई के परिणाम को देखते हुए। युद्ध करने के लिए बाहर जाने से पहले एक राजा और उसके सेनापतियों का यह एक मुख्य कार्य है। विशेष रूप से जब उन्हें पता चलता है कि वे संख्या में अधिक हैं, तो उन्हें निर्णय लेने के लिए मजबूर किया जाता है: या तो लड़ाई हार जाए या शांति के लिए विनती करें।

एक प्रतिनिधिमंडल भेजना और शांति की शर्तों के लिए पूछना। यह सभी बाधाओं के खिलाफ लड़ाई में जाने और एक अपूरणीय हार का सामना करने से बेहतर निर्णय है।

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के अंशों को निर्धारित करें।

खोजें और वर्चा करें। दृष्टान्त का स्थान, कहानी और व्याख्या या उपयोग क्या है?

ध्यान दें।

यह उतावले निर्माणकर्ता के दृष्टान्त के समान है।

(1) दृष्टान्त का स्थान लूका 14:25-30 में निहित है

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 14:31-32 में शामिल है

(3) दृष्टान्त की व्याख्या या प्रयोग लूका 14:33-35 में निहित है

प्रयोग कहानी में निहित है: यदि किसी को कुछ करना है, तो सबसे समझदार तरीके से कार्य करें! अगर कोई

जीत नहीं सकता, तो शांति के लिए निवेदन करो!
शिष्यत्व के विषय में यीशु का उपदेश निम्नलिखित है:

यीशु मसीह के एक सच्चे शिष्य की तीसरी विशेषता यह है की जो कुछ उनके पास सब छोड़ देना है।

इसका मतलब यह है कि एक सच्चा शिष्य यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। पद 33 कहता है, “तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।” इस प्रकार, एक शिष्य इस संसार की सभी संपत्ति, संबंधों और महत्वाकांक्षाओं से ऊपर मसीह को प्राथमिकता देता है। वह कुछ भी और सब कुछ छोड़ देने के लिए तैयार होता है, या यीशु मसीह के शिष्य के रूप में पालन करने के लिए हर किसी को या किसी को विदा कहने के लिए तैयार होता है। एक शिष्य धन, सफलता, प्रसिद्धि और शक्ति के प्रेम के कारण खुद को शिष्य होने में अयोग्य घोषित नहीं होने देता।

यदि एक तरफ भौतिकवाद, सफलता, प्रसिद्धि या शक्ति को पाने और दूसरे हाथ पर यीशु मसीह का पूरी तरह से पालन करने के बीच संघर्ष हो, तो भौतिकवाद, सफलता, प्रसिद्धि या शक्ति का पीछा अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए। यदि चुनाव पैसा बनाने और मसीह का पूरी ईमानदारी से पालन करने के बीच है, तो भौतिकवाद और सांसारिक सफलता के आकर्षण को अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए। एक शिष्य की सर्वोच्च प्रतिबद्धता यीशु मसीह के लिए है और कोई अन्य प्रतिबद्धता इसे बदल नहीं सकती है!

यीशु मसीह के एक सच्चे शिष्य की चौथी विशेषता नमक के समान होना है।

इसका अर्थ है कि एक सच्चे शिष्य का उसके समाज पर अच्छा प्रभाव होता है। पद 34-35 कहता है, “नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा। वह न तो भूमि के और न खाद के काम आता है: उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं।” नमक एक ऐसा पदार्थ है जो एक तरफ विकृति का सामना करता है और दूसरी तरफ स्वाद प्रदान करता है। मसीही शिष्यों को वास्तविक “नमक” जैसा होना चाहिए। उन्हें अपने समाज में नैतिक और आत्मिक क्षय का मुकाबला करना चाहिए और उनके शब्दों और कार्यों को अपने आस-पास के लोगों के लिए एक सुखद स्वाद की तरह होना चाहिए।

नमक जो बेस्वाद हो गया है, वह मिट्टी को निषेचित नहीं कर सकता। यह कुछ अच्छा नहीं कर सकता यहाँ तक की खाद के ढेर का भी नहीं। घमंडियो और कानून के शिक्षकों के औपचारिक, कानूनी धर्म, जिन्होंने परमेश्वर के कानून पर अपने स्वयं के कई विचारों और निर्णयों को लागू किया, उन्होंने केवल लोगों पर बोझ डाला है। यह बेस्वाद नमक जैसा हो गया है। इन लोगों का इजराइल के समाज पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं था और उन्हें परमेश्वर के राज्य से बाहर कर दिया जाएगा। (मत्ती 8:12; 21:42-44) यीशु ने अपने श्रोताओं को चेतावनी दी कि जो लोग सत्य के ज्ञान में प्रशिक्षित थे और बाद में उन्होंने पवित्र आत्मा के उकसाने के खिलाफ खुद को दृढ़ किया और मसीह के खिलाफ उनके विरोध में कठोर हो गए, वे पश्चाताप नहीं कर पाएंगे (मत्ती 12:32; इब्रानियों 6:4-6; 10:26-31)। यीशु मसीह के प्रति निष्ठा कायम करना नितांत आवश्यक है और मनुष्य की पाप करने के स्वभाव की लालसा से कभी सामंजस्य नहीं बना सकता। यीशु ने अपने श्रोताओं को चेतावनी दी, “जिसके पास सुनने के लिए कान हैं, वह उसे सुन ले” (लूका 14:35; प्रकाशितवाक्य 2:7)। इसका मतलब यह है कि जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह के शब्दों को सुनता है, तो उसे देरी नहीं करनी चाहिए, लेकिन तुरंत कार्य करना चाहिए !

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

वर्चा करें। इस दृष्टांत में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है ?
ध्यान दें।

यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। संदर्भ के संबंध में विवरण की व्याख्या की जानी चाहिए।

एक राजा दूसरे राजा के खिलाफ युद्ध में जाने वाला है। ये प्रासंगिक विवरण हैं। संदर्भ में, पहला राजा उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो यीशु मसीह का शिष्य बनने की इच्छा रखता है या चाहता है, अर्थात् आप और मैं। दूसरा राजा, जिसके पास बहुत अधिक सेना है, यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता है!

पहले राजा को पहले इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या वह दूसरे राजा का विरोध करने में सक्षम है जो बहुत अधिक सेना के साथ आगे बढ़ रहा है। यह एक आवश्यक विवरण है, क्योंकि यह दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है। युद्ध में जाने से पहले हर राजा या सेनापति अपनी बाधाओं और अपनी रणनीति पर विचार करता है।

पहले राजा को संभावनाओं पर विचार करना चाहिए। इस दृष्टांत का सार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति यह निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार है कि वह यीशु मसीह का शिष्य बनेगा या नहीं। उसे एहसास होना चाहिए कि यीशु मसीह और उसके बेशुमार स्वर्गदूत उससे से कई गुना मजबूत हैं! उसे एहसास होना चाहिए कि उसे यह एक पूर्ण महत्वपूर्ण निर्णय लेना है: यीशु मसीह का विरोध करना या यीशु मसीह को अधीन करना!

इसके बाद पहले राजा को चुनना होगा और कार्य करना होगा। कूदने से पहले उसे ध्यान से सोचना चाहिए। लेकिन उसे कूदना ही होगा! उसे इसमें देरी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि दूसरा राजा पहले से ही अपने रास्ते पर है! यीशु मसीह आपसे मिलने के लिए पहले से ही मौजूद है और वह पूर्ण अधीनता की मांग करता है क्योंकि वह राजाओं का राजा है। (प्रकाशितवाक्य 17:12-14)। आप उसके दूसरे आगमन पर उसका सामना करेंगे, लेकिन बहुत पहले जब आप मरेंगे! आपको तुरंत चुनना और कार्य करना होगा और आपको देरी नहीं करनी चाहिए! यीशु मसीह के साथ इस महत्वपूर्ण बैठक (टकराव) से कोई भी नहीं बच सकता है। आपको स्वतंत्र रूप से अधीन होना होगा या नष्ट होना होगा!

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

वर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 14:1-33 में लापरवाह राजा का दृष्टांत “परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व” के बारे में सिखाता है। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “हर व्यक्ति यीशु मसीह का शिष्य बनने या उसके खिलाफ चुनाव करने के लिए जिम्मेदार है। यद्यपि उसे इस बात पर विचार करना चाहिए कि कौन सी रणनीति सबसे अच्छी है, उसे अवश्य कार्य करना चाहिए! उसे खुद को चुनना और अधीन होना होगा, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह पहले से ही उसके पास आने को रस्ते पर है! यीशु मसीह के संबंध में निष्पक्षता असंभव है! “कीमत का अनुमान लगाने और फिर उसके राज के लिए पूरे दिल से अधीन होने के लिए परमेश्वर की प्रारंभिक मांग को चुनना मानवीय प्रतिक्रिया है। यीशु मसीह को अपने दिल और दिमाग और आत्मा और सामर्थ्य से प्यार करने का यही मतलब है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश केवल एक की पसंद की कीमत और परिणामों पर विचार करने से अधिक है। पहले राजा की पसंद इस बात के बीच नहीं थी कि वह हमला करे या तटस्थ रहे, लेकिन हमला किए जाने के बीच (क्योंकि वह निश्चित रूप से होने वाला था!) या शांति के लिए विनती करें (क्योंकि यह अपरिहार्य हमले को रोकने का एकमात्र तरीका होगा)।

जबकि उतावले निर्माणकर्ता के पास अभी भी निर्माण करने या नहीं बनाने का विकल्प था, पहले राजा पर हमला किया गया था। उसे तटस्थ रहने का चयन करने की कोई स्वतंत्रता नहीं थी। एक विकल्प उस पर मजबूर किया गया था! उसे चुनना होगा! इसी तरह, हर इंसान को चुनना और कार्य करना चाहिए। यीशु मसीह का विरोध करें या उसके अधीन हो जाये। यीशु मसीह के संबंध में निष्पक्षता असंभव है! भले ही कोई धार्मिक हो या न हो, उसे चुनना होगा और उसे अवश्य कार्य करना होगा!

सभी लोग पर फिर से उन पर पापी प्रकृति द्वारा (रोमियों 7:14-25; गलातियों 5:17), उनके चारों ओर शैतानी और उनके चारों ओर (यूहन्ना 15:18) मसीही-विरोधी संसार और शैतान के द्वारा और उनके ऊपर बुरी आत्माओं की सेना के द्वारा हमला किया जा रहा है (इफिसियों 6:12) पापी प्रकृति दरवाजे पर पाँव पसार रही है और इसकी इच्छा कब्जा करने और नष्ट करने की है। (उत्पत्ति 4:7)। पापी दुनिया और पाप की इच्छाओं पर उसकी अपील बहुत मजबूत है। (1 यूहन्ना 2:15-17; लूका 8:14)। और शत्रु, शैतान चारों ओर से तलाश कर रहा है, और निगलने की फिराक में है (1 पतरस 5:8)।

लेकिन स्वयं यीशु मसीह भी हमले पर है! चूँकि, पाप, अपराध, शर्म, अपवित्रता, शक्ति और पाप की दासता से लोगों को बचाने के लिए वह दुनिया में पहली बार आया था, इसलिए वह अपने वचन, अपनी आत्मा और अपने मजदूरों (प्रचारकों) के माध्यम से लोगों के पास आता है। अपने दूसरे आगमन पर वह मसीहियों के लिए अंतिम उद्धारकर्ता के रूप में आएगा, लेकिन गैर-मसीहियों के लिए अंतिम न्यायधीश के रूप में भी। वह खुद अभी दिल के दरवाजे पर खड़ा है और दस्तक दे रहा है। वह अंदर आने की इच्छा रखता है। यह किसी व्यक्ति को निर्णय लेने के लिए मजबूर करता है। (प्रकाशितवाक्य 3:20) लोगों के लिए उनका आना अपरिहार्य और अप्रतिरोध्य है!

एक आदमी को चुनना होगा। यीशु कहते हैं: “अतः मन फिर, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूंगा।” (प्रकाशितवाक्य 2:16)। “पश्चताप। यदि तू जागृत न रहेगा तो मैं चोर के समान आ जाऊंगा, और तू कदापि न जान सकेगा कि मैं किस घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा।” (प्रकाशितवाक्य 3:3)।

शिष्यत्व ईश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग, उनके पापी स्वभाव के हमलों से, उनके आस-पास के मसीही -विरोधी दुनिया और एक तरफ उनके ऊपर की राक्षसी दुनिया और दूसरी तरफ यीशु मसीह के बारे में विचार करना चाहिए, उन्हें विचार करना चाहिए कि उन्हें क्या देना चाहिए, त्याग दे या जाने दे, ताकि वे कुचलेजाने वाली पराजय से और न सुधरे जाने लायक आत्मिक और नैतिक नुकसान से और अधिक कष्ट न उठाना पड़े।

सबसे खराब रणनीति और सबसे मूर्खतापूर्ण बात वे यह सोच सकते हैं कि वे निष्पक्ष रह सकते हैं और इसलिए निर्णय लेने की जरूरत नहीं है! सबसे अच्छी रणनीति और केवल बुद्धिमान, समझदार और उचित बात एक निर्णय लेना होगा, एक प्रतिबद्धता बनाना। यह यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित करना है और अपने जीवन के सभी दिनों में यीशु मसीह का शिष्य के रूप में पालन करना है (2 कुरिन्थियों 5:17-20)।

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

स्रोतों और चर्चा करें। कैसे बाइबल की का प्रत्येक वाक्यांश क्या सिखाता है, दृष्टांतों की शिक्षा से उसकी तुलना करें?

लूका 12:57-59। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति यह है कि किसी मुकदमे में उनके लिए सही क्या है। यदि कोई मुकदमा नहीं जीत सकता है, तो अदालत से बाहर समझौता करने के लिए निवेदन करें। अंतिम निर्णय (मानव इतिहास में बहुत अंतिम परीक्षण) के संबंध में, सबसे अच्छी रणनीति यीशु मसीह के साथ सामंजस्य स्थापित करना है, सभी न्यायाधीशों के न्यायाधीश। शाश्वत निंदा से बचने का और कोई उपाय नहीं है!

लूका 13:1-5। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति पश्चाताप करना और यीशु मसीह पर विश्वास करना है, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए! यीशु ने कहा, “जब तक तुम पश्चाताप नहीं करते, तुम भी सब नष्ट हो जाओगे।”

2कुरिन्थियों 6:2। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति तुरंत कार्य करना है न कि शिथिलता। “अब मोक्ष का दिन है!”

मत्ती 19:20-24। शिष्यत्व की सबसे अच्छी रणनीति यह है कि एक शिष्य के रूप में यीशु का अनुसरण करने के मार्ग में जो कुछ आता है उसे छोड़ देना चाहिए! किसी के लिए यह कुछ संपत्ति छोड़ना हो सकता है। दूसरे के लिए यह शक्ति, सफलता या प्रसिद्धि की कुछ महत्वाकांक्षाओं को छोड़ना हो सकता है। और फिर भी दूसरे के लिए कुछ रिश्तों को छोड़ना पड़ सकता है। (नीतिवचन 1:10,15; इफिसियों 5:5-7)। ऐसा करने से, वह यीशु मसीह, राजाओं के राजा से इस दुनिया में लौटने के पक्ष में मिलने का आश्वासन देगा!

लूका 14:34-35; 2कुरिन्थियों 2:14-16; 3:2-3। शिष्यत्व के लिए सबसे अच्छी रणनीति परिवार, पड़ोसियों, विरोधियों और यहां तक कि दुश्मनों सहित किसी के समाज पर अच्छा प्रभाव डालना है। एक लड़ाई जीतने के लिए सबसे अच्छी रणनीति नमक की तरह नैतिक और आत्मिक क्षय का मुकाबला करना है। यह सुसमाचार की खुशखबरी को सुगंधित सुगंध की तरह फैलाना है। यह लोगों के बीच एक पारदर्शी मसीही जीवन जीना है, जैसे कि एक पत्र जिसे सभी जानते हैं और पढ़ते हैं।

ग. परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व के बारे में दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाओं और पाठों का सारांश।

परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व के बारे में निम्न दृष्टान्त हैं:

- लूका 14:28-30 में उतावले निर्माणकर्ता का दृष्टान्त।
- लूका 14:31-33 में लापरवाह राजा का दृष्टान्त।
- लूका 9:61-62 में हल जोतने वाले का दृष्टान्त। (दिखें नियमावली 11, परिशिष्ट 11)

वर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में शिष्यत्व के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें। मसीहियों को यीशु मसीह का चेला बनना चाहिए।

(1) एक व्यक्ति को शिष्यत्व की कीमत पर विचार करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति शिष्यत्व की कीमत पर विचार करने के लिए जिम्मेदार है, विशेष रूप से अपने माता-पिता, अपनी पत्नी और बच्चों, अपने भाइयों और बहनों और अपने स्वयं के जीवन और महत्वाकांक्षाओं के लिए अपने संबंधों के संदर्भ में। कीमत यह हो सकती है कि वह अपने माता-पिता, परिवार और यहां तक कि

अपनी महत्वाकांक्षाओं और सुरक्षा के ऊपर अपने रिश्ते के ऊपर यीशु मसीह को और यीशु मसीह के लिये चुनना होगा।

(2) एक व्यक्ति को मसीह के लिए या उसके विरुद्ध चयन करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति यीशु मसीह के शिष्य बनने के लिए या उसके खिलाफ चुनाव करने के लिए जिम्मेदार है, अर्थात्, राजाओं के राजा के अधीन होने या उसकी मांग का विरोध करने के लिए जिम्मेदार है। यीशु मसीह के संबंध में निष्पक्षता असंभव है! उसे इस बात पर विचार करना चाहिए कि यीशु मसीह के साथ अपने संबंधों में भारी हार न भुगतने के लिए उसे एक तरफ क्या करना चाहिए, क्या देना चाहिए या क्या कहना चाहिए। थोड़ा सा मसीही होने जैसी कोई बात नहीं है, जैसे कि परमेश्वर के लिए किसी तरह का निर्णय लेना या जीवन-शैली में कुछ बाहरी परिवर्तन करना, और फिर अपने जीवन के साथ जैसा वह खुद तय करता है, वैसा ही करना।

सबसे खराब रणनीति और सबसे मूर्खतापूर्ण बात जो एक व्यक्ति कर सकता है, वह यह है कि वह सोचता है की वह निष्पक्ष रह सकता है और इसलिए उसे निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं है! सबसे अच्छी रणनीति यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के साथ सामंजस्य स्थापित करना है। केवल बुद्धिमान, समझदार और वाजिब बात यह है कि यीशु मसीह को अपने शिष्य के रूप में पालन करें। मसीही शिष्यत्व का अर्थ है यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं के प्रति पूरे समर्पण के साथ अधीन होना।

(3) व्यक्ति को अपने जीवन के प्रत्येक दिन शिष्य होना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार है कि वह यीशु मसीह को हर दिन और अपने जीवन के सभी दिनों को अंत तक एक शिष्य के रूप में पालन करने के लिए पूरी तरह से वचनबद्ध हो। यीशु मसीह शिष्यत्व में अविभाजित प्रतिबद्धता की माँग करता है!

प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार है कि वह यीशु मसीह को हर दिन और अपने जीवन के सभी दिनों को अंत तक एक शिष्य के रूप में पालन करने के लिए पूरी तरह से वचनबद्ध हो। यीशु मसीह शिष्यत्व में अविभाजित प्रतिबद्धता की माँग करता है!

तीन दृष्टांत एक साथ सिखाते हैं कि एक शिष्य को शिष्यत्व की कीमत की गणना करनी चाहिए! उसे शिष्यत्व के लिए निर्णय लेना चाहिए! हर दिन उसे पीछे मुड़ने से इंकार करना चाहिए और खुद को आगे की ओर देखते रहना चाहिए क्योंकि वह यीशु मसीह का अनुसरण करता है!

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>(प्रतिक्रियाएँ)</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	--

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए** समूह में **बारियाँ लें।**

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी (2 मिनट) <i>(सौंपा गया कार्य)</i> अगले अगले अध्याय के लिए
---	---

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी

प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “उतावला निर्माणकर्ता” और “लापरवाह राजा” के दृष्टांत का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यशायाह 5,6,7 और 8** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(14) रोमियों 10:12**। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 9:1-33**।
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट)	(शांत समय) यशायाह 5-8
---	---------------------	--------------------------

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 5,6,7 और 8) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट)	(रोमियों में प्रमुख पद) (14) रोमियों 10:12
---	---------------------	---

दो-दो करके **पुनरोवलोकन करें।**

(14) रोमियों 10:12। यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सब प्रभु का है; और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट)	(रोमियों की पत्री) रोमियों 9:1-33
---	------------------------	--------------------------------------

परिचय। रोमियों 9:1-33 का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 1:16-17 में पौलुस ने कहा कि “सुसमाचार सभी के लिए जो उसमें विश्वास करता है उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है: पहले यहूदी के लिए, फिर अन्यजातियों (गैर-यहूदी) के लिए”। हालाँकि, यह तथ्य कि यहूदियों की प्राथमिकता थी (मत्ती 10:5-6 से तुलना करें) बाद के इतिहास से यह उचित नहीं लगता। इस्राएल में बड़ी संख्या में लोगों के विश्वास के न्यायसंगतता के बजाय, इस्राएल के हिस्से पर बड़े पैमाने पर अविश्वास और धर्मत्याग था तुलना करें इब्रानियों 4:2,6 से)।

इसलिए, रोमियों अध्याय 9 से 11 में, पौलुस ने यहूदियों और अन्यजातियों के संदर्भ में परमेश्वर के विश्वव्यापी ढांचे का वर्णन किया है। वह दिखाता है कि यहूदियों और अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के विविध व्यवहार एक-दूसरे पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं और दोनों के लिए परमेश्वर की मुक्ति की योजना के प्रचार के लिए एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं।

परमेश्वर ने पृथ्वी पर एक **राष्ट्र को चुना** और उन्हें कुछ **विशेषाधिकार** दिए (रोमियों 9:1-5)।

परमेश्वर ने एक अवशेष चुना (रोमियों 9:27,29; से तुलना करें उत्पत्ति 45:7 से यशायाह 1:9; 4:2-3; 10:20-21; 46:3-4; यिर्मयाह 50:20) इस राष्ट्र में से जिसे उसने **मुक्ति** दी थी। परमेश्वर संप्रभु है और वह जिसे चाहता है, उसे बचाता है (रोमियों 9:6-16) और जिसे वह चाहता है कठोर करता है (रोमियों 9:1-18)। संप्रभु परमेश्वर का अपने प्राणियों पर पूर्ण अधिकार है (रोमियों 9:19-21)। वह बहुत धैर्य दिखाता है (रोमियों 9:22-24) लेकिन वह प्रभावी रूप से केवल उन लोगों को बुलाता करता है जो बचाना चाहते हैं (रोमियों 9:25-29)(रोमियों 9:6-29 से तुलना करें यूहन्ना 17:2,6 से)।

परमेश्वर ने यीशु मसीह को चट्टान (उद्धारकर्ता) के रूप में चुना, जिस पर उन्होंने अपने नए समुदाय (अपने लोगों, कलीसिया) का निर्माण किया। (रोमियों 9: 30-33; तुलना करें 1पतरस 1:20 से) या ठोकर खाने वाला पत्थर बनने के लिए जिस पर अविश्वास और गैर-मसीही (लूका 2:34; 1पतरस 2:4-10) ठोकर खाना को जारी रखेंगे।

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 9:1-33 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है ?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

9:1-5

खोज 1. इस्राएल के विशेषाधिकारों का विवरण।

इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के विशेषाधिकार निम्नलिखित थे। परमेश्वर ने उन्हें जानने के लिए, उनकी सेवा करने के लिए और उनको अपना बनाने के लिए अलग रखा था। (तुलना करें यशायाह 43:10; प्रेरितों 13:16-23)

“बेटों का गोद लेना” इस्राएल के लिए एक शब्द है जिसे परमेश्वर के पहले बेटे के रूप में (निर्गमन 4:22-33) (होशे 11:1), के रूप में संदर्भित किया गया है, जिसका अर्थ है कि इस्राएल पृथ्वी पर *परमेश्वर के लोगों की शुरुआत* थी, लेकिन केवल वो ही पृथ्वी पर परमेश्वर के लोग नहीं थे (इफिसियों 2:11-13; 3:2-6)।

“ईश्वरीय गौरव” उनका पृथ्वी पर अभिव्यक्ति और पिछले इतिहास में उनके साथ परमेश्वर की उपस्थिति का संदर्भ है - दिन के समय बादल का स्तंभ और रात तक अग्नि का स्तंभ (निर्गमन 13:21-22)। परमेश्वर की महिमा उनकी ईश्वरीय चरित्र का प्रकाश है (उनकी शक्ति, उनके न्याय, आदि की तरह) (तुलना करें 2 इतिहास 7:1-3से)।

“वाचाएं” बहुवचन में परमेश्वर की कृपा की एक वाचा का संदर्भ है, जो उन्होंने अब्राहम के साथ बनाई थी, और उसके बाद पुराने नियम की अवधि के दौरान बार बार उसकी पुष्टि की गई (उत्पत्ति 12:1-3; 22:17-18;

निर्गमन 6:1-7; 1इतिहास 17:11-14; यिर्मयाह 31:31-34; तुलना करें गलातियों 3:16-19 से)।

“व्यवस्था की प्राप्ति” नियमों का संदर्भ है, जिसे मूसा ने प्राप्त किया था (तुलना करें गलातियों 3:16-19)।

“मंदिर की आराधना” पुराने नियम की अवधि के दौरान मंदिर और मंदिर में जीवित परमेश्वर की आराधना का एक संदर्भ है (तुलना करें इब्रानियों 9: -10)।

“वादे” पुराने नियम के प्रकाशन में कई वादों का एक संदर्भ है, उदाहरण के लिए, वे एक बेशुमार बड़े राष्ट्र बनेंगे (उत्पत्ति 15:6; तुलना करें 1राजाओं 4:20) वे एक महान भूमि के अधिकारी होंगे (उत्पत्ति 15:18; तुलना करें 1राजाओं 4:21 से)। बाँझ महिलाओं को संतान प्राप्त होगी (उत्पत्ति 18:10,14)। परमेश्वर की मदद से, वे असंभव चीजें करेंगे (भजन 18:29)। अंततः मसीहा इस्राएल के महत्व को पूरा करेगा (यशायाह 49:3,6; गलातियों 4:3-5)।

“कुलपति” अब्राहम, इसहाक और याकूब का संदर्भ है। मूसा से को दिए गए नियमों से बहुत पहले ही वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी यहोवा के शब्दों और कर्मों को पारित करते गए थे, (तुलना करें गलातियों 3:16-17)। वे पृथ्वी पर परमेश्वर की वाचा के लोगों की शुरुआत हैं।

“देह के अनुसार मसीह” का अर्थ है मसीह अपने मानव वंश के अनुसार (तुलना करें लूका 3:23, 27; रोमियों 1:3)। यह आने वाले मसीहा के बारे में कई वादों का संदर्भ है। ये वादे पृथ्वी पर कोई भी अन्य प्राकृतिक राष्ट्र को नहीं दिए गए थे! और ये वादे केवल इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के भीतर ही पूरे हुए थे (यूहन्ना 4:22)। केवल अपने मानव स्वभाव के संबंध में मसीह इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र का वंशज है (गलातियों 4:3-5)। केवल अपने दिव्य स्वभाव के लिए, मसीह इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र का एक वंशज नहीं है। यीशु मसीह सिर्फ “देह” से बहुत अधिक है। वह “आत्मा” है। (रोमियों 8:9-10; 2कुरिन्थियों 3:17)। यीशु मसीह ही वह ईश्वर है जिसने सृष्टि में और मानव इतिहास में मानव स्वभाव को लिया है (तुलना करें फिलिप्पियों 2:5-11) ताकि हम मनुष्य परमेश्वर के बच्चे बन सकें और अधिक से अधिक परमेश्वर की तरह परिवर्तित हो सकें (तुलना करें फिलिप्पियों 3:8-21)।

9:6-13

खोज 2. परमेश्वर की विश्वसनीयता का एक प्रमाण।

“परमेश्वर का वचन” (अर्थात्, परमेश्वर की वाचा का वादा) समाप्त नहीं हुआ है। इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र की अविश्वास और परमेश्वर द्वारा उनके परिणामस्वरूप अस्वीकृति का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर की वाचा विफल हो गई है! परमेश्वर ने अपनी वाचा सबके साथ निभाने का वादा नहीं किया, बल्कि उन लोगों के साथ जिन्हें उन्होंने अनुग्रह के साथ चुना था।

(1) परमेश्वर अपने वचन के अनुसार ईमानदारी से कार्य करता है। (रोमियों 9:6-9)

शब्द “इस्राएल” और “बीज” (वंशज या बच्चे) दोनों का उपयोग सामान्य ज्ञान और अधिक विशिष्ट अर्थों में किया जाता है। अधिक विशिष्ट अर्थ परमेश्वर के वादे से निर्धारित होता है।

परमेश्वर उन सभी लोगों का सम्मान नहीं करता है जो इस्राइल के प्राकृतिक राष्ट्र से संबंधित हैं, जैसा कि वास्तविक इस्राएल से संबंधित है।

इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र में मुख्य रूप से यहूदी, बारह जनजातियाँ शामिल थीं जो याकूब के बारह बेटों में

से निकली थीं। लेकिन कुछ गैर-यहूदी इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र में शामिल हो गए। उदाहरण के लिए, कुछ कनानी (गिबोनाइट्स, यहोशू 9 और मोआबी रूथ)। साथ ही गैर-यहूदी राष्ट्रों के परदेसी जिन्होंने बाइबल के परमेश्वर (परमेश्वर, यशायाह 56:1-8) में विश्वास करना शुरू कर दिया, इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र में शामिल हो गए। “इस्राएल” के प्राकृतिक राष्ट्र में अविश्वासियों को शामिल किया गया है और यह आध्यात्मिक राष्ट्र “इस्राएल” के समान नहीं है, जिसमें केवल बाइबल के परमेश्वर में विश्वासियों का समावेश है, चाहे वे यहूदी विश्वासी हों या गैर-यहूदी विश्वासी हों।

पद 8 में, “देह की संतान” इब्राहीम के स्वाभाविक बच्चे हैं। परमेश्वर प्राकृतिक बच्चों को परमेश्वर की संतान नहीं मानता है। परमेश्वर “वाचा की सन्तानों” को परमेश्वर के बच्चों के रूप में देखता है। परमेश्वर ने इब्राहीम और सारा से एक वादा किया और इसने उनके बेटे इसहाक की चिंता की। परमेश्वर ने अब्राहम और हागर के साथ कोई वादा नहीं किया था और इसलिए वह उनके बेटे इश्माएल की चिंता नहीं करता था। परमेश्वर का वादा केवल उन्हीं व्यक्तियों की चिंता करना है जिनमें उसका वादा भी पूरा होता है (वास्तविकता बन जाता है)।

निष्कर्ष 1. लोग जन्म या प्राकृतिक वंश से परमेश्वर के बच्चे नहीं बनते हैं। वे परमेश्वर के वचन के माध्यम से ही परमेश्वर के बच्चे बनते हैं!

(2) परमेश्वर अपने चुनाव के उद्देश्य के अनुसार ईमानदारी से कार्य करता है (रोमियों 9:10-13) एक ओर, “याकूब” और “एसाव” शब्दों का उपयोग अधिक समावेशी अर्थों में किया जाता है और दूसरी ओर उनका उपयोग अधिक सीमित अर्थों में किया जाता है। अधिक सीमित अर्थ “चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य” शब्दों से निर्धारित होता है (रोमियों 9:11), “परमेश्वर का बुलावा” (रोमियों 9:12) और “परमेश्वर का प्रेम” (रोमियों 9:13)।

निष्कर्ष 2. मानव कार्यों से लोग परमेश्वर के बच्चे नहीं बनते (व्यवस्था के धार्मिक कार्यों से नहीं और लोगों के अच्छे काम भी नहीं)। वे केवल परमेश्वर के चुनाव, परमेश्वर के संप्रभु बुलावे (जो हमेशा प्रभावी होते हैं) और परमेश्वर के प्रेम के माध्यम से परमेश्वर के बच्चे बनते हैं!

9:14-18

खोज 3. परमेश्वर की धार्मिकता (न्याय) का एक प्रमाण।

(1) परमेश्वर संप्रभु है और इस प्रकार वह जिसे चाहता है उसे अनुग्रह प्रदान करने के लिए स्वतंत्र है (रोमियों 9:14-16)।

हम केवल “न्याय” या “निष्पक्षता” की बात कर सकते हैं जब किसी के पास कोई अधिकार हो या केवल तब वह दावा कर सकता हो। पौलुस परमेश्वर के न्याय या निष्पक्षता का बचाव करता है (विशेष रूप से कि परमेश्वर जिसे चाहता है उसे बचाता है) इस तर्क के साथ कि पृथ्वी पर किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि परमेश्वर उसे बचाए। मोक्ष पर किसी के पास अधिकार नहीं है!

उदाहरण के लिए। यदि परमेश्वर पृथ्वी पर सभी लोगों को पूर्ण निर्दोषता में जन्म लेता है, तो वे अपने जीवन की शुरुआत में अच्छे और बुरे के बीच शून्य रेखा पर खड़े होंगे। तब वे खुद यह निर्धारित करने में सक्षम होंगे कि क्या वे अच्छे (मोक्ष) की दिशा में आगे बढ़ते हैं या वे बुराई (निंदा) की दिशा में आगे बढ़ते हैं। तब परमेश्वर पूरी तरह से मनमाना और अन्यायपूर्ण होगा यदि उसने कुछ लोगों को मोक्ष के लिए पृथ्वी पर चुना और दूसरों को नहीं! तब वे दावा कर सकते थे कि परमेश्वर अन्यायी था।

हालाँकि, क्योंकि सभी लोग अच्छे और बुरे के बीच शून्य रेखा से बहुत नीचे खड़े होते हैं, किसी के पास मुक्ति और धिक्कार के बीच चयन करने का अधिकार या विकल्प या क्षमता नहीं है! सभी लोग पहले से ही एक पापी प्रकृति के साथ पैदा हुए हैं (रोमियों 5:12; भजन 51:5; अय्यूब 14:4)। सभी लोगों ने पाप किया है और परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक माँगों से नीचे हो गए हैं (रोमियों 3:23)। परमेश्वर सभी लोगों को “पापी” (परमेश्वर के लक्ष्य को याद करने वाले), “अधर्मी” और “शत्रु” (रोमियों 5:6,8,10) के रूप में देखते हैं। सभी लोग पहले से ही पूरी मानव जाति (रोमियों 5:17-21) के साथ पाप में गिर चुके हैं। सभी लोग पहले ही खो चुके हैं, निंदा की और परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं (रोमियों 1:18 तुलना करें यूहन्ना 3:16,18,36)। इसलिए, यदि परमेश्वर पृथ्वी पर सभी लोगों की निंदा करेंगे और एक व्यक्ति को भी नहीं बचाएंगे, तो भी वह पूरी तरह से (100%) पवित्र और न्यायपूर्ण होगा!

तथ्य यह है कि परमेश्वर अभी भी पृथ्वी पर अनगिनत अधर्मी लोगों की बेशुमार का बचाव करते हैं, क्योंकि खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम उनके न्याय से अधिक है! “परमेश्वर के फैसले पर परमेश्वर की दया की विजय” (याकूब 2:13)!

हम केवल “अनुग्रह” की बात कर सकते हैं और कोई भी अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। अनुग्रह या दया परमेश्वर का मुफ्त उपहार है, जिसका कोई भी मनुष्य हकदार नहीं है! परमेश्वर कहते हैं कि वे उनपे दया और करुणा करेंगे, जिनपर उनकी दया या करुणा होगी। (रोमियों 9:18)। यह तथ्य है कि परमेश्वर दया करते हैं और अनगिनत बहुत सारे लोगों पर अनुग्रह दिखाते हैं जो इसके लायक नहीं हैं (प्रकाशितवाक्य 5:9;7:9) यह उसके प्यार का एक बहुत बड़ा आश्चर्य है!

निष्कर्ष 3. लोग अपनी इच्छा, स्वतंत्र इच्छा या प्रयास से परमेश्वर की संतान नहीं बनते। वे परमेश्वर की कृपा (दया, करुणा) के माध्यम से ही परमेश्वर की संतान बनते हैं!

(2) परमेश्वर संप्रभु है और इस प्रकार वह जिसे चाहे उसे कठोर कर सकता है। (रोमियों 9:17-18)।

मानव अपराध और कठोरता। निर्गमन 3:18 में मूसा को फिरौन से परमेश्वर के पहले पुत्र, इस्राएल जाने के लिए कहना था। फिरौन ने पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से पालन करने से इनकार कर दिया। यह फिरौन की जिम्मेदारी साबित करता है। यही कारण है कि परमेश्वर (दसवीं आपदा में) फिरौन के पहले पुत्र को मार डाला।

निर्गमन 3:19 में परमेश्वर होरेब में कहते हैं, “मुझे पता है कि मिस्र का राजा आपको तब तक जाने नहीं देगा जब तक कि एक शक्तिशाली हाथ (दस विपत्तियों के माध्यम से) उसे मजबूर नहीं करता है। यह परमेश्वर की सर्वज्ञता को सिद्ध करता है। परमेश्वर ये ऐसा होने से पहले कहते हैं ताकि मूसा निराश न हो।

निर्गमन 4:21 में परमेश्वर कहते हैं कि जो चमत्कार मूल रूप से इस्राएल के लिए थे (निर्गमन 4:4-5, 8-9), वे अब फिरौन के लिए भी हैं। “मैं उसका दिल कठोर करूँगा (इब्रानी: Pi. Chizeq, शाब्दिक अर्थ: मजबूत करना, दृढ़ बनाना, दृढ़ करना, हठी बनाना), “ताकि वह लोगों को जाने न दे।” यह परमेश्वर की पूर्ण संप्रभु स्वतंत्रता को साबित करता है। परमेश्वर जो पहले से जानते हैं, वह होने का कारण बनाते हैं - लेकिन परमेश्वर का संप्रभु ज्ञान और संप्रभु कार्य फिरौन की जिम्मेदारी को बाहर नहीं करता है। परमेश्वर पहले से ही संघर्ष के अंत को जानते हैं और सब कुछ अपने अंत तक ले जाते हैं (फिरौन के हठीलेपन के साथ)। यह न केवल पुनर्रक्षण है, बल्कि पूर्वनिर्धारण भी है (तुलना करें यशायाह 14:24,27)। यही कारण है कि परमेश्वर निर्गमन 9:16 में फिरौन के संबंध में कहते हैं “परन्तु सचमुच मैंने इसी कारन तुझे बनाये रखा है की तुझे अपनी सामर्थ्य दिखाऊँ, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँ।”

एक ओर परमेश्वर के सख्त होने का अर्थ है कि परमेश्वर उनकी कृपा को रोक रहे हैं। “लेकिन आज तक यहोवा ने आपको (इस्राएल) ऐसा दिमाग नहीं दिया जो समझता है या आखें जो देखती हों या कान जो सुनते हों (प्रभु द्वारा किये गए मिश्र में किए गए चमत्कारी संकेत और महान अजूबे) (व्यवस्थाविवरण 29:3-4)।

दूसरी ओर परमेश्वर के सख्त होने का अर्थ है कि परमेश्वर मनुष्य के प्रतिरोध (हठीलेपन) को दंडित कर रहा है। “एक आदमी वही काटता है जो वह बोता है” (गलातियों 6:7-8)। हठीलापन जिसके बारे में बाइबल बोलती है वह एक व्यवस्था से जुड़ी या न्यायिक अवधारणा है। जो व्यक्ति अपने दिल को कठोर करता है, वह हमेशा इस सजा का हकदार है! उदाहरण के लिए: क्योंकि अन्यजातियों ने जानबूझकर (परमेश्वर के प्रकाशन के) सत्य को दबाया या बदल दिया (रोमियों 1:18,25), परमेश्वर ने उन्हें यौन अनैतिकता, एक नीच दिमाग और हर तरह की दुष्टता से भरा जीवन दिया है (रोमियों 1:24,26,28)। अन्यजातियों ने लगातार बाइबल के परमेश्वर के खिलाफ अपने दिलों को कठोर किया है और इसलिए परमेश्वर ने आखिरकार उन्हें एक कठोर दिल दिया है! जो कोई भी खुद को लगातार कठोर करता है, अंततः कठोर हो जाता है।

इसलिए हम “मानवीय जिम्मेदारी या अपराध” के अलावा “परमेश्वर के हठीलेपन” से अलग परिभाषित नहीं कर सकते हैं। (निर्गमन 4:21-23)! क्योंकि फिरौन ने परमेश्वर और उसके चेतावनियों के खिलाफ अपने दिल को कठोर बनाने का प्रयास किया, इसलिए उसका दिल कठोर बना रहा। इस तरह परमेश्वर ने फिरौन का इस्तेमाल करके पूरी पृथ्वी पर अपना नाम फैलाया।

परमेश्वर की इच्छा और हठीलापन। एक व्यवस्था से जुड़ी (न्यायिक) दृष्टिकोण से सभी लोग कठोर होने के लायक हैं, क्योंकि उन्होंने सभी पाप किए हैं। तथ्य यह है कि परमेश्वर अभी भी अनगिनत लोगों पर दया करते हैं और उन्हें कठोर नहीं करते हैं (अर्थात्, उनसे उनकी कृपा नहीं रोकते हैं) जो परमेश्वर की संप्रभु स्वतंत्रता को दर्शाता है।

इस प्रकार: कुछ लोग दो कारणों से परमेश्वर की संतान नहीं बनते हैं:

- परमेश्वर की व्यवस्था (न्यायिक) के आधार पर, सभी लोगों ने पाप किया है और हठीले होने के योग्य हैं। यदि परमेश्वर लोगों को बिना दंड दिए न्यायोचित ठहराएगा, तो वह अब धर्मी (न्यायपूर्ण) नहीं होगा। और यहां तक कि अगर परमेश्वर एक भी व्यक्ति को सही नहीं ठहराएगा, तो भी वह पूरी तरह से धर्मी (सिर्फ) रहेगा! व्यवस्था के आधार पर परमेश्वर को पाप को दंडित करना चाहिए।
- परमेश्वर के संप्रभु स्तर पर, उसे कुछ लोगों को न्यायोचित ठहराने और अन्य लोगों को न्यायोचित ना ठहराने का अधिकार है। परमेश्वर को अपनी कृपा (दया) प्रदान करने या वापस लेने की स्वतंत्रता और संप्रभुता है!

निष्कर्ष 4. लोग अपने आप परमेश्वर के बच्चे नहीं बनते हैं वे परमेश्वर की संप्रभुता और सभी दृढ़ इच्छाशक्ति के माध्यम से परमेश्वर के बच्चे बनते हैं!

9:19-26

खोज 4. परमेश्वर की संप्रभुता का प्रमाण।

परमेश्वर की संप्रभुता और दृढ़ इच्छाशक्ति लोगों को उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी और दोष से छुटकारा नहीं दिलाती है।

(1) परमेश्वर की संप्रभुता एक परम वस्तु है (एक मूल कारण) (रोमियों 9:19)।

आधारभूत चीजें मनुष्य से बहुत परे की सीमा वाली चीजें हैं, ऐसी चीजें जो अपरिवर्तनीय हैं और जिन चीजों

पर आदमी का कोई प्रभाव नहीं हो सकता है। मनुष्य को इन आधारभूत चीजों के लिए खुद को प्रस्तुत करना चाहिए। उदाहरण के लिए:

परमेश्वर की संप्रभुता निर्माण में यह निर्धारित करता है कि लोग कौन हैं, जब वे इतिहास में रहते हैं और वे पृथ्वी पर कहाँ रहते हैं (प्रेरितों 17:24-27)।

स्वर्ग और पृथ्वी पर परमेश्वर का शासन यीशु मसीह के माध्यम से सभी चीजों को एक प्रमुख के तहत लाता है और उनकी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार सब कुछ काम करता है (इफिसियों 1:10-11; कुरिन्थियों 15:25)।

दुनिया का परमेश्वर का संप्रभु निर्णय, न्यायपूर्ण न्याय के साथ लोगों के सभी अधर्मों का न्याय करेगा (रोमियों 3:6; लूका 12:47-48)।

परमेश्वर की संप्रभुता या उद्देश्य उसके संप्रभु चुनाव के अनुसार निर्धारित करता है कि वह किस पर दया करता है और किससे वह अपनी दया को छीनता है? (रोमियों 8:28-30; 9:6-26)।

लोगों के लिए परमेश्वर के संप्रभु विचार, घटनाओं और परिस्थितियों के लिए (योजनाओं, उद्देश्यों, शैतानों) (इब्रानी: machshebah) चीजों को करने के अपने तरीके (इब्रानी: derek) निर्धारित करते हैं (‘यशायाह 55:9)।

हर बार जब हम आधारभूत चीजों का सामना करते हैं तो हमें खुद को उनके सामने प्रस्तुत करना चाहिए। फिर हम परमेश्वर की इच्छा, उद्देश्य या योजना से संतुष्ट होंगे। तब हम उसके तरीकों पर शक नहीं करेंगे या उसके फैसलों पर सवाल नहीं उठाएंगे। परमेश्वर की संप्रभुता और सभी दृढ़ इच्छाशक्ति एक अंतिम चीज है। हम कौन हैं कि हमें उसके रास्ते पर शक करना चाहिए या उसके फैसलों पर सवाल उठाना चाहिए? हमें परमेश्वर के प्रभुत्व की महिमा से पहले चुप रहना चाहिए और गहरा सम्मान दिखाना चाहिए! बेशक, हम परमेश्वर से हमें उसकी योजना (इच्छा) के बारे में जानकारी देने के लिए कह सकते हैं। हम उनकी योजना के बारे में भी उत्साह के साथ बात कर सकते हैं (रोमियों 11:33-36)

(2) परमेश्वर का सम्प्रभुता वास्तविक दुनिया के गिरे हुए मनुष्य के साथ समझौता करेगी (रोमियों 9: 20-23)।

बाइबल परमेश्वर के सम्प्रभु शासन के बारे में बोलती है, आदर्श (पूर्ण) लोगों पर नहीं, बल्कि पापियों पर! मनुष्य परमेश्वर के हाथ में मिट्टी है, जो पहले से ही गिर चुका है, पहले से ही वंचित है और पूरी तरह से खो गया है। कुम्हार को मिट्टी के उस ढेर से कुछ भी बनाने का अधिकार है।

जबकि हम कह सकते हैं कि “परमेश्वर के क्रोध की वस्तुएं” उनके स्वयं के विनाश का कारण हैं (वे इसके लायक हैं) (रोमियों 9:22), हम यह नहीं कह सकते कि “परमेश्वर की दया की वस्तुएं” उनके स्वयं के उद्धार का कारण हैं (यही है, कि वे इसके लायक थे या इसे अर्जित किया था)! परमेश्वर स्वयं ही एकमात्र है जिसने एक संप्रभु तरीके से अपने भविष्य के गौरव की योजना पहले से बनाई है (दुनिया के निर्माण से पहले भी) और भविष्य में उस महिमा को प्रकट किया है (रोमियों 9:23)।

“परमेश्वर के क्रोध की वस्तुओं” के वर्तमान और भावी जीवन के बीच निरंतरता है। इस वर्तमान जीवन में वे क्या हैं और जिस पद के लिए उनकी सहमति है, उसके बीच एक सटीक संपर्क है। उनकी मानवीय जिम्मेदारी या उनके व्यक्तिगत अपराध से कोई मुक्ति नहीं है। उनके अपराध की मजदूरी (तुलना करें रोमियों 6:23) विनाश है।

“परमेश्वर की दया की वस्तुओं” के वर्तमान और भविष्य के जीवन के बीच भी निरंतरता है। अनुग्रह की

प्रक्रिया के बीच एक संपर्क भी है जो इस वर्तमान जीवन में संचालित होता है और महिमा जो अंततः जीवन में आने के लिए प्राप्त की जाती है (रोमियों 8: 29 - 30)!

निष्कर्ष। पृथ्वी पर सभी लोग ऐसे पात्र हैं जो या तो परमेश्वर के फैसले को प्रदर्शित करते हैं (रोमियों 9: 17,22) या परमेश्वर की दया को (रोमियों 9: 23)!

(3) परमेश्वर की संप्रभुता गैर-यहूदियों के उनके आह्वान को निर्धारित करती है। (रोमियों 9: 24-26)

परमेश्वर यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों से लोगों को बुलाते हैं। परमेश्वर अपनी वाचा के वादे के प्रति वफादार रहे हैं। यह पहली बार यहूदियों के बीच उनकी दया की वस्तुओं (अर्थात्, चुनाव) में प्रकट होता है (रोमियों 9:24 की तुलना 9:6 से करें)। यह दूसरी बार उनकी दया की वस्तुओं (अर्थात्, चुनाव) गैर-यहूदी (अन्यजातियों) के बीच प्रकट होता है। (रोमियों 9:24ब; तुलना करें 8:33; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 1:9)। परमेश्वर की वाचा और अनुग्रह हर जनजाति और भाषा और लोगों और राष्ट्र तक पहुँचता है (प्रकाशितवाक्य 5:9; 1पतरस 2:9-10)! परमेश्वर की वाचा का वचन यीशु मसीह में अपनी पूर्णता पाता है, जिसमें पृथ्वी पर सभी परिवार धन्य हैं (उत्पत्ति 12:12-3)!

- “मैं निश्चित रूप से तुमको आशीष दूंगा और तुम्हारे वंशजों को (इब्रानी: zera, बीज, यहाँ: सभी देशों के विश्वासियों) आकाश में सितारों और समुद्र के किनारे रेत की तरह अनगिनत कर दूंगा (उत्पत्ति 22:17)।
- आपके वंशज (इब्रानी: zera, यहाँ: इस्राएल के लोग जो कनान की भूमि पर कब्जा कर लेंगे) अपने शत्रुओं के शहरों पर अधिकार कर लेंगे। (उत्पत्ति 22:17; तुलना करें उत्पत्ति 5:18-21)।
- और अपने वंश के माध्यम से (इब्रानी: zera ग्रीक: स्पर्मा, यहाँ: यीशु मसीह) पूरा देश (इब्रानी: गोई, अन्यजातियों) धन्य हो जाएगा (उत्पत्ति 22:18 देखें उत्पत्ति 12:3; गलातियों 3:16)!

पुराने नियम की अवधि के दौरान गैर-यहूदियों के लिए परमेश्वर का बुलावा। पुराने नियम में भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा, “कोई भी पराया व्यक्ति जो अपने आप को यहोवा के लिए बाध्य करे, और कहे, ‘यहोवा मुझे अपने लोगों से अवश्य बाहर करेगा’ ... ‘मेरा घर सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। प्रभु यहोवा घोषित करता है - वह जो इस्राएल के निर्वासितों को इकट्ठा करता है: ‘मैं अभी भी उनके अलावा उन जो पहले से ही इकट्ठे हुए हैं लोगों को इकट्ठा करूँगा (तुलना करें यशायाह 56:3-8)(740 -680 ई.पू)।

परमेश्वर अपने लोगों से दूसरों को इकट्ठा करने का वादा करता है।

(होशे 2:23 और 1:10 (754-714 ई.पू) यहूदियों का उल्लेख करते हैं, जो “मेरे लोग नहीं थे” (इब्रानी: लो अम्मी) और “जिन्हें प्यार नहीं करता था” (इब्रानी: लो-रुहमाह) ईश्वरहीन और दुष्ट राजाओं की अवधि के दौरान इस्राएल के उत्तरी राज्य ।

फिर भी, परमेश्वर ने भविष्य में यहूदियों पर फिर से दया दिखाने का वादा किया। यह बाबुल (538 ई.पू) (तुलना करें 43:5-7) से देश निकाले से यहूदियों की वापसी पर और बाद में यहूदियों पर पिन्तेकुस्त में यरुशलेम पर पवित्र आत्मा के उतरने और बाद में (प्रेरितों 2:5-11) (30 ई.पू) सभी राष्ट्रों को सुसमाचार की घोषणा के दौरान पूरा हुआ। (तुलना करें रोमियों 11:4-5) (वसंत 57 ई.पू)।

नए नियम की अवधि के दौरान अन्यजातियों के लिए परमेश्वर का बुलावा। रोमनों को लिखे पत्र में, प्रेरित पौलुस इस सिद्धांत को गैर-यहूदी लोगों (अन्यजातियों) पर लागू करता है। इस्राएल की प्रारंभिक अस्वीकृति और

बाद में (चुनाव में) की बहाली इस्राएल ने इस्राएल के विशेषाधिकारों से गैर-यहूदी राष्ट्रों के प्रारंभिक बहिष्कार और उनके बाद के चुनाव को गैर-यहूदियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में पूरी तरह से यहूदियों के बीच विश्वासियों के साथ समान होने पर शामिल किए जाने के समानांतर बहिष्कार किया है। (तुलना करें इफिसियों 2:1-22; 3:1-6)!

यहूदियों और गैर-यहूदियों में से सभी लोग, जो यीशु मसीह को मानते हैं, साथ मिलकर सच्चे या आत्मिक इस्राएल का निर्माण करते हैं (रोमियों 9:6 तुलना करें गलातियों 6:14-16; 2कुरिन्थियों 6:16; 1पतरस 2:9-10)। यहाँ जोर परमेश्वर की संप्रभुता की बुलाहट पर है लोगों को अपनी कृपा में साझा करने के लिए। यह शुद्ध अनुग्रह है कि लोग, जो पहले परमेश्वर के लोग नहीं थे, परमेश्वर के लोग बन सकते हैं (रोमियों 9:25-26; तुलना करें 1पतरस 2:9-10)!

9:27-33

खोज 5. “अवशेष” कौन है कि व्याख्या।

(1) पुराने नियम की भविष्यवाणियां स्पष्ट रूप से इस्राएल के “अवशेष” की बात करती हैं (रोमियों 9:27-29) “बचे हुए” (यशायाह 1:9)।

पहले से ही पुराने नियम की अवधि के दौरान, इस्राएलियों की संख्या “अनगिनत” थी (1राजाओं 3:8) “पृथ्वी की धूल के कणों के सामान” (उत्पत्ति 13:16; 2इतिहास 1:9) “आकाश में तारे” के सामान “(उत्पत्ति 15:5; व्यवस्थाविवरण 10:22), और “समुद्र के किनारे रेत के सामान” (उत्पत्ति 22:17; 1राजाओं 4:20)।

फिर भी, हालांकि इस्राएल अनगिनत था, केवल इस्राएल के अवशेष ही इस्राएल के शक्तिशाली परमेश्वर के पास वापिस आएंगे (जो बचाए जाएंगे) (तुलना करें यशायाह 12:22-23; तुलना करें 1राजाओं 19:18; यिर्मयाह 50:20; योएल 2:32; मीका 2:12)। इस्राएल के प्राकृतिक लोगों और इस्राएल के लोगों के आत्मिक “अवशेष” के बीच का अंतर यह सुनिश्चित करता है कि परमेश्वर हमेशा इस्राएल से अपनी वाचा के वादे के प्रति वफादार रहे। हालाँकि, बहुत से यहूदी मसीहा, यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं, और इस तरह परमेश्वर की वाचा से दूर हो जाते हैं, हमेशा ऐसे यहूदी होंगे जो यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करेंगे और इसलिए बचाये जाएंगे। वे “अवशेष” या “बाकी” हैं। (यूहन्ना 1:11-13)। वे “छोटे झुंड हैं जिन्हें परमेश्वर पिता ने राज्य देने की कृपा की है” (लूका 12:32)।

उसी तरह से परमेश्वर ने दुनिया में गैर-यहूदी राष्ट्रों में से कई लोगों को चुना है (रोमियों 8:29-30,33)!

चुनाव में उनका उद्देश्य जो मानव कार्यों से नहीं खड़ा होता है, लेकिन परमेश्वर द्वारा जो बुलाता है (रोमियों 9:11), “दुनिया की नींव से पहले” (इफिसियों 1:4) “समय की शुरुआत से पहले” (2तीमुथियस 1:9) ही मौजूद था। हर पीढ़ी में (सुसमाचार की उद्घोषणा के माध्यम से) “अनुग्रह द्वारा चुना गया एक अवशेष होगा” (रोमियों 11:5)।

इस अवशेष के महत्व को कभी कम करके नहीं आंका जाना चाहिए, क्योंकि इस अवशेष के बिना इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र सदोम और अमोरा की तरह खत्म हो जाते ? (यशायाह 1:9)(रोमियों 9:27-29)।

(2) पुराने नियम की भविष्यवाणियां स्पष्ट रूप से “ठेकर” के खिलाफ चेतावनी देती हैं (रोमियों 9:30-33)।

धार्मिकता प्राप्त करना बनाम धार्मिकता का पीछा करना। वह धार्मिकता जो अशुद्ध (आच्छादित) है, वह परमेश्वर

की धार्मिकता है, जिसे यीशु मसीह ने अर्जित किया है, और वह केवल परमेश्वर की कृपा और विश्वास के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है (इफिसियों 2:8-9)। इस धार्मिकता का अर्थ है की परमेश्वर ने यीशु मसीह के जीवन की धार्मिकता को स्वीकार किया है एक व्यक्ति जो यीशु मसीह में विश्वास करता है। केवल इस तरह से परमेश्वर अपनी आँखों में एक विश्वासी को पूरी तरह से (100%) धर्मी घोषित करता है और उसी समय से उसे पूर्ण (100%) धर्मी मानता है।

हालाँकि, *धार्मिकता का पीछा करना* धार्मिक लोगों¹ की धार्मिकता है, जो अपनी धार्मिक उपासना और कार्यों द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में न्यायोचित होने का प्रयास करते हैं। यही बात यहूदियों और कई अन्य धर्मों में आज भी है। उन्हें उम्मीद है कि परमेश्वर उन्हें उनकी धार्मिक खूबियों और उपलब्धियों के आधार पर धर्मी घोषित करेंगे।

पुराने नियम में वादा और चेतावनी। पहले से ही पुराने नियम के प्रकाशन में परमेश्वर ने ऐसे लोगों को चेतावनी दी है जिन्होंने अपनी धार्मिकता को आगे बढ़ाने की कोशिश की और यीशु मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता को अस्वीकार कर दिया। उनके लिए आने वाला मसीहा “एक ऐसा पत्थर होगा जो उन्हें ठोकर मारता है और एक चट्टान जो उन्हें गिरा देती है” (यशायाह 8:13)। लेकिन जो लोग उस पर (और उसकी धार्मिकता) पर भरोसा करते हैं, वे कभी लज्जित नहीं होंगे, (यशायाह 28:16; तुलना करें लूका 2:34; मत्ती 21:44; पतरस 2:6-8)।

परमेश्वर की इच्छा और मनुष्य की इच्छा के बीच का संबंध। एक ओर, परमेश्वर की संप्रभुता और दृढ़ इच्छाशक्ति कभी भी मनुष्य के विश्वास करने, उसकी आज्ञा मानने और पवित्र जीवन जीने की जिम्मेदारी को नहीं छोड़ती है! परमेश्वर की प्रभुसत्ता इच्छा मनुष्य के कार्यों को प्रतिस्थापित या अवहेलना नहीं करती है। दूसरी ओर, मनुष्य की तथाकथित स्वतंत्र इच्छा कभी भी परमेश्वर की प्रभु इच्छा को निर्धारित नहीं करती है (तुलना करें रोमियों 8:5-8)!

निष्कर्ष. परमेश्वर की प्रभुसत्ता में मनुष्य की जिम्मेदारी (विश्वास करना, पालन करना और पवित्र रहना) शामिल है और इस बात का वादा करती है कि पृथ्वी पर परमेश्वर का संप्रभु इच्छा निश्चित रूप से पूरी होगी। (मत्ती 6:10; इफिसियों 1:4-14; 2तीमुथियस 1:9)!

“भय और कंपकंपी के साथ अपने उद्धार का काम जारी रखें, क्योंकि यह परमेश्वर है जो आप में काम करता है और अपने अच्छे उद्देश्य के अनुसार कार्य करता है” (फिलिप्पियों 2:12-14)!

कदम 3. प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं ?

आईये रोमियों 9:1-33 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होंगे दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

¹ यहूदी, कुछ मसीही और मुस्लिम, यहाँ तक कि दुनिया के अन्य सभी धर्म!

प्रश्न 1. क्या बाइबल इस्राएल को राष्ट्रीय या धार्मिक दृष्टि से सम्मान देती है ?

ध्यान दें। आज यहूदी और मसीही हैं, जो “इस्राएल” को विशेष रूप से जातीय, नस्लीय और राष्ट्रवादी शब्दों में मानते हैं। उनका मानना है कि इस्राएल का राष्ट्र “परमेश्वर के राष्ट्रीय लोग” हैं। वे यह भी मानते हैं कि परमेश्वर की दुनिया के अन्य सभी देशों की तुलना में इस्राएल के भौतिक और राष्ट्रीय लोगों के लिए उद्धार की एक अलग योजना है। हालाँकि, पुराने और नए दोनों नियमों के एक करीबी अध्ययन से पता चलेगा कि बाइबल के सभी लेखकों ने न केवल “इस्राएल” शब्द का उपयोग इस्राएल के प्राकृतिक भौतिक राष्ट्र का उल्लेख करने के लिए किया था, बल्कि विशेष रूप से “आत्मिक लोगों” का उल्लेख करने के लिए भी किया था। परमेश्वर”। वे अपने लोगों को मुख्य रूप से एक राष्ट्रवादी इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक धार्मिक इकाई के रूप में मानते थे!

(1) पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं का दृष्टिकोण।

भविष्यद्वक्ताओं के लिए “इस्राएल” उन लोगों का समुदाय (कलीसिया) था जिनके पास परमेश्वर के रूप में प्रभु हैं। उन्होंने सच्चे इस्राएल को इस के रूप में सम्मान दिया वो “सात हजार घुटने जो बाल के आगे नहीं झुके” या (1राजाओं 19:18) “बचे हुए या अवशेष जिन्हें यहोवा ने इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के लिए छोड़ दिया है” (यशायाह 1:9; 10:20-22; होशे 1:10; योएल 2:32; मीका 2:12)। जब इस्राएल देश का अधिकांश हिस्सा नष्ट हो जाएगा, केवल अवशेषों को बचाया जाएगा। परमेश्वर अपने वादों को पूरा करेगा। इस अवशेष में इस्राएल। इसलिए, पुराने नियम में “इस्राएल” शब्द नए नियम में “कलीसिया” शब्द के समान ही लचीला है।

(2) यीशु मसीह का दृष्टिकोण।

इस्राएल में अपने दिन के बीच में यीशु मसीह स्पष्ट रूप से यहूदियों के बीच प्रतिष्ठित थे जिसे परमेश्वर के राज्य नहीं मिलेगा और यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों के साथ जो परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी होंगे (मत्ती 8:11-12; 21:42-44)! उन्होंने अस्थायी शिष्यों (जो उसे अपनी शर्तों पर अनुसरण करते थे) और सच्चे शिष्यों (जो उसकी शर्तों पर उसका अनुसरण करते हैं) में के बीच भेद किया (यूहन्ना 6:60-66 और 8:30-47)! और उसने नतनएल के बारे में कहा कि “एक सच्चा इस्राएली है जिसमें कुछ भी कपट नहीं है” (यूहन्ना 1:47)!

(3) नए नियम के प्रेरितों के दृष्टिकोण।

पौलुस इस्राएल के भौतिक राष्ट्र और इस्राएल के आध्यात्मिक राष्ट्र के बीच समान अंतर करता है। वह उन यहूदियों को अलग करता है जिनका उनके बाहरी देह में उन लोगों द्वारा खतना किया गया है, जो उनके आंतरिक दिलों में पवित्र आत्मा द्वारा खतना किए गए हैं, (रोमियों 2:28-29)!

इसी तरह, रोमियों 9:4-9 में उन्होंने इस्राएल के जातीय राष्ट्र के रूप के अधिक समावेशी अर्थ में पहले “इस्राएल” शब्द का इस्तेमाल किया और फिर अधिक प्रतिबंधात्मक अर्थ में इस्राएल के राष्ट्र के भीतर चुने हुए अवशेष के रूप में (रोमियों 9:य 6ब)! अब्राहम के सभी प्राकृतिक वंशजों को अब्राहम की संतान नहीं माना जाता है, क्योंकि परमेश्वर का वचन केवल इसहाक को दिया गया था और इश्माएल को नहीं। लेकिन इसहाक के सभी प्राकृतिक वंशजों को वादे के संतान के रूप में नहीं माना जाता है, क्योंकि परमेश्वर का वादा याकूब से किया गया था और एसाव के लिए नहीं। इसी तरह याकूब (इस्राएल के बारह गोत्र) के सभी प्राकृतिक वंशज परमेश्वर के बच्चे नहीं हैं।

यहाँ तक कि पौलुस अन्यजातियों के राष्ट्रों (गलातियों प्रांत के कलीसिया में) को “वादे की संतान” और “इस्राएल का परमेश्वर” के रूप में मानते हैं (गलातियों 4:28-29; 6:16), क्योंकि वे यीशु मसीह में विश्वास करते थे!

प्रेरित पतरस, मत्ती और यूहन्ना का एक ही नजरिया था (तुलना करें 1पतरस 2:9-10; मत्ती 8:11-12; 21:42-44; यूहन्ना 10:16)!

(4) पुराने नियम और नए नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए भावों की तुलना।

परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों (इस्राएल) को समाप्त नहीं किया गया है या उन्हें (कलीसिया द्वारा) प्रतिस्थापित नहीं किया गया है, लेकिन एक उच्च स्तर पर जारी रखा गया है जिसमें “छाया” एक “वास्तविकता” बन गए हैं (कुलुस्सियों 2:16-17; इब्रानियों 9:7-10) और जो सभी अन्यजातियों के राष्ट्रों में से मसीह के विश्वासियों में शामिल करने के लिए बढ़े हुए (विस्तारित) हैं।

इसलिए परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों, इस्राएल।

और परमेश्वर के नए नियम के लोग, कलीसिया,

बाइबल में समान नामों से पुकारे जाते हैं!

साथ में वे परमेश्वर के लोगों को समान रूप से संकलित करते हैं।

.(1कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 2:11-22; इफिसियों 3:2-6)।

- परमेश्वर का जेठा पुत्र (निर्गमन 4:22; यिर्मयाह 31:9; इब्रानियों 12:23)
- परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ (यशायाह 43:6-7; 2कुरिन्थियों 6:18)
- यरुशलेम शहर (परमेश्वर के लोगों के लिए एक प्रतीक) को कहा जाता है: एक महिला, या दुल्हन, या पत्नी (यशायाह 54:1,11-12; प्रकाशितवाक्य 21:9-10)
- बारह जनजातियों (उत्पत्ति 49:28; याकूब 1:1; प्रकाशितवाक्य 7:4; प्रकाशितवाक्य 21:12)
- पुरोहितों का एक साम्राज्य (निर्गमन 19:6; 1पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6)
- पवित्र लोग (निर्गमन 19:6; 1पतरस 2:9)
- परमेश्वर के चुने हुए लोग (व्यवस्थाविवरण 7:6; 1पतरस 2:9)
- परमेश्वर का बहुमूल्य कब्जा (निर्गमन 19:5; व्यवस्थाविवरण 7:6), “ऐसे लोग जो हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के अपने अपने हैं” (तीतुस 2:14)। “परमेश्वर के हैं” (1पतरस 2:9)
- परमेश्वर की वाचा के लोग (लैव्यव्यवस्था 26:12; 2कुरिन्थियों 6:16)
- बिखरे हुए लोग, अजनबियों (व्यवस्थाविवरण 30:1; भजन. 105:10-12; यहजकेल 12:15; एस्तेर 3:8; 1पतरस 1:1)
- उनकी फसल का पहला फल (यिर्मयाह 2:3; याकूब 1:18)
- भेड़ (एक झुंड) इस्राएल की भेड़ बाड़े से बाहर और अन्य देशों के भेड़ के बाड़े (यहजकेल अध्याय 34; यूहन्ना 10:16)
- इस्राएल (1शमूएल 7:23; गलातियों 6:14-16)
- यहूदी (जर्कयाह 8:22-23; रोमियों 2:28-29)
- सिंय्योन (परमेश्वर के लोगों के लिए भी एक प्रतीक) (यशायाह 51:16; यशायाह 52:7; इब्रानियों 12:22-24)
- वर्तमान यरुशलेम (जो नीचे है) और यरुशलेम जो ऊपर है (गलातियों 4:25-26), स्वर्गीय यरुशलेम (इब्रानियों 12:22) नया यरुशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:2), पवित्र यरुशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:10)
- परमेश्वर का भवन (परमेश्वर के लोगों के लिए भी एक प्रतीक) (2कुरिन्थियों 6:16)

- यहूदी और गैर-यहूदी विश्वासियों जो एक साथ (परमेश्वर के लोगों के) वारिस हैं, एक शरीर के सदस्य एक साथ हैं, और प्रतिज्ञा में और मसीह में साझा करते हैं (इफिसियों 3:6; 2कुरिन्थियों 1:20)।
- मसीही (अभिषिक्त लोग) (इब्रानी: मेशिचीय ग्रीक: क्रिस्टोई) (मसीही) (भजन. 105:15) (प्रेरितों 11:26) दुनिया में गैर-ईसाइयों के बीच रहते हैं!

यीशु मसीह को मानने वाले यहूदी और गैर-यहूदी एक जीव का निर्माण करते हैं जो निम्नलिखित के प्रतीक हैं:

- एक झुंड (यूहन्ना 10:16)
- परमेश्वर के बच्चों के साथ एक परिवार (गलातियों 3:26-29)
- एक नया मनुष्य, परमेश्वर का एक घर, आत्मा में परमेश्वर का एक निवास (इफिसियों 2:11-22)
- एक शरीर (1कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 3:6)
- एक जैतून का पेड़ (यिर्मयाह 11:16-17; रोमियों 11:17-24)
- चुने हुए लोग, एक पवित्र राष्ट्र, परमेश्वर के लोग (1पतरस 2:9-10)।
- एक नया यरुशलम (प्रकाशितवाक्य 21:9-14, तुलना करें इब्रानियों 12:22-24 यहूदियों के लिए और गैर-यहूदियों के लिए गलातियों 4:21-31)।

(1) कलीसिया सुसमाचार और परमेश्वर की आत्मा के माध्यम से अस्तित्व में आता है।

परमेश्वर ने पुराने नियम की अवधि के दौरान सुसमाचार की उद्घोषणा के माध्यम से अपनी कलीसिया को खुद को बुलाया (रोमियों 10:18-21; गलातियों 3:8 इब्रानियों 4:1-3) और नए नियम की अवधि के दौरान (प्रेरितों 20:24 तुलना करें 13:44-49)!

यहूदियों और अन्यजातियों के विश्वासियों को एक आत्मा के साथ एक शरीर में बपतिस्मा दिया जाता है (परमेश्वर के लोगों का प्रतीक भी)। सभी को पीने के लिए एक आत्मा दी गई थी (तुलना करें यहजेकेल 36: 25-27; 1कुरिन्थियों 12:13)

विश्वासी एक कलीसिया (कलीसिया सभा) में एकत्र होते हैं (इब्रानी: qahal; ग्रीक incl. LXX: ekklésia) (भजन 107:32; मत्ती 16:18; प्रेरितों 8:2; प्रेरितों 9:1) बड़ों के नेतृत्व की एक परिषद में (इब्रानी: moshab zekenim; ग्रीक: presbuterion) (भजन 107:32; 1तीमुथियुस 4:14)!

नए नियम में “कलीसिया” को “परमेश्वर का इस्राएल” (आध्यात्मिक इस्राएल) कहा गया है (गलातियों 6: 14-16; तुलना करें रोमियों 9:6) अर्थात् “देह के अनुसार इस्राएल” (प्राकृतिक इस्राएल); (1कुरिन्थियों 10:18 यूनानी पाठ में) (तुलना करें 4:24-25)! परमेश्वर के इस्राएल में वे विश्वासी शामिल हैं, जो प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर घमंड करते हैं, जिसके लिए दुनिया मसीहियों के लिए और मसीही दुनिया के लिए क्रूस पर चढ़ चुके हैं (गलातियों 6:14 तुलना करें रोमियों 2:28-29 और 1कुरिन्थियों 1:22-26)! इस तरह से देखें तो “इस्राएल” निश्चित रूप से पुराने नियम और नए नियम दोनों में यहूदियों और गैर-यहूदियों से आने वाले यीशु मसीह में विश्वासियों तक ही सीमित है।

जबकि प्राकृतिक इस्राएल परमेश्वर और उसके मसीहा के प्रति बेईमान हो गया था (यूहन्ना 1:11), आत्मिक इस्राएल ने कभी भी परमेश्वर और उसके मसीह को अस्वीकार नहीं किया है (रोमियों 9:6)! आत्मिक इस्राएल हमेशा परमेश्वर की वाचा के लोगों के लिए रहता है। परमेश्वर ने कभी भी आत्मिक इस्राएल को अस्वीकार नहीं किया है, अर्थात्, इस्राएल में विश्वासियों को (रोमियों 11:1-6)! आत्मिक इस्राएल या कलीसिया हमेशा परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए रहता है (पढ़ें रोमियों 8:29-30,33; रोमियों 9:6-18; रोमियों 11:1-5,28-29; इफिसियों 1:4; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 1:9-10) तुलना करें यूहन्ना

6:44,37; यूहन्ना 17:3,12)!

आत्मिक इस्राएल में (दुनिया भर में कलीसिया में, दुनिया में मसीहियों के बीच) “यहूदी और अन्यजातियों में कोई अंतर नहीं है। क्योंकि एक और एक ही परमेश्वर सभी के परमेश्वर हैं और सभी को बड़े पैमाने पर आशीष देते हैं जो उसे पुकारते हैं “(रोमियों 10:12-13; 1 कुरिन्थियों 1:24 गलातियों 3:28-29; कुलुस्सियों 3:11)” हमारे (यहूदियों) और उनके (अन्यजातियों) के बीच के अंतर को उन्होंने अपने दिलों को विश्वास से शुद्ध किया (प्रेरितों 15:9)!

9:4-5

प्रश्न 2. बाइबल इस्राएल के चुनाव को कैसे मानती है?

ध्यान दें।

(1) इस्राएल का चुनाव

इस्राएल के संपूर्ण प्राकृतिक राष्ट्र का चुनाव था।

पुराने नियम पूरे इस्राएल के चुनाव के रूप में “इस्राएल के चुनाव” की बात करता है। यह एक सामूहिक, समावेशी और लोकतांत्रिक अर्थों में इस्राएल के लोगों के लिए परमेश्वर के रिश्ते को देखता है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 14:2 कहता है, क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र समाज है, और यहोवा ने तुझ को पृथ्वी भर के समस्त देशों में से अपनी निज संपत्ति होने के लिए चुन लिया है। (व्यवस्थाविवरण 4:37; 7:7-8; 10:15; आमोस 3:2)।

(2) इस्राएल राष्ट्र का चुनाव

कुछ विशेषाधिकारों के लिए चुनाव था।

रोमियों 9:4-5 सिखाता है कि परमेश्वर ने प्राकृतिक राष्ट्र इस्राएल को कुछ विशेषाधिकार दिए हैं। परमेश्वर ने उन्हें अपने बच्चों के रूप में इतिहास में सबसे पहले अपनाया था और उन्हें अब्राहम और मूसा के व्यवस्था के साथ वाचा दी थी।

हालांकि, उनके “बेटों के रूप में गोद लेने” का मतलब यह नहीं है कि वे सभी बच गए हैं। गलातियों 3:23 से 4:7 इस्राएल के बीच के अंतर को “कम उम्र के बच्चों” के रूप में समझाते हैं (ग्रीक: नेपिओस) (गलातियों 4:1) जो व्यवस्था के सुरक्षात्मक संरक्षक के तहत खड़ा था। (गलातियों 3:13-16) और मसीह जो “परमेश्वर के द्वारा (परिपक्व) पुत्रों के रूप में अपनाया गया है। मसीही सभी यीशु मसीह विश्वास में विश्वास के माध्यम से “परमेश्वर के पुत्र” हैं (ग्रीक: हुइओई तू); (गलातियों 3:26)। पुराने नियम की अवधि के दौरान, इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र को कम उम्र के बच्चों के रूप में माना जाता था जो मूसा के व्यवस्था की संरक्षकता के तहत खड़े होते हैं। जैसा कि “एक शिक्षक या एक शिक्षाविद (ग्रीक: पयागोगोस) का काम व्यवस्था को यहूदियों को मसीह के पास ले जाना था, ताकि वे यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से उचित ठहराया जा सके (और व्यवस्था को बनाए रखने के माध्यम से नहीं) (गलातियों 3:24)!

इसके विपरीत, नए नियम की अवधि में यहूदी और गैर-यहूदी मसीहियों को परिपक्व बेटे के रूप में देखा जाता है जो “पवित्र पुत्र जो पवित्र आत्मा के नेतृत्व में थे” (रोमियों 8:14; इफिसियों 1:5)! इस्राएल के लोग तैयारी के चरण में थे, लेकिन नए नियम की कलीसिया यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच विश्वासियों से मिलकर पूर्ति का चरण है।

गलातियों को पत्र का संदेश यह है कि लोग (निश्चित रूप से गैर-यहूदी, लेकिन यहूदी भी) यीशु मसीह में

विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के पुत्र बन जाते हैं।

- किसी भी भेदभाव के बिना (गलातियों 3:28)!
- और व्यवस्था की संरक्षकता से मिलकर तैयारी के चरण से गुजरने के बिना।

इसके अलावा, (इफिसियों 2:11-22, 3:4-6 और 2कुरिन्थियों 1:20) स्पष्ट रूप से सिखाता है कि इस्राएल के प्राकृतिक लोगों के विशेष विशेषाधिकार केवल यीशु मसीह के पहले आने तक जारी रहे। यीशु के प्रथम आगमन से गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) के विश्वासियों के सभी परमेश्वर के विशेष विशेषाधिकार और पुराने नियम और नए नियम में वादे समान चरणों में हैं। (1पतरस 2:9-10; 2कुरिन्थियों 1:20)!

(3) राष्ट्र इस्राएल का चुनाव मुक्ति का चुनाव नहीं था।

रोमियों 9:6-9 में पौलुस सिखाता है कि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र से संबंधित सभी यहूदी परमेश्वर के बच्चे नहीं हैं, अर्थात्, उन्हें बचाया जा रहा है। रोमियों 9:6 में पौलुस कहते हैं, “सभी जो इस्राएल के वंशज हैं वे इस्राएल नहीं हैं।” वह यह कहने का इरादा रखता है कि सभी जो इस्राएल के भौतिक राष्ट्र से नहीं आते हैं, वे इस्राएल के आध्यात्मिक राष्ट्र से संबंधित हैं! परमेश्वर ने कुछ विशेषाधिकारों का आनंद लेने के लिए इस्राएल के पूरे प्राकृतिक राष्ट्र को चुना है, लेकिन उन्होंने केवल इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र का एक हिस्सा मोक्ष के लिए चुना है।

परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के दौरान, “चुनाव में परमेश्वर का उद्देश्य” सिद्धांतों का निर्धारण था: (रोमियों 9:11)।

- परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा बाँधी, लेकिन वाचा का वादा सभी अब्राहम के प्राकृतिक वंशजों में प्रभावी नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, उन्होंने इसहाक को चुना न कि इश्माएल को।
- परमेश्वर ने इसहाक से अपनी वाचा का वादा दोहराया, लेकिन यह वादा इसहाक के सभी प्राकृतिक वंशजों में प्रभावी नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, उन्होंने व्यक्तिगत याकूब को चुना, न कि व्यक्तिगत एसाव को।
- परमेश्वर ने फिर याकूब से अपनी वाचा का वादा दोहराया, लेकिन वाचा का वादा सभी याकूब के प्राकृतिक वंशजों में प्रभावी नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, यशायाह 10:20-22 और रोमियों 9: 27 का कहना है कि हालाँकि याकूब के वंशजों की संख्या समुद्र की तरह रेत की तरह है, लेकिन उनमें से केवल एक अवशेष ही बचा होगा।

9:10-13

प्रश्न 3. क्या पौलुस परमेश्वर के उद्देश्य को “सामूहिक राष्ट्रों के लिए एक विशिष्ट लक्ष्य के संदर्भ में” समझता है या व्यक्तियों के लिए मुक्ति के संदर्भ में?

ध्यान दें। पौलुस स्पष्ट रूप से मुक्ति के लिए व्यक्तियों के परमेश्वर के चुनाव को संदर्भित करता है और समग्र रूप से राष्ट्र के चुनाव को नहीं।

(1) चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य परमेश्वर का निश्चय उसके निर्वाचन में उद्धार के लिए व्यक्त किया जाएगा।

नए नियम में, शब्द “चुनाव” (ग्रीक: एकलोगे) अपने सभी रूपों में “चुनाव से मुक्ति तक” का उल्लेख करता है। उदाहरण के लिए, 2थिस्सलुनीकियों 2:13 कहता है, “शुरु से ही परमेश्वर ने आपको आत्मा के पवित्र

कार्य के माध्यम से और सत्य में विश्वास करने के माध्यम से बचाया जाना चुना।” जब भी शब्द “उद्देश्य” (ग्रीक: उत्पत्ति, उद्देश्य, इच्छा, निर्णय, योजना) परमेश्वर का उपयोग किया जाता है, यह समान रूप से परमेश्वर की दृढ़ इच्छा को दर्शाता है (रोमियों 8:28; इफिसियों 1:11; 3:11; 1तीमुथियुस 1:2)! इस प्रकार पूरी अभिव्यक्ति “चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य” का अर्थ, परमेश्वर के उद्धार के लिए चुनाव में व्यक्ति की गई दृढ़ इच्छाशक्ति से कम कुछ भी नहीं है!

(2) चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य अकेले याकूब के लिए

परमेश्वर के प्रेम को प्रभावित करता है।

रोमियों 9:12-13 में परमेश्वर कहते हैं, “बड़े कम (स्थिति में) (या: उम्र में बड़े) (ग्रीक: मेजों) (या कम उम्र में) सेवा करेंगे (ग्रीक: elassos)” और “याकूब मैं प्यार करता था, लेकिन एसाव मैं नफरत करता था।” ये उत्पत्ति 25:23 और मलाकी 1:2-5 से उद्धरण हैं पुराने नियम में ये उद्धरण स्पष्ट रूप से इस्राएल (याकूब के वंशज) और एदोम (एसाव के वंशज) के राष्ट्रों को संदर्भित करते हैं।

हालाँकि, रोमियों 9 में वे राष्ट्रों को संदर्भित नहीं कर सकते, लेकिन *व्यक्तियों* को संदर्भित करना चाहिए। यदि उन्होंने “राष्ट्रों” का उल्लेख किया, तो वे इस्राएल के राष्ट्र में इतने सारे लोगों के अविश्वास और धर्मत्याग की व्याख्या नहीं कर सके! तब वे दो शब्दों के बीच अंतर को स्पष्ट नहीं कर सकते थे रोमियों 9 में “इस्राएल” और फिर यह धारणा कि इस्राएल के पूरे प्राकृतिक राष्ट्र को मुक्ति के लिए चुना गया है (रोमियों 9:27 और 29 विरोधाभास जो कहते हैं कि केवल इस्राएल का एक अवशेष बच जाएगा!

क्योंकि परमेश्वर की व्यक्तियों के लिए उनकी मुक्ति की योजना पुराने नियम की अवधि के दौरान पूरी नहीं हुई थी, इसलिए उनके पुराने नियम के संदर्भ में ये पुराने नियम के उद्धरण परमेश्वर के मानदण्ड को प्रकट नहीं करते हैं, जिन्हें नए नियम के संदर्भ में परमेश्वर के बच्चों के रूप में माना जाना चाहिए। नए नियम के प्रकाशन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इस्राएल के देश के सारे लोगों को उद्धार के लिए नहीं चुना गया है। इसी तरह, नए नियम के प्रकाशन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी जो एदोम देश से ताल्लुक रखते हैं, वे खो जाने के लिए अस्वीकृत किये हुए थे (प्रकाशितवाक्य 5:9)

अंत में, क्रियाओं का तनाव “प्यार करने के लिए” और “घृणा करने के लिए” (सामान्य, सक्रिय) इंगित करता है व्यक्तिगत याकूब और एसाव की ओर *एक बार की जाने वाली कार्रवाई* और इस्राएल और राष्ट्र के राष्ट्रों की ओर इतिहास में निरंतर या दोहराया कार्रवाई नहीं।

यह तथ्य कि इस्राएल के राष्ट्र के भीतर कई यहूदियों को यीशु मसीह पर विश्वास नहीं था, इसका मतलब यह नहीं है कि इस्राएल के लिए परमेश्वर की वाचा विफल हो गई थी। पूरे इतिहास में परमेश्वर ने कभी भी इस्राएल के राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपनी वाचा नहीं दी। उसकी वाचा का वादा उन यहूदियों में साकार होता है जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह के द्वारा चुना है, उदाहरण के लिए, इसहाक और याकूब।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं ?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 9:1-33 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें ?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग

को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 9:1-33 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 9:1. हमेशा सच बोलें और पवित्र आत्मा के नियंत्रण में अपनी अंतरात्मा की आवाज की पुष्टि करें।
- 9:2. अपने राष्ट्र के लोगों और अन्य देशों के लोगों के उद्धार के बारे में चिंतित होना (मती 28:19)।
- 9:8. मोक्ष के लिए कभी भी अपने वंश पर निर्भर न रहें। आप केवल परमेश्वर की कृपा और मसीह में परमेश्वर ने आपके लिए जो किया है उस पर आपका विश्वास रखें।
- 9:11,13. मोक्ष के लिए कभी भी अपने कामों पर निर्भर न रहें। आप केवल परमेश्वर के चुनाव, बुलावे और प्यार के माध्यम से परमेश्वर के बच्चे बन सकते हैं।
- 9:14,15. कभी भी परमेश्वर पर अन्याय करने का आरोप मत लगाइए, क्योंकि उसके पास यह अधिकार है कि वह जो भी पहले से हारे हुए लोगों को चाहता है उसे बचाए। वह बेशुमार बड़ी संख्या में लोगों को बचाता है, लेकिन वे सभी अनुग्रह से बचते हैं और इसलिए नहीं कि वे इसके लायक हैं।
- 9:16. कभी भी अपनी इच्छा (मुक्ति के लिए) या मुक्ति के लिए प्रयास पर निर्भर न रहें। आप परमेश्वर की दया से ही परमेश्वर के बच्चे बन जाते हैं।
- 9:17. यह महसूस करें कि परमेश्वर अपनी अनन्त योजना को पूरा करने के लिए इतिहास में हर एक व्यक्ति का उपयोग करता है। (नीतिवचन 16:4; यशायाह 45:7)!
- 9:33. चेतावनी याद रखें: आप या तो यीशु मसीह पर ठोकर खाते हैं या वह आपकी नींव की चट्टान बन जाता है। (लूका 2:34)

2. रोमियों 9:1-33 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मुझे इस बात पर खुशी है कि परमेश्वर ने मुझे व्यक्तिगत रूप से मसीह में खींच लिया है (रोमियों 6:44-45) और वह यीशु मसीह मुझे कभी अस्वीकार नहीं करेगा। यीशु मसीह के लिए, एक गहरा आश्वासन है कि परमेश्वर ने मुझे चुना है, मुझे बुलाया है और मुझे प्यार करता है।

“परमेश्वर की दया की वस्तु या पोत” यही कारण है कि मैं इस अहसास को जारी रखना चाहता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे उसकी महिमा के लिए बनाया है? (यशायाह 43:7; मती 5:16; 6:13)

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 9:1-33 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5

प्रार्थना (8 मिनट)

(प्रतिक्रियाएँ)

दूसरों के लिए प्रार्थना

दो या तीन के समूहों में **प्रार्थना करना जारी रखें**। एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 8:1-17 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन यशायाह 9,10,11 और 40 के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना।** (15) रोमियों 10:17। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** लूका 12:13-21 में “मूर्ख धनवान” का दृष्टांत और लूका 16:19-31 में निहित “धनवान व्यक्ति व गरीब लाज़र का दृष्टान्त” के दृष्टांत की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझने के लिए इस्तेमाल की जाने वाले 6 निर्देशों का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट) (शान्त समय) यशायाह 9,10,11 और 40
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 9,10,11 और 40) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट) (रोमियों में प्रमुख पद) (15) रोमियों 10:17
---	---

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(15) रोमियों 10:17। अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।

4	शिक्षा देना (85 मिनट) (यीशु के दृष्टान्त) मूर्ख धनवान और धनवान व्यक्ति व गरीब लाज़र
---	--

लूका 12:13-21 में “मूर्ख धनवान का दृष्टान्त”

और लूका 16:19-31 में “धनवान व्यक्ति व गरीब लाज़र का दृष्टान्त”

परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में बताते हैं

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्ग की जिन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

क. मूर्ख धनवान का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 12:13-21

1. दृष्टान्त की स्वभाविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

वर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं ?

ध्यान दें।

एक धनवान व्यक्ति। एक धनी व्यक्ति ने भरपूर फसल का उत्पादन किया। बाइबल धनी या समृद्ध व्यक्ति होने के लिए किसी की भी निन्दा नहीं करती। अय्यूब, अब्राहम, सुलैमान और अरमितिया का यूसुफ, ये सभी धनी व्यक्ति थे। यह दृष्टान्त हमें यह नहीं बताता कि वह व्यक्ति बेईमानी (जुआ या लॉटरी) से धनी बना। इस दृष्टान्त की धारणा यह है कि परमेश्वर ने उसके हाथों के कार्य को आशिषित किया।

सांसारिक व्यक्ति। इस व्यक्ति का धनी होना, इसकी समस्या नहीं थी, परन्तु उसकी समस्या थी कि वह सांसारिक वस्तुओं पर मन लगाए हुए था। उसे इस बात का एहसास नहीं था कि उसका शरीर नाशवान है और वह हमेशा जीवित नहीं रहने वाला। उसे इस तथ्य का भी ध्यान नहीं था कि उसकी सम्पत्ति उसकी आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकती! उसके पास बहुत सी सांसारिक सम्पत्ति थी, परन्तु उसकी आत्मा के पास कुछ भी नहीं था!

स्वार्थी। यह धनी व्यक्ति केवल स्वयं के बारे में ही सोचता था, उसे अन्य लोगों की कोई फिक्र नहीं थी। उसने जो योजनाएँ बनाई जिसमें केवल “मैं” और “मेरी सम्पत्ति” का ही स्थान था। उसने संसारभर के उन अनेक लोगों के बारे में नहीं सोचा जो भूखे थे और न ही उसने अपने धन में से उन्हें कुछ बाँटना चाहा।

अविश्वासी। इस धनी व्यक्ति ने अपने धन और समृद्धि के लिए परमेश्वर के नाम को धन्यवाद और महिमा नहीं दी। राजा दाऊद अपने भजन में इस प्रकार कहता है, “हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना” (भजन 103:2)! परन्तु इस धनी व्यक्ति ने स्वयं (अपने प्राण) से कहा, “...कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह” (लूका 12:18-19)! वह अपनी सभी लाभ की वस्तुओं को परमेश्वर के अनुग्रह से मिलनी वाली वस्तुओं के रूप में नहीं मानता था। याकूब 1:17 कहता है, “क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।”

आकस्मिक मृत्यु। और उसी क्षण परमेश्वर ने कहा, “हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?” परमेश्वर ने इस व्यक्ति से कैसे बात की, इसका उल्लेख नहीं किया गया है, हो सकता है कि या तो उसके मन (अपनी आत्मा या साफ सुनाई देने वाली आवाज) में प्रत्यक्ष रूप से या किसी भविष्यद्वक्ता के द्वारा बात की हो। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर ने उसे “हे मूर्ख” कहा, क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि उसे परमेश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है।

उसने सोचा कि केवल वह स्वयं ही अपनी आत्मा और अपने भाग्य का मालिक है। परमेश्वर उसके प्राण को उसके शरीर से दूर ले जा रहे थे (यानी वह मरने जा रहा था), उसके सुखी जीवन के कई वर्षों के बाद नहीं, परन्तु उसी रात को! वह एक ऐसा मूर्ख व्यक्ति था जिसे लगता था कि वह अपने भाग्य और अपनी मृत्यु के समय को नियंत्रित कर सकता है। उसने कभी भी यशायाह भविष्यद्वक्ता के इन वचनों पर विचार नहीं किया, “बोलने वाले का वचन सुनाई दिया, “प्रचार कर!” मैंने कहा, “मैं क्या प्रचार करूँ?” सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है। जब यहोवा की साँस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुड़ा जाता है; निःसन्देह प्रजा घास हैं। घास तो सूख जाती है, और फूल मुड़ा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी के” संदर्भ में दृष्टान्त की “परिस्थिति” और “व्याख्या या अनुप्रयोग” हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के माहौल या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के पहले पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के बाद में पाया जाता है।

स्रोतों व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 12:4-7, 13-15 में पायी जाती है।

शारीरिक मृत्यु की चिन्ता करना। यीशु ने भीड़ को मृत्यु के विषय में चेतावनी दी थी कि उन्हें किससे डरना चाहिए। उसने उनसे यह कहा, “परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, कि जो शरीर को मार सकते हैं और उससे ज्यादा और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, मारने के बाद जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो; वरन् मैं तुमसे कहता हूँ उसी से डरो” (लूका 12:4-5)! यीशु ने शारीरिक मृत्यु के प्रश्न के विषय में अपने चेलों को प्रोत्साहित किया। उसने उनसे कहा कि ज़्यादा से ज़्यादा उनके शत्रु उनके शरीर को घात कर सकते हैं। परन्तु वे उनकी आत्मा को नहीं मार सकते। इस पृथ्वी पर मसीहियों के विरुद्ध बुराई करने की उनकी शक्ति केवल उनकी शारीरिक देह तक ही सीमित है। इससे अधिक सामर्थ्य उनके पास नहीं! परन्तु यीशु ने भीड़ में उपस्थित लोगों को अनन्त मृत्यु के विषय में चेतावनी दी! अस्थाई मृत्यु को लाने वाली शक्ति की तुलना नरक में डाले दण्ड के रूप में मिलने वाली अनन्त मृत्यु से नहीं की जानी चाहिए।

धन की चिन्ता करना। भीड़ में उपस्थित किसी व्यक्ति ने यीशु से कहा, कि वह पिता से मिलने वाली सम्पत्ति के विवाद के विषय में हस्तक्षेप करें। पुराने नियम की पुस्तक व्यवस्थाविवरण 21:15-17, गिनती 27:8-11 और गिनती 36 में इस्राएल में पिता की सम्पत्ति को बाँटने के विषय के नियमों को लिखा गया है। यह सम्भव होगा कि मौजूदा मामले में बड़ा भाई अपने छोटे भाई को पिता की सम्पत्ति में से एक तिहाई भाग देने को तैयार नहीं था। वैसे भी, ऐसा लग रहा था जैसे कि इस व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ हो, और क्योंकि इस प्रकार के स्वभाविक मामलों का निपटारा यहूदी शिक्षकों द्वारा कभी-कभी किया गया था, यीशु से भी इस मामले में मध्यस्थता करने को कहा गया।

परन्तु यीशु ने इस मामले में पड़ने से इनकार कर दिया, शायद इसलिए कि वह उन अधिकारियों की अनदेखी नहीं करना चाहता था जो इस मामले से निपटने वाले थे या जिनका काम इस प्रकार के मामलों को निपटाना था और इससे भी बढ़कर बात यह थी कि यीशु के लिए खोए हुएों को ढूँढ़ने और उन्हें बचाने के कार्य को करना अधिक महत्वपूर्ण था। यीशु को पता था कि भौतिक मामलों के साथ इस व्यक्ति की जड़ लालच थी। इसलिए उसने सुनने वाली पूरी भीड़ को मूर्ख धनवान व्यक्ति का दृष्टांत सुनाया।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 12:16-20 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग लूका 12:20-21 में दिया गया है, आंशिक रूप से कहानी में और आंशिक रूप से यीशु की अन्तिम चेतावनी में।

यीशु ने कहा कि केवल मूर्ख ही ऐसा सोच सकता है कि वह अपने भाग्य और अपनी मृत्यु के समय को

नियंत्रित कर सकता है। जीवन एक ऐसी वस्तु है, जिसे व्यक्ति न तो प्राप्त कर सकता है और न ही नियंत्रित! यीशु ने चेतावनी दी कि जो केवल शारीरिक धन की चिन्ता करता है और आत्मिक धन की उपेक्षा करता है वह मूर्ख है और दृष्टान्त में मूर्ख की तरह ही मर जाएगा। धनी मूर्ख की गलती यह थी कि वह सोचता था कि वह अपनी सांसारिक संपत्ति के आधार पर अपने जीवन का निर्माण कर सकता है!

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र-बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

यीशु “धनवान व्यक्ति” को केवल एक विशेष अर्थ देता है। वह हर उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने लिए धन और शारीरिक संपत्ति रखता है, लेकिन वह परमेश्वर की दृष्टि में धनवान नहीं है।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं।

दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र-बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 12:13-21 में धनवान मूर्ख का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में सांसारिक संपत्ति” के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “लोगों को अपने लिए जीवन व्यतीत नहीं करना चाहिए, लेकिन अपने जीवन की हर परिस्थिति में परमेश्वर के साथ रहना चाहिए। उन्हें विशेष रूप से सांसारिक संपत्ति और अनन्त जीवन के मामले में परमेश्वर पर अपनी निर्भरता के बारे में अच्छी तरह से सचेत रहना चाहिए।”

दैनिक जीवन के लिए परमेश्वर पर निर्भरता, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग अपनी सांसारिक संपत्ति के आधार पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर पूरी तरह निर्भरता के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करते हैं।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

(1) बाइबल सांसारिक सम्पदा को कैसे देखती है ?

- बाइबल में कहीं भी परमेश्वर सांसारिक धन की निन्दा नहीं करते।
- अब्राहम पशुओं और कीमती धातुओं के मामले में बहुत धनी था (उत्पत्ति 13:2)।
- बहुत परमेश्वर ने राजा सुलेमान को न केवल बुद्धि दी, बल्कि धन और सम्मान भी दिया (1 राजाओं 3:10-13)।
- अय्यूब के पास इतनी सम्पत्ति थी कि उसे पूर्व के लोगों में सबसे बड़े व्यक्ति के रूप में जाना जाता था। (अय्यूब 1:3; 42:12)।
- अरिमतियाह का यूसूफ जो यीशु का चेला था और वह भी एक धनी व्यक्ति था (मत्ती 27:57)।
- परमेश्वर उन लोगों को जो इस वर्तमान संसार में धनी हैं, यह आज्ञा देते हैं कि वे अभिमानी न हों और अपनी आशा को अनिश्चित धन पर न रखें, परन्तु अपनी आशा को केवल उसी परमेश्वर पर रखें, जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है। परमेश्वर उन लोगों को आज्ञा देते हैं कि वे भलाई करने व भले कामों को करने में धनी हों, तथा उदार और सहायता करने के लिए तत्पर रहें। ऐसा करने से वे नये स्वर्ग और नई पृथ्वी के आने वाले युग में स्वयं के लिए धन इकट्ठा कर पाएँगे (1 तीमुथियुस 6:17-19; तुलना करें मत्ती 6:19-21)!

(2) धन होने के क्या-क्या खतरे हैं ?

- धन के कारण व्यक्ति अहंकारी बन सकता है और प्रभु को भूल सकता है (व्यवस्थाविवरण 8:11-14)।
- धन होने के कारण व्यक्ति अपना भरोसा वस्तुओं पर रख सकता है और परमेश्वर के प्रति अविश्वासी बन सकता है। (अय्यूब 31:24-28)।
- धन के कारण व्यक्ति अपने पास की वस्तुएँ जो कुछ उसकी हैं उससे असन्तुष्ट हो सकता है, और अपना पूरा जीवन के सांसारिक भौतिक सम्पत्ति की वृद्धि के लिए व्यर्थ कर सकता है। (सभोपदेशक 5:10-11)।
- धन किसी भी व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से रोक सकता है (मरकुस 10:21-26)।
- धन के कारण व्यक्ति, अभिमानी, धमकानेवाला, दमनकारी या स्वार्थी, कंजूस और अन्यायी हो सकता है (भजन संहिता 73:2-12; याकूब 5:1-6)।

(3) बाइबल के प्रत्येक गद्यांश, दृष्टान्त की तुलना में क्या सिखाते हैं ?

- भजन 37:4-6। जो कोई यहोवा पर भरोसा रखता है और उसको अपने सुख का मूल जानता है, तब यहोवा उसको मनोरथों को पूरा करेगा और उसकी धार्मिकता को अन्य लोगों पर प्रगट करेगा।
- नीतिवचन 16:2-3। जो कोई अपने कार्यों को यहोवा पर डाल देता है, उसकी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी।
- मत्ती 6:33। जो कोई पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करता है, उन्हें परमेश्वर जीवन की अन्य सभी आवश्यक वस्तुएँ देगा।
- 1 कुरिन्थियों 10:31। जो भी करें, सबकुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें।
- कुलुस्सियों 3:24-25। जो भी आप करें, उसे तन-मन और अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर के लिए करें, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करें। तब आपको सांसारिक विरासत नहीं, बल्कि प्रभु से विरासत मिलेगी। इस विरासत में अन्य वस्तुओं के साथ-साथ, नये स्वर्ग नई पृथ्वी भी शामिल हैं!

(4) मत्ती 6:19-24 पदों की तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाते हैं ?

जो कोई भी परमेश्वर की सेवा करता है, वह अपने लिए स्वर्ग में खजाने को इकट्ठा करता है। परमेश्वर के राज्य के लोगों (मसीहियों) को निरन्तर अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

पृथ्वी के धन को कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं। “कीड़ा और काई” उन साधनों और प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं जो

सांसारिक ख़जाने के मूल्य को कम करती हैं और अन्ततः अपने उद्देश्य की सेवा करने के लिए पूरी रीति से बन्द हो जाती हैं। और इस प्रकार उनकी रोटी में फफूँदी लग जाती है (यहोशू 9:5), उनके सब कपड़े पुराने होते जाते हैं (भजन 102:26), उनके खेतों में खरपतवार लग जाती है (नीतिवचन 24:30), उनकी दीवारें और बाढ़ें टूट जाती हैं (नीतिवचन 24:31), छत की कड़ियाँ दब जाती हैं जिससे उनके घरों में पानी का रिसाव होना आरम्भ हो जाता है (सभोपदेशक 10:18) और उनके सोने-चाँदी की वस्तुएँ धूमिल और नाश हो जाती हैं (1पतरस 1:7,18)। इसी प्रकार दीमक, आँधी-तूफान, भूकम्प, बाढ़ पौधों की बीमारियाँ, मिट्टी का कटाव, मानवीय गलतियाँ और दुर्घटनाएँ आदि सांसारिक ख़जाने को तबाह करते हैं। चोर घरों की मिट्टी की दीवारों को तोड़कर चोरी करते हैं। मंदी, दमनकारियों, करदाताओं द्वारा जबर्दस्ती राशि को जब्त किया जाना, बैंक के डूबने, शेयर बाजार में मंदी, दुर्घटनाएँ, और लम्बे समय तक बनी रहने वाली बीमारियों का प्रभाव भी इसी प्रकार की मुसीबतों के जैसा हो सकता है। यहाँ तक कि मनुष्य की शारीरिक देह, जिसमें बलशाली लोगों की देह भी शामिल हैं (भजन 32:3; 39:4-7; 90:10; 103:14-16)। जब किसी मनुष्य की मृत्यु होती है, उसकी सारी सांसारिक सम्पत्ति जिस पर उसने अपनी आशाओं की योजना बनाई थी, उसके साथ समाप्त हो जाती है।

स्वर्ग के ख़जाने को नष्ट नहीं किया जा सकता और न ही निकाला जा सकता है। इनमें स्वर्ग की निम्नलिखित बातें शामिल हैं (तुलना करें इफिसियों 1:3) :

- एक करुणा जो सर्वदा बनी रहती है (भजन 138:8);
- एक ऐसा जीवन जो कभी समाप्त नहीं होगा (यूहन्ना 3:16);
- वह जल का सोता जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा (यूहन्ना 4:14);
- एक ऐसा वरदान जो कभी खोएगा नहीं (यूहन्ना 6:37-39);
- एक मज़बूत और सुरक्षित हाथ, जिसमें से कोई भी मसीह की भेड़ को कभी नहीं छीन सकता है (यूहन्ना 10:28);
- परमेश्वर के ईश्वरीय कार्यों की एक श्रृंखला जो कभी नहीं टूटेगी (रोमियों 8:28-30);
- ऐसा प्रेम जिससे परमेश्वर के चुने हुए लोग कभी अलग नहीं होंगे (रोमियों 8:37-39);
- एक बुलाहट जिसे कभी भी वापस नहीं लिया जाएगा (रोमियों 11:29);
- एक ऐसी नींव जो कभी नष्ट नहीं होगी (2तीमुथियुस 2:19);
- ऐसा राज्य जिसे हिलाया नहीं जा सकता (इब्रानियों 12:28; दानिय्येल 2:44);
- और एक विरासत जो कभी नहीं मिटेगी (1पतरस 1:4-5)।

“शरीर का दीया आँख है”। जिस तरह शारीरिक आँख किसी व्यक्ति को उसके सांसारिक वातावरण के सम्पर्क में लाती है, उसी तरह उसकी आत्मिक आँख या विवेक उसे स्वर्गीय पिता के सम्पर्क में रखता है और आत्मिक और नैतिक मामलों में उसका मार्गदर्शन करता है। हालाँकि, सांसारिक ख़जाने के लिए मज़बूत लालसा एक व्यक्ति को आत्मिक और नैतिक मुद्दों के प्रति अंधा बना सकती है। परमेश्वर की महिमा को बढ़ावा देने के लिए, अर्थात्, उसका लक्ष्य क्या होना चाहिए था, यह व्यक्ति इन सब बातों को भूल जाता है!

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा का सारांश बताएँ।

वर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है? यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या समझाने या विश्वास दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या बनने या क्या करने की शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर से स्वतंत्रता।

लोग आज अपने बुढ़ापे के लिए बचत करते हैं और पेंशन योजनाओं में निवेश करते हैं। वे अपने और अपने पास पाए जाये जाने वाली लगभग प्रत्येक वस्तु का जीवन बीमा करवाते हैं। लेकिन मनुष्य के अनुसार जीवन का आश्वासन कभी नहीं मिल सकता है! बीमारी और मृत्यु, मुद्रास्फीति या अर्थव्यवस्था के पतन, या युद्धों और अकाल के कारण सुरक्षित आय, या स्वास्थ्य आदि बातों का आश्वासन नहीं मिल सकता। पृथ्वी पर जीवन एक क्षण में समाप्त हो सकता है! सांसारिक सम्पत्ति का आनन्द बीमारी या दुर्घटना से खराब हो सकता है। यह सोचना बिल्कुल मूर्खतापूर्ण है कि किसी ने पृथ्वी पर अपने भविष्य के लिए सब कुछ किया है, जबकि उसने मृत्यु के बाद अपने अनन्त भविष्य की तैयारी के लिए पूरी तरह से उपेक्षा की है! हर कोई जो अपने जीवन या कार्य से परमेश्वर को बाहर या अलग करता है, वह मूर्ख है (भजन संहिता 14:1-3)।

(2) लालच।

लालच परमेश्वर से दूर ले जाता है। नैतिकतापूर्ण पाप करने वाले इस धनवान व्यक्ति के बारे में कुछ भी ऐसा लिखा नहीं है, जैसे बेईमानी, धोखा, चोरी, भ्रष्टाचार, आदि। हम यह मान सकते हैं कि वह अपने धन को हासिल करने में ईमानदार था। लेकिन उसके गिरने का कारण यह था कि उसका *गलत आत्मिक व्यवहार* था : उसने *परमेश्वर के बिना अपने जीवन की योजना* बनाई! उसने अपनी आशीष के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता नहीं दिखाई बल्कि केवल अपनी मेहनत की प्रशंसा की (1 कुरिन्थियों 4:7)। वह सन्तुष्ट नहीं था, क्योंकि वह हमेशा और अधिक धन चाहता था (फिलिप्पियों 4:11-12)। वह अपने धन को किसी के साथ साझा नहीं करता था लेकिन अपने आनन्द के लिए उसका इस्तेमाल करता था (1 कुरिन्थियों 15:32)। उसने परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखा और अपने जीवन को परमेश्वर के सामने समर्पित नहीं किया क्योंकि वह अपनी सम्पत्ति के बारे में चिन्तित था (मत्ती 6:31-34)। और उसने जीवन की क्षणभंगुरता को कभी विचार नहीं दिया। अगर जीवन ही चला गया है, तो चिन्ता करने के लिए क्या बचा है (मत्ती 16:26)? वह अस्थायी और समाप्त होने वाले धन के पीछे भागा और अनन्त और अविनाशी की तलाश करने के लिए उपेक्षित हो गया (2 कुरिन्थियों 5:7)। संक्षेप में, उसने उदासीनता का जीवन व्यतीत किया! उसकी मानवीय इच्छाएँ, बहुत समझ से, ज़रूरी नहीं कि आपत्तिजनक हों, लेकिन वे उसकी मूल्य-प्रणाली से भी ऊपर थे। धनवान मूर्ख के लिए, सत्य, न्याय और दया की तुलना में लाभ कमाना एक उच्च मूल्य बन गया।

(3) धन का दास।

धन के पास अपने मालिक होने की तुलना में अधिक मजबूत होने का एक तरीका है, यह अन्ततः उसके पास आता है, ताकि उसको अपना दास बना सके। धन की वजह से अन्त में वह व्यक्ति अपनी नैतिक और आत्मिक स्वतंत्रता खो देता है और वह सांसारिक सम्पत्ति का दास बन जाता है।

ख. धनवान व्यक्ति और गरीब लाजर का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 16:19-31

1. दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

मृत्यु से पहले धनवान व्यक्ति और भिखारी का जीवन वर्तमान में पाए जाने वाले जीवन के लिए वास्तविकता है। मृत्यु के बाद का उनका जीवन मसीह के बाद के जीवन का आलंकारिक वर्णन है।

मृत्यु से पहले धनवान व्यक्ति और भिखारी। यह व्यक्ति बहुत धनवान था क्योंकि वह बैंगनी और बढ़िया मलमल के कपड़े पहन सकता था। बैंगनी रंग को सीपदार मछली (शेलफिश) से प्राप्त किया गया था और यह

एक बहुत महंगी प्रक्रिया थी। अक्सर केवल शाही लोग ही ऐसे बैंगनी वस्त्र पहनते थे। उसने इतने महंगे कपड़े पहने और हर दिन ऐशो-आराम की ऐसी ज़िन्दगी व्यतीत की क्योंकि वह चाहता था कि हर कोई यह जान सके कि वह धनवान है! यह व्यक्ति एक दिखावा था। लेकिन यह धनवान व्यक्ति केवल दिखावा नहीं था; वह निर्दयी, असंवेदनशील और स्वार्थी भी था।

इस धनवान व्यक्ति के द्वार पर एक भिखारी था। उसे हर दिन वहाँ रखा गया था क्योंकि वह स्पष्ट रूप से नहीं चल सकता था। उसका नाम “लाजर” इब्रानी नाम “एलेजार” से लिया गया था और इसका अर्थ है “परमेश्वर ने सहायता की है।” यीशु ने शायद उसे यह नाम इस दृष्टान्त में दिया था, क्योंकि वह संकेत करना चाहता था कि इस भिखारी ने, अपने सभी संकटों में, केवल परमेश्वर पर अपना भरोसा रखा था। यह व्यक्ति अपनी ज़रूरतों के प्रति पूरी तरह से असमर्थ था। वह न केवल भूखा था, वह घावों से भी ढँका हुआ था, जिसे गली के कुत्तों आकर चाटा करते थे। यह बहुत पीड़ादायक था और इससे जलन हो सकती थी।

धनवान व्यक्ति ने हर दिन भिखारी को देखा होगा क्योंकि वह उसके द्वार पर पड़ा था! उसे उस भिखारी पर दया दिखाने और कुछ सहायता करने का एक शानदार अवसर मिला। फिर भी, उसने भिखारी को खाने के लिए बचा हुआ भोजन भी नहीं दिया। वह केवल अपने लिए ही जीता था!

मृत्यु के बाद भिखारी और धनवान व्यक्ति। भिखारी मर गया। उसके दफनाने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। यदि उसे दफनाया गया था, तो यह इतना अस्पष्ट और निराशाजनक रहा होगा कि यह सब चुपचाप ही कर दिया गया होगा। हालाँकि, उसकी आत्मा के साथ जो हुआ वह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था! स्वर्गदूतों ने तुरन्त उसकी आत्मा को अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया (इब्रानियों 1:14)। “अब्राहम की गोद” एक इब्रानी अभिव्यक्ति है, जो उनके व्यवहार से लेकर रात्रिभोज और त्योहारों में सोफे पर पुनः बैठाने के लिए है, और किसी की गोद (दाएँ हाथ की ओर) पर बैठना विशेष एहसान का संकेत देता है (लूका 14:7; यूहन्ना 1:18)। भिखारी की आत्मा को स्वर्ग में लाया गया था, जहाँ वह महान सम्मान के स्थान पर स्वर्ग की दावत की मेज़ पर आया!

धनवान व्यक्ति भी मर गया और उसे गाढ़ा गया। संभवतः उसे पृथ्वी पर एक शानदार अन्तिम संस्कार दिया गया था। उसके शव की बहुत देखभाल की गई, लेकिन उसकी आत्मा के बारे में कुछ नहीं कहा गया है! पृथ्वी पर उसके परिवार और दोस्तों को नहीं पता था कि मृत्यु के बाद उसके साथ क्या हुआ! धनवान व्यक्ति ने “अधोलोक” में अपनी आँखें खोलीं, यूनानी शब्द “हेइस” इस सन्दर्भ के आधार पर तीन सम्भावित स्थानों को दर्शाता है :

- बिना देह की मृत्यु के बाद की अवस्था
- मृत व्यक्ति के शरीर के स्थान के रूप में कब्र
- अनन्त दण्ड के स्थान के रूप में नरक

इस सन्दर्भ में, धनवान व्यक्ति ने अपनी आँखें अधोलोक में खोलीं, क्योंकि वह आग में पीड़ा से तड़प रहा था।

मनुष्य की अपरिवर्तनीय नियति। हालाँकि धनवान व्यक्ति ने अब्राहम और लाजर को दूर से देखा, और यद्यपि धनवान व्यक्ति और अब्राहम के बीच बातचीत सम्मानजनक थी (उन्होंने एक दूसरे को “पिता” और “पुत्र” के रूप में सम्बोधित किया), इससे उसकी पीड़ा को कोई राहत नहीं मिली। धनी व्यक्ति ने दिखाया कि उसका चरित्र नहीं बदला था – उसने फिर भी लाजर को एक नौकर के रूप में देखा, जिसे उस पर एक एहसान करना चाहिए, भले ही उसने स्वयं लाजर पर कभी कोई एहसान नहीं दिखाया था! उसने अब्राहम से अपनी पीड़ा दूर करने के लिए लाजर को उसके पास भेजने की विनती की!

अब्राहम ने अनुचित और असम्भव अनुरोध को अस्वीकार कर दिया! सबसे पहली बात, धनवान व्यक्ति की पीड़ा से राहत देना अनुचित होगा, क्योंकि यह न्याय की आवश्यकताओं के विपरीत था, क्योंकि धनवान व्यक्ति अब वह प्राप्त कर रहा था जिसके लिए वह हकदार था! जब वह पृथ्वी पर रहता था, तो उसकी गलत प्राथमिकताएँ थीं। उसने लाजर की सहायता नहीं की थी, यानी उसने अपने साथी और परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोगी जीवन व्यतीत नहीं किया था। दूसरी बात, यह असम्भव होगा। एक तरफ से दूसरी तरफ जाना कभी भी सम्भव नहीं था। इस्राएल में, घाटियों के बीच गहरी खाई है, और यीशु ने मृत्यु के बाद किसी व्यक्ति की अपरिवर्तनीयता की दशा को दर्शाने और अविस्मरणीय प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में इसका इस्तेमाल किया था! यह खाई दूसरी तरफ जाने को असम्भव बनाती है।

मनुष्य के लिए चेतावनी का एकमात्र संदेश। तब धनवान व्यक्ति ने अब्राहम से विनती की कि वह मृतकों में से लाजर को उसके भाइयों के पास पृथ्वी पर भेजे ताकि वह उन्हें चेतावनी दे क्योंकि वह डरता था कि उसके भाई बाद में उसके द्वारा दिए गए बुरे उदाहरण के लिए उसे ही दोषी ठहराएँगे। धनवान व्यक्ति अभी भी स्वार्थी था – वह सामान्य रूप से लोगों के बारे में नहीं सोचता था, लेकिन केवल अपने ही परिवार के बारे में सोचता था!

अब्राहम ने उत्तर दिया कि उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, अर्थात् पुराना नियम। पुराने नियम में जीवन, जो उस धनी व्यक्ति के विपरीत है, उसकी प्रशंसा की जाती है। बाइबल सभी लोगों को परमेश्वर पर भरोसा रखने, अन्य लोगों से प्रेम करने और विशेष रूप से संसार में वंचित और तिरस्कृत लोगों की देखभाल करने के लिए प्रेरित करती है।

धनवान व्यक्ति ने कहा कि यदि कोई मरे हुआओं में से उनके पास जायेगा तो वे बदल जाएँगे। वह गलत था क्योंकि जब यीशु ने अन्य लोगों को मृतकों में से उठाया, तो एक और लाजर की तरह, जो मरियम और मार्था का भाई था, बहुत से लोग परिवर्तित नहीं हुए थे। इसके बजाय, उन्होंने उस लाजर को मारने की साजिश रची (यूहन्ना 12:10) और यीशु को मारने के लिए वे पहले से कहीं अधिक दृढ़ थे (यूहन्ना 11:47-50)। इसके अलावा यीशु मसीह स्वयं मृतकों में से जी उठा, लेकिन फिर भी कई लोगों ने अभी भी उस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया (प्रेरितों 4:2; 17,18)। अब्राहम ने धनवान व्यक्ति से कहा, कि अगर लोग बाइबल में दी गयी चेतावनी को नहीं सुनना चाहते, तो यदि मरे हुआओं में से कोई भी जी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे!

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है ?
ध्यान दें।

(1) **इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका अध्याय 15 और 16 में पायी जाती है।**

लूका अध्याय 15 में, यीशु ने खोई हुई भेड़, खोए हुए सिक्के और खोए हुए पुत्र के बारे में तीन दृष्टान्तों को बताया, जिसमें उन्होंने दुनिया में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण को सिखाया। यह कर संग्रहकर्ताओं और पापियों के प्रति फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों के बुरे व्यवहार के जवाब में था। इन तीनों दृष्टान्तों में, यीशु ने लोगों के प्रति पापी व्यवहार को उजागर किया!

लूका अध्याय 16 में, यीशु ने दो दृष्टान्त बताए। चतुर प्रबन्धक के दृष्टान्त में, यीशु ने भौतिक सम्पत्ति (धन) के प्रति पापपूर्ण व्यवहार को उजागर किया। धनवान और गरीब लाजर के दृष्टान्त में, उसने लोगों और पैसे दोनों के दुष्ट काम को उजागर किया! धनी व्यक्ति दिखावा पूरी तरह से सांसारिक धन का उपयोग करके अपने लिए दोस्त बनाने के लिए उपेक्षित है (लूका 16:9)। वह एक ऐसा व्यक्ति था, जो लोगों के बीच तो बहुत

मूल्यवान था, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में घृणास्पद था (लूका 16:15)। वह अच्छे सामरी के ठीक विपरीत था (लूका 10:30-37)।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका अध्याय 16:19-31 में लिखी हुई है।

(3) दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग नहीं दिया गया है।

इसे कहानी या परिस्थिति से निकाला जा सकता है।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं ?

ध्यान दें।

(1) **रूपक। एक दृष्टान्त को एक रूपक के रूप में समझाते हुए।**

इस दृष्टान्त की गलत व्याख्या का एक उदाहरण ग्रेगरी द ग्रेट (A.D. 540-604) की व्याख्या है। उन्होंने दृष्टान्त को एक रूपक माना। क्योंकि उसकी व्याख्या को सन्दर्भ के द्वारा बताया नहीं जा सकता, इसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

उन्होंने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार की : “धनी व्यक्ति यहूदियों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्होंने बाहरी चीज़ों का निर्माण किया और अपने स्वयं के व्यर्थ उद्देश्यों के लिए व्यवस्था का दुरुपयोग किया। धारों से भरे हुआ लाजर अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें अपने पापों को स्वीकार करने में शर्म आती थी। घमण्डी यहूदियों ने व्यवस्था के ज्ञान के लिए अन्यजातियों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। और कुत्ते उन उपदेशकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परमेश्वर के वचन का प्रचार करके और पापियों के पश्चातापों को सुनकर आत्मा के धारों को ठीक करते हैं।”

जबकि ग्रेगरी की अलंकारिक व्याख्या को स्वीकार नहीं किया जा सकता है, उनकी नैतिक व्याख्या के अलावा इस दृष्टान्त में बहुत कुछ है। ग्रेगरी ने सम्पत्ति के बाहरी प्रदर्शन के विरुद्ध चेतावनी दी और निर्धनता के गुण को बढ़ा दिया। उसने अपने श्रोताओं को दया के कार्य करने के किसी भी अवसर को न खोने के लिए कहा। उन्होंने कहा, “पृथ्वी की सभी वस्तुओं को तुच्छ जानो; सभी क्षणिक सम्मानों से घृणा करो और उस महिमा की तलाश करें जो समाप्त नहीं होती है। आप जितने भी निर्धन लोगों से मिलते हैं, उनका सम्मान करें, और जब आप उन्हें संसार द्वारा नज़रअंदाज होते हुए देखें, तो उनसे परमेश्वर के मित्र के समान व्यवहार करें। अपने धन को उनके साथ साझा करें ...आप देने में धीमे क्यों हैं, जब आप धरती पर निर्धन व्यक्ति को सब कुछ देते हैं, तो आप उसे देते हैं जो स्वर्ग में है ?”

(2) **अप्रासंगिक विवरण।**

यीशु निम्नलिखित विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं और इस प्रकार वे दृष्टान्त की समझ के लिए आवश्यक या प्रासंगिक नहीं हैं। मृत्यु के बाद लोगों की स्थिति और उनके बीच का संचार शाब्दिक दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता है ताकि एक छाप पैदा की जा सके। लेकिन इन सभी विवरणों की शाब्दिक व्याख्या नहीं की जा सकती है। उदाहरण के लिए : “आँखों को उठाकर देखना”, “उंगली को भिगोना” और “एक जीभ का स्पर्श” शाब्दिक नहीं हैं और केवल दृष्टान्त की कहानी को आगे बढ़ाते हैं। कोई भी यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता है कि “नरक और स्वर्ग में व्यक्ति एक दूसरे से बात करने में सक्षम हैं”, क्योंकि इस विषय पर बाइबल में आगे ऐसी कोई भी शिक्षा नहीं दी गयी है। दृष्टान्त की कहानी में ऐसे सभी विवरण केवल कहानी को बढ़ाने के लिए काम करते हैं और विशिष्ट सत्य नहीं सिखाते हैं।

(3) प्रासंगिक विवरण।

फिर भी, यह दृष्टान्त मृत्यु के बाद के जीवन से सम्बन्धित कुछ सच्चाइयों से अवगत कराता है, क्योंकि ये सत्य बाइबल के अन्य अंशों में भी सिखाए गए हैं। यह तथ्य कि जो लोग मर चुके हैं वे सो नहीं रहे हैं, लेकिन पूरी तरह से सचेत हैं, प्रासंगिक हैं।

कि कुछ लोग निश्चित रूप से बचाए गए हैं और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हैं, जबकि अन्य नरक में पीड़ित हैं, एक प्रासंगिक तथ्य है। इसके अलावा प्रासंगिक तथ्य यह है कि परमेश्वर पृथ्वी पर लोगों को मृत लोगों की आत्माओं के साथ संवाद करने (व्यवस्थाविवरण 18:9-13) और साथ ही मृत लोगों की किसी भी भावना को पृथ्वी पर लोगों के साथ संवाद करने की अनुमति नहीं देते हैं (अय्यूब 14:21; सभोपदेशक 9:5-6; यशायाह 63:16)! परमेश्वर की इच्छा है कि सभी लोग बाइबल में प्रगट किए गए उनके वचनों को सुनें न कि उन माध्यमों और आत्मावादियों को जो फुसफुसाते और बड़बड़ाते हैं (यशायाह 8:19-20)!

भोग विलास में रहने वाले धनी व्यक्ति के समान। यह एक प्रासंगिक विवरण है। अपने आप में धनी होना पापपूर्ण नहीं है, लेकिन स्वार्थी होना और दूसरों के लाभ के लिए धन का उपयोग न करना पापपूर्ण है। धनी व्यक्ति की निंदा इसलिए नहीं की गई है क्योंकि उसने कुछ बुरा किया, बल्कि इसलिए कि उसने अपने पड़ोसी के साथ कुछ भी भला कार्य नहीं किया!

लाजर, अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया। यह एक प्रासंगिक विवरण है। अब्राहम “सभी विश्वासियों के पिता” का प्रतिनिधित्व करता है (रोमियों 4:11)! यह तथ्य कि भिखारी को अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया था, स्वर्ग में उसके स्वागत के रूप में दर्शाता है। स्वर्ग में, बचाए हुए लोगों की आत्माएँ परमेश्वर की उपस्थिति में एक साथ हैं (इब्रानियों 12:22-23)। यह तथ्य कि यीशु ने भिखारी को “लाजर” नाम दिया, जिसका अर्थ है “परमेश्वर ने सहायता की”, प्रासंगिक है। जो यह दर्शाता है कि भिखारी, अपने सांसारिक कष्टों के बावजूद, परमेश्वर पर भरोसा रखता था।

नरक में होना जहाँ धनवान व्यक्ति तड़प रहा। यह एक प्रासंगिक विवरण है। बाइबल में अन्य गद्यांशों के शिक्षण के साथ, नरक वास्तव में मौजूद है और अविश्वासियों और दुष्टों के अनन्त दण्ड के स्थान को दर्शाता है।

एक बहुत बड़ी खाई जिसे कोई भी पार नहीं कर सकता था। यह एक प्रासंगिक विवरण है। बाइबल में अन्य गद्यांशों के शिक्षण के साथ, प्रत्येक व्यक्ति का अनन्त भविष्य, जो या तो स्वर्ग या नरक है, इस बात पर निर्धारित करता है कि वह व्यक्ति किस पर भरोसा रखता है और पृथ्वी पर रहते हुए वह कैसे अपने जीवन को व्यतीत करता है। *यह नियति बिलकुल अपरिवर्तनीय है! मृत्यु के बाद, लोगों के पास यीशु मसीह को चुनने का कोई दूसरा अवसर नहीं है!*

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहचानना।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 16:19-31 में “**त्रधनवान व्यक्ति और गरीब लाजर का दृष्टान्त**” “**परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति**” के बारे में बताते हैं।

इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश निम्नलिखित है। “**वर्तमान संसार में मृत्यु से पहले किसी व्यक्ति की जीवन-शैली के परिणाम मृत्यु के बाद अपरिवर्तनीय हैं!**” प्रत्येक व्यक्ति की अनन्त नियति (या तो स्वर्ग या नरक) इस

बात से निर्धारित होती है कि वह किस पर विश्वास करता था और अपनी मृत्यु से पहले संसार में उसने किसकी सेवा की थी! परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को इस बात के लिए जिम्मेदार मानते हैं कि वह संसार के विशेष रूप से वंचित लोगों से कैसे सम्बन्धित है और वह अपनी सांसारिक सम्पत्ति का उपयोग कैसे करता है।”

वंचितों के साथ सम्पत्ति को साझा करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग अपनी बुलाहट के योग्य जीवन-शैली जीते हैं (इफिसियों 4:1)। सांसारिक सम्पत्ति के सम्बन्ध में, परमेश्वर ने उन्हें साझा करने और देने के लिए, दयालु बनने और देखभाल करने के लिए बुलाया।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

(1) बाइबल के प्रत्येक अंश में जो सिखाया जाता है, उसकी तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाता है ?

पढ़ें भजन संहिता 119:105; 1 कुरिन्थियों 10:6,11; इफिसियों 4:32 से 5:2

पूरी बाइबल, पुराने नियम और नए नियम दोनों से पता चलता है कि परमेश्वर लोगों से किस प्रकार जीवन को व्यतीत करने की अपेक्षा करते हैं। यह उन शिक्षाओं और उदाहरणों से भरा है कि यीशु मसीह ने कैसे अपने जीवन को व्यतीत किया और मसीहियों को कैसे अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। धनवान व्यक्ति का दिखावा बाइबल की शिक्षाओं और उदाहरणों की पूरी तरह से उपेक्षा करता है!

(2) मृत्यु के बाद जीवन के बारे में सिद्धान्त। देखें नियमावली 5, परिशिष्ट 2

ग. परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेशों या शिक्षाओं का सारांश।

वर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या शिक्षाएँ क्या हैं ? यीशु मसीह हमें क्या जानना या मानना सिखाया और वह हमें क्या बनना या क्या करना सिखाते हैं ? ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।

इन दृष्टान्तों का एक बड़ा सबक यह है कि वे सिखाते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को इस बात के लिए जिम्मेदार ठहराएँगे कि वह दुनिया में विशेष रूप से वंचित लोगों से कैसे सम्बन्ध रखता है और कैसे वह दुनिया में अपनी सांसारिक संपत्ति का उपयोग करता है। इस वर्तमान दुनिया में मृत्यु से पहले उनकी जीवनशैली के परिणाम मृत्यु के बाद अपरिवर्तनीय हैं! प्रत्येक व्यक्ति की अनन्त नियति, जो या तो स्वर्ग या नरक है, वह इस बात से निर्धारित होती है कि उन्होंने किस पर भरोसा किया और इस दुनिया में मृत्यु से पहले किसकी सेवा की (मत्ती 6:24; 25:34-46)।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान बनना है।

इन दृष्टान्तों का एक और बड़ा सबक यह है कि वे हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है और हमें क्या करना है। वे सिखाते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि लोग अपने लिए न जीये, बल्कि अपने जीवन को परमेश्वर के अधीन होकर, खासकर जीवन के मामले में और सांसारिक संपत्ति के मामले में जीये। वह चाहता है कि लोग दूसरों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हों और दुनिया में वंचित लोगों पर दया करें।

5	प्रार्थना (8 मिनट) (प्रतिक्रियाएँ) परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	---

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए** समूह में **बारियाँ लें।**

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी (2 मिनट) (सौंपा गया कार्य) अगले अगले अध्याय के लिए
---	--

(समूह के अगुवे। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “मूर्ख धनवान” और “धनवान व्यक्ति और गरीब लाजर” के दृष्टान्त का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यशायाह 41,42,45 और 46** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शान्त समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना।** (11) रोमियों 8:1, (12) रोमियों 8:38-39, (13) रोमियों 10:9-10, (14) रोमियों 10:9-10, (15) रोमियों 10:17। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 10:1-21।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी **नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शान्त समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना करना
---	----------------

समूह का अग्रुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	साझा करना (20 मिनट)	(शांत समय) यशायाह 41,42,45 और 46
---	---------------------	-------------------------------------

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 41,42,45 और 46) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करना (5 मिनट)	(रोमियों में प्रमुख पद) रोमियों में मुख्य पदों का पुनरावलोकन करें
---	---------------------	--

दो-दो करके रोमियों की आखरी पाँच याद किये हुए प्रमुख वचनों का **पुनरावलोकन** करें।

(11) रोमियों 8:1. अतः अब जो मसीह में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।

(12) रोमियों 8:38-39. क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है, अलग कर सकेगी।

(13) रोमियों 10:9-10. कि यदि तू अपने मुँह से “यीशु को प्रभु जानकर” अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है।

(14) रोमियों 10:12. यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिये कि वह सब का प्रभु है और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है।

(15) रोमियों 10:17. अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट)	(रोमियों की पत्री) रोमियों 10:1-21
---	------------------------	---------------------------------------

परिचय। बाइबल अध्ययन के पांच चरणों का इस्तेमाल करते हुए रोमियों 10:1-21 का साथ मिलकर अध्ययन करें।

रोमियों अध्याय 9 से 11 में पौलुस को प्रदर्शित करता है कि अविश्वासी यहूदियों का इन्कार और विश्वास करने वाले अन्यजातियों का उद्धार बाइबल की शिक्षा से सहमत है। इसके कारण हैं:

- यह परमेश्वर की वाचा की प्रतिज्ञा के विरोध में नहीं था, क्योंकि **परमेश्वर के पास जिसे वह चाहता है**

उसका चुनाव करने की और जिसे वह चाहता है उसे कठोर करने की सम्प्रभुत्व अधिकार है (रोमियों 9:6-24)।

- पुराने नियम के प्रकाशन में इस बात की स्पष्ट रूप से भविष्यद्वाणी की गई है (रोमियों 9:25-29; रोमियों 10:18-21) इसी कारण से इस्राएल के पास इस बात का कोई बहाना नहीं है कि भविष्यद्वाणी की गई यह परिस्थिति वास्तविकता बन गई थी।
- पुराने नियम के समय के दौरान उद्धार का यह संदेश इस्राएलियों के लिए उसी प्रकार से सुलभ था जिस प्रकार से यह नए नियम के इस समय के दौरान अन्यजातियों और यहूदियों के लिए सुलभ है (रोमियों 10:5-8)।
- पुराने नियम के समय में भी और नए नियम के समय में भी उद्धार केवल विश्वास के द्वारा सम्भव है (तुलना करें उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:6-9, 26-29)। लोगों को उनके अविश्वास के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है और उनके विश्वास के कारण स्वीकार किया जाता है (रोमियों 9:30-33; रोमियों 10:1-4, 11, 17)।
- इसी कारण से “यहूदियों और अन्यजातियों के मध्य में कोई अंतर नहीं है” (रोमियों 10:12-13)!

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 10:1-21 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

10:1

खोज 1. खोए हुए लोगों पर परमेश्वर की धार्मिकता के सुसमाचार का प्रचार करना।

रोमियों अध्याय 9 में प्रेरित पौलुस यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर के सम्प्रभुत्व का विशेषाधिकार उसकी दया के लिए बनी वस्तुओं पर उसकी दया को प्रदर्शित करना है और उसके क्रोध के लिए बनी वस्तुओं पर उसकी दया को रोके रखना है (अर्थात्, जिसके लिए वह इच्छा करता है उसका उद्धार करना और जिसके लिए वह इच्छा करता है उसके लिए कठोर हो जाना यह उसका अधिकार है (रोमियों 10:18, 22-23)।

परन्तु यह तथ्य इस बात को निर्धारित नहीं करता कि मसीही जन होने के नाते हमें इस संसार के खोए हुए लोगों के साथ सम्बन्ध रखना चाहिए! हालाँकि परमेश्वर के पास उन लोगों के लिए आदर के साथ एक संप्रभुत्व इच्छा है जिनका वह उद्धार करता है और उसने उस इच्छा को हम पर प्रकट नहीं किया था। हमारा उत्तरदायित्व संसार के सब देशों के खोए हुए लोगों के लिए असल में चिन्ता करना, उनके लिए प्रार्थना करना और उन पर सुसमाचार का प्रचार करना है। चुनाव करना परमेश्वर का विशेषाधिकार है, परन्तु सुसमाचार की घोषणा करना हमारा उत्तरदायित्व और कार्य है (रोमियों 10:1)!

खोज 2. व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धर्म ठहराया जाना (तोराह, शरिया) एक गलतफहमी है।

(1) दो प्रकार की धार्मिकता।

यह अनुच्छेद दो प्रकार की धार्मिकता में विषमता दर्शाता है:

- व्यवस्था आधारित धार्मिकता, जिसका यहूदी लोग पालन करते थे और जिसका विचार यह है कि परमेश्वर उस जन को धर्म ठहराएगा जो मूसा की व्यवस्था का या किसी भी अन्य व्यवस्था का पालन करता है।
- विश्वास आधारित धार्मिकता, जिसे परमेश्वर अनुग्रह के द्वारा प्रदान करता है और सत्य है कि परमेश्वर अनुग्रह के द्वारा उस धार्मिकता को लोगों को प्रदान करता है जिसे मसीह ने उस हर जन के लिए प्राप्त किया जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है।

(2) धार्मिकता प्राप्त करने में इस्राएल की विफलता (रोमियों 10:2-3)।

हालाँकि अपने व्यवस्था के कामों के द्वारा इस्राएली जाति परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिकता को प्राप्त करने में बड़ी उत्साही थी (जैसा कि उन्होंने व्यवस्था की व्याख्या की थी), परन्तु उनका उत्साह समझ पर आधारित नहीं था! परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त करने में इस्राएल इसलिए विफल हो गया था, क्योंकि वे यह समझने में विफल हो गए थे कि परमेश्वर की धार्मिकता को केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था (रोमियों 10:2)।

परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त करने में इस्राएल जाति इसलिए विफल हो गई थी, क्योंकि उसने न केवल परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन होने से इन्कार किया था, वरन् उसने अपनी ही धार्मिकता को स्थापित करने का प्रयास भी किया था (रोमियों 10:3)।

(3) यीशु मसीह व्यवस्था का समापन है,

अर्थात्, व्यवस्था का अंत (धार्मिकता को प्राप्त करने के धार्मिक अर्थों के रूप में)।

या यीशु मसीह व्यवस्था का लक्ष्य (पूर्णता) है

(पुराने नियम में परमेश्वर के प्रकाशन के रूप में) (रोमियों 10:4)

रोमियों 10:4 के शब्दों का अनुवाद इन दो तरीकों, व्यवस्था का समापन और लक्ष्य में किया जा सकता है...

मसीह “व्यवस्था” का “समापन (अंत)” है। “व्यवस्था” को मूसा की व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धार्मिकता प्राप्त करने के विचार के द्वारा समझा गया है जैसे कि व्यवस्था के उन यहूदी धार्मिक गुरुओं और फरीसियों के द्वारा व्याख्या की गई थी जिन्होंने बाइबल में दी गई व्यवस्था में कम से कम 613 अतिरिक्त बातों को जोड़ा था। यीशु मसीह ने यहूदियों की इस गलतफहमी को समाप्त किया था (गलातियों 3:10-13)। किसी भी जन को धार्मिक व्यवस्था का पालन करने के द्वारा धर्म नहीं ठहराया जाएगा। किसी भी व्यक्ति को केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही धर्म ठहराया जा सकता है।

मसीह “व्यवस्था” का “लक्ष्य (पूर्णता)” है। “व्यवस्था” को पुराने नियम के विचार द्वारा, उसकी नैतिकता, संस्कार और नागरिक नियमों को शामिल करते हुए समझा गया है (मत्ती 5:17)। यीशु मसीह ही (व्यवस्था नहीं) पुराने नियम का लक्ष्य, पूर्णता या वास्तविक विषयवस्तु है! इस रीति से पुराने नियम के समय में रहने वाले लोग आने वाले मसीह में केवल विश्वास करने के द्वारा धर्म ठहराए गए थे और नए नियम में रहने वाले लोग आ चुके मसीह में केवल विश्वास करने के द्वारा धर्म ठहराए गए हैं।

दोनों ही अनुवाद सत्य हैं, परन्तु यहाँ उनका आशय सम्भवतः यह है: “मसीह व्यवस्था का अंत है।”

खोज 3. पुराने नियम में मसीह पर विश्वास के द्वारा धार्मिकता का संदेश भी है।

पुराने नियम के प्रकाशन (तोरेह या व्यवस्था) से पौलुस यह प्रमाणित करने के लिए दो प्रश्नों का निर्माण करता है कि विश्वास के द्वारा धार्मिकता व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता के बिल्कुल विपरीत है।

(1) **लैव्यव्यवस्था 18:5 “व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता” को परिभाषित करता है (रोमियों 10:5)।**

वह बताता है, “जो मनुष्य उनको माने वह उनके कारण जीवित रहेगा।”

न्याय, निन्दा और पाप की सजा के परमेश्वर के निरंकुश मानक को व्यवस्था कहा जाता है। एक पूर्णतः पवित्र और धर्मी परमेश्वर को सारे पापों का दंड देने के द्वारा पूर्णतः सिद्ध न्याय करने से कम कुछ भी नहीं चाहिए। क्योंकि कोई भी पापी इस पूरा नहीं कर सकता है और उसे एक ऐसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जो उस पर विश्वास करने वाले पापी के बदले में दंडित हुआ हो और उसी प्रकार से *प्रायश्चित्त किया* हो।

धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए परमेश्वर की निरंकुश माँग या आवश्यकता को व्यवस्था कहा जाता है। एक पूर्णतः पवित्र और धर्मी परमेश्वर को परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए जाने (बचाए जाने) के लिए पूर्णतः सिद्ध धार्मिकता से कम कुछ भी नहीं चाहिए। क्योंकि यह सिद्धता किसी भी मनुष्य के पास नहीं है, और सभी लोगों को एक ऐसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जिसने मनुष्य के बदले में इस पूर्णतः सिद्ध धार्मिकता को अर्जित किया हो और जो इस धार्मिकता को उस व्यक्ति पर *मढ़ देता* (सम्बन्धित करना, सम्मिलित करना, एन.आई.वी. में: “श्रेय देना”) है जो उस पर विश्वास करता है।

पवित्रता (शुद्धीकरण) के लिए परमेश्वर की निरंकुश माँग या आवश्यकता को व्यवस्था कहा जाता है। एक पूर्णतः पवित्र और धर्मी परमेश्वर को परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किए जाने (बचाए जाने) के लिए पूर्णतः सिद्ध पवित्रता (आरम्भ से लेकर अंत तक पवित्र जीवन जीना) से कम कुछ भी नहीं चाहिए। क्योंकि यह सिद्धता किसी भी मनुष्य के पास नहीं है, और सभी लोगों को एक ऐसे उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जिसने मनुष्य के बदले में इस पूर्णतः सिद्ध पवित्रता को अर्जित किया हो और जो इस पवित्रता को उस व्यक्ति पर *मढ़ देता* है जो उस पर विश्वास करता है।

परमेश्वर की माँग या आवश्यकता यह है कि सब लोग उसकी आज्ञाओं का (100%) पूरी तरह से पालन करें। पुराने नियम की इस व्याख्या को पौलुस यह प्रमाणित करने हेतु लागू करता है कि इस रीति से कोई भी मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं ठहर सकता है, क्योंकि किसी भी जन ने परमेश्वर की व्यवस्था का (100%) पूरी तरह से पालन न तो किया है और न ही कोई कर सकता है! “व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता” के तरीके का असफलता के लिए अंत हो गया है!

(2) **व्यवस्थाविवरण 30:11-13 “विश्वास के द्वारा धार्मिकता” की व्याख्या करता है (रोमियों 10:6-7)।**

यह सिखाता है कि यह सत्य सुलभ है और लोगों के निकट है कि क्या जानना है, किस पर विश्वास करना है और किसका पालन करना है। धार्मिकता प्राप्त करने के लिए लोगों को कुछ और करने की आवश्यकता नहीं है। लोगों को इस सत्य को प्राप्त करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ जाने, या समुद्र के पार जाने की आवश्यकता नहीं है। पुराने नियम की इस “विश्वास के द्वारा धार्मिकता” की व्याख्या को पौलुस यह प्रमाणित करने हेतु लागू करता है कि हर एक जन के पास परमेश्वर की धार्मिकता तक पहुँच है।

कोई भी जन के पास परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त कर सकता है:

- यीशु मसीह के स्वर्ग से पृथ्वी पर (2000 वर्षों पूर्व) प्रथम आगमन के द्वारा। किसी भी जन को स्वर्ग पर चढ़कर मसीह को नीचे पृथ्वी पर लाने की आवश्यकता नहीं है और न ही कोई ऐसा कर सकता है (रोमियों 10:6; तुलना करें यूहन्ना 3:13 और मत्ती 11:27)
- कब्र के रसातल से (2000 वर्षों पूर्व) यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा। किसी भी जन को कब्र में उतरकर मसीह का मृतकों में से पुनरुत्थान करने की आवश्यकता नहीं है और न ही कोई ऐसा कर सकता है (रोमियों 10:7)
- सुसमाचार (बीते 2000 वर्षों से लेकर आज तक) प्रचार करने के द्वारा। सुसमाचार का प्रचार करना परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) के विषय में सच्चाई को पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य के लिए उपलब्ध कराता है ताकि वह उसे जाने, उस पर विश्वास करे, और उसका पालन करे।
- परमेश्वर के वचन को (वर्तमान में) अपने हृदय में और अपने मुँह में रखने के द्वारा। सुसमाचार परमेश्वर का वचन है जिस पर उस व्यक्ति को अपने हृदय से विश्वास करना चाहिए और अपने मुँह से उसका अंगीकार करना चाहिए (रोमियों 10:8)। “सुसमाचार हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर का सामर्थ्य है” (रोमियों 1:16)।

(3) परमेश्वर की व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य मनुष्यों को नहीं, परन्तु यीशु मसीह को सौंपा गया था (रोमियों 10:6-7)।

रोमियों 10:4-5 धार्मिकता की उस स्थिति का वर्णन करता है, जिसे केवल यीशु मसीह ने प्राप्त (अर्जित) किया है। क्योंकि मनुष्यों के इतिहास में यीशु मसीह ही ऐसा एकमात्र है जिसने पृथ्वी पर सिद्ध जीवन को जिया (यूहन्ना 8:46; इब्रानियों 4:15; 7:26-28), जिसने मृत्यु को पराजित किया (मत्ती 28:6-7; 1 कुरिन्थियों 15:20) और अपने पुनरुत्थान के पश्चात सर्वदा के लिए जीवित है (यूहन्ना 11:25; इब्रानियों 7:23-25), मनुष्यों के इतिहास में वही ऐसा एकमात्र है जिसने परमेश्वर की व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा किया है! वही ऐसा एकमात्र है जिसने “इन कामों को किया और इनके द्वारा जिया” (लैव्यव्यवस्था 18:5; रोमियों 10:5)!

रोमियों 10:6-7 धार्मिकता की ऐसी ही समान स्थिति का वर्णन करता है, जिसे मनुष्य परमेश्वर के निर्मोल अनुग्रह और यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा प्राप्त करते हैं, न कि व्यवस्था का पालन करने के उनके स्वयं के प्रयासों के द्वारा (इफिसियों 2:8-9 भी देखें)।

पौलुस नए नियम की सच्चाई की घोषणा पुराने नियम की परिभाषा (शब्दों) में करता है। वह ऐसा इसलिए कर सकता है, क्योंकि वह इस बात को पहले ही प्रमाणित कर चुका है कि परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए जाने का तरीका पुराने नियम के समय में भी वैसा ही था जैसा कि वह इस नए नियम के समय में है: परमेश्वर की धार्मिकता हमेशा से ही “विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना” रहा है और “व्यवस्था के कामों के द्वारा धर्मी ठहराया जाना” कभी भी नहीं रहा है (रोमियों 1:17; 3:21-22; 4:1-3)!

मूसा ने इस्राएलियों को निर्देश (अन्य बातों के बीच में, व्यवस्था) प्रदान किए जो पहले से ही परमेश्वर के लोग थे, उस से थोड़े ही समय पहले जब इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश किया था (1407 ई.पू.)। परमेश्वर ने उन लोगों पर श्राप डाले जिन्होंने उसकी अवज्ञा की थी (व्यवस्थाविवरण 27:9-26) और उन लोगों को अपनी आशीषें दीं जिन्होंने उसकी आज्ञाओं का पालन किया था (व्यवस्थाविवरण 28:8-14)। उसके पश्चात मूसा ने उन वचनों को बोला था जिनका उद्धरण पौलुस देता है (व्यवस्थाविवरण 30:11-14)। इन वचनों के द्वारा, मूसा ने इस बात पर बल दिया कि इस्राएलियों को *अनुग्रह के संदर्भ में व्यवस्था प्रदान की गई थी (न कि मानवीय कामों अथवा आज्ञाकारिता के संदर्भ में)*। इस्राएलियों के लिए प्रतिज्ञा का देश और उसकी आशीषें परमेश्वर का अनुग्रहकारी उपहार था। और इसके साथ ही धार्मिकता (उद्धार) भी इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का अनुग्रहकारी उपहार था। यह व्यवस्था का पालन करने के लोगों के शक्तिशाली प्रयासों का परिणाम कभी भी नहीं था

(व्यवस्थाविवरण 8:17-18; 9:4-6 से तुलना करें), परन्तु यह विश्वास करने वाले हर एक जन के लिए एक अनुग्रहकारी उपहार था और अभी भी है (इब्रानियों 4:1-3)।

जो बात पौलुस कहना चाहता है वह यह है कि धर्मी ठहराए जाने और पवित्रीकरण के लिए परमेश्वर की धर्मी आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य (अर्थात्, आरम्भ से लेकर अंत तक के उद्धार के लिए) मनुष्य को कभी नहीं सौंपा गया था। यह कार्य यीशु मसीह को सौंपा गया था और केवल उसने ही इस कार्य को पूरा किया!

यीशु मसीह परमेश्वर ही था जिसने मनुष्य का रूप धारण किया था (यूहन्ना 1:14)। उसमें विश्वास करने वालों के बदले में उसने नरक की यातनाओं को सहा था (मत्ती 27:46)। वह उनके पापों के प्रायश्चित्त के बलिदान स्वरूप उनके बदले में मरा (मरकुस 10:45; रोमियों 3:25), ताकि परमेश्वर उनको विश्वास के द्वारा धर्मी घोषित करे। वह मृतकों में से इसलिए जी उठा था, ताकि वे लोग नया और पवित्र जीवन जीने के योग्य ठहरें (रोमियों 6:4)। वह स्वर्ग पर चढ़ कर परमेश्वर की दाहिनी ओर जा बैठा, ताकि विश्वास करने वालों पर वह राजा और प्रभु के रूप में शासन करे। प्रभु के रूप में, वह उनके उद्धार के निमित्त इसके आरम्भ (नया जन्म पाने और धर्मी ठहराए जाने के समय) से लेकर इसके अंत (मसीह के द्वितीय आगमन तथा उन लोगों के शरीरों के पुनरुत्थान के समय) तक कार्य करता है। वह विश्वास करने वालों के पूर्ण एवं सिद्ध उद्धार का आश्वासन देता है (रोमियों 8:29-30; तुलना करें फिलिप्पियों 1:6 से)।

मसीह को नीचे लाने के लिए स्वर्ग पर चढ़ जाने का प्रत्येक मानवीय प्रयास, उसके देह-धारण की वास्तविकता और महत्व को अस्वीकार करना होगा। और मसीह को निकालने के लिए कब्र में उतरने का प्रत्येक मानवीय प्रयास, उसके पुनरुत्थान की वास्तविकता और अहमियत को अस्वीकार करना होगा। किसी भी मनुष्य ने मसीह के जन्म में या यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने में कोई भी योगदान नहीं किया था। कोई भी मनुष्य अपने स्वयं के उद्धार में कोई भी योगदान नहीं कर सकता है! कोई भी मनुष्य यह विचार करते हुए व्यवस्था का पालन करने का प्रयास नहीं कर सकता है कि यह यीशु मसीह के देह-धारण, मृत्यु, पुनरुत्थान, ऊपर चढ़ जाने और सिंहासन पर विराजमान होने जैसी ही बातों को पूरा कर पाएगा! “यीशु मसीह को हमारे पापों के लिए मृत्यु के वश में कर दिया गया था और हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए जीवित कर दिया गया था” (रोमियों 4:25)। यीशु मसीह ने एक विश्वासी के पूर्ण रूप से और सिद्ध रूप से धर्मी ठहराए जाने के लिए आवश्यक हर एक बात को पूरा कर दिया था!

(4) वह वचन अत्यन्त सुलभ है जिसमें विश्वास की आवश्यकता होती है और जो विश्वास का खंडन करता है (रोमियों 10:8)।

पौलुस व्यवस्थाविवरण 30:14 का उद्धरण देता है, “यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन् तेरे मुँह और मन ही में है”। पौलुस व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पाए जाने वाले उस “वचन” को अनुग्रहकारी प्रतिज्ञाओं और चेतावनियों के रूप में मान रहा है (व्यवस्थाविवरण 5:6; 6:4-9; 7:7-9; 10:12-13; 11:13-15, 22-25; 18:15-18; 26:16-19; 28:1-14), जिसमें प्रतिक्रिया के रूप में विश्वास की आवश्यकता है और जिसमें विश्वास का खंडन किया गया है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पाए जाने वाले यह सारे ही वचन परमेश्वर के अनुग्रह के संदर्भ में इस्राएलियों को प्रदान किए गए थे। परमेश्वर ने पहले ही इस्राएलियों को मिस्र के दासत्व से निकालकर छुड़ा लिया था। वह पहले से ही उनका परमेश्वर था और वे भी पहले से ही परमेश्वर के धर्मी ठहराए गए लोग थे (व्यवस्थाविवरण 5:6; तुलना करें निर्गमन 20:1-2 से)। यह वचन इस्राएलियों को मानवीय कार्यों के संदर्भ में प्रदान नहीं किए गए थे। इस्राएलियों को धर्मी ठहराए जाने और परमेश्वर के धर्मी ठहराए गए लोग होने के लिए व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं थी! इसके विपरीत, वे परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के समान जीवन जीने के लिए बुलाए गए थे!

पौलुस इस “वचन” की व्याख्या इस प्रकार से करता है, “विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते हैं।” “विश्वास का वह वचन” (यूनानी में: *to réma tés pisteós*) केवल परमेश्वर का वह वचन नहीं है जिसे पुराने नियम (व्यवस्थाविवरण) में प्रकट किया गया है, परन्तु यह परमेश्वर का वह वचन भी है जिसकी नए नियम में घोषणा की गई है। “विश्वास का वह वचन” का अर्थ केवल यह नहीं है कि परमेश्वर का वचन प्रतिक्रिया के रूप में विश्वास की माँग करता है (उसे आवश्यकता है) (व्यक्तिपरक), परन्तु साथ ही में परमेश्वर का वचन लोगों के हृदय में पाए जाने वाले विश्वास का खंडन भी करता है (वस्तुपरक)। विश्वास का वह वचन छुड़ाए जाने के प्रभाव पर बल देने के लिए विश्वास की प्रतिक्रिया को प्रकाश में लाता है (देखें इब्रानियों 11:6-8)।

यदि ऐसा होता है तो परमेश्वर का वचन नए नियम के समान ही पुराने नियम दोनों में ही विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की ओर अगुवाई करता है। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) का तरीका नए नियम के जैसे ही पुराने नियम में भी बिलकुल एक समान है।

- पुराने नियम के समय में परमेश्वर का वचन लोगों के निकट ही था: “तेरे मुँह और मन ही में है ताकि तू उस पर चले” (व्यवस्थाविवरण 30:14)। इस्राएली लोगों ने पहले से ही परमेश्वर के वचन का अपने मुँह से अंगीकार कर लिया था और अपने मन से उस पर विश्वास कर लिया था! इस्राएली लोग पहले से ही परमेश्वर की प्रजा थे! व्यवस्था का पालन करने के द्वारा इस्राएली लोगों को परमेश्वर की प्रजा नहीं होना था!
- नए नियम के समय में भी परमेश्वर का वचन लोगों के निकट है: “तेरे मुँह में और तेरे मन में है” (रोमियों 10:8)। रोम में रहने वाले मसीही लोगों ने पहले ही सुसमाचार का अपने मुँह से अंगीकार कर लिया था और उस पर अपने मन से विश्वास कर लिया था। कलीसिया भी पहले से ही परमेश्वर के लोगों की थी! उसे भी व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की प्रजा नहीं होना था!

“विश्वास का वह वचन” (वचन 8) “मसीह का वचन” (रोमियों 10:17) है। (यहाँ पर एक सम्बन्ध सूचक है वस्तुपरक समझ के साथ: मसीह के अंतर्वस्तु रूप और व्यक्तिपरक समझ के साथ: मसीह के द्वारा बताया गया। लोग न केवल निष्क्रिय रूप से प्रचारकों को वचन बताते हुए सुनते हैं, वरन् सक्रिय रूप से स्वयं मसीह की वाणी को उनके मन में बोलते हुए सुनते हैं!)

कदम 3. प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं ?

आईये रोमियों 1:1-17 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होंगे दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

10:4

प्रश्न 1. हमें रोमियों 10:4 को कैसे समझना चाहिए: मसीह व्यवस्था का “अंत” है या “लक्ष्य” है ?

ध्यान दें।

देखें नियमावली 11, परिशिष्ट 13।

प्रश्न 2. हमें इस सिद्धांत को कैसे समझना चाहिए - “जो मनुष्य इन कामों को करे (परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करे) वह इनके द्वारा जीवित रहेगा” ?

ध्यान दें।

(1) पाप में गिरने से पूर्व व्यवस्था की आज्ञाकारिता ने

धर्मी ठहराए जाने और निर्दोषिता की वास्तविक अवस्था (पद) को बनाए रखा था।

धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) (को बनाए रखना) व्यवस्था का पालन करने के द्वारा केवल पाप में गिरने से पूर्व सम्भव था। क्योंकि आदम ने अनन्त जीवन को पाप में गिरने से पूर्व प्राप्त कर लिया था और उस समय तक पाप नहीं किया था, इसलिए वह परमेश्वर के दृष्टि में धर्मी था। वह इस धर्मी ठहराए जाने को केवल अनाज्ञाकारिता के द्वारा ही गँवा सकता था! उत्पत्ति 2:15-17 में आदम को दिए गए परमेश्वर के निषेध इस आशय से नहीं थे कि इस व्यवस्था का पालन करने के द्वारा आदम अपने धर्मी ठहराए जाने को अर्जित (पूरा करना, पाना) कर सकता था, परन्तु बजाए इसके आदम आज्ञाकारिता के माध्यम से अपनी धर्मी ठहराए जाने की अवस्था (अर्थात्, अनन्त जीवन) को बनाए रख सका (अधिकार में रख पाया) था।

(2) पाप में गिरने के पश्चात व्यवस्था (नैतिकता) के प्रति आज्ञाकारिता एक विश्वासी के धर्मी जीवन को प्रकट करती है।

पाप में गिरने के पश्चात, धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए व्यवस्था के काम कभी भी आधार नहीं थे। यह सिद्धांत: “जो मनुष्य इनको माने अथवा इनका पालन (अनिश्चित काल, सक्रिय) करे, वह इनके द्वारा (निश्चितता को प्रदर्शित करने वाला भविष्य काल) जीवित रहेगा” (लैव्यव्यवस्था 18:5) केवल पाप में गिरने से पूर्व निर्दोषिता की अवस्था में धर्मी ठहराए जाने को बनाए रखने का एक सिद्धांत था। यह पाप में गिरने के पश्चात पाप की अवस्था में धार्मिकता को पाने का सिद्धांत कभी भी नहीं था।

लैव्यव्यवस्था 18:1-5 स्पष्ट रूप से यह प्रकट करता है कि धर्मी ठहराए जाने की अवस्था में यह वचन परमेश्वर के अनुमोदन के सिद्धांत का संदर्भ देते हैं। इसका अर्थ वही है जैसा निर्गमन 20:1-17 में है। परमेश्वर के अपनी प्रजा, इस्राएली लोगों को (दासत्व के घर से) छुड़ा लेने के पश्चात (निर्गमन 20:1-2), वह उनको दस आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के समान जीने के लिए आदेश देता है, न कि दस आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की प्रजा बनने के लिए (निर्गमन 20:3-17)। उसी प्रकार से लैव्यव्यवस्था 18:1-5 को परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के लिए निर्देशित किया गया है और यह इस्राएलियों को आदेश देता है कि उनको किस प्रकार से परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोगों के जैसे जीवन व्यतीत करना है। परमेश्वर की व्यवस्था (दस आज्ञाओं) का पालन करने के द्वारा, परमेश्वर के लोग परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को, अनन्त जीवन के अपने अधिकार को और उनके लिए परमेश्वर को अनुमोदन को बनाए रखते हैं: वे (निरंतर) उद्धार पाया हुआ जीवन जीएँगे, वे समृद्ध होंगे, और प्रतिज्ञा के देश में अपने दिनों को लम्बा करेंगे (व्यवस्थाविवरण 5:32-33)।

प्रश्न 3. मन में विश्वास करने और मुँह से अंगीकार करने के मध्य में क्या सम्बन्ध है ?

ध्यान दें।

(1) सुसमाचार के संक्षिप्त विवरण।

नए नियम में सुसमाचार को संक्षिप्त करने के बहुत से अलग-अलग तरीके पाए जाते हैं:

1 कुरिन्थियों 15:1-4 में पवित्रशास्त्र के अनुसार सुसमाचार यह है कि मसीह हमारे पापों के लिए मर कर

तीसरे दिन जी उठा था। हमारा उद्धार तभी होता है जब हम सुसमाचार के प्रचार को सुनते हैं, उसे ग्रहण करते हैं, उस पर अपने आप को स्थिर करते हैं और दृढ़ता से उसे पकड़े रहते हैं।

रोमियों 10:9-13 में सुसमाचार यह है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतकों में से जी उठाया और यीशु मसीह ही प्रभु¹ है। हमारा उद्धार तभी होता है जब हम सुसमाचार को सुनते हैं, अपने मनों में उस पर विश्वास करते हैं, प्रभु के नाम को पुकारते हैं और अपने मुँह से उसका अंगीकार करते हैं।

इसी प्रकार से रोमियों 10:9-13 में पौलुस सुसमाचार संदेश के दो दृष्टिकोणों, अर्थात्, यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान (दो हजार वर्षों पूर्व) और उसके स्वर्ग से सब चीजों पर और सब कुछ पर (वर्तमान समय में) शासन (राज) पर बल देता है। साथ ही में वह सुसमाचार को ग्रहण करने के दो दृष्टिकोणों, अर्थात्, किसी के मन में विश्वास करने और किसी के मुँह से अंगीकार करने पर बल देता है। हालाँकि, यह संक्षिप्त विवरण यह नहीं सिखाता है कि “मन में विश्वास करने” या “मुँह से अंगीकार करने” का उद्धार के सम्बन्ध में एक समान ही क्रिया या प्रभाव है।

(2) मन में विश्वास करने और मुँह से अंगीकार करने के मध्य में सम्बन्ध।

परमेश्वर के वचन के मन में और मुँह में होने के सम्बन्ध में व्यवस्थाविवरण 30:14 का उद्धरण उसी प्रकार से पुराने नियम और नए नियम में भी सत्य है। वचन 9 में पौलुस “मुँह-मन” के क्रम का उपयोग इसलिए करता है, क्योंकि व्यवस्थाविवरण 30:14 में यही क्रम था। वचन 10 में वह “मन-मुँह” के क्रम का उपयोग इसलिए करता है, क्योंकि यह प्राकृतिक क्रम है: कोई भी व्यक्ति उस बात का अपने मुँह से अंगीकार करता है जो पहले से ही उसके मन में उपस्थित है (मत्ती 12:34 से तुलना करें)। परमेश्वर की धार्मिकता (उद्धार) को केवल मन में विश्वास करने के माध्यम से प्राप्त किया गया है और यह मुँह से अंगीकार करने की ओर अगुवाई करता है।

हृदय उस बात का केन्द्र है जिसके चारों ओर मनुष्य का जीवन चक्कर लगाता है। यह मनुष्य के मन, इच्छा और भावनाओं का केन्द्र भी है (नीतिवचन 4:23)। यह विश्वास करना आवश्यक है कि परमेश्वर ने मसीह को मृतकों में से जिलाया, क्योंकि पुनरुत्थान ही इस बात को प्रमाणित करता है कि यीशु ही वास्तविक “प्रभु” है (इफिसियों 1:20-23; फिलिप्पियों 2:9-11)। “प्रभु” शब्द (यूनानी में: कुरियोस) का अर्थ इससे कम कुछ भी नहीं है कि यीशु ही प्रभु है (इब्रानी में याहवे), पुराने नियम के प्रकाशन में परमेश्वर का यही नाम है (मरकुस 1:3 की यशायाह 40:3 के साथ तुलना करें)। पौलुस कहता है, “मसीह सब के ऊपर परम परमेश्वर है”² (रोमियों 9:5)।

धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के सम्बन्ध में “विश्वास करने” और “अंगीकार करने” में एक समान ही क्रिया या प्रभाव नहीं हैं। बिना विश्वास किए “अंगीकार करना” व्यर्थ है (मत्ती 7:21-23 से तुलना करें)। और बिना अंगीकार किए “विश्वास करना” मसीह को अपनाने से इन्कार करना है (तुलना करें मत्ती 10:32; यूहन्ना 12:42)। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए मन में विश्वास करना अत्यन्त आवश्यक है (यूहन्ना 3:18,36 से तुलना करें)। और भले कामों के समान मुँह से अंगीकार करना इस बात का प्रमाण है कि मन में पाया जाने वाला विश्वास असली और खरा है (इफिसियों 2:8-10; 2 कुरिन्थियों 4:13; याकूब 2:17-22; 1 यूहन्ना 3:18-20)। जो लोग वास्तव में विश्वास करते हैं वे उस बात को कहने में सहायता नहीं कर सकते हैं जो उन्होंने देखा या सुना है (प्रेरितों के काम 4:20; 1 तीमुथियुस 6:12; 1 यूहन्ना 4:15)। वचन 10 में “धर्मी

¹ “प्रभु” शब्द (यूनानी में: कुरियोस) निर्गमन 3:14 में पाए जाने वाले इब्रानी शब्द “यहोवा” (इब्रानी में: याहवे) का अनुवाद है (तुलना करें: यशायाह 40:3 की मरकुस 1:3 के साथ)। 1 कुरिन्थियों 12:3 को भी पढ़ें।

² यूनानी में: ho ón epi pantón Theos.

ठहराया जाना” और “उद्धार” समानार्थी शब्द इसलिए हैं, क्योंकि वचन 9 में विश्वास करने और अंगीकार करने दोनों का उत्पाद उद्धार है। उद्धार की उत्पत्ति मन में होती है और इसे मुँह के माध्यम से अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। विश्वास धर्मी ठहराए जाने की ओर अगुवाई करता है (रोमियों 4:5 से तुलना करें) और उसी प्रकार से परमेश्वर के अनन्त क्रोध से उद्धार की ओर भी अगुवाई करता है (रोमियों 1:16; 5:9-10 से तुलना करें)। विश्वास एक ऐसा उपकरण है जिससे लोग धर्मी ठहराए जाते हैं। विश्वास करना ऐसे खाली हाथ के समान है जो अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार को ग्रहण करता है। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के सम्बन्ध में “विश्वास करने” और “अंगीकार करने” में एक समान ही क्रिया या प्रभाव नहीं हैं। बिना विश्वास किए “अंगीकार करना” व्यर्थ है (मत्ती 7:21-23 से तुलना करें)। और बिना अंगीकार किए “विश्वास करना” मसीह को अपनाने से इन्कार करना है (तुलना करें मत्ती 10:32; यूहन्ना 12:42)। धर्मी ठहराए जाने (उद्धार) के लिए मन में विश्वास करना अत्यन्त आवश्यक है (यूहन्ना 3:18,36 से तुलना करें)। और भले कामों के समान मुँह से अंगीकार करना इस बात का प्रमाण है कि मन में पाया जाने वाला विश्वास असली और खरा है (इफिसियों 2:8-10; 2 कुरिन्थियों 4:13; याकूब 2:17-22; यूहन्ना 3:18-20)। जो लोग वास्तव में विश्वास करते हैं वे उस बात को कहने में सहायता नहीं कर सकते हैं जो उन्होंने देखा या सुना है (प्रेरितों के काम 4:20; 1 तीमुथियुस 6:12; 1 यूहन्ना 4:15)। वचन 10 में “धर्मी ठहराया जाना” और “उद्धार” समानार्थी शब्द इसलिए हैं, क्योंकि वचन 9 में विश्वास करने और अंगीकार करने दोनों का उत्पाद उद्धार है। उद्धार की उत्पत्ति मन में होती है और इसे मुँह के माध्यम से अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। विश्वास धर्मी ठहराए जाने की ओर अगुवाई करता है (रोमियों 4:5 से तुलना करें) और उसी प्रकार से परमेश्वर के अनन्त क्रोध से उद्धार की ओर भी अगुवाई करता है (रोमियों 1:16; 5:9-10 से तुलना करें)। विश्वास एक ऐसा उपकरण है जिससे लोग धर्मी ठहराए जाते हैं। विश्वास करना ऐसे खाली हाथ के समान है जो अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार को ग्रहण करता है।

10:11-13

प्रश्न 4. यीशु मसीह के प्रथम आगमन के पश्चात से यहूदी और अन्यजाति (गैर यहूदी) लोगों के मध्य में कोई अंतर क्यों नहीं रह गया है ?

ध्यान दें। यीशु मसीह के प्रथम आगमन के पश्चात, अब यहूदी और अन्यजाति लोगों के मध्य में कोई अंतर नहीं है, और ऐसा इन तीन कारणों से है:

- मसीह में पाए जाने वाले सारे ही विश्वासियों को परमेश्वर की एक प्रजा कर दिया गया है। अन्यजाति राष्ट्रों से आने वाले यीशु मसीह के विश्वासियों और यहूदियों में से आने वाले यीशु मसीह के विश्वासियों को “मसीह में एक नया मनुष्य बना दिया गया है” और “परमेश्वर की प्रजा के सह नागरिक बना दिया गया है” (इफिसियों 2:11-22)। वे “इस्राएल (परमेश्वर की प्रजा) के उत्तराधिकारी”, “एक देह (कलीसिया) के सदस्य” और “मसीह में प्रतिज्ञा के भागीदार” होने में पूर्ण रूप से एक समान आधार पर हैं (इफिसियों 3:2-6; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 1:20-22 से)। “तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा” (यूहन्ना 10:16)!
- यीशु मसीह जगत में रहने वाले सारे ही लोगों का प्रभु है (तुलना करें मत्ती 28:18; फिलिप्पियों 2:11)।
- सुसमाचार सब लोगों के लिए उपलब्ध है। इस पृथ्वी के हर एक राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उद्धार पाने के नियम एक समान ही हैं: उसे अपने मन में यह विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु मसीह उसके पापों के लिए उसके बदले में क्रूस पर मरा और मृतकों में से जी उठा था (इसी प्रकार से, यह कि यीशु मसीह जीवित है)! उसे उद्धार पाने के लिए यीशु मसीह के नाम³ को पुकारना है; और उसे अंगीकार करना आवश्यक है कि यीशु मसीह ही प्रभु है (वचन 9 और 13)।

³ प्रभु के “नाम” का अर्थ वही है जैसा प्रभु ने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया है और इसका अर्थ वह नहीं है जैसा संसार के लोग, अन्य धर्मों के सदस्य, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र या विज्ञान उसके बारे में विचार करते हैं।

(1) पुराने नियम के समय में मसीह में विश्वास करने वालों और नए नियम के समय में ख्रीस्त पर विश्वास करने वालों के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है (रोमियों 10:11)

पौलुस यहाँ रोमियों 9:33ब (यशायाह 28:16) को दोहराता है, परन्तु उसमें “सभी या जो कोई” शब्द को जोड़ता है। “जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा” (रोमियों 10:11)। पौलुस “सभी या जो कोई” सभी शब्द को इसलिए जोड़ पाता है, क्योंकि जिस प्रकार से पुराने नियम के समय में यहूदियों को धर्मी ठहराया गया था और जिस प्रकार से नए नियम के समय में यहूदियों और अन्यजातियों को धर्मी ठहराया जा रहा है, उसमें कोई भी अंतर नहीं है। और यहूदियों के लिए स्वीकार करने हेतु यह एक अत्यन्त कठिन सत्य था। क्या पौलुस वास्तव में यह घोषणा करता है कि यहूदी लोग, जो अब्राहम के बड़े विशेषाधिकार प्राप्त वंशज थे, वे परमेश्वर के दृष्टि में गैर यहूदियों की तुलना में कुछ भी अच्छे नहीं थे?

कुछ गैर यहूदी मसीहियों के लिए भी स्वीकार करने हेतु यह एक कठिन सत्य है, क्योंकि उन्होंने हमेशा से ही यह विश्वास किया था कि इस्राएल की वास्तविक प्रजा या यहूदी लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे और यह कि परमेश्वर के पास इस्राएल की वास्तविक प्रजा के लिए भविष्य में एक विशेष योजना है। वे पुराने नियम के प्रकाशन में कुछ विशेष भविष्यवाणियों के आधार पर इस पर विश्वास करते हैं।

हालाँकि, नए नियम के प्रकाशन की अभिभूत करने वाली ज्योति स्पष्ट रूप से यह सिखाती है कि यद्यपि पुराने नियम के समय में यहूदी राष्ट्र को कुछ विशेषाधिकार हासिल थे (रोमियों 9:4-5; इफिसियों 2:11-13), परन्तु यीशु मसीह के प्रथम आगमन के बाद से परमेश्वर यहूदी तथा गैर यहूदी लोगों के मध्य में और इस्राएल राष्ट्र तथा संसार के दूसरे अन्यजाति राष्ट्रों के मध्य में अब कोई अंतर नहीं करता है (रोमियों 10:12; 1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:28; इफिसियों 3:2-6; कुलुस्सियों 3:11; प्रकाशितवाक्य 21:10-14)!

पुराने नियम के समय में, यहूदियों का भविष्य में आने वाले मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार किया गया था (तुलना करें उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:6-9)। जिन यहूदियों ने विश्वास नहीं किया था उनको अस्वीकार कर दिया गया था (यशायाह 1:9; 10:20-23; होशे 1:6,9)। पुराने नियम के समय में प्रभु पर विश्वास करने वाले गैर यहूदियों को भी परमेश्वर की पुराने नियम की प्रजा में शामिल कर लिया गया था (यशायाह 56:1-8)। नए नियम के समय में, केवल यहूदियों का ही नहीं, परन्तु गैर यहूदियों (अन्यजातियों) का भी, *मसीह जो आ चुका है उस पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार किया गया है* और उनको परमेश्वर की एकमात्र प्रजा में शामिल कर लिया गया है (रोमियों 1:16-17; 2:11; 3:10-18,22-24,29-30; 4:9-12; 5:18-19; 9:24; 10:12; 11:32; 1 कुरिन्थियों 7:19; गलातियों 3:9,29; 5:6; 6:15; इफिसियों 2:14-18; 3:2-6; कुलुस्सियों 3:11; 1 पतरस 2:9-10)।

(2) यहूदियों के प्रभु और अन्यजातियों के प्रभु के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है (रोमियों 10:12)

“वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उदार है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।” पुराने नियम के समय में यह पहले से ही सत्य था (योएल 2:32) और नए नियम के समय में अभी भी सत्य है (प्रेरितों के काम 2:21; रोमियों 10:13)। केवल एकमात्र जीवित परमेश्वर अस्तित्ववान है। “मुझ से पहले कोई ईश्वर न हुआ, और न मेरे बाद कोई होगा। मैं ही यहोवा हूँ, और मुझे छोड़ (प्रभु) कोई उद्धारकर्ता नहीं” (यशायाह 43:10-11)। वही एकमात्र परमेश्वर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदियों का भी परमेश्वर है और यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले गैर यहूदियों का भी परमेश्वर है (रोमियों 3:29)।

यीशु मसीह ने स्वयं को जगत के सब लोगों और सब चीजों पर प्रभु और राजा के रूप में प्रकट किया (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-23; प्रकाशितवाक्य 17:14)। पृथ्वी पर निवास करने वाले सब लोगों पर यह यीशु मसीह का प्रभुत्व ही है जिसके कारण से पृथ्वी पर निवास करने वाली जातियों के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है! परमेश्वर सम्पन्न है (हागै 2:9; भजन 5:10-12) पृथ्वी पर रहने वाले उसके सब प्राणियों के लिए (प्रेरितों के काम 14:17) और वह सब विश्वासियों को यीशु मसीह में सब प्रकार की आशीषों से आशीषित करता है (इफिसियों 1:3; 2:7)। “मसीह में ईश्वरत्व की सारी सम्पूर्णता सदेह वास करती है” (कुलुस्सियों 2:9) और पृथ्वी के सब राष्ट्रों के मसीही उसकी सम्पूर्णता से एक के बाद दूसरी आशीष (अनुग्रह) को प्राप्त करते हैं (यूहन्ना 1:16-17)।

(3) प्रभु का नाम लेने वाले यहूदी या गैर यहूदी के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है (रोमियों 10:13)।

पौलुस योएल 2:32 का उद्धरण देता है, “जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा।” इसके साथ पौलुस पुराने नियम के प्रकाशन से यह पुष्टि करता है कि यहूदी या गैर यहूदी के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है। “प्रभु का नाम लेना” सर्वप्रथम उस प्रार्थना को संदर्भित करता है जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में आने के लिए कहता है। परन्तु उसके बाद में यह प्रभु की निरंतर चलने वाली आराधना को भी संदर्भित करता है। अच्छे से ध्यान दें कि पौलुस परमेश्वर (यहोवा) (इब्रानी में: याहवे) को संदर्भित करने वाले पुराने नियम के अनुच्छेद को प्रभु (यूनानी में: कुरियोस) यीशु मसीह में बिना विशिष्टता प्रकट किए लागू करता है! यह इस बात का एक और प्रमाण है कि प्रेरित पौलुस ने शिक्षा दी थी कि यीशु मसीह ही परमेश्वर है (रोमियों 9:5)। यह नए नियम के मसीहियों को अलग करने वाला चिह्न है कि उन्होंने यीशु मसीह को “प्रभु” (यूनानी में: कुरियोस) नाम दिया। इसी कारण से उन्होंने केवल परमेश्वर को दी जाने वाली आराधना से प्रभु यीशु मसीह की आराधना भी की थी (मत्ती 14:33; 28:9,17; लूका 24:52; यूहन्ना 9:38; प्रकाशितवाक्य 5:6-14)।

क्योंकि यहूदी और अन्यजाति के मध्य में कोई भी अंतर नहीं है, इसलिए सब लोगों पर चाहे यहूदी हो या गैर यहूदी, सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए, ताकि जितना सम्भव हो अधिकाधिक लोग बच जाएँ।

10:14-15

प्रश्न 5. मसीहियों को सुसमाचार का प्रचार किस प्रकार से करना चाहिए?

ध्यान दें। रोमियों 10:14-15 कहता है, “फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचारक बिना कैसे सुनें? और यदि भेजे न जाएं? तो कैसे प्रचार करें? जैसे लिखा है, “उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं!”

(1) सुसमाचार का प्रचार करने की अनिवार्यता।

यह वचन सिखाते हैं कि हर एक जन पर सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए। सुसमाचार के अनेक प्रारूपों में से किसी के द्वारा इसका प्रचार किए बिना, कोई भी जन यीशु मसीह पर विश्वास में नहीं आ सकता है।

(2) उद्धार की प्रक्रिया का ऐतिहासिक क्रम।

मानवीय दृष्टिकोण से देखा गया उद्धार की प्रक्रिया का ऐतिहासिक क्रम विपरीत क्रम में दिया गया है, इस कारण से परिणाम का उल्लेख पहले किया गया है और कारण का उल्लेख अंत में किया गया है। अधिकार प्राप्त संदेशवाहक सुसमाचार का प्रचार करते हैं। लोग सुसमाचार को सुनते हैं। वे सुसमाचार पर विश्वास करते

हैं (अर्थात्, यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण करते हैं तथा अपने मुँह से उसका अंगीकार करते हैं)। उन्होंने *उद्धार पा लिया है* (या धर्मो ठहराए गए हैं)। बाइबल के इस अनुच्छेद में विशेष रूप से यहूदी दृश्य में हैं (रोमियों 10:1-3, 19, 21; 11:1)। फिर भी, उद्धार की यह प्रक्रिया अन्यजातियों के लिए भी सत्य है। हर एक व्यक्ति को उस पर प्रतिक्रिया देना आवश्यक है जो वह सुनता है।

(3) सुसमाचार के अधिकार प्राप्त संदेशवाहक।

वह संदेशवाहक इसलिए अधिकार प्राप्त संदेशवाहक हैं, क्योंकि यीशु मसीह ने उनको भेजा था। “जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है; और जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजने वाले को तुच्छ जानता है” (लूका 10:16; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 5:18-20 से)। सुसमाचार का प्रचार करने वालों को यह जान लेना आवश्यक है कि यीशु मसीह ने सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उनको बुलाया और भेजा है। जिन लोगों को बुलाया नहीं गया और भेजा नहीं गया, वे झूठे भविष्यद्वक्ता हैं जो अपने मन की भ्रामक बातों का, झूठे स्वप्नों का, लापरवाह झूठों का और परमेश्वर के वचन की विकृतियों का प्रचार करते हैं (यिर्मयाह 23:9-40 पढ़ें)। परन्तु सुसमाचार का प्रचार करने वाले अपने श्रोताओं पर महान् आनन्द उंडेलते हैं (यशायाह 52:7 से तुलना करें)।

(4) यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत आमना-सामना तथा मुलाकात ही वास्तव में सुसमाचार का सुनना होता है।

लोगों को सुसमाचार सुनना चाहिए, अर्थात् लोगों को केवल उस बात को समझना ही नहीं चाहिए जो वे सुनते हैं, परन्तु *उस व्यक्ति को उत्तर देने के योग्य भी होना चाहिए जो उनसे बात कर रहा है!* ध्यान दें कि रोमियों 10:14 शाब्दिक रूप से कहता है, “फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिसकी नहीं सुनी, उस पर (उसमें) क्योंकर विश्वास करें? (न कि: “*उसके बारे में जिसकी उन्होंने नहीं सुनी*)? लूका 9:35 देखें, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, तुम्हें अवश्य ही इसकी बात सुननी चाहिए! (यूनानी: *dia rématos Christos*) (अनिवार्य)। स्वयं परमेश्वर (उसकी वाणी) के पुत्र को अवश्य सुनना चाहिए (केवल उसके बारे में संदेश को ही नहीं)!”

सुसमाचार के प्रचार में, लोगों को सामान्य रूप से यीशु मसीह के बारे में ही नहीं सुनना चाहिए, वरन् स्वयं यीशु मसीह को उनसे बातें करते हुए सुनना चाहिए! जब कभी भी सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, यीशु मसीह स्वयं लोगों से बातें करना चाहता है। रोमियों 10:17 बताता है, “विश्वास सुनने से आता है और सुनना मसीह के (न कि: उसके बारे में) विशेष वचन से होता है (यूनानी में: *dia rématos Christos*)! “यीशु मसीह के बारे में सुनना” यीशु मसीह से मुलाकात करना नहीं है। परन्तु “स्वयं यीशु मसीह को आप से बातें करते हुए सुनना” उसके साथ व्यक्तिगत मुलाकात करना है! जो वचन यीशु मसीह आप से व्यक्तिगत रूप से बोलते हैं, वही वह वचन है जो आप के हृदय पर पकड़ बनाता है और आप की सोच को बदल देता है!

(5) यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध को विश्वास कहते हैं।

यीशु मसीह में विश्वास किसी व्यक्ति को सुनाए गए सुसमाचार में यीशु मसीह के किसी विशेष वचन से व्यक्तिगत सामना होने से लाया जाता है। उसी प्रकार से यीशु मसीह से व्यक्तिगत मुलाकात को विश्वास कहते हैं जिसमें कि यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध (जुड़ाव) स्थापित किया जाता है! यीशु मसीह के बारे में सामान्य रूप से कुछ सत्यों को जान लेने को ही विश्वास नहीं कहते हैं। इसके बजाए उसका अनुसरण करने की उसकी व्यक्तिगत बुलाहट का आज्ञापालन करने को, उसका अनुसरण करने के लिए पहला कदम उठाने को जोखिम को और उसका अनुसरण करते रहने के निर्णय को विश्वास कहा जाता है। यीशु मसीह में बढ़ते हुए भरोसे को विश्वास कहा जाता है। विश्वास का अर्थ है कि इससे पहले कि आप उद्धार के लिए उसके नाम

को पुकारें, किसी भी अन्य आत्मविश्वास (विश्वास) का त्याग करना और अपनी एकमात्र सहायता के रूप में यीशु मसीह के सम्मुख आत्मसमर्पण करना।

10:16-21

प्रश्न 6. सुसमाचार की ओर प्रतिक्रिया करने की असफलता को क्षमा क्यों नहीं किया गया है?

ध्यान दें। निश्चित रूप से इस्राएली लोगों ने सुसमाचार सुना हुआ था, परन्तु अधिकांश इस्राएलियों ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया था (रोमियों 10:16-18)। निश्चित रूप से इस्राएली लोग आदर के साथ बहुत से अन्यजाति लोगों आशीष देने और उद्धार देने के परमेश्वर के उद्देश्य को जानते थे (उत्पत्ति 22:18), तब पर भी इस्राएल के बहुत सारे लोग हठीले होकर लगातार परमेश्वर की अवज्ञा करते रहे थे। स्तिफनुस ने कहा था, “हे हठीले, और मन और कान के खतनारिहत लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो। जैसा तुम्हारे बाप दादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो।” (प्रेरितों के काम 7:51)। जैसा कि नया नियम प्रदर्शित करता है, इतिहास उसी प्रकार से खुलता है जिस प्रकार से होने का भविष्यद्वक्ताओं ने अनुमान लगाया था। विश्वास न करने वाले यहूदी लोगों के पास परमेश्वर और उसके मसीह को अस्वीकार करने का दोष लगाने के लिए उनके स्वयं के अलावा कोई भी नहीं था। निश्चित रूप से विश्वास न करने वाले यहूदी लोगों का परमेश्वर का परिणामी अस्वीकरण मनमाना नहीं था (रोमियों 10:19-21)।

जबकि रोमियों 10:14-15 यह सिखाता है कि कुछ लोग सुसमाचार का प्रचार करने में विश्वास से परिपूर्ण होकर प्रतिक्रिया करेंगे, वहीं रोमियों 10:16-21 यह सिखाता है कि अन्य लोग सुसमाचार की ओर प्रतिक्रिया नहीं करेंगे। यह पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं के समय में होने के साथ ही साथ नए नियम में यीशु के (यूहन्ना 1:11) और प्रेरितों के समय में भी पहले से ही हो चुका है (प्रेरितों के काम 13:45-46)। शुभ संदेश का प्रचार तो किया गया था, परन्तु सब इस्राएलियों ने उस शुभ संदेश को स्वीकार नहीं किया था (तुलना करें इब्रानियों 2:1; इब्रानियों 4:1-2 से)। इस बिन्दु पर, पौलुस रोमियों 9 से 11 अध्यायों के अपने विषय पर वापस लौटता है, और इस्राएल की वास्तविक प्रजा में से बहुत सारे लोगों के अविश्वास और अनाज्ञाकारिता की व्याख्या करता है।

(1) इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने सुसमाचार को स्वीकार नहीं किया था (रोमियों 10:16)।

यह उक्ति सच में ऐसा कहती है कि सारे ही इस्राएलियों ने शुभ संदेश को स्वीकार नहीं किया था।” यद्यपि इस्राएल की वास्तविक प्रजा पर सुसमाचार का प्रचार किया गया था, परन्तु सारे ही इस्राएलियों ने सुसमाचार की ओर प्रतिक्रिया नहीं दी थी। बल्कि, बहुत सारे यहूदियों ने सुसमाचार को अस्वीकार कर दिया था (रोमियों 9:27; 10:21; तुलना करें यशायाह 53:1; यूहन्ना 1:11; 1 कुरिन्थियों 10:5 से)।

(2) सुसमाचार को सुनने से विश्वास आता है (रोमियों 10:17)।

परमेश्वर के संदेश की ओर प्रतिक्रिया करने हेतु बाइबल अपने में बहुत सारी चेतावनियों को समाहित करती है (मत्ती 11:15; 13:9,43; लूका 8:8,18; 14:35; प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17,29; 3:6,13,22; 13:9)। सुसमाचार में जिस वचन का यहूदियों ने सामना किया था वह उस वचन की तुलना में कुछ भी कम नहीं था जो यीशु ने स्वयं उनसे बोला था! उन पर किया गया सुसमाचार का प्रचार यीशु मसीह के वचनों का सामना करना था और तत्पश्चात स्वयं यीशु के साथ एक मुलाकात करना था।

(3) इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने सुसमाचार को सुना था (रोमियों 10:18)।

इस्राएल की वास्तविक प्रजा इस बात का प्रतिरोध नहीं कर सकती थी कि उन्होंने सुसमाचार को नहीं सुना था। “मसीह के आत्मा ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बातें की थीं” (1 पतरस 1:10-12)।

- मूसा की प्रथम पाँच पुस्तकों में से उन्होंने पहले से ही मसीह के वचनों के सुन लिया था (तुलना करें उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:8; व्यवस्थाविवरण 30:11-14; रोमियों 10:6-8 से)।
- पुराने नियम के समय में उन्होंने पहले से ही मसीह के वचनों के सुन लिया था। पौलुस भजन 19:4 का उद्धरण रोमियों 10:18 में देता है। भजन 19:1-6 में, भजनकार परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के विषय में उसके सृष्टि करने और मितव्ययिता के कामों के माध्यम से बताता है, भजन 19:7-14 में, भजनकार परमेश्वर के विशेष प्रकाशन के विषय में उसके पुराने नियम के वचनों के माध्यम से बताता है। सम्पूर्ण बाइबल में यह शिक्षा प्रदान की गई है कि परमेश्वर के सामान्य और विशेष प्रकाशन अनुपूरक हैं (प्रेरितों के काम 17:24-31)। जबकि परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के विषय में सम्पूर्ण मानवीय इतिहास में बिना किसी अंतर के प्रचार किया गया था (तुलना करें रोमियों 1:19-20; 2:15; भजन 19 अध्याय से), वहीं इस्राएलियों पर परमेश्वर के विशेष प्रकाशन का सम्पूर्ण पुराने नियम के पवित्रशास्त्र में प्रचार किया गया था (रोमियों 3:21-22 से तुलना करें)।
- नए नियम के समय में उन्होंने पहले से ही मसीह के वचनों के सुन लिया था। सुसमाचार का प्रचार किया गया था, चले बनाए गए थे, और बिना किसी अंतर के यहूदियों और गैर यहूदियों तक बाइबल पहुँच गई थी (मत्ती 24:14; 28:19; प्रेरितों के काम 1:8; रोमियों 1:16; 2 पतरस 3:1-2, 15-16)। प्रेरितों के दिनों में, सारे ही ज्ञात संसार में शीघ्रता से सुसमाचार फैल गया था (रोमियों 15:8-12, 22-24; फिलिप्पियों 1:12-13; कुलुस्सियों 1:6; यूहन्ना 12:19; प्रेरितों के काम 2:41, 47; 4:4; 17:6)। सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से संसार के दूरस्थ भागों में, परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन का प्रतिमान ही अब परमेश्वर के विशेष प्रकाशन का प्रतिमान बन गया है!

(4) इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने सुसमाचार को समझ लिया था (रोमियों 10:19)।

यहूदी लोग इस बात को नहीं बोल सकते थे कि उन्होंने सुसमाचार को समझा नहीं था। यह उनकी अनभिज्ञता नहीं थी, परन्तु यह उनकी हठीली अनिच्छा ही थी जो उनके अविश्वास का कारण थी। इस्राएली प्रजा को उद्धार के मार्ग के विषय में पर्याप्त ज्ञान और समझ प्राप्त थी ताकि उनको उनके अविश्वास के प्रति पूर्ण रूप से उत्तरदायी ठहराया जाए।

पौलुस व्यवस्थाविवरण 32:21इ-22 में मूसा की बातों का उद्धरण देता है। “क्योंकि इस्राएल ने ऐसी वस्तु मान कर जो ईश्वर नहीं (प्रतिमाएँ) हैं, परमेश्वर में जलन उत्पन्न की, इसलिये परमेश्वर भी उनके द्वारा जो प्रजा नहीं हैं इस्राएल के मन में जलन उत्पन्न करेगा (अर्थात्, वह कलीसिया जो मुख्य रूप से गैर यहूदी लोगों से मिल कर बनी है)।” अपनी मूर्तिपूजा से इस्राएल ने परमेश्वर के क्रोध की अग्नि को भड़का दिया जो मृत्यु के स्थान (नरक) में जलती रहेगी और उस देश तथा उसके लोगों को भस्म कर देगी। “एक व्यक्ति कैसे एक हजार का पीछा कर सकता है या दो व्यक्ति कैसे दस हजार से लड़ सकते हैं, जब तक कि उनकी चट्टान ने उनको (विश्वास न करने वाले इस्राएली) बेच न दिया हो और उनको त्याग न दिया हो (व्यवस्थाविवरण 32:21-22, 30; यशायाह 30:15-17)? विश्वास करने वालों के लिए सामान्य नियम इसके विपरीत है: “और तुम में से पाँच मनुष्य सौ को और सौ मनुष्य दस हजार को खदेड़ेंगे” (लैव्यव्यवस्था 26:8)। “तुम में से एक मनुष्य हजार मनुष्यों को भगाएगा, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार तुम्हारी ओर से लड़ता है” (यहोशू 23:10)! उन मूर्तिपूजा करने वाले लोगों की (उनकी प्रतिमाएँ) “चट्टान” सच्चे विश्वासियों की चट्टान (यहोवा) के समान नहीं है” (व्यवस्थाविवरण 32:31-33)!

इस्राएल के अपने लोगों के बजाए एक अन्य अत्यन्त बड़ा लोगों का समूह उठेगा (अर्थात्, कलीसिया) जो विभिन्न (मुख्य रूप से अन्यजाति) देशों के विश्वासियों से बना होगा। परमेश्वर कहता है, “इसलिए मैं भी उनके द्वारा जो मेरी प्रजा नहीं हैं, उनके मन में जलन उत्पन्न करूँगा; और एक मूढ़ जाति के द्वारा उन्हें रिस

दिलाऊंगा” (व्यवस्थाविवरण 32:21)। प्राथमिक रूप से पुराने नियम में इस देश के पास परमेश्वर के विशेष प्रकाशन का कोई ज्ञान या समझ नहीं होगी। तौभी, जो विशेषाधिकार इस्राएल को प्रदान किए गए थे, वे उन लोगों को प्रदान किए जाएंगे “जो प्रजा नहीं हैं” (अर्थात् कलीसिया)।

मत्ती 21:42-44 में यीशु के मन में व्यवस्थाविवरण 32 अध्याय था जब वह कहता है, “जिस पत्थर (चट्टान) को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया”; यह प्रभु की ओर से हुआ... इसलिए परमेश्वर का राज्य इस्राएल से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा” (मत्ती 21:42-44)।

प्रेरितों के काम 13:44-48 में पौलुस के मन में भी व्यवस्थाविवरण 32 अध्याय था जब वह कहता है, “अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें (उदाहरण के लिए यहूदियों को) सुनाया जाता। परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम (प्रेरित, प्रचारक, मसीही कलीसिया) अन्यजातियों (गैर यहूदियों) की ओर फिरते हैं। क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है: “कि मैंने तुझे (एकवचन) (अर्थात्, अपने प्रेरितों के साथ नए नियम की कलीसिया को) अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराया है (मत्ती 5:14 से तुलना करें), ताकि तू पृथ्वी के छोर तक उद्धार का द्वार हो।” “यह सुन कर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे: और जितने अनन्त जीवन के लिए ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया” (प्रेरितों के काम 13:48)।”

परन्तु इब्रानी भाषा में यशायाह 49:6 कहता है, “यह तो हलकी सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे जाति-जाति के लिये ज्योति ठहराऊंगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।” इब्रानी भाषा और यूनानी भाषा दोनों के लेख सत्य हैं: अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराने के लिए परमेश्वर ने यीशु मसीह (यूहन्ना 8:12) और उसकी कलीसिया (मत्ती 5:14) को भेजा।

उसी प्रकार से, यहूदियों ने न केवल सुसमाचार को और उद्धार पाने की शर्तों को समझा, वरन् यह भी समझा कि परमेश्वर ने अन्यजातियों में सुसमाचार प्रचार करने और उनको उद्धार देने के लिए अपने प्रकाशन के विस्तार हेतु योजना बनाई थी! इतिहास उसी प्रकार से खुला था जैसा होने का भविष्यद्वक्ताओं ने अनुमान लगाया था।

(5) इस्राएल की वास्तविक प्रजा अपने अविश्वास, अनाज्ञाकारिता और हठ से होकर गुजरती है (रोमियों 10:20)।

यशायाह 65:1 में यशायाह द्वारा कही गई बातों का पौलुस उद्धरण देता है। जब कि यशायाह इस्राएली प्रजा को संदर्भित करता है, परन्तु पौलुस उन्हीं बातों को अन्यजातियों पर लागू करता है।

पुराने नियम में, इस्राएल ने शिकायत की थी कि यहोवा (इब्रानी में: याहवे) ने स्वयं को स्वर्ग में छिपा लिया था (यशायाह 63:9) और यह कि चुप होकर अपने आप को रोके हुए था (यशायाह 64:12)। यहोवा ने इस्राएल की शिकायत का उत्तर दिया और कहा वह स्वयं को इस्राएल पर प्रकट करने की बड़ी इच्छा रखता था और वास्तव में उसने अपने आप को इस्राएल पर प्रकट किया था, इस तथ्य के बावजूद कि इस्राएल ने यहोवा से इसके लिए नहीं कहा था, न ही यहोवा की खोज की थी और न ही यहोवा के नाम को पुकारा था। यहोवा की स्वेच्छा और धीरज के बावजूद, इस्राएल ने अविश्वास (रोमियों 9:32), अनाज्ञाकारिता (इब्रानियों 4:1-6) और हठ (रोमियों 10:21) के साथ प्रत्युत्तर दिया। इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने यहोवा के अनुग्रह को अस्वीकार कर दिया था। “तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो” (गलातियों 5:4)! इस्राएल की वास्तविक प्रजा ने धार्मिकता को इसलिए प्राप्त नहीं किया था, क्योंकि उन्होंने

(मसीही) विश्वास पर नहीं, परन्तु अपनी ही उपलब्धियों पर निर्माण किया था। उन्होंने “ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई” थी (रोमियों 9:32)।

जिस प्रकार से पौलुस ने उद्धरण तो होशे 2:23 और 1:10 का दिया था, परन्तु रोमियों 9:25-26 में अन्यजातियों पर इसे लागू किया था, उसी प्रकार से वह यशायाह 65:1 का उद्धरण देता है और रोमियों 10:20 में अन्यजातियों पर इसे लागू करता है। पुराने नियम के समय में, यहूदियों ने जिस समय पर यहोवा को खोजा भी नहीं था उस समय पर भी उन्होंने उसे पा लेने के विशेषाधिकार का आनन्द उठाया था। अब नए नियम के समय में, अन्यजाति लोग (और यहूदी लोग भी, यदि वे ऐसा करना चाहें तो) इस विशेषाधिकार का आनन्द उठाते हैं! पौलुस पुराने नियम के समय में परमेश्वर के निर्मोल और दयालु अनुग्रह का उद्धरण देता है और नए नियम के समय में इसे अन्यजाति देशों पर लागू करता है!

यह तथ्य कि अब परमेश्वर स्वयं को अन्यजातियों पर प्रकट कर रहा था और यह कि परमेश्वर अन्यजातियों को मिल गया था एक ऐसा सत्य था जिस पर बहुत से यहूदी आसानी से विश्वास नहीं कर पाए थे और यहाँ तक कि आज तक भी उसे स्वीकार नहीं कर पाए थे। यह तथ्य कि अजनबी और परदेशी भी परमेश्वर की वाचा पाए हुए लोगों का भाग (यशायाह 49:6; 56:1-8 से तुलना करें) पूर्णतः एक समान नियमों पर बन जाएंगे (इफिसियों 3:2-6) इस बात ने यहूदियों को क्रोधित कर दिया था। संसार की सब जातियों में सुसमाचार को फैलाने का उपोत्पाद इस्राएल की वास्तविक प्रजा⁴ को उकसाना और क्रोध दिलाना है (रोमियों 11:14)। यह सत्य बल देता है कि न तो यहूदी लोग और न ही कोई और जाति या एकल व्यक्ति बाइबल के परमेश्वर पर किसी भी वास्तविक दावे को कर सकता है! परमेश्वर के पास जिसे वह चाहता है उस बदल देने का सम्प्रभुत्व अधिकार (विशेषाधिकार) है।

(6) इस्राएल की वास्तविक प्रजा बाइबल के परमेश्वर और उसके मसीह का

इन्कार करने के लिए उत्तरदायी बनी रहती है (रोमियों 10:21)।

यीशु मसीह ने भजन 118:22-23 को उद्धरित किया था। वह “चट्टान” (व्यवस्थाविवरण 32:30) जिसे राजमिस्त्रियों (इस्राएल के धार्मिक अगुवों और शिक्षकों) ने मसीह के रूप में अस्वीकार कर दिया था, वही “सबसे ऊपर का पत्थर” हो गया’ (अर्थात्, प्रत्येक विश्वासी के लिए उद्धारकर्ता और प्रभु)। इसीलिए, इस्राएल में पाए जाने वाले अविश्वासी और अनाज्ञाकारी लोगों से राज्य (और उसके विशेषाधिकार) ले लिए जाएंगे और “उसका फल लाने वाले लोगों को” दे दिए जाएंगे (यहूदियों और अन्यजातियों के मध्य में पाए जाने वाले विश्वासी और आज्ञाकारी लोग)। इस्राएल में पाए जाने वाले अविश्वासी और अनाज्ञाकारी लोगों ने उस पत्थर (यीशु मसीह) पर ठोकर खाई थी और चकनाचूर हो गए थे (मत्ती 21:41-45)! परन्तु प्रत्येक जाति में पाए जाने वाले विश्वासी और आज्ञाकारी लोगों के लिए वह पत्थर कोने का बहुमूल्य पत्थर बन जाएगा। वह व्यक्ति “जो उस पर भरोसा करता है कभी लज्जित न होगा” (1 पतरस 2:6-10)।

यशायाह 65:2 में से पौलुस यशायाह का उद्धरण देता है। परमेश्वर ने इस्राएल की वास्तविक प्रजा के विषय में कहा था, “मैं एक हठीली जाति के लोगों की ओर दिन भर फैलाए रहा” (मत्ती 23:37-38 से तुलना करें)। पौलुस अन्यजातियों पर प्रदर्शित किए गए अनुग्रह के साथ इस्राएल की निरंतर अनाज्ञाकारिता की विषमता को दर्शाता है। परमेश्वर का धीरज और प्रेम भरी दया किसी एक जाति के लिए नहीं थी, परन्तु एक निरंतर अनाज्ञाकारी और हठीली जाति के लिए भी थी। यह परमेश्वर के अनुग्रह में वृद्धि तो करता है, परन्तु उसी समय पर इस्राएल के बलवा करने की गहराई को भी प्रकट करता है।

4 इसके साथ ही इस्लाम इसलिए अपमान महसूस करता है, क्योंकि मक्का और मदीना में इस्लाम ने बहुत से सिद्धांतों को यहूदियों से अपना लिया था। उदाहरण के लिए, इस्लाम को मानने वाले यह दावा करते हैं कि परमेश्वर ने अपने आप को यीशु मसीह में प्रकट नहीं किया था, और यह कि यीशु मसीह, मसीहा नहीं है, और यह भी कि यीशु मसीह क्रूस पर नहीं मरा था और न ही मृतकों में से जिलाया गया था।

फिर भी, अन्यजातियों और यहूदियों के लिए बाइबल का संदेश आज भी यही है, “कि यदि तू अपने मुँह से *यीशु को प्रभु जान कर* अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास कर, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुए में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 11:23 से तुलना करें; इब्रानियों 4:1 से तुलना करें)।” यहूदियों

और गैर यहूदियों के लिए उद्धार पाने का एकमात्र तरीका यीशु मसीह पर विश्वास करना है (यूहन्ना 3:16; प्रेरितों के काम 4:12; प्रेरितों के काम 16:31)।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं ?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 10:1-21 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें ?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 10:1-21 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 10:1. आप के मन की इच्छा और परमेश्वर से की जाने वाली प्रार्थना संसार के खोए हुए लोगों के लिए हो जाए।
- 10:2. जैसा कि बाइबल में प्रकट किया गया है कि ऐसा धार्मिक उत्साह जो सत्य के ज्ञान पर आधारित नहीं है वह बिल्कुल व्यर्थ है।
- 10:3. परमेश्वर के सम्मुख अपनी स्वयं की धार्मिकता को स्थापित करने का कभी प्रयास न करें। बजाए इसके, उसकी धार्मिकता को ग्रहण करें।
- 10:9-10. अपने पूरे मन से यीशु मसीह पर विश्वास करें और अन्यो पर अपने विश्वास का अपने मुँह से अंगीकार करें।
- 10:14-15. आश्वस्त रहें कि लोग तब तक विश्वास नहीं कर सकते हैं, जब तक कि वे सुसमाचार को सुन और समझ नहीं लेते हैं।
- 10:16. सुनिश्चित करें कि हर बार जब आप बाइबल के संदेश को सुनते हैं तो आप वास्तव में उसकी आज्ञाकारिता के अधीन हो जाते हैं।
- 10:19-20. जाकर उन लोगों को सुसमाचार सुनाएँ, जिन्होंने पहले कभी भी इस नहीं सुना है, क्योंकि परमेश्वर ने वायदा किया था कि वे परमेश्वर को पाएँगे।

2. रोमियों 10:1-21 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं परमेश्वर के उस वचन की आज्ञाकारिता के निरंतर अधीन होते रहना चाहता हूँ, जिसे मैं अपने शान्त समय में पढ़ता हूँ और कलीसिया में सुनता हूँ।

मैं जाकर उन लोगों को सुसमाचार सुनाना चाहता हूँ, जिन्होंने पहले कभी भी इस नहीं सुना था।

चरण 5. प्रार्थना।**प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 10:1-21 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5**प्रार्थना** (8 मिनट)**(प्रतिक्रियाएँ)****दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में **प्रार्थना करना जारी रखें**। एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6**तैयारी** (2 मिनट)**(सौंपा गया कार्य)****अगले अध्याय के लिए**

(**समूह अगुवा**। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण**। चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 10:1-21 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें**।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय**। प्रतिदिन यशायाह 48, 49, 52 और 53 के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना**। (1) परमेश्वर की उपस्थिति: इब्रानियों 13:5-6। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना**। लूका 16:1-13 में निहित “चतुर भण्डारी” के दृष्टांत की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. **प्रार्थना**। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें**। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

[यीशु मसीह के दृष्टान्त]

माँगने वाला पुत्र

मत्ती 7:7-12 और लूका 11:9-13 में “माँगने वाले पुत्र का दृष्टान्त”

परमेश्वर के राज्य में सहज और निरन्तर आग्रह करने वाली प्रार्थना के विषय में हैं।

पढ़ें मत्ती 7:7-12 और लूका 11:9-13

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

वर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं ?

ध्यान दें।

इस दृष्टान्त की कहानी एक प्रश्न के रूप में है। जब बच्चे अपने पिता से अच्छी वस्तुएँ माँगते हैं, तो सांसारिक पिता कभी उन्हें बुरी वस्तुएँ नहीं देंगे! हालाँकि सांसारिक पिता निश्चित रूप से परिपूर्ण नहीं होते हैं, यहाँ तक कि वे पापी और कभी-कभी बुरे भी होते हैं, फिर भी वे अपने बच्चों को अच्छे उपहार देना जानते हैं! मत्ती में, यीशु रोटी और पत्थर, मछली और साँप की बात करते हैं, लूका में वह मछली और साँप, अण्डे और एक बिच्छू के विषय में बताते हैं। कहानी के इन सभी तत्वों को आसानी से समझा जा सकता है।

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी के” संदर्भ में दृष्टान्त की “परिस्थिति” और “व्याख्या या अनुप्रयोग” हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व वर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है ?

ध्यान दें।

लूका 11 में लिखी हुई पुत्र द्वारा माँगे जाने की परिस्थिति, कहानी, व्याख्या या अनुप्रयोग मत्ती 7 में लिखे हुए उसी दृष्टान्त से अलग है। ये यह दर्शाता है कि यीशु ने एक ही सत्य को अलग-अलग परिस्थितियों में एक से अधिक बार बताया, जैसे आज के शिक्षक करते हैं।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 5-7 में पायी जाती है।

इसमें पर्वत पर दिए गए उपदेशों का उल्लेख है जो धार्मिकता के साथ जीवन को जीने के तरीके की माँग करता है। ये माँगें आसान नहीं हैं। परमेश्वर के बिना, उसके राज्य के अधिकारी, राज्य की आवश्यकताओं को

पूरा नहीं कर सकते। इसलिए, यीशु ने शिक्षाओं को सुननेवाले लोगों से यह आग्रह किया कि वे ईमानदारी से प्रार्थना करना जारी रखें। यीशु ने उन्हें माँगना, ढूँढ़ना और खटखटाना सिखाया। लेकिन प्रत्येक शिक्षा का अर्थ उसकी पिछली शिक्षा के अर्थ से अधिक है।

माँगने का अर्थ विनम्रता और आवश्यकता के प्रति चेतना है। “माँगने” शब्द का अर्थ है जैसे कि एक बच्चा अपने पिता से माँगता है या एक सेवक अपने मालिक से माँगता है। याकूब 4:2 सिखाता है कि जो लोग माँगते नहीं, उन्हें कुछ मिलता भी नहीं है। लूका 18 में, फरीसी कुछ नहीं माँगता। उसे भी कुछ नहीं मिलता है! माँगने के बजाय, वह परमेश्वर को बताता है कि वह कितना भला है। लेकिन चुंगी लेनेवाले ने परमेश्वर से अपने लिये दया को माँगा। उस व्यक्तिगत परमेश्वर से माँगने में विश्वास रखना जिसके साथ वह व्यक्ति संगति करता हो। जब वह माँगता है, तो वह बदले में उसके उत्तर की आशा भी रखता है। और यह परमेश्वर पर विश्वास होने को दर्शाता है जो कुछ भी कर सकता है, और वह करता है और उत्तर भी देगा।

ढूँढ़ने का अर्थ है माँगना और साथ ही साथ कार्य भी करना। “ढूँढ़ने” का अर्थ है, प्राप्त करने के लिए ढूँढ़ना, खोजने के लिये ढूँढ़ना, पाने के लिये इच्छुक होना। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति बाइबल को समझने के लिए प्रार्थना करता है, तो उसे स्वयं बाइबल का अध्ययन करना चाहिए, अन्य मसीहियों से मिलकर बाइबल पर चर्चा करनी चाहिए और बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार जीवन को व्यतीत करने का प्रयास करना चाहिए। या जब कोई व्यक्ति किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता है, तो उसे इस व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार सहायता करने की इच्छा रखनी चाहिए और इस बात को देखना चाहिए कि इस व्यक्ति के लिए किस प्रकार की सहायता सबसे उपयुक्त होगी, इसे वास्तविक रूप से क्या सहायता मिल सकती है और इसके बारे में कुछ करे।

खटखटाने का अर्थ है माँगना और कार्य करने के साथ-साथ आग्रह करना। “खटखटाने” शब्द का अर्थ है कि व्यक्ति दरवाज़ा खोलने तक खटखटाता रहता है। इसका अर्थ यह है कि जब तक उसे कोई जवाब नहीं दिया जाता, तब तक वह आग्रह करते हुए खटखटाता रहता है। सभी तीनों क्रियाएँ निरन्तर वर्तमान काल में हैं और इसका अर्थ है कि आग्रह तीनों क्रियाओं में निहित है : निरन्तर “माँगते रहो!” “ढूँढ़ते रहो!” “खटखटाते रहो!”

तीनों आग्रहों के बाद तीन वायदे होते हैं। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर द्वारा ठहराई गई बातों को पूरा करता है, तो परमेश्वर अपने द्वारा किये गये वायदों को पूरा करता है। जो कोई माँगेगा उसे मिलेगा। जो कोई ढूँढ़ेगा वह पाएगा। जो कोई खटखटायेगा, उसके लिए दरवाज़ा खोला जाएगा। परमेश्वर का वायदा है कि एक भी मसीही जन निराश नहीं होगा! इस समय पर, यीशु माँगने वाले पुत्र के दृष्टान्त के विषय में बताते हैं।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 7:9-10 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग मत्ती 7:11-12 में दिया गया है।

यदि सांसारिक पिता भी, जो स्वभाव से पापी और निर्बल हैं, अपने बच्चों को केवल अच्छी और ऐसी वस्तुएँ जिनसे उन्हें हानि न पहुँचे, देना जानते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता हमें अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा? लूका 11:13 में, यीशु ने कहा, हमारा स्वर्गीय पिता अपने माँगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा? एक ही दृष्टान्त के इन दो अनुप्रयोगों के बीच कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि पवित्र आत्मा पृथ्वी पर हर अच्छे वरदान का स्रोत है (याकूब 1:17)!

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

ओजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

पिता और उसका पुत्र। अनुप्रयोग में, यह स्पष्ट है कि यहाँ पिता और पुत्र, परमेश्वर पिता और एक मसीही जन को दर्शाते हैं। लेकिन इनकी तुलना एकदम समान नहीं है। जबकि सांसारिक पिता पापी और निर्बल हैं, परमेश्वर पिता, पवित्र और सर्वशक्तिमान है!

रोटी और मछली। ये “अच्छी बातों” को दर्शाते हैं जो परमेश्वर पिता मसीही जन को प्रार्थना के द्वारा देते हैं।

पत्थर और एक सांप। ये “बुरी वस्तुओं” को दर्शाते हैं जो कि परमेश्वर पिता एक मसीही जन को कभी नहीं देंगे!

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 7:7-12 में माँगने वाले पुत्र का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में स्पष्ट और निरन्तर प्रार्थना” के विषय में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार से है। “जब स्वर्गीय पिता परमेश्वर की सन्तानें उससे प्रार्थना करती हैं, तब वह अपनी किसी भी सन्तान को निराश नहीं होने देंगे। वह प्रत्येक उस प्रार्थना का उत्तर देंगे जिसमें माँगना और खटखटाना शामिल हो, यानि जो विश्वास से काम करता है और जो आग्रह करता रहता है।”

परमेश्वर पिता प्रार्थना करने वाली अपनी सन्तानों को कभी निराश नहीं होने देंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर पिता हमेशा अपनी सन्तानों को वह सबकुछ दे देंगे, जो कुछ भी वह उससे माँगेंगे। इसका मतलब यह है कि वह उन्हें ऐसा कुछ नहीं देंगे जो उनके लिए बुरा हो। वह उन्हें पवित्र आत्मा और पवित्र आत्मा के सभी वरदान देंगे। वह उन्हें आवश्यकतानुसार रूपान्तरित करेंगे, वह उन्हें आत्मा का फल देंगे जो उनके स्वभाव को बदल देगा (गलातियों 5:22-23), वह उन्हें आत्मा का ज्ञान देंगे, जिससे उनके शत्रु उनका सामना नहीं कर सकेंगे (मत्ती 10:19-20; प्रेरितों के काम 6:10), और वह उनके लिए दरवाजों को खोलेंगे, जिसे कोई भी व्यक्ति बन्द नहीं कर पाएगा (प्रकाशितवाक्य 3:7-8)। परमेश्वर पिता अपनी सन्तानों से प्रेम और उनकी देखभाल करते हैं, लेकिन वह चाहते हैं कि उनकी सन्तानें उन्हीं वस्तुओं को उनसे माँगे जिनकी उन्हें आवश्यकता हो।

प्रार्थना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य में सच्चे लोग कार्य करते समय प्रार्थना करते हैं, और वे यह कार्य आग्रह के साथ करते हैं।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

लूका 11:5-10 के “मध्यस्थता करने वाले मित्र” और लूका 18:1-8 के “निरन्तर आग्रह करने वाली विधवा” के दृष्टान्तों को नियमावली 11 के अध्याय 29 में देखें।

[यीशु मसीह के दृष्टान्त]

गृहस्थ, मजदूर और फसल

मत्ती 13:51-52 में “गृहस्थ का दृष्टान्त”
और मत्ती 9:35-38 में “मजदूर और फसल का दृष्टान्त”
परमेश्वर के राज्य में गवाह होने के विषय में बताता है

क. गृहस्थ का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 13:51-52

यीशु इस दृष्टान्त को एक कथन के रूप में कहते हैं। कथन इस विषय में है कि व्यवस्था के सच्चे शिक्षक कौन हैं।

यीशु के समय में, व्यवस्था के कई शिक्षक (रब्बी) थे, जिन्हें व्यवस्था के अन्य शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित किया गया था। वे विशेष रूप से औपचारिक व्यवस्था पर ध्यान देते थे और कई बार इन व्यवस्थाओं के स्पष्टीकरण और अनुप्रयोगों को बढ़ाया। इस तरह “प्राचीनों की परम्परा” अस्तित्व में आई (मत्ती 15:2, 25 अध्याय देखें)। व्यवस्था के ऐसे शिक्षक सच्चे शिक्षक नहीं थे।

यीशु कहते हैं कि व्यवस्था के सच्चे शिक्षक वे हैं जिन्हें परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित मामलों में अच्छी तरह से निर्देश दिया गया है! “परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित मामलों में निर्देश दिया जाना” का शाब्दिक अर्थ है, “परमेश्वर के राज्य में एक चेले का बनाया जाना”। “एक चेला” यीशु मसीह, राज्य के राजा का अनुयायी और सीखने वाला होता है! “राज्य” लोगों के हृदयों और जीवन में परमेश्वर की प्रभुता या शासन है, जिसके परिणामस्वरूप एक कलीसिया के रूप में उनकी रचना और वर्तमान समय के समाज में उनके प्रभाव और दूसरे आगमन के बाद नये स्वर्ग और नई पृथ्वी में उनका पूर्ण उद्धार होता है।

व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक वह है जो यीशु मसीह का अनुयायी होता है, न कि किसी शिक्षक (व्यवस्था के), धर्मशास्त्री या कलीसिया के सम्प्रदाय का। व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक, प्राचीनों की परम्पराओं (पहले के रब्बी) के अनुसार नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित प्रत्येक वस्तुओं का प्रशिक्षण प्राप्त करता है! व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक व्यक्तिगत रूप से अपने स्वयं के हृदय और जीवन पर परमेश्वर की प्रभुता या शासन को स्वीकार करता है, वह यीशु मसीह का चेला बनकर उसका अनुसरण करता है, और लगातार यीशु मसीह से, विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य से जुड़ी बातों को सीखता रहता है।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतीकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

वर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

गृहस्थ वह व्यक्ति होता है जो घर के मालिक के सभी मामलों और संपत्ति का प्रबंधन करता है।

भण्डारगृह घर का वह स्थान है, जहाँ मूल्यवान संपत्ति रखी जाती है। बेशक, पुरानी वस्तुओं के साथ-साथ भण्डार में नई वस्तुएँ भी होंगी। जब इन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, तो घर का मालिक या प्रबंधक उन्हें भण्डार से बाहर निकालते हैं। इन तत्वों को समझना आसान है।

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी के” संदर्भ में दृष्टान्त की “परिस्थिति” और “व्याख्या या अनुप्रयोग” हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के माहौल या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के पहले पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के बाद में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है ?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 13 में पायी जाती है।

मत्ती 13 में यीशु के आठ दृष्टान्त पाये जाते हैं। लोगों की समझ में नहीं आने वाले दृष्टान्त “पहेलियाँ” बनकर ही रह जाते हैं (मत्ती 13:11-15)। इसलिए यीशु पूछते हैं, “क्या तुम यह सब बातें समझ गए?” (मत्ती 13:51)।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 13:52 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त में ही दिया गया है।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं ?

ध्यान दें। यीशु ने इस दृष्टान्त का कोई विवरण नहीं दिया है। इसलिए हमें कहानी या संदर्भ से प्रासंगिक विवरणों का अर्थ निकालना चाहिए।

गृहस्थ या प्रबंधक। यह एक प्रासंगिक विवरण है क्योंकि यह व्यवस्था के प्रत्येक सच्चे शिक्षक को दर्शाता है, अर्थात् बाइबल के प्रत्येक सच्चे शिक्षक या बाइबल के विद्यार्थी को। यहाँ व्यवस्था के शिक्षक यीशु मसीह के चेलों का प्रतिनिधित्व करते हैं, विशेष रूप से वे जो पुराने नियम के विद्वान पुरुषों के घेरे से बाहर आते हैं, अर्थात् व्यवस्था के पूर्व शिक्षक या “रब्बी”। बाद में, प्रेरित पौलुस व्यवस्था के ऐसे शिक्षक का एक उदाहरण था।

भण्डार और उसका खजाना। यद्यपि इन तत्वों की व्याख्या नहीं की गई है, वे प्रासंगिक हैं और एक व्यक्ति के भीतर के सभी आत्मिक खजाने को दर्शाते हैं जो उसने अपने पूरे जीवन में जमा किया है। “पुरानी वस्तुएँ” वे

सभी आत्मिक ख़जाने हैं जो उसने पुराने नियम के अपने अध्ययन से अर्जित किए हैं। “नई वस्तुएँ” वे सभी आत्मिक ख़जाने हैं जो उसने यीशु मसीह के चेले होने के दौरान जमा किए थे, यह वस्तुएँ, जो इस बीच नए नियम में दर्ज की गई हैं। पुराने नियम में कई आत्मिक ख़जाने हैं, जैसे कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और प्रेम और धार्मिकता। व्यवस्था का एक सच्चा शिक्षक, यानि बाइबल का एक सच्चा शिक्षक या छात्र, पुराने नियम और नए नियम दोनों में निहित आत्मिक ख़जाने को बाहर लाने में सक्षम होगा। एक ओर, वह बाइबल का छात्र है और दूसरी ओर, वह बाइबल का शिक्षक है जो इन पुराने और नए आत्मिक ख़जाने को अन्य लोगों को सिखाता है।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:51-52 में गृहस्थ का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में चेला बनाने” और “परमेश्वर के राज्य में गवाह होने” के विषय में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार है। “परमेश्वर के राज्य में शिक्षकों का कर्तव्य व उत्तरदायित्व है कि वे पुराने और नए नियम दोनों का अध्ययन करें और उसमें छिपे सभी आत्मिक ख़जाने को बाहर निकालें। उनका कर्तव्य और उत्तरदायित्व यह भी है कि वे इन ख़जानों को अपने जीवन में लागू करें और दूसरों तक भी इस ख़जाने को पहुँचाएँ (उन्हें सिखाएँ)।”

चेला बनाना और गवाह बनना परमेश्वर के राज्य की दो मूलभूत विशेषताएँ हैं। परमेश्वर के राज्य में शिक्षक बाइबल का अध्ययन करते हैं और उसमें पाए जाने वाले सभी पुराने और नए ख़जाने को बाहर लेकर आते हैं। उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए, विश्वासपूर्वक बाइबल के पुराने अनन्त सिद्धांतों को थामे रहना चाहिए, और इन अनन्त सत्यों को उन नई स्थितियों पर लागू करने में सक्षम होना चाहिए जिनका वे सामना करते हैं। और जो कुछ उन्होंने सीखा उसे वे दूसरों तक पहुँचाएँ।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें व वर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांश क्या सिखाते हैं, दृष्टान्तों से इनकी तुलना करें?

एज़ा 7:10 – एज़ा ने स्वयं को तीन क्षेत्रों में अनुशासित किया : पहला, उसने परमेश्वर के वचन का अध्ययन

किया। दूसरा, उसने सीखी हुई बातों को अपने जीवन में लागू किया। तीसरा, उसने सीखी हुई बातें दूसरों को सिखाई। बाइबल के प्रत्येक शिक्षक के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे स्वयं को इन तीन क्षेत्रों में अनुशासित करें!

मत्ती 23:3-4 - यीशु ने व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों और फरीसियों को फटकार लगाई, क्योंकि जिन बातों का प्रचार वे करते थे, उन्हें वे स्वयं अपने जीवन में लागू नहीं करते थे। यह बाइबल के प्रत्येक शिक्षक के लिए एक चेतावनी है!

प्रेरितों के काम 20:18-27 - लोगों के सामने पौलुस ने एक पारदर्शी जीवन जीया, उसने दीनता के साथ प्रभु की सेवा की। उसने लोगों को सिखाया कि पुराने और नए नियम के अनुसार, परमेश्वर की इच्छा क्या है। लेकिन उसने उन्हें ऐसी बातें नहीं सिखाई जो उनके लिए मददगार न हों।

1 कुरिन्थियों 4:6 - उसने स्वयं को केवल उन्हीं बातों तक सीमित रखा जो बाइबल में लिखी हुई हैं। उसने बाइबल में लिखी हुई बातों में से न ही कुछ बढ़ाया और न ही कुछ घटाया (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में बताइए।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों या संदेश को संक्षेप में लिखिए: यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या किस पर *विश्वास करना* और हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) **परमेश्वर के राज्य में शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।**

वचन का शाब्दिक अर्थ यह है कि, “हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उसे हमेशा (उसके जीवन के नियुक्त समय पर) के लिये प्रशिक्षित किया गया है” परमेश्वर के राज्य में प्रत्येक शिक्षक (या चरवाहे या प्राचीन या सेवक) को परमेश्वर के राज्य का चेला होना चाहिए! उन्हें व्यक्तिगत रूप से अपने स्वयं के हृदय और जीवन पर यीशु मसीह की प्रभुता या शासन को स्वीकार करना चाहिए। जबकि व्यवस्था का एक यहूदी शिक्षक पुराने नियम का एक स्वीकृत छात्र था और विशेष रूप से पुराने नियम की सभी परम्पराओं को मानता था, जो निर्वासन और यीशु मसीह के समय के बीच प्राचीनों (रब्बी) द्वारा मानी जाती थी, परमेश्वर के वचन के अनुसार मसीही शिक्षक को परमेश्वर के राज्य की बातों के विषय में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जैसा कि नए नियम में और विशेष रूप से पर्वत पर दिए गए उपदेश में और यीशु मसीह के सभी दृष्टान्तों में पाया जाता है।¹ उसे इस बात के लिये प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि परमेश्वर के राज्य का स्वभाव कैसा है, इसमें प्रवेश कैसे किया जा सकता है, इसमें कैसे रहना चाहिए और संसार के दूसरों लोगों तक परमेश्वर के राज्य का प्रचार कैसे किया जाना चाहिए।

(2) **परमेश्वर के राज्य में शिक्षकों के ऊपर अपने घरों के लिए वस्तुओं का प्रबन्ध कराने का उत्तरदायित्व है।**

यीशु ऐसे शिक्षकों या सेवकों का सम्मान करते हैं, जिन्हें परमेश्वर के राज्य के, शिक्षक होने के लिए या प्रबन्धक होने या घरों के स्वामी के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। वे बहुत ही महत्वपूर्ण लोग हैं क्योंकि उनके पास अपने घरों के लिए वस्तुओं का प्रबन्ध कराने की ज़िम्मेदारी है, अर्थात्, उन लोगों की देखभाल के लिये जिन्हें परमेश्वर ने सौंपा है। परमेश्वर ने उनकी देखभाल के लिए अपना बहुत कीमती ख़जाना सौंपा है (मत्ती 2:11; 6:19-21; 12:35; 13:35; 19:21)। “तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है” (मत्ती 13:11)। इस ख़जाने में बाइबल का ज्ञान, यानी मसीही सिद्धान्त (शिक्षा) और जीवन का ज्ञान है।

¹ यही कारण है कि DOTA में दृष्टान्तों का अध्ययन इतना महत्वपूर्ण है!

यह मसीही सेवकों का कार्य और उत्तरदायित्व है कि वे इस ज्ञान को अन्य लोगों तक पहुँचाएँ, उन लोगों से आरम्भ करें जो उनके अपने घर या परिवार और उनकी मण्डली से सम्बन्धित हैं।

(3) परमेश्वर के राज्य में शिक्षक अपने भण्डार से नए और पुराने खजाने को बाहर लाने की क्षमता रखते हैं।

व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों और यीशु मसीह के बीच कुछ निम्नलिखित अन्तर थे।

यीशु मसीह ने सत्य बोला (यूहन्ना 14:6; 18:37)। यहूदी शिक्षकों की शिक्षाएँ भ्रष्ट और कपट से भरी हुई थीं। उन्होंने व्यवस्था (परमेश्वर के वचन) में अपने स्वयं के कई विचारों और निर्णयों को जोड़ा, या परमेश्वर के वचन (मत्ती 5:17-48) के आत्मिक महत्व को पूरी तरह से नज़रअंदाज कर दिया।

यीशु मसीह ने जीवन और मृत्यु, अनन्त उद्धार और शाप से जुड़ी हुई महत्वपूर्ण बातों को बताया (मत्ती 25:46; की तुलना पौलुस के विषय में प्रेरितों के काम 20:27,20 से करें)। यहूदी शिक्षक अक्सर छोटे-मोटे मामलों में (मत्ती 23:23) अपना समय बर्बाद करते थे।

यीशु मसीह की शिक्षाओं में एक पद्धति थी (उदाहरण के लिए, पर्वत पर उपदेश और उसके अन्य उपदेश)। जैसा की तालमुड (Talmud) ने बताया है कि यहूदी शिक्षक अक्सर भड़क उठते हैं।

यीशु मसीह ने दृष्टान्तों (मत्ती 13:3-51) और ठोस उदाहरणों (मत्ती 5:21-6:24) का उपयोग करके लोगों को जिज्ञासु बनाया। यहूदी शिक्षकों के उपदेश अक्सर धूल के समान सूखे होते थे।

यीशु मसीह ने लोगों से महान प्रेमी के रूप में बात की और उनमें कार्य किया (आश्चर्यकर्मों द्वारा), जो अपने सुननेवालों के वर्तमान और अनन्त उद्धार के लिये चिन्तित था। यहूदी शिक्षकों में स्वयं के लिए अति प्रेम था, लेकिन दूसरों के लिए उनके पास प्रेम की कमी थी जैसा कि बाइबल के कई अंशों से स्पष्ट है (मत्ती 23:1-33)।

यीशु मसीह ने अधिकार से बोला और काम किया, क्योंकि उन्हें उपदेश और सामर्थ्य सीधे परमेश्वर पिता के हृदय, मन (और स्वयं के ईश्वरीय रूप से) और वचन से प्राप्त होता था (मत्ती 5:17-18; 7:28-29; 21:12-14; यूहन्ना 12:49-50)। यहूदी शिक्षक लगातार चूक करनेवाले मानव स्रोतों से शिक्षा को प्राप्त कर रहे थे, व्यवस्था के एक शिक्षक दूसरे उस व्यवस्था के शिक्षक के हवालों का उल्लेख करते थे जो कि अन्य शिक्षक के हवालों का उल्लेख करते थे! यीशु ने बहते हुए जल के झरने को उनके लिए बहाया, जबकि उन्होंने टूटे हुए हौदों से पानी निकालने की कोशिश की (यिर्मयाह 2:13)।

परमेश्वर के राज्य के शिक्षकों और सेवकों को निरन्तर उस जल से ही पीना चाहिए जो यीशु मसीह स्वयं उन्हें देते हैं (यूहन्ना 4:14; प्रकाशितवाक्य 22:17)। परमेश्वर के अनुग्रह से, उन्हें हर समय अपने दृष्टिकोण में ताज़ा बने रहना चाहिए, और बाइबल के उन अनन्त प्राचीन सत्यों को नई परिस्थितियों पर लागू करना चाहिए, जिनका वे सामना करते हैं।

ख. मज़दूर और फसल का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 9:35-38

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

फसल। फसल के लिए सबसे बड़ा खेत होता है, जो संसार के सभी देशों में पाया जाता है! बढ़ते हुए बीज को फसल बनाने के लिए उस पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसी बीच, इसे तैयार करने लिए बहुत कुछ कार्य करना होता है (जिसमें – बोना, उगाना, पानी देना, जंगली पौधों को हटाना, सूरज की तेज़ तपन, पक्षियों और चोरों से बचाना आदि कार्य शामिल हैं)।

मजदूर। ये वे मजदूर हैं, जिन्हें खेत पर काम करने के लिए हर दिन रखा जाता है। हालाँकि, इस कहानी में, काम करने के लिए बहुत कम मजदूर हैं।

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 9:35-36 में पायी जाती है।

यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि यीशु मसीह की गलील की महान सेवकाई की एक सारांश की समीक्षा में पाई जाती है। यह सेवकाई मत्ती 4:12 से 15:20 में और दिसंबर 27 ई० से अप्रैल 29 ई० के बीच पाई जाती है। “यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा” (मत्ती 4:23; 9:35)। और कहा, “समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो” (मरकुस 1:15)। और यीशु ने चले बनाए और उनसे कहा, “मेरे पीछे चले आओ; मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाला बनाऊँगा” (मरकुस 1:17)। इस पर भीड़ ने बड़े उत्साह से इस बात का स्वागत किया, लेकिन व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों ने और भी अधिक ईर्ष्या से उसका विरोध किया।

“जब यीशु ने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए थे।” तब उस ने अपने चेलों से कहा, “पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे।” (मत्ती 9:36-38)।

व्याकुल। मूल रूप से इस शब्द का अर्थ है “आलोचना करना या शारीरिक रूप से दण्डित करना”। इसका उपयोग इस्राएल के लोगों की भीड़ के लिए किया जाता है, जो व्याकुल थी, जिसे दबाव में रखा जाता था, वे थके और भटके हुए थे, फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों द्वारा उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था (मत्ती 11:28)। इस्राएल के ये धर्मगुरु सब्त, धार्मिक पर्वों, माथे पर ताबीज़, और वस्त्रों की चौड़ी कोरों और झालरों और सिर पर प्रार्थना के वस्त्रों इत्यादि से जुड़े 613 मानव निर्मित व्यवस्थाओं के बोझ को उन लोगों पर लगातार डाल रहे थे (मत्ती 23:4-5)। ये धार्मिक शिक्षक अब्धे मार्गदर्शक थे जिन्होंने लोगों को गुमराह किया (मत्ती 15:14)। इसके विपरीत, यीशु मसीह ने व्यवस्था के गंभीर विषयों जैसे न्याय, दया और विश्वासयोग्यता पर जोर दिया (मत्ती 23:23)।

भटके हुए। मूल रूप से इस शब्द का अर्थ है “हतोत्साहित होना”, “भूमि पर असहाय पड़े रहना”, थके और खोये रहना, तिरस्कृत और त्यागे हुए!

चरवाहे के बिना भेड़। इस्राएल में लोगों की भीड़ भेड़ों के उस बड़े झुण्ड की समान थी, जिसका न कोई रखवाला था, न ही किसी को उनका ख्याल था, और भटक जाने पर उनका कोई दूढ़ने वाला नहीं था (यहेजकेल 34)। वे भूमि पर थककर लेटे हुए थे, और जंगली जानवरों, हवा और मौसम के ख़तरों के बीच, भूखे और प्यासे थे। उन्हें सच्चे मार्गदर्शक और करुणामय चरवाहे की आवश्यकता थी!

इस समय पर, यीशु ने मजदूरों और फसल के दृष्टान्त को बताया।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 9:37 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग मत्ती 9:38 और अध्याय 10 में दिया गया है।

मत्ती 9 में यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे मजदूरों की बढ़ती की प्रार्थना करें।

मत्ती 10 में, उन्होंने अपने चेलों को मजदूर बनने की शिक्षा दी।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक है? ध्यान दें।

यीशु किसी विशेष अर्थ का विवरण नहीं देते हैं। इसलिए विवरण को संदर्भ से समझने की आवश्यकता है।

फसल। इस प्रसंग में, यीशु इस्राएल के लोगों की भीड़ को देख रहा था। “फसल” इस्राएल में सभी खोए हुए लोगों को दर्शाती है (मत्ती 10:6)। हालाँकि, इस परिस्थिति में, यह संसार के सभी खोए हुए लोगों को भी संदर्भित करता है (मत्ती 24:14; 28:18-20)। यह इस प्रकार एक प्रासंगिक विवरण है।

मजदूर। इस प्रसंग में, यीशु उन लोगों के विषयों में बात कर रहे थे, जिन्हें परमेश्वर इस्राएल और संसार के सभी देशों में खोए हुए लोगों तक पहुँचाने के लिए भेजेगा (मत्ती 10:5-7; 28:18-20)। यह इस प्रकार एक प्रासंगिक विवरण है।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है? ध्यान दें।

मत्ती 9:35-38 में मजदूर और फसल का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में गवाह” होने के विषय में बताता है। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार से है। “लोगों के उस बड़े समूह जो एक साथ मिलकर उपज को दशति हैं और मजदूरों की कमी को जो इन उपज को इकट्ठा करेंगे, के बीच भिन्नता पाई जाती है।”

गवाह होना परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषताओं में से एक है और गवाही देना मजदूरों का विशेष कार्य है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों को यह प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर अपने खेत की फसल के लिए और मजदूरों को भेजें। यीशु ने मजदूरों की संख्या और उनकी गुणवत्ता दोनों पर जोर दिया। उन्हें कई और मजदूरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उन्हें उन मजदूरों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने भेजा है (मानवीय प्रशिक्षण केन्द्रों के विपरीत)। मजदूरों (स्थानीय और संसारभर की कलीसिया में) को स्व-नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन वे परमेश्वर द्वारा (बाइबल की शिक्षा के अनुसार) बुलाए और चुने होने चाहिए। वे ऐसे लोग होने चाहिए जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जिनके हृदय में संसार के खोए हुए लोगों के प्रति दया की भावना है।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

पढ़ें यशायाह 55:1-7; 61:1-3; यूहन्ना 3:6; रोमियों 10:12-13

खोज और चर्चा। बाइबल के प्रत्येक दृष्टान्त से क्या सीख मिलती है, इसकी तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाता है ?

ध्यान दें। वे उन सभी महत्वपूर्ण सत्यों को सिखाते हैं जिनका सुसमाचार पापियों तक पहुँच सकें और परमेश्वर स्वयं उनके मन फिराने और उद्धार में प्रसन्न होता है।

(इन वचनों को भी पढ़ें - 1 राजा 8:41-43; भजन 72:8-15; नीतिवचन 11:30; दानिय्येल 12:3; मीका 7:18-20; मलाकी 1:11; मत्ती 22:9; 23:37; 28:19-20; लूका 15; 19:10; यूहन्ना 10:16; प्रेरितों के काम 4:12; 1 कुरिन्थियों 9:22; 2 कुरिन्थियों 5:20-21; 1 तीमुथियुस 1:15; प्रकाशितवाक्य 3:20)।

[यीशु मसीह के दृष्टान्त]
हल पर हाथ रखना

लूका 9:61-62 में “हल पर हाथ रखने का दृष्टान्त”

परमेश्वर के राज्य में

चेला होने के विषय में बताता है।

पढ़ें लूका 9:51-62

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतीकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

वर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें। यीशु के समय में हल में एक मजबूत लकड़ी का डण्डा होता था जिसे तिरछे एक डण्डे पर बान्धकर बैल द्वारा खींचा जाता था। इस डण्डे के नीचे की ओर एक नुकीला सिरा होता है और वह हल के रूप में कार्य करता है। डण्डे का ऊपरी छोर एक सीधी रेखा में हल चलाने के लिए, हैंडल के रूप में कार्य करता है। हालाँकि, अगर कोई व्यक्ति आगे की बजाय पीछे की ओर देखता रहे, तो वह सीधा हल को नहीं जोत सकता। अपनी गलतियों को सुधारने के लिए, उसके लिए यह उचित होगा कि वह अपने हल को रोके और जो भी उसने किया है, उसे चारों ओर घूमकर देखे। लेकिन सिर्फ एक दिशा में देखते हुए दूसरी दिशा में जुताई करने से काम नहीं बनेगा।

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी के” संदर्भ में दृष्टान्त की “परिस्थिति” और “व्याख्या या अनुप्रयोग” हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व वर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 9:51-61 में पायी जाती है।

पद 51 में, यीशु ने अपना मुख यरूशलेम की ओर किया। वह वहाँ जाने के लिए दृढ़ था और उन सभी लोगों के लिए अपना जीवन दे दिया, जो उस पर विश्वास करते थे। यीशु मसीह का यह दृढ़ संकल्प भविष्य के तीन चेलों के दृढ़ संकल्प के विपरीत है!

यह सभी पद हमें लूका 9:23-24 और लूका 9:22 के बीच के सम्बन्ध की याद दिलाते हैं। पहले पद में, यीशु कहते हैं, “मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और

शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे।” और दूसरों पदों में उन सबसे उसने कहा, “यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।” यह ऐसा है जैसे यीशु कह रहे थे कि परमेश्वर ने उन्हें जो कार्य सौंपा था, उसे पूरा करने का उनका अपना दृढ़ संकल्प सभी मसीही चेलों के लिए उदाहरण होना चाहिए।

चेला होने के विषय में यीशु के दिये हुए उपदेश इस प्रकार से हैं :

एक सच्चे चेले की पहली चार विशेषताएँ लूका 14:26,27,33,34,35 में पाई जाती हैं। एक सच्चा चेला मसीह को अन्य सभी सम्बन्धों से ऊपर रखता है, वह मसीह के कष्टों में सहभागी बनता है, वह मसीह को अपनी सारी सम्पत्ति से ऊपर रखता है, और नमक के समान है : जो स्वाद को बढ़ाता है और भ्रष्ट आचरण का विरोध करता है।

एक सच्चे चेले की पाँचवीं विशेषता यह होती है कि वह पीछे की ओर वापस मुड़कर नहीं देखता। एक सच्चा चेला अन्त तक यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध रहता है। यह विशेषता उन तीन चेलों के दृढ़ संकल्प के विपरीत है जो चेला बनना चाहते हैं :

चेला बनने के लिए पहला इच्छुक व्यक्ति यीशु का अनुसरण करने के लिए बहुत उत्सुक था। उसने चेला बनने के लिये आवश्यक मूल्यों को चुकाना जरूरी नहीं समझा। उसने यीशु के पीछे की भीड़, आश्चर्यकर्म और लोगों के उत्साह को देखा, वह यीशु से करीबी से जुड़ना चाहता था जो इस सारे कार्यों का केन्द्र था। लेकिन जैसे ही सुसमाचार की कहानी को आगे हम देखते हैं, यहूदियों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया (यूहन्ना 5:18), गलीली प्रान्त ने उसे बाहर निकाल दिया (यूहन्ना 6:66), गदरेनियों के लोगों ने उससे उस क्षेत्र में से बाहर निकल जाने की विनती की (मत्ती 8:34), सामरिया प्रान्त ने उसे आवास देने से इनकार कर दिया (लूका 9:53), पृथ्वी के लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया (मत्ती 27:23) और यहाँ तक कि अन्त में स्वर्ग ने भी उसे छोड़ दिया (मत्ती 27:46)। दृढ़ चेला बने रहना संघर्ष, अस्वीकृति और पीड़ा के मूल्य को दर्शाता है!

चेला बनने के लिए दूसरा इच्छुक व्यक्ति यीशु का अनुसरण करने के लिए तैयार नहीं था। एक ओर, वह प्रेरितों के समान यीशु का करीबी अनुयायी बनना चाहता था। दूसरी ओर, उसने यीशु का अनुसरण करने के लिए अपनी शर्त रखी। वह पहले जाकर अपने पिता को दफनाना चाहता था, जिसकी कुछ समय पहले ही मृत्यु हुई थी। यीशु इस विशेष व्यक्ति के मन में इस सच्चाई को बिठाना चाहते थे कि वह, यीशु मसीह, प्रभुओं का प्रभु है और उसका पूरी रीति से, बिना किसी योग्यता, शर्त या सन्देह के अनुसरण करना चाहिए। वह इस व्यक्ति को यह समझाना चाहते थे कि परमेश्वर के राज्य में, परमेश्वर का आत्मिक परिवार सांसारिक पारिवारिक सम्बन्धों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। याद रखें कि यीशु यह ख़ास बात इस इच्छुक चेले से कह रहे हैं न कि वहाँ पर मौजूद सुनने वाले लोगों से। यीशु यह नहीं कहते हैं कि मसीहियों को अपने माता-पिता या उनके अन्तिम संस्कार का ख़याल नहीं रखना चाहिए। लेकिन यीशु कहते हैं कि एक मसीही को अपने माता-पिता से अधिक यीशु से प्रेम करना चाहिए। एक चेले को बिना किसी शर्त के यीशु का पालन करना चाहिए।

चेला बनने के लिए तीसरा इच्छुक व्यक्ति अज्ञानी था। वह शायद स्वयं या अपने परिवार को अच्छी तरह से नहीं जानता था। यीशु उसके मन के भीतर देखने में सक्षम था जो वह स्वयं नहीं देख सकता था (यूहन्ना 2:25)। यीशु उसके मन (विवेक) के विचार और उसके अनिश्चित (विवेक) प्रयोजनों को जानता था। वह इस व्यक्ति के हृदय और मन के विचारों को पढ़ने में सक्षम था। यीशु जानता था कि जब यह इच्छुक चेला अपने घर पहुँचेगा, तो वह अपने परिवार के उत्सुक और भावनात्मक दलीलों का आसान शिकार बन जाएगा ताकि वह घर में रहे और यीशु और उसके अन्य चेलों के साथ शामिल न हो।

इस समय पर, यीशु ने हल पर हाथ रखने के दृष्टान्त को बताया।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 9:62 में नीतिवचन के रूप में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग नीतिवचन में दिये गए हैं।

इसका निहित अर्थ यह है, “एक बार जब आप हल पर अपना हाथ रख देते हैं, तो फिर कभी पीछे मुड़कर न देखें! अन्यथा, आप परमेश्वर के राज्य में सेवा के योग्य नहीं!”

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक है ?

ध्यान दें। यीशु ने इस दृष्टान्त का कोई विवरण नहीं दिया है। इसलिए हमें कहानी या संदर्भ से प्रासंगिक विवरणों का अर्थ निकालना चाहिए।

वह व्यक्ति जो हल पर अपना हाथ रखता है। वह स्पष्ट रूप से वह व्यक्ति है जो यीशु मसीह का चेला बनना चाहता है या बनने का इच्छुक है। “हल पर हाथ रखने” का अर्थ है यीशु मसीह का चेला होने का निर्णय लेना और उसके लिए समर्पित रहना।

पीछे देखना। यह इस दृष्टान्त का केंद्रीय बिन्दु या मुख्य सन्देश है। यह तीन व्यक्ति, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने तरीके से चेला बनने की इच्छा रखे हुए था, ऐसा ही कार्य कर रहा था। पहले इच्छुक चेले ने मूल्य की गणना किए बिना यीशु मसीह का अनुसरण करने का निर्णय लिया, लेकिन बाद में उसे पीछे देखना पड़ा और उसके मूल्य की गणना करनी पड़ी।

दूसरा इच्छुक चेला केवल कुछ शर्तों के साथ यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहता था और वह पहले से ही अपने परिवार की जिम्मेदारियों को देख रहा था।

तीसरा इच्छुक चेला भी यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहता था, यह एहसास किये बिना कि उसके इस निर्णय पर उसके परिवार का क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और वह भी ऐसे लोगों की ओर देख रहा था, जिन्हें वह यीशु मसीह का अनुसरण करने से अधिक महत्वपूर्ण मानता था।

परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं। यह यीशु की अपनी व्याख्या और इस दृष्टान्त या नीतिवचन का अनुप्रयोग है। जो लोग पूर्ण रूप से समर्पित नहीं हैं और एक चेले के रूप में यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए इच्छुक नहीं हैं, वे परमेश्वर के राज्य में सेवा के योग्य नहीं हैं।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है,

अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

वर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 9:61-62 में हल पर हाथ रखने का दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य में चेला बनने के विषय में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार है। प्रत्येक व्यक्ति का उत्तरदायित्व है कि वह दृढ़ और समर्पित बना रहे। उसे अन्त तक एक चेले के रूप में यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए पूरी ईमानदारी से समर्पित होना चाहिए।”

समर्पण, विशेष रूप से चेले होने के प्रति समर्पण, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से समर्पित रहते हैं। दृष्टान्त में व्यक्ति का हृदय दो जगहों पर बाँटा हुआ था। एक ओर, वह यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहता था, लेकिन दूसरी ओर, वह अपने परिवार को प्रसन्न भी करना चाहता था। हालाँकि, यीशु मसीह चाहते हैं कि चेला होने के लिये किसी भी व्यक्ति का मन बाँटा हुआ न हो और वह पूर्ण रीति से उसके प्रति समर्पित रहे! एक इच्छुक चेले को यीशु का चेला बनने के मूल्य को समझना चाहिए। उसे स्वयं को यीशु मसीह को समर्पित करने का दृढ़ निर्णय लेना चाहिए और यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए पूरी ईमानदारी से स्वयं को समर्पित करना चाहिए। प्रत्येक दिन उसे स्वयं को पीछे मुड़कर छोड़ी हुई वस्तुओं (अर्थात्, उसका क्या मूल्य था) को देखने से रोकना चाहिए और केवल आगे की ओर ही देखते रहना चाहिए। यीशु मसीह चाहते हैं कि पूर्ण हृदय से चेले उनकी बातों के प्रति समर्पित रहें।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें व वर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांश क्या सिखाते हैं, दृष्टान्तों से इनकी तुलना करें?

ध्यान दें।

यहोशू 24:15 – इस्राएल के लोगों को केवल यहोवा की सेवा करने के लिए बुलाया गया था, लेकिन लगातार परीक्षाएँ आने के द्वारा वे उन देवताओं की सेवा करने लगे, जिस स्थान पर वे रह रहे थे। उनके ऊपर आसपास के लोगों के समान बनने का लगातार दबाव था। यहोशू ने कहा, “यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे (यहोशू 24:2), और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूँगा।” उसने इस्राएल के लोगों को चुनौती दी कि वे यहोवा (बाइबल में स्वयं को प्रगट करने वाले परमेश्वर) की सेवा करें, न कि अन्य देवी-देवताओं की। बाइबल के परमेश्वर के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं पर विश्वास करना असम्भव है!

1 राजाओं 18:16-40 – इस्राएल के लोगों को केवल परमेश्वर की उपासना करने के लिए बुलाया गया था, लेकिन वे वास्तव में देवताओं की सेवा करना चाहते थे, विशेषकर बाल देवता (उस समय मध्य पूर्व में कनानियों

का सबसे महत्वपूर्ण देवता) की। उनके हृदय यहोवा और बाल देवता के बीच बँटे हुए थे। एलिय्याह भविष्यद्वक्ता ने कहा, “तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो” (1 राजा 18:21)। उसने इस्राएल के लोगों को चुनौती दी कि वे या तो यहोवा की उपासना करें या अपने आसपास के लोगों के देवताओं की। बाइबल के परमेश्वर के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं पर विश्वास करना असम्भव है!

फिलिपियों 3:12-14 – प्रेरित पौलुस ने एक प्रतिज्ञा की जिसने पृथ्वी पर उसके पूरे जीवन को निर्धारित किया! उसने *एक काम* किया और वह यह था कि उसने जो पुरानी बातें थी उन्हें भूला दिया और आगे की बातों की ओर बढ़ता गया। वह लगातार अपने जीवन के लक्ष्य की ओर देखता रहा! इसी प्रकार का एक मन भजन 27:4; मरकुस 10:21, लूका 10:42 और यूहन्ना 9:25 में पाया जाता है।

[रोमियों के नाम पत्र]
बाइबल में पाई जाने वाली व्यवस्था

बाइबल में “व्यवस्था” (इब्रानी : तोरह, ग्रीक : नोमोस) शब्द के कई अर्थ हैं।

रोमियों के पत्र को समझने के लिए, हमें “व्यवस्था” शब्द के विभिन्न अर्थों को अलग करने की ज़रूरत है।

1 उद्धार के लिए परमेश्वर की परम अपेक्षा और दण्ड की आज्ञा के सभी मानकों के रूप में व्यवस्था।

(1) परमेश्वर की धार्मिक अपेक्षा के प्रकाशन के रूप में व्यवस्था।

बाइबल का परमेश्वर परम पवित्र (पाप से अलग) है और इसलिए वह चाहता है कि सभी लोगों को भी पवित्र और धर्मी (जो सही है उसके लिए समर्पित) होना चाहिए। निम्नलिखित बाइबल के पदों में, “व्यवस्था” मुख्य रूप से न्यायोचित (उद्धार) बातों में परमेश्वर की अपेक्षा को सन्दर्भित करता है। एक पूर्ण अर्थ में, व्यवस्था परमेश्वर के उद्धार, जीवनयापन के लिए कर्तव्य का पूर्ण नियम और निर्णय तथा दण्ड की आज्ञा के रूप में परमेश्वर के पूर्ण मानक है।

क्योंकि परमेश्वर परम पवित्र और धर्मी है, वह यह अपेक्षा करता और चाहता है कि :

- उसके सामने सभी लोग व्यवस्था की अवस्था (स्थिति) में पूरी रीति से पवित्र (100%) और धर्मी बने रहें। “इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (मत्ती 5:48)।
- उसके सामने सभी लोग वास्तव में पूर्ण (100%) पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत करें। “पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ” (1 पतरस 1:15-16)।
- सभी पापों का पूर्ण (100%) न्याय हो और उसका दण्ड मिले। “क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा” (सभोपदेशक 12:14)।

पवित्र परमेश्वर इन सभी सिद्ध बातों के अलावा और किसी बात की अपेक्षा नहीं करता। हर प्रकार का “पाप” परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं होने देता। हर प्रकार का पाप व्यवस्था का विरोध करता है (1 यूहन्ना 3:4) और इसके कारण मनुष्य पर परमेश्वर के न्याय और दण्ड की आज्ञा पड़ती है (गलातियों 3:10; याकूब 2:10)!

परमेश्वर की व्यवस्था मनुष्य द्वारा बनाई व्यवस्था के समान नहीं होती है, जहाँ सिर्फ 70% पास होना ही काफी होता है। परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार, आप या तो 100% सही हैं या आप 100% असफल हैं। आपको पूरी से तरह से बचाया, क्षमा किया गया और परमेश्वर की सन्तान बनाया गया है। या आप पूरी तरह से भटक गए हैं, आपको अभी तक क्षमा नहीं किया गया, और आपको अनन्त काल के लिए दोषी ठहराया गया है।

यह स्पष्ट है कि पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति कभी भी व्यवस्था को पूरा करने के द्वारा सिद्धता को प्राप्त नहीं कर सकता, और न ही वह उद्धार की परीक्षा को पार कर सकता है। क्योंकि “सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा (विशेषताएँ और स्वीकृति) से रहित हैं” (रोमियों 3:23)।

लेकिन यह भी स्पष्ट है कि जब तक विश्वास के द्वारा परमेश्वर किसी भी व्यक्ति पर अनुग्रह करके उसे यीशु मसीह में पूरी रीति से पवित्र (100%) और धर्मी (व्यवस्था की स्थिति में) नहीं बनाता, तब तक वह व्यक्ति बचाया

नहीं जा सकता (धर्म घोषित नहीं किया जा सकता है)। “परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा” (1 कुरिन्थियों 1:30)। “जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ” (2 कुरिन्थियों 5:21)।

रोमियों 2:14-15; 3:19-21अ; 4:13-15; 6:14-15; 7:1,4,6; 8:3,4,7; 10:4-5; और गलातियों 2:19,21; 3:2,5,10-13; 5:18 में “व्यवस्था” शब्द का यही अर्थ है।

(2) परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा के लिए प्रकाशन के रूप में व्यवस्था।

“व्यवस्था” परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा की एक सिद्ध अभिव्यक्ति है। इसलिए, परमेश्वर के स्वभाव को व्यवस्था की आज्ञाओं के द्वारा दर्शाया गया है! बाइबल में नैतिक आज्ञाएँ, शिक्षाएँ, सिद्धान्त और उदाहरण हैं, संक्षेप में, सम्पूर्ण बाइबल इसमें निहित है। यह परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा की एक सिद्ध अभिव्यक्ति है। परमेश्वर के स्वभाव को व्यवस्था की (नैतिक) आज्ञाओं के द्वारा दर्शाया गया है!

एक पूर्ण अर्थ में, व्यवस्था परमेश्वर के उद्धार, जीवनयापन के लिए कर्तव्य का पूर्ण नियम और निर्णय तथा दण्ड की आज्ञा के रूप में परमेश्वर के पूर्ण मानक है। व्यवस्था सिद्ध आज्ञाकारिता की अपेक्षा करती है (गलातियों 3:10; 5:3; याकूब 2:10; 1 यूहन्ना 3:4)।

पाप में गिरने से पहले, व्यवस्था के द्वारा अनन्त जीवन को प्राप्त किया जा सकता था (लैव्यव्यवस्था 18:5; रोमियों 7:10; 10:5; गलातियों 3:12)।

पाप में गिरने के बाद, व्यवस्था पापियों और अविश्वासियों को नहीं बचा सकती है, क्योंकि पापी और अविश्वासी लोग स्वयं को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति 100% समर्पित नहीं करते और ना ही वे स्वयं को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति 100% समर्पित कर सकते हैं (रोमियों 8:7-8)। यहाँ तक कि पाप में गिरने के बाद, विश्वासी जन (मसीही) पूरी तरह से व्यवस्था की अपेक्षाओं का पालन नहीं कर सकते (याकूब 2:10; 1 यूहन्ना 1:8,10), जबकि परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता इसकी मांग करती है (लैव्यव्यवस्था 18:5)। परमेश्वर मानव इतिहास और संसार में किसी भी व्यक्ति का व्यवस्था को पूरा करने की कोशिश करने के द्वारा न्याय नहीं करेंगे (रोमियों 3:19-20,28; गलातियों 2:16)!

(3) न्याय के रूप में व्यवस्था सभी के लिए अभिशाप है।

पाप में गिरने से पहले उद्धार और दण्ड के मानक के रूप में “व्यवस्था” को परमेश्वर की अपेक्षा के रूप में आदम को दिया गया (उत्पत्ति 2:16-17)। इसे सभी लोगों के हृदयों में भी लिखा गया (रोमियों 2:14-15; 1:32) ताकि कोई भी व्यक्ति बहाना न बना सके (रोमियों 3:19)।

मूसा और इस्राएल के लोगों को लिखित रूप में व्यवस्था दी गई (लैव्यव्यवस्था 18:5; व्यवस्थाविवरण 4:1; 6:24; नहेम्याह 9:29; यहजकेल 20:11,13,21; रोमियों 10:5)।

हालाँकि, पाप में गिरने के बाद मनुष्य ने अनन्त जीवन के अधिकार को खो दिया और व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा वह अनन्त जीवन को प्राप्त नहीं कर सकता। कोई भी व्यक्ति (मसीह के अलावा) व्यवस्था को बनाए नहीं रख सकता। व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करना एक अभिशाप है, जिसमें से केवल यीशु मसीह ही किसी व्यक्ति को स्वतंत्र (बचा सकता है) कर सकता है (गलातियों 3:10-25)।

(4) सम्पूर्ण पुराने नियम के प्रकाशन या वाचा के रूप में व्यवस्था।

नए नियम के समय में यहूदियों के लिए, “व्यवस्था” सम्पूर्ण पुराना नियम थी, विशेष रूप से मूसा की पांच पुस्तकें। व्यवस्था परमेश्वर की पूरी तरह से धार्मिक और पवित्र माँगें या अपेक्षाएँ थीं जिन्हें नैतिक, औपचारिक (रीति) और इस्राएलियों की व्यवस्थाओं के रूप में व्यक्त किया गया था। यहूदी व्यवस्थापकों ने इन व्यवस्थाओं को 613 पारम्परिक व्याख्याओं के रूप में सिखाया।

- पुराने नियम के समय के दौरान नैतिक व्यवस्थाओं (दस आज्ञाओं) ने लोगों को यह सिखाया कि कैसे उन्हें परमेश्वर द्वारा बचाए गए लोगों के रूप में परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से पवित्र और धार्मिकता के सम्बन्ध के साथ अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए।
- पुराने नियम के समय के दौरान औपचारिक व्यवस्थाओं (पवित्र लोगों, पवित्र स्थानों, पवित्र समय और पवित्र कार्यों के सम्बन्ध में) ने लोगों को यह सिखाया कि कैसे उन्हें परमेश्वर के करीब पहुँचना, उसकी आराधना और सेवा करनी चाहिए।
- पुराने नियम के समय के दौरान लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्थाओं (राजाओं और न्यायियों, दण्ड और क्षतिपूर्ति, युद्ध और विवाह, आदि के सम्बन्ध में व्यवस्था) ने यह सिखाया कि उन्हें अन्यजातियों के देशों के बीच परमेश्वर के धर्ममय राष्ट्र (इस्राएल) के रूप में कैसे कार्य करना चाहिए।

हालाँकि, यहूदियों ने इसे गलत तरीके से माना कि मूसा की व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश उन्हें बचा (उन्हें सही ठहरा) सकती है। लोगों को इस मान्यता से स्वतंत्र करने की आवश्यकता है कि व्यवस्था के काम उन्हें परमेश्वर के दृष्टिकोण में सही ठहरा सकते हैं। इसे “पुरानी वाचा या मूसा की व्यवस्था से छुटकारे” (और प्रत्येक वह व्यवस्था जो उद्धार पाने के लिए एक शर्त के रूप में है) के रूप में कहा जाता है। पुरानी वाचा या मूसा की व्यवस्था को “विधियों के लेख और उसके सहायक नियम, जो हमारे विरोध में था” (कुलुस्सियों 2:14) या “शब्द” कहा जाता है (2कुरिन्थियों 3:6) (रोमियों 7:6; गलातियों 3:10; 5:3; इब्रानियों 7:12,16,18-19,22; 8:5-13; 10:1-4)।

(5) यहूदी शिक्षकों की कई व्याख्याओं और परम्पराओं के अनुसार व्यवस्था।

नियमावली 11 के अध्याय 25 में “प्राचीनों की परम्परा” को “अन्धे व्यक्ति द्वारा अन्धे व्यक्ति की अगुवाई करने वाले दृष्टान्त” में देखें। यीशु मसीह और प्रेरितों ने उन व्याख्याओं, परम्पराओं और स्वनिर्मित बातों को अस्वीकार कर दिया, जो यहूदी शिक्षकों द्वारा बनाई व्यवस्था से सम्बन्धित थी (मत्ती 15:6-9; 23:4; प्रेरितों के काम 15:1,10; गलातियों 5:1-4)। धर्मगुरुओं द्वारा बनाई हुई सैकड़ों धार्मिक व्यवस्था परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करती और न ही किसी को उसके पापों से बचा सकती!

(6) आधुनिक धर्मगुरुओं द्वारा व्यवस्था की व्याख्या।

अतीत में ऐसे लोग रहे हैं जिन्होंने सिखाया कि व्यवस्था के अनुसार विश्वासी की मृत्यु उसके उद्धार के लिए एक औपचारिक शर्त के रूप में है (रोमियों 7:4,6 में उनकी व्याख्या)। उनके अनुसार, पुराना नियम “शाब्दिक व्यवस्था” है, जिसे कोई भी बनाए नहीं रख सकता है और इसे नए नियम द्वारा बदल दिया गया है, जो कि “आत्मिक व्यवस्था” (सुसमाचार) है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति बनाए रख सकता है! यह “एक मसीह से ज्यादा महत्व रखने वाला सुसमाचार” बन गया (जिसे अस्वीकार किया जाना चाहिए) (गलातियों 1:6-9)! उनके अनुसार, इस आत्मिक व्यवस्था में विश्वास से ज्यादा सुसमाचार के पालन को महत्व दिया गया। इसके कारण, वे मानते हैं कि एक व्यक्ति को न केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा, बल्कि उसे नैतिक आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा भी बचाया जा सकता है!

उनके सन्देश के अनुसार उद्धार पूरी तरह से विश्वास और विश्वासी के किये गए कार्यों पर निर्भर करता है! इस प्रकार, कुछ मसीही निम्नलिखित बातों को जोड़ कर उद्धार को प्राप्त करने की आवश्यकता बताते हैं!

- अपने वर्गों को जोड़ना (जो उनके अनुसार एकमात्र सच्ची कलीसिया है)
- एक विशेष तरीके से जल का बपतिस्मा लेना (जो उनके अनुसार एकमात्र सही बपतिस्मा है)
- अन्य भाषा में बोलकर आत्मा के बपतिस्मा लेने का प्रमाण देना
- एक विशेष पवित्र जीवन व्यतीत करना (जैसे कुछ खाद्य पदार्थों, कुछ गतिविधियों, और कुछ सम्बन्धों से परहेज)

रोमियों को लिखी गई पत्री इन सभी धारणाओं को अस्वीकार करती है। लोगों को उनके द्वारा किये गए कार्यों द्वारा नहीं बचाया जाता है, लेकिन उन्हें इसलिए बचाया गया क्योंकि मसीह में होकर परमेश्वर ने विश्वासियों के स्थान पर विश्वासियों के लिए पूर्ण आवश्यक काम किया (इफिसियों 2:8-9 देखें)! हालाँकि व्यवस्था को बनाए रखने से कोई बच नहीं सकता, बचाए गए लोग परमेश्वर द्वारा दी गई नैतिक आज्ञाओं के अनुसार अपना जीवनयापन करके अपने उद्धार का आभार व्यक्त करते हैं। दस आज्ञाओं को कभी भी उद्धार को प्राप्त करने के साधन के रूप में नहीं दिया गया, बल्कि इसलिए दिया गया ताकि लोग एक दिशानिर्देश के रूप में परमेश्वर के अधीन होकर कृतज्ञता के साथ अपने जीवन को व्यतीत करें (निर्गमन 20:1-2 से तुलना करें)।

(7) केवल यीशु मसीह द्वारा ही व्यवस्था को पूरा किया गया।

यीशु मसीह के प्रथम आगमन (उनका जीवन, पीड़ा, मृत्यु और पुनरुत्थान) का उद्देश्य लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता को पूरा करना था (मत्ती 3:15; 5:17; यूहन्ना 4:34; 17:4; 19:30)।

- धार्मिक आवश्यकता के रूप में व्यवस्था। उसने पहले ही उद्धार के लिए परमेश्वर की पूर्ण आवश्यकता के रूप में व्यवस्था, उस नियम कि कैसे एक बचाए हुए व्यक्ति को अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए और अविश्वासियों के दण्ड के मानक को पूरा कर लिया।
- छाया के रूप में व्यवस्था। उसने पहले से ही सभी पुराने नियम की छाया (इब्रानियों 9:8-10; 10:1; कुलुस्सियों 2:17), सभी याजकीय (मूसा की) संस्थानों (औपचारिक व्यवस्था), मंदिर में होने वाली उपासना, पर्वों और उपवास के दिनों, खतनों, बलिदानों, भेंटों और दशमांशों, शुद्धता के नियमों, आदि को पूरा किया.. “इसलिए कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई (वास्तविकता) यीशु मसीह के द्वारा पहुँची” (यूहन्ना 1:17)।
- भविष्यवाणियों के रूप में व्यवस्था। उसने आने वाले (अपेक्षित) मसीहा के बारे में बताई गई पुराने नियम की सभी भविष्यवाणियों (नियमावली 3, परिशिष्ट 15 देखें) को पूरा किया।

संक्षेप में, यीशु मसीह ने सम्पूर्ण व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17)!

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, यीशु मसीह ने :

- व्यवस्था (और भविष्यवाणियों) को पूरा किया (मत्ती 5:17)
- व्यवस्था को बदल दिया (इब्रानियों 7:12)
- व्यवस्था को अलग रखा (इब्रानियों 7:18-19)
- व्यवस्था को जीर्ण कर दिया (इब्रानियों 8:13)
- व्यवस्था के सभी नियमों को समाप्त कर दिया (कुलुस्सियों 2:14)
- व्यवस्थाओं और उनकी आज्ञाओं को मिटा दिया (इफिसियों 2:14-15)!

यीशु मसीह उन लोगों को छुड़ाने के लिए आया है जो पूर्व में व्यवस्था के अभिशाप (और गुलामी) के तहत दबे हुए थे, ताकि वे अनुग्रह और परमेश्वर की संतान होने का अधिकार प्राप्त कर सकें (गलातियों 3:13-14; 4:5)। संक्षेप में, यीशु मसीह लोगों को परमेश्वर की उस व्यवस्था से स्वतंत्र करने के लिए आया जिसे परमेश्वर के उद्धार की पूर्ण आवश्यकताओं (न्यायोचित स्वीकृति) और दण्ड के मानक के रूप में माना जाता है।

2 परमेश्वर की आत्मिक शिक्षाओं और नैतिक आज्ञाओं के रूप में व्यवस्था जो यह बताती है कि परमेश्वर के लोगों को कैसे अपना जीवनयापन करना चाहिए।

दिए गए बाइबल के गद्यांशों में, व्यवस्था मुख्य रूप से न्याय (उद्धार) के लिए परमेश्वर की अपेक्षाओं का उल्लेख नहीं करती, लेकिन पवित्रता के लिए परमेश्वर की अपेक्षाओं, अर्थात्, परमेश्वर के न्यायसंगत (बचाया) लोगों के रूप में जीवनयापन करने का उल्लेख करती है। व्यवस्था में बाइबल की शिक्षाओं का समावेश है, विशेषकर नैतिक आज्ञाओं का।

(1) पाप का ज्ञान देने वाले प्रकाश के रूप में व्यवस्था (इस प्रकार उद्धार की आवश्यकता को प्रगट करना)।

नैतिक व्यवस्था (उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ) के द्वारा लोग यह जान पाते हैं कि पाप क्या है (रोमियों 7:7)।

- एक ओर नैतिक व्यवस्था से परमेश्वर की पवित्रता, धार्मिकता, भलाई और आत्मिक स्वभाव के विषय में पता चलता है।
- दूसरी ओर यह मनुष्य की अपवित्रता, अधर्म, बुराई और पापी या दुष्ट स्वभाव को प्रगट करती है (रोमियों 7:12,14)

इस प्रकार, नैतिक व्यवस्था किसी व्यक्ति को उसके पापों से उद्धार के लिए तैयार करती है। परमेश्वर के नैतिक और आत्मिक व्यवस्थाओं की तेजोमय और श्वेत स्पष्टता मनुष्य के नैतिक और आत्मिक अवगुणों के कालेपन का खुलासा करती है (गलातियों 3:19-25; 1 तीमथियुस 1:8-11; इब्रानियों 8:10)!

(2) एक ऐसे साधन के रूप में व्यवस्था, जो जीवन के लिए पापी स्वभाव को उजागर करती है (और इस तरह से अवगुणों को बताता है)।

नैतिक व्यवस्था पवित्र, धर्मी, भली और आत्मिक है (रोमियों 7:12,14) और यह पाप का कारण नहीं हो सकती। मनुष्य का पापी स्वभाव पाप का कारण होता है। यह किसी भी व्यक्ति में पापपूर्ण इच्छा को उत्तेजित और उजागर करने के लिए नैतिक व्यवस्था का उपयोग एक साधन के रूप में करता है। जैसे ही कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था पर ध्यान केन्द्रित करना आरम्भ करता है, वैसे ही उसका पापी स्वभाव उसके शरीर में एक सामर्थी उत्पीड़क और उसके विवेक में एक भयानक वास्तविकता बन जाता है (रोमियों 7:8-11)। पापी स्वभाव के कारण उसके भीतर मृत्यु का फल उपलब्ध होता है (रोमियों 7:5; की तुलना गलातियों 6:19-21 से करें)।

जितना अधिक कोई व्यक्ति नैतिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश करता है, उतना ही वह अपने कुल नैतिक और आत्मिक अवगुणों का अनुभव करता है (रोमियों 7:14-15 से तुलना करें)। इस प्रकार, व्यक्ति “अच्छे होने” की अपनी काल्पनिक स्थिति के लिए “मर जाता है”, अपनी झूठी प्रतिभूतियों को खो देता है और अनन्त दण्ड की पीड़ा और खतरे की स्थिति में आ जाता है (रोमियों 7:9ब)।

(3) पवित्र और धार्मिक जीवनयापन के लिए परमेश्वर के मानक के रूप में व्यवस्था (एक बचाए गए व्यक्ति के रूप में कैसे जीवनयापन करें)।

हालाँकि विश्वासी अब “व्यवस्था के अधीन” नहीं, जो उद्धार के लिए परमेश्वर की परम अपेक्षा और दण्ड के लिए उसके परम मानक के रूप में है (रोमियों 6:14), उसे एक बचाए गए व्यक्ति (अर्थात्, नैतिक व्यवस्था) के रूप में जीवनयापन के लिए परमेश्वर के मानक से अलग नहीं किया गया है।

व्यवस्था के रूप में परमेश्वर का वचन। विश्वासी की यह इच्छा होती है कि वह “व्यवस्था” (बाइबल) में भली शिक्षाओं की खोज करे, दिन-रात उन पर ध्यान लगाए रहे, उनका पालन करता रहे और अपने जीवन में शान्ति और स्थिरता पाये (भजन 119:18, 97,136,165)। परमेश्वर का वह वचन जिसका प्रचार किया और जिसे

सिखाया, सुना, पढ़ा, और जिसका पालन किया जाता है, उसे “सिद्ध व्यवस्था कहते हैं, जो स्वतंत्रता प्रदान करती है” (याकूब 1:25)। बाइबल में नैतिक आज्ञाएँ, शिक्षाएँ, सिद्धान्त और उदाहरण, संक्षेप में, सम्पूर्ण बाइबल, परमेश्वर के स्वभाव और इच्छा की एक आदर्श अभिव्यक्ति है। इस प्रकार, व्यवस्था आज्ञाओं और शिक्षाओं में व्यक्त परमेश्वर का स्वभाव है! इसलिए व्यवस्था परमेश्वर की सन्तानों के रूप में रहने का सही तरीका है। व्यवस्था (बाइबल) के अनुसार जीवनयापन करना वास्तविक स्वतंत्रता का सही तरीका है।

दस आज्ञाओं के रूप में व्यवस्था। जब परमेश्वर ने अपने लोगों को बन्धुवाई से स्वतंत्र करने के लिए बचाया (छुड़ाया) था, तब ही उसने उन्हें दस आज्ञाएँ दीं (निर्गमन 20:1-17)। उसने इन नैतिक आज्ञाओं को उद्धार प्राप्ति की अपेक्षा के रूप में नहीं दिया। नहीं तो वह अपने लोगों को व्यवस्था के जुए के तहत पाप की बन्धुवाई में लाया होता।

उसने उन्हें उनकी उद्धार की स्थिति को बनाए रखने के लिए दस आज्ञाएँ दीं! परमेश्वर के नैतिक नियमों की सीमाओं के भीतर रहना ही स्वतंत्रता का अनुभव करने और एक ठोस रूप में स्वतंत्रता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है! परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं की सीमाओं के भीतर रहना परमेश्वर की लोगों के लिए अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने और अपनी स्वतंत्रता को व्यक्त करने का एकमात्र संभव तरीका है। नैतिक व्यवस्था लोगों को बन्धुवा बनाने या लोगों को बचाने (न्याय करने) का साधन नहीं है, बल्कि बचाए हुए और स्वतंत्र जीवनयापन करने का साधन है!

राज व्यवस्था के रूप में व्यवस्था। बाइबल के अनुसार “राज व्यवस्था” प्रेम है (याकूब 2:8)। “जो दूसरों से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है” (रोमियों 13:8) प्रेम व्यवस्था की पूर्णता है क्योंकि जो भी दस आज्ञाएँ नकारात्मक तरीके से व्यक्त करती हैं, उसे प्रेम एक सकारात्मक तरीके से व्यक्त करता है। प्रेम “तू यह न करना को...” “तू यह करना में...” बदल देता है (रोमियों 13:8-10)। व्यवस्था बताती है कि परमेश्वर, अपने पड़ोसी और स्वयं से किस प्रकार प्रेम करें (मरकुस 12:30-31; रोमियों 13:10; गलातियों 5:14; 6:2; याकूब 2:8) और परमेश्वर को उन कार्यों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए जो उसने आपके के लिए पवित्र और धर्मी जीवनयापन किस प्रकार करें।

(4) स्वतंत्रता (छुटकारे) के लिए एकमात्र सीमा के रूप में व्यवस्था।

विश्वासियों को “उन लोगों के समान वचन बोलना और कार्य करना चाहिए जिनका न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा” (यूनानी में : eleutheria, के विपरित douleia, दासता) (याकूब 2:12)। परमेश्वर की व्यवस्था हर प्रकार की बन्धुवाई से स्वतंत्र करती है। व्यवस्था और स्वतंत्रता अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं! परमेश्वर की व्यवस्था के बिना कोई वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है। परमेश्वर की व्यवस्था में बाइबल और परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था शामिल हैं! परमेश्वर की व्यवस्था “सिद्ध” है (याकूब 1:25) क्योंकि व्यवस्था परमेश्वर के स्वभाव को आज्ञाओं में व्यक्त करती है और इसलिए भी क्योंकि व्यवस्था मनुष्य के स्वभाव को व्यक्त (नये जन्म) करने का सबसे अच्छा साधन है! परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं में व्यक्त की गई उसके स्वभाव के अनुसार जीवनयापन करने के बिना कोई वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है! मसीहियों को परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार जीवनयापन करना चाहिए और परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार ही उनका न्याय किया जाएगा।

अविश्वासियों को केवल “स्वतंत्रता” चाहिए। वे अपने माता-पिता, उनके धार्मिक समुदाय और उनके समाज द्वारा तैयार किए गए सभी नियमों से स्वतंत्र होना चाहते हैं ताकि वे जो कुछ भी करना पसन्द करते हैं उसे कर सकें जैसे, यौन-सम्बन्ध बनाना, नशीले पदार्थों का सेवन, धन का लालच, वैभव और ताक़त आदि की इच्छा करना। लेकिन इस तरह की सीमाओं से स्वतंत्रता या मुक्ति केवल इन सब प्रकार के पापों की ओर ले जाती है।

विश्वासियों का जन्म फिर से सत्य के वचन के द्वारा हुआ है (याकूब 1:18) और उनके हृदय और विवेक में परमेश्वर की व्यवस्था लिखी गई है (इब्रानियों 10:16)। विश्वासियों ने स्वेच्छा से स्वयं को परमेश्वर और बाइबल के परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन किया है। वे परमेश्वर के नियमों का पालन करना चाहते हैं, कर सकते हैं और करेंगे भी। वे *इन आज्ञाओं की सीमाओं के भीतर* परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं का पालन करके सबसे बड़ी स्वतंत्रता पाते हैं! मसीहियों के लिए, परमेश्वर की व्यवस्था से जुड़े रहे बिना कोई और वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है! आज्ञाकारिता वह तरीका है जिसमें एक मसीही परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करता है। यीशु ने कहा, “जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है, और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा, और अपने आपको उस पर प्रगट करूँगा।” “यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे” (यूहन्ना 14:21,23)। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके एक व्यक्ति वास्तव में स्वतंत्र हो जाता है (यूहन्ना 8:31-32,26; की तुलना प्रेरितों के काम 4:32 से करें)।

परमेश्वर की व्यवस्था का पालन न करना परमेश्वर के नियम के विरुद्ध बोलने, उसकी आलोचना करने और उसके नियम को “गलत” बताने के समान है। परमेश्वर के नियम का पालन न करने का अर्थ है कि वह व्यक्ति परमेश्वर को व्यवस्था देने वाले और न्यायाधीश के रूप में नहीं मानता (याकूब 4:11-12)। परमेश्वर, जो व्यवस्था देने वाला और न्यायाधीश है, वह “स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार” सभी लोगों का न्याय करेगा (याकूब 2:12), यानी बाइबल की शिक्षाओं और विशेष रूप से बाइबल में नैतिक व्यवस्था के अनुसार।

3 एक सिद्धान्त या कर्मों के रूप में व्यवस्था।

दिए गए बाइबल गद्यांश में, “व्यवस्था” शब्द का अर्थ है एक सिद्धान्त या कर्मों की व्यवस्था।

(1) कर्मों की व्यवस्था नियम (रोमियों 3:27)।

“कर्मों की व्यवस्था” वह सिद्धान्त है जिसकी किसी व्यक्ति के स्वयं के कर्मों या समर्पित प्रयासों को मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था का पालन करने के लिए आवश्यकता होती है जिसके द्वारा उसका न्याय (उद्धार) हो सके। इस प्रकार के सिद्धान्त के द्वारा घमण्ड उत्पन्न होता है (इफिसियों 2:8-9 से तुलना करें)।

(2) विश्वास की व्यवस्था (रोमियों 3:27)।

“विश्वास की व्यवस्था” वह सिद्धान्त है जो यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए और उसके उद्धार के पूर्ण कार्य के रूप में हमारे न्याय (उद्धार) के लिए आवश्यक है। केवल इस प्रकार का सिद्धान्त हमें नम्र करता है।

(3) पाप की व्यवस्था (रोमियों 7:21,23 ac,25 b)।

“पाप की व्यवस्था” मनुष्य के भीतर पाए जाने वाले पाप, पापी या दुष्ट स्वभाव को दर्शाती है जो कि उसमें एक व्यवस्था या उसके हठी या न मानने वाले सिद्धान्त के रूप में कार्य करती है। यह एक ऐसी शक्ति है जो विश्वासियों को विवश करने, उस पर हावी होने या उसे नियंत्रित करने की इच्छा रखती है। पौलुस यह नहीं कहता कि मसीही जन सदैव पाप करता रहता है, लेकिन वह कहता है कि विश्वासियों में पापी स्वभाव एक ऐसी शक्ति है जिससे वह स्वयं को स्वतंत्र नहीं कर सकता।

समय और पापी स्वभाव फिर से मनुष्य की इच्छा को चुनौतियाँ देकर उसका विरोध करते हैं और विश्वासियों की भली इच्छाओं को बुराई में बदल देते हैं। जब भी विश्वासी भलाई करने की इच्छा करता है, तब बुराई निश्चित सोती नहीं रहती है, लेकिन उसे नष्ट करने के उद्देश्य से उसके चारों ओर फाड़ खाने की खोज में लगी रहती है (1 पतरस 5:8 से तुलना करें)। विश्वासियों के “द्वार पर पाप छिपा रहता है” ताकि उस पर अपनी

प्रभुता कर सके (उत्पत्ति 4:7 से तुलना करें) और उसके भले कार्यों को बुराई में बदल सके। पाप की व्यवस्था (अर्थात् पापी स्वभाव) विशेष रूप से उसके शरीर के अंगों में सक्रिय रहती है (रोमियों 6:13,19; 7:14,17,20)। जब तक वह अन्त में अपनी “मृत्यु की देह” से स्वतंत्र नहीं हो जाता, तब तक पाप की व्यवस्था उसके जीवन में एक वास्तविकता बनी रहती है (रोमियों 7:24; 1 कुरिन्थियों 15:54-57), अर्थात्, वर्तमान स्थिति में अपनी शारीरिक देह से स्वतंत्र होना जो कि दुष्ट स्वभाव और मृत्यु के अधीन है।

गैर-मसीही पापी स्वभाव (स्वयं के पुराने या पापी देह, रोमियों 6:6) के पूर्ण अधिकार और उसकी दासता की शक्ति से स्वतंत्र नहीं हैं। और यद्यपि विश्वासी जब पापी स्वभाव के हावी और दासता की शक्ति से स्वतंत्र हो जाते हैं, तब भी पापी स्वभाव उनके जीवन में एक वर्तमान और प्रभावी शक्ति बना रहता है (रोमियों 6:7; 7:18; 8:2)। पापी स्वभाव, विश्वासी के भीतर पाए जाने वाले पवित्र आत्मा के साथ लगातार संघर्ष करता रहता है (रोमियों 6:13,19; गलातियों 5:16-23)। सच्चे विश्वासी, बार-बार, पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित किए जाने का चयन करते हैं, न कि उनके पापी स्वभावों द्वारा (रोमियों 8:9,13)। सच्चे विश्वासी, बार-बार, पापी दुनिया के अनुरूप होते हैं और मसीह की समानता में परिवर्तित होने का चयन करते हैं (रोमियों 12:1-2; क्लुस्सियों 3:10)।

(4) बुद्धि की व्यवस्था (रोमियों 7:23ब)।

“बुद्धि की व्यवस्था” विश्वासी का पुनः उत्पन्न स्वभाव है (विश्वासी का वास्तविक आंतरिक अस्तित्व या स्वभाव) (रोमियों 7:22) जो एक अन्य व्यवस्था या शक्ति के रूप में कार्य करता है और जो विश्वासी जन के साथ समन्वय, प्रभुत्व या नियंत्रण की इच्छा रखता है। इसे दूसरे तरीके से देखा जाए तो, “बुद्धि की व्यवस्था” विश्वासी जन में रहने वाली पवित्र आत्मा है। समय और फिर से बड़े दृढ़ संकल्प के साथ बुद्धि की व्यवस्था वह करना चाहती है जो भला है, अर्थात्, परमेश्वर की नैतिक आज्ञाओं (रोमियों 7:16,22,26) और “उसकी बातों और उपदेशों के सांचों का पालन करना” (Greek: tupos didachés) जिन्हें मसीहियों को सौंपा गया था (रोमियों 6:17)।

(5) जीवन की आत्मा की व्यवस्था (रोमियों 8:2)।

“जीवन की आत्मा की व्यवस्था” पवित्र आत्मा है जो एक व्यवस्था या शक्ति के रूप में कार्य करता है, जो विश्वासी के जीवन के सभी पहलुओं को नया बनाकर, उसकी अगुवाई और उसे नियंत्रित करता है।

(6) पाप और मृत्यु की व्यवस्था (रोमियों 8:2)।

“पाप और मृत्यु की व्यवस्था” रोमियों 7:21,23 ac, 25b में पाई जाने वाली “पाप की व्यवस्था” के समान है।

(7) धार्मिकता की व्यवस्था (रोमियों 9:31)।

“धार्मिकता की व्यवस्था” परमेश्वर के सामने न्याय और धार्मिकता को प्राप्त करने के विषय में है। एक ओर, यह विषय यहूदियों के बीच अधिक महत्व रखता था। उन्होंने व्यवस्था के कार्यों को करके परमेश्वर के सामने न्याय किया। फिर भी, वे न्याय प्राप्त करने में विफल रहे। यहूदियों ने कभी भी व्यवस्था का पालन करके या नैतिक, औपचारिक और इस्राएलियों की व्यवस्थाओं का पालन करके परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त नहीं किया।

दूसरी ओर, अन्यजातियों में यह धार्मिकता महत्वपूर्ण नहीं थी। हालाँकि अन्यजातियों की नैतिक विषयों में दिलचस्पी थी, लेकिन उन्होंने कभी भी परमेश्वर द्वारा ठहराई गयी न्याय की बातों का पालन नहीं किया। फिर भी, अन्यजातियों ने यीशु मसीह में विश्वास करके और उद्धार के उसके पूर्ण कार्यों के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त किया।

(8) ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है (गलातियों 5:23)।

परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से विश्वासियों पर जो प्रभाव डाला, इसके विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है। जबकि पापी स्वभावों के कार्यों के विरोध में व्यवस्था बनाई गयी है (गलातियों 5:19-21), आत्मा के

फल के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं है! इसके द्वारा आत्मा के अनुसार जीवन को व्यतीत करने और आत्मा के फलों से भरे रहने की प्रेरणा मिलती रहनी चाहिए!

[रोमियों के नाम पत्र]

मसीह व्यवस्था का उद्देश्य और अन्त

रोमियों 10:4 - “हर एक विश्वास करनेवाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त (Greek: telos) है।” यूनानी शब्द “टेलोस” का अर्थ “उद्देश्य” या “अन्त” हो सकता है। इसके अलावा, “व्यवस्था” शब्द सम्पूर्ण पुराने नियम के प्रकाशन या परमेश्वर की व्यवस्था की अपेक्षा को दर्शाता है जिसका अनुवाद और विस्तृत व्याख्या यहूदी शिक्षकों द्वारा की गई। इस प्रकार, रोमियों 10:4 का दो तरह से अनुवाद किया जा सकता है और दोनों ही अनुवाद रोमियों अध्याय 10 के संदर्भ में संभव है। रोमियों 10:5 में पाया जाने वाला अनुवाद : “मसीह व्यवस्था का अन्त” सबसे उत्तम है।

क. (एक संभावित अनुवाद): परमेश्वर द्वारा परिभाषित मसीह व्यवस्था का उद्देश्य (अर्थ, सार और पूर्ति) है।

रोमियों 10:4 का पहला संभावित अनुवाद : “हर एक विश्वास करनेवाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था (पुराने नियम के प्रकाशन के रूप में) का उद्देश्य (अर्थ और सार) है।” यूनानी शब्द “टेलोस” का अर्थ “उद्देश्य” है और “व्यवस्था” शब्द पुराने नियम के प्रकाशन को दर्शाता है, जिसमें नैतिक, औपचारिक और आम लोगों के लिए बनाई व्यवस्था शामिल हैं। रोमियों 10:4 को इस प्रकार समझा जा सकता है : यीशु मसीह पुराने नियम के पवित्रशास्त्र का उद्देश्य (लक्ष्य की पूर्ति) है, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे उसे धार्मिकता (उद्धार) प्राप्त हो।

1. यीशु मसीह ने परमेश्वर द्वारा उजागर और परिभाषित व्यवस्था को पूरा किया।

मत्ती 5:17 में, यीशु मसीह ने स्वयं यह कहा कि वह व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं को लोप करने के लिए नहीं आया, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए आया था।

यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन की बातों से टकराने वाले प्रचारक नहीं थे। बल्कि उन्होंने यह सिखाया कि पुराने नियम का प्रकाशन (व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता) उसके आगमन की तैयारी के लिए था और जिसका पूरा होना अभी बाकि है। यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन को पूरा करने के लिए आया था!

पौलुस इस बात को साबित करता है कि नये नियम में पाया जाने वाला विश्वास द्वारा न्याय का प्रकाशन पुराने नियम के प्रकाशन का विरोध नहीं करता है। इसके अलावा, पुराने नियम का प्रकाशन व्यवस्था के कर्मों से नहीं, बल्कि उद्धार पाने के मार्ग के रूप में विश्वास करने की शिक्षा देता है (रोमियों 3:21; 4:7-8; 9:11-12; 10:9-13; 11:20,23; गलातियों 3:6-22 से तुलना करें)। इस प्रकार, पुराने नियम के समय के दौरान “सुसमाचार” का प्रचार पहले ही किया जा चुका था (रोमियों 3:21-22; गलातियों 3:6-8; इब्रानियों 4:2)!

बेबीलोन (538 ईसा पूर्व) से लौटने के बाद, यहूदी धार्मिक शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था को धार्मिकता प्राप्त करने का साधन माना और व्यवस्था के कर्मों के द्वारा न्याय करना सिखाया। इसके बाद न्याय (उद्धार) केवल उन लोगों के लिए संभव था जिन्होंने व्यवस्था को बनाए रखा हो!

यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन के मूल उद्देश्य को पूरा करने, अर्थात्, विश्वास द्वारा न्याय, और वास्तव

में पुराने नियम के प्रकाशन को पूरा करने के लिए आया, ताकि विश्वास द्वारा न्याय उस पर विश्वास करने वालों के लिए एक वास्तविकता बन जाए।

यीशु मसीह ने कहा कि उसने पुराने नियम में पाए जाने वाले प्रकाशन (व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं) को (मत्ती 5:17; इफिसियों 2:15; कुलुस्सियों 2:14) दिए गए अर्थ के रूप में पूरा किया : “यीशु मसीह पुराने नियम की पुस्तकों में इंगित छाया (प्रकार) की पूर्ण वास्तविकता (कुलुस्सियों 2:17 इब्रानियों 10:1) और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक की भविष्यद्वक्ता है (लूका 18:31; 24:25-27,44)”।

पुराने नियम की व्यवस्था का उद्देश्य और इरादा यीशु मसीह के पहले आगमन व भविष्यद्वक्ता, महायाजक और राजा के रूप में उसके उद्धार के कार्य की ओर इशारा था, ताकि लोगों को उसके आगमन के लिए तैयार किया जा सके। लोगों को इस प्रकार तैयार किया गया ताकि वे नये जीवन में विश्वास के द्वारा परमेश्वर से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखें और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18; मत्ती 22:37-39)। यीशु मसीह स्वयं ही मूलरूप से सम्पूर्ण पुराने नियम के प्रकाशन का अर्थ और सार है। केवल यीशु मसीह ने ही पुराने नियम के प्रकाशन के हर अंश के भाग को बखूबी पूरा किया है!

(1) केवल यीशु मसीह ने ही परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक अपेक्षाओं को पूरा किया।

अपने जीवन, मृत्यु, और पुनरुत्थान के द्वारा यीशु मसीह ने परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा किया कि लोग परमेश्वर के समक्ष एक पूर्ण पवित्र और धर्मी राष्ट्र बने रहे, और पृथ्वी पर रहने वाली परमेश्वर की सन्तानें एक पूर्ण पवित्र और धर्मी जीवन व्यतीत करें और उनके सभी पापों का पूरी तरह से न्याय और दण्ड दिया जाए (कि पापों का पूर्ण प्रायश्चित्त किया गया)। केवल यीशु मसीह ने परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता (स्थिति के सम्बन्ध में), पवित्रता (जीवन के सम्बन्ध में), और उस पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए छुटकारे को प्राप्त किया (1 कुरिन्थियों 1:30)। केवल वही उन्हें उद्धार का आश्वासन देता है (इब्रानियों 5:8-9)।

(2) केवल यीशु मसीह ने ही नैतिक व्यवस्था को पूरा किया।

उसने नैतिक व्यवस्था : दस आज्ञाओं के अर्थ की सही व्याख्या की और उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया (मत्ती 5:17-48; मरकुस 12:28-31)।

(3) केवल यीशु मसीह ने ही औपचारिक व्यवस्था को पूरा किया।

औपचारिक व्यवस्था में मानव शरीर (Greek: dikaiomata sarkos) (पृथक, स्वच्छ भोजन) से सम्बन्धित सभी नियम शामिल थे जो नई आज्ञा (Greek: kairos diorthosis) के आने के समय तक निर्धारित किए गए थे (इब्रानियों 9:10)। इसमें पवित्र लोगों (याजकों), पवित्र स्थानों (मन्दिर), पवित्र समय (सब्त, पर्वों और उपवासों) और पवित्र कार्यों (खतना, स्नान, स्वच्छ भोजन, पशु-बलि, पहिलौटे, फसल की पहली उपज और दशमांश) से सम्बन्धित व्यवस्थाएँ शामिल थीं।

इन सभी पुराने नियम के प्रकारों या छायाओं ने नई आज्ञा की ओर इशारा किया, अर्थात्, यीशु मसीह की वास्तविकता और नए नियम के समय के दौरान उसके उद्धार का कार्य (कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 8:5; 9:10; 10:1)।

- क्रूस पर अपनी मृत्यु द्वारा उसने “निर्दोष मेम्ने” के रूप को पूरा किया जो पापों के लिए प्रायश्चित्त के बलिदान के रूप में दिया गया था (निर्गमन 12:4-5; यशायाह 53:7; यूहन्ना 1:29; रोमियों 3:25; इब्रानियों 7:26-27)। इस प्रकार उसने सभी बलिदानों (जानवरों) की आवश्यकता को समाप्त कर दिया (इब्रानियों 10:8-10)।

- अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा यीशु मसीह ने मन्दिर निर्माण के पुराने नियम के रूप को पूरा किया : उसने इसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया (मत्ती 27:51) और इसे नए नियम के मसीह की देह से बदल दिया (यूहन्ना 2:19-21)।
- मृतकों में से जी उठने के द्वारा उसने याजक के पद को बदल दिया (इब्रानियों 7:12) और केवल वही एकमात्र अविनाशी, स्थायी और पूरी तरह से पवित्र महायाजक है (इब्रानियों 7:16-28)।
- अपने आत्मा के द्वारा हृदय के आत्मिक ख़तने से उसने शरीर के शारीरिक ख़तने को समाप्त कर दिया (रोमियों 2:28-29; कुलुस्सियों 2:11-12)।

जब पुराने नियम के समय के दौरान इस्राएलियों ने औपचारिक व्यवस्था (छाया) को स्वीकार करके उसका पालन किया, तब उन्होंने यीशु मसीह (वास्तविकता) को स्वीकार किया और उसका पालन किया! यीशु मसीह “व्यवस्था के अधीन पैदा हुआ” (इस प्रकार व्यवस्था के अनुसार) (गलातियों 4:4)। वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने व्यवस्था का पूरी तरह से पालन किया, क्योंकि उसने छाया (औपचारिक व्यवस्था) और भविष्यद्वाणियों को पूरा किया और व्यवस्था के अनुसार ही अपने जीवन को व्यतीत किया।

और जब यीशु मसीह ने व्यवस्था को पूरा किया (मत्ती 5:17), तब उसने इसे समाप्त कर दिया (कुलुस्सियों 2:14) और इसे मिटा दिया (इफिसियों 2:15)। यीशु मसीह के पहले आगमन के बाद, औपचारिक व्यवस्थाओं को कलीसियाओं में फिर से लागू नहीं किया गया! पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था ने यीशु मसीह की वास्तविकता की ओर इशारा किया, और इस वास्तविकता को नए नियम में प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता! कोई भी धर्म जो परमेश्वर द्वारा धार्मिकता प्राप्त करने के साधन के रूप में व्यवस्था को बनाए रखता है, उसे श्रापित किया गया (गलातियों 3:10-14; की तुलना 1:6-9 गलातियों करें)!

(4) केवल यीशु मसीह ने ही लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्था को पूरा किया।

इस्राएल राज्य के लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्थाओं में राजाओं, संपत्ति, विवाह, यौनाचार, युद्ध, युद्ध के बन्धियों, कर इत्यादि से सम्बन्धित व्यवस्थाएँ शामिल थीं।

केवल यीशु मसीह ने ही संसार के सभी राष्ट्रों में (मत्ती 24:14) परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के साथ मिलकर (मत्ती अध्याय 5 से 7, 13, 18, और 23 से 25) परमेश्वर के राज्य की स्थापना करके (मत्ती 4:17; 12:28-30) लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्था को पूर्ण और समाप्त कर दिया।

निष्कर्ष। इस्राएल राष्ट्र और व्यवस्थाएँ केवल परमेश्वर के प्रकाशन के माध्यम थे, न कि परमेश्वर के प्रकाशन के अन्तिम उद्देश्य। “उद्धार यहूदियों में से है” (यूहन्ना 4:22) का अर्थ है कि इस्राएल राष्ट्र का उद्देश्य उद्धारकर्ता को सामने लाना था (यशायाह 49:3; रोमियों 1:16; 3:2; 9:4-5; 15:8-9; प्रेरितों के काम 13:23,39)। आरम्भ से, परमेश्वर का उद्देश्य था कि उसके प्रकाशन के द्वारा (अर्थात् इस्राएल राष्ट्र) उसके प्रकाशन (अर्थात्, यीशु मसीह) के उद्देश्य के लिए जगह तैयार करेंगे (उत्पत्ति 3:15; 22:17-18 से तुलना करें)!

मसीह के आगमन से पहले, परमेश्वर ऐसे रहता था जैसे कि वह अपने लोग इस्राएल के बीच यरूशलेम के मन्दिर में रहता हो (यूहन्ना 2:19-21 से तुलना करें)। मसीह के पहले आगमन के बाद, परमेश्वर के लोगों के रूप में इस्राएल और इस्राएल के लिए औपचारिक और लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्था अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच गई। नए नियम में यह “रहस्य” (कि परमेश्वर अब इस्राएलियों के बीच एक मन्दिर की इमारत में नहीं रहता है, लेकिन) कि यीशु मसीह संसार के सभी देशों के मसीहियों में रहने आया (कुलुस्सियों 1:27), सामने आया। ये मसीही लोग इस्राएल और अन्यजातियों के राष्ट्रों से आये और पूरी तरह से एक साथ मिलकर उन्होंने यीशु मसीह के द्वारा, जो पवित्र आत्मा के द्वारा उनमें रहने आया था, “परमेश्वर के लोगों” (इफिसियों

3:2-6) का गठन किया!

2. यीशु मसीह ने भविष्यवाणियों को पूरा किया।

पुराने नियम में पाई जाने वाली सभी भविष्यवाणियाँ, जो उसके आगमन, क्रूस की मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, मसीहा (मसीह) के सिंहासन पर जा बैठने और महान भविष्यद्वक्ता, महायाजक, और सबसे सामर्थी और अनन्त राजा के रूप में मसीहा (मसीह) के कार्य से सम्बन्धित थीं, वे सभी नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा एक वास्तविकता बन गई।

- पुराने नियम के समय के दौरान, लोगों का केवल *आने वाले मसीहा* (मसीह) में विश्वास द्वारा न्याय किया गया था (उत्पत्ति 12:3; 15:6; 22:18; गलातियों 3:16)।
- लेकिन नए नियम के समय के दौरान लोगों का *मसीह में, जो पहले ही आ चुका है*, विश्वास करने के द्वारा न्याय होता है (रोमियों 3:28)।

(1) यीशु मसीह सबसे महान भविष्यद्वक्ता है।

यीशु मसीह के आत्मा के द्वारा ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं (1 पतरस 1:10-12; 2 पतरस 1:20-21; 2 तीमुथियुस 3:16 से तुलना करें) ने भविष्यवाणी और प्रचार किया! यीशु मसीह ने ही नए नियम के इतिहास में इन भविष्यवाणियों को पूरा किया (मत्ती 5:17)! उदाहरण के लिए, मसीह ने “परमेश्वर हमारे साथ है” (यशायाह 7:14; मत्ती 1:23), कि उसने बेतलहम में अपने जन्म के द्वारा मानव स्वभाव को ग्रहण किया (मीका 5:2; लूका 2:1-7), जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया (भजन 22:1,16,18; लूका 23:33), जो मृतकों में से पुनर्जीवित हुआ (भजन 16:10-11; लूका 24:1-6) और वह स्वर्ग पर चढ़ गया और उसके सिंहासन पर जा बैठा (भजन 110:1,4; प्रकाशितवाक्य 5:1-13), जैसी भविष्यवाणियों को पूरा किया। यीशु मसीह इतिहास का एकमात्र भविष्यद्वक्ता है जिसने सभी भविष्यवाणियों को पूरा किया। इस तरह, यीशु मसीह ने स्वयं को सबसे महान भविष्यद्वक्ता के रूप में प्रगट किया जो सर्वदा के लिए जीवित है (व्यवस्थाविवरण 18:15,18-19; प्रेरितों के काम 3:22-23)।

यीशु मसीह ने मनुष्यों से परमेश्वर के अन्तिम दिनों की बातें कही (इब्रानियों 1:1-2)। “उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों (पुराने और नये नियम के समय की अवधि के विश्वासी) को एक (Greek: hapax) ही बार सौंपा (Greek: paradidómi) (अनिश्चित काल) गया था” (यहूदा 3)। मसीही विश्वास केवल एक बार ही मानव इतिहास में विश्वासियों को सौंपा गया था। प्रत्येक तथाकथित “भविष्यद्वक्ता” जो यीशु मसीह के बाद आये और जिन्होंने पुराने और नए नियम की बातों को बदला या घटाया है या उसे बदला, वे सभी झूठे भविष्यद्वक्ता हैं (व्यवस्थाविवरण 18:15-22; नीतिवचन 30:6; मत्ती 15:3-14; 2 कुरिन्थियों 4:2; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)। यदि कोई भी भविष्यद्वक्ता जो बाइबल में दी गई प्रकाशन की बातों के विपरीत भविष्यवाणियाँ करता है, तो वह परमेश्वर के वचन में बातों को जोड़ने का दोषी है और उसे अस्वीकार कर देना चाहिए!

(2) यीशु मसीह महायाजक है।

यीशु मसीह ने पुराने नियम की व्यवस्था की सभी आवश्यकताओं या अपेक्षाओं को पूरा किया। अपने मानव स्वभाव में, उसने पृथ्वी पर पूरी तरह से पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत किया (यूहन्ना 8:46; इब्रानियों 4:15; 7:24-28) और इस प्रकार उसने केवल परमेश्वर के नैतिक व्यवस्थाओं की आवश्यकताओं को पूरा किया। उसने एक खरा जीवन व्यतीत किया, दूसरों की चरवाही की (भजन 78:72), लोगों से प्रेम किया और उनके लिए प्रार्थना की (यशायाह 53:12), वह अच्छा करता फिरा और शैतान के सताए हुएों को चंगा किया (प्रेरितों के काम 10:38)। अन्ततः, वह लोगों के पापों के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में क्रूस पर मर गया

(यशायाह 53:5-6; भजन 40:6-8; यूहन्ना 10:11; इब्रानियों 10:5-7)। मानव इतिहास में यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा याजक था जिसने स्वयं को पापों के पूर्ण (पाप रहित) बलिदान के रूप में दे दिया। वही एकमात्र ऐसा याजक है जिसने स्वयं को दूसरों के पापों के प्रायश्चित के बलिदान (पापरहित) के रूप में दे दिया। वही एकमात्र ऐसा है जिसे मृतकों से पुनर्जीवित किया गया (अन्य सभी भविष्यद्वक्ता और याजक और धर्मगुरु अपनी कब्रों में मृत पड़े हैं); वह हमेशा के लिए जीवित है और इस प्रकार उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं है।¹ यीशु मसीह के बाद, कोई भी ऐसा “भविष्यद्वक्ता” नहीं है, जो लोगों के लिए परमेश्वर के विचारों को व्यक्त करनेवाला हो (प्रेरितों के काम 3:22-23; इब्रानियों 1:1) और न ही ऐसा कोई याजक (इब्रानियों 7:23-28) है जो परमेश्वर और लोगों के बीच “मध्यस्त” के रूप में कार्य करे! इस तरह, यीशु मसीह ने स्वयं को सबसे महान महायाजक के रूप में प्रगट किया जो हमेशा के लिए जीवित है (भजन 110:4; जकर्याह 6:13)।

(3) यीशु मसीह सामर्थी और अनन्त का राजा है।

यीशु मसीह ने आने वाले राजा (उत्पत्ति 49:10) की भविष्यद्वक्ता को पूरा किया, जो अपने शाही शासन द्वारा अपने लोगों को उनके शत्रुओं के हाथों से छुड़ाएगा और उन पर हमेशा के लिए शासन करेगा (1 इतिहास 17:14; यशायाह 9:7; प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16)। उसे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18)! उसने एक ऐसे राज्य की स्थापना की जो कभी भी हिलने की नहीं (इब्रानियों 12:28), जो अन्ततः संसार के अन्य सभी राज्यों को कुचल देगा (दानियेल 2:44; प्रकाशितवाक्य 17:14), और जो सर्वदा बना रहेगा (यशायाह 9:7)! इसलिए संसार के अन्य सभी राजनीतिक, सैन्य और धार्मिक शासकों को सचेत रहना चाहिए (भजन 2)! इस तरह, यीशु मसीह ने स्वयं को सबसे महान राजा के रूप में प्रगट किया जो हमेशा के लिए जीवित है।

(4) पुराने नियम का किस प्रकार अनुवाद किया जाना चाहिए।

क्योंकि यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन को पूरा करने के लिए आया, पुराने नियम को केवल नए नियम के प्रकाशन के दृष्टिकोण से ही सही ढंग से समझा जा सकता है!

A. (सबसे अच्छा अनुवाद) : धार्मिक लोगों द्वारा परिभाषित व्यवस्था का मसीह का अन्त (समाप्ति) है।

1. यीशु मसीह ने धार्मिक लोगों द्वारा बनाई और समझाए गई व्यवस्था को समाप्त कर दिया।

दूसरा संभावित अनुवाद : “हर एक विश्वास करनेवाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त (समाप्ति) (धार्मिक शिक्षकों के लिए परमेश्वर की व्यवस्था की अपेक्षा के संदर्भ में जिसकी विस्तृत व्याख्या और अनुवाद यहूदी शिक्षकों द्वारा किया गया) है।” “टेलोस” शब्द का अर्थ “अन्त” है और “व्यवस्था” शब्द न्याय के लिए परमेश्वर की व्यवस्था और धार्मिक अपेक्षा को दर्शाता है विशेषकर मूसा की व्यवस्था के संदर्भ में, जिसका अनुवाद और विस्तृत व्याख्या यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों द्वारा की गई। रोमियों 10:4 को इस प्रकार से समझा जा सकता है। “यीशु मसीह न्याय के लिए व्यवस्था का अन्त (समाप्ति) है, ताकि हर एक विश्वास करने वाले के लिए यह धार्मिकता (उद्धार) ठहरे।”

यहूदी धर्मगुरु और शिक्षकों ने व्यवस्था को न्याय (उद्धार) का एकमात्र मार्ग बताया। उदाहरण के लिए देखें कि यहूदी “खतने” के बारे में क्या सिखाते हैं (प्रेरितों के काम 15:1)। यीशु मसीह ने यहूदियों की गलत धारणा को समाप्त कर दिया कि एक व्यक्ति को व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा उचित ठहराया जा सकता है।

¹जो लोग यीशु मसीह के उत्तराधिकारी होने का दावा करते हैं, वे हैं Mohammed (569-632 A.D.) (“Mohammed, the man and his faith”, Tor Andrae, 1960) and Joseph Smith (1805-1844) (“Understanding the Cults”, Josh McDowell, Dan Stewart). I दोनों दावे झूठे हैं!

मसीही व्यवस्था द्वारा धार्मिकता का अन्त या समाप्ति है, ताकि विश्वास (मसीह में और उसके उद्धार के पूर्ण कार्य के द्वारा) के द्वारा धार्मिकता प्राप्त की जा सके। पौलुस उद्धार की तैयारी के रूप में पुराने नियम के प्रकाशन के उद्देश्य या पूर्ति की बात नहीं कर रहा है, लेकिन वह इस झूठे यहूदी विश्वास, कि व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा धार्मिकता प्राप्त की जा सकती है, के अंत या समाप्ति की बात कर रहा है (जैसा कि यहूदियों ने व्यवस्था की व्याख्या की थी)।

मूसा ने परमेश्वर के व्यवस्था की आवश्यकता का वर्णन इस प्रकार किया, “जो व्यक्ति व्यवस्था (पुराने नियम के प्रकाशन की व्यवस्था और नियम) का पालन करता है, वह उनसे जीवित (अर्थात् : अपनी धार्मिक स्थिति या अनन्त जीवन बनाए रखने के द्वारा) रहेगा” (रोमियों 10:5; लैव्यव्यवस्था 18:5)। केवल आदम और हव्वा के पास पाप में गिरने से पहले धार्मिकता या अनन्त जीवन की अपनी स्थिति बनाए रखने की संभावना थी (उत्पत्ति 2:15-17)! पाप में गिरने के बाद, कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है, क्योंकि किसी के पास ऐसी धार्मिक स्थिति नहीं है! किसी व्यक्ति के न्याय के लिए मसीह में विश्वास और उसके स्थान पर यीशु की पूर्ण और सिद्ध धार्मिकता आवश्यक थी और है (उत्पत्ति 15:6; 1 कुरिन्थियों 1:30; 2 कुरिन्थियों 5:21)!

हालाँकि, यहूदी धर्मगुरुओं ने बेबीलोन से लौटने से लेकर (538 ईसा पूर्व) यीशु तक परमेश्वर की व्यवस्था को धर्म में बदल दिया और लैव्यव्यवस्था 18:5 में लिखे शब्दों “उनके कारण जीवित रहेंगे” की व्याख्या “उनके कारण उनका न्याय (बचाये जाएँगे) होगा” के रूप में की।

इसके फलस्वरूप, उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था को स्वनिर्मित सेकड़ों व्याख्याओं और नियमों के नीचे दबाना आरम्भ कर दिया।² उन्होंने “विश्वास के द्वारा धार्मिकता (उद्धार) (जो परमेश्वर ने कहा और किया)” को “व्यवस्था द्वारा (जो लोग कहते और करते हैं) धार्मिकता (उद्धार) में बदल दिया।” यह यीशु मसीह नहीं था, लेकिन ये यहूदी धार्मिक शिक्षक थे, जिन्होंने पुराने नियम को एक ओर रखकर, अपनी स्व-निर्मित व्यवस्थाओं से बदल दिया (मरकुस 7:1-13)!

2. पुराने नियम के शिक्षण और यहूदी दृष्टिकोण में अन्तर।

यह पुराना नियम नहीं था, लेकिन बेबीलोन के निर्वासन और यीशु मसीह के पहले आगमन (586 - 0 ईसा पूर्व) के बीच में यहूदी धार्मिक शिक्षक थे जिन्होंने यह सिखाया कि लोगों का व्यवस्था के कार्यों द्वारा न्याय (बचाया) किया जा सकता है। यहूदियों ने व्यवस्था के साथ परमेश्वर के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से गलत समझा और उसकी गलत व्याख्या की।

पुराने और नये नियम दोनों में ही इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि पुराने नियम के समय के दौरान व्यवस्था को न्याय के आधार के रूप में प्रस्तुत किया गया था। और इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं है कि पुराने नियम (यानी व्यवस्था को बनाए रखने) में न्याय के कथित आधार को नये नियम में मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य में विश्वास द्वारा प्रतिस्थापित किया गया!

पुराने नियम में कहीं भी यह नहीं सिखाया गया कि मूसा की व्यवस्था परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिकता प्राप्त करने का साधन थी! पौलुस की पुराने नियम और विशेष रूप से मूसा की व्यवस्था के सिद्धान्त के पक्ष में विश्वास में होकर अनुग्रह के द्वारा न्याय की बार-बार की गई विनती यहूदी दृष्टिकोण को अस्थिर बनाती है (उदाहरण के लिए रोमियों 3:21-22; 4:6-8,13; 9:15-16; 10:6-8; 15:8-9; और गलातियों 3:10-11,17-22; 4:21-31 पदों को देखें)! पौलुस निश्चित रूप से पुराने नियम के समय के दौरान द्वारा उद्धार के मार्ग को नए नियम में सुसमाचार के द्वारा प्रतिस्थापित करने के विषय में नहीं कह रहा है।

² 613 मानव-निर्मित व्यवस्थाएँ : 248एँ और 365 निषेधाज्ञाएँ

पौलुस पुराने और नए नियम की विश्वास के द्वारा न्याय की सच्ची शिक्षा और झूठे यहूदी शिक्षकों की व्यवस्था को जो व्यवस्था के अनुसार किये गए कर्मों के न्याय के विषय में बताती है के बीच के अन्तर को बताता है! निर्वासन से लेकर यीशु के समय तक यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने सिखाया कि व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और लोगों के लिए बनायीं गयी व्यवस्था के अर्थ में) को बनाए रखना ही उद्धार पाने का मार्ग है। लेकिन सम्पूर्ण पुराने और नए नियम का प्रकाशन सिखाता है कि यीशु मसीह (मसीहा) में विश्वास रखना ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है! पौलुस व्यवस्था (व्यवस्था के कार्यों के द्वारा धार्मिकता को प्राप्त करना) के झूठे यहूदी और विश्वास के सच्चे बाइबल सिद्धान्त के बीच के अन्तर को बताता है। यीशु मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य में विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त किया जा सकता है।

इसलिए रोमियों 10:4 की यह दूसरी व्याख्या शायद वही है जो पौलुस कहना चाहता था। पौलुस यह कहता है कि यीशु मसीह ने व्यवस्था की रीति या दृष्टिकोण का *अन्त कर दिया*। उसने इस व्यापक प्रचार की धारणा का अन्त कर दिया कि धार्मिकता मूसा की व्यवस्था (विशेष रूप से जिसकी व्याख्या यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों द्वारा की गई) को ध्यान में रखते हुए अर्जित की जानी चाहिए! पौलुस ने स्पष्ट रूप से यह स्थापित करने के लिए ऐसा किया कि धार्मिकता (उद्धार) को :

- केवल यीशु मसीह के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है
- केवल यीशु मसीह के अनुग्रह के द्वारा ही प्राप्त (अध्यारोपित और दिया जा सकता है) किया जा सकता है।
- केवल यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा ही प्राप्त (और कार्यान्वित) किया जा सकता है।